তম্ববোধিনা পত্রিকার অন্তম কল্পের প্রথম ভাগের সূচী পত্র

देवनाथ ७७२ मर्था 🦻	6		शुके
क्षरभव्न तरहिन्छ।	5	মূভন পুস্তক ,,	28
ভারতবর্ষে হিন্দু ও মুসলমান জাজির সন্মিলন		Letters from and to the	72, 42
উপদেশ	•	Veda Samajam, Madras	3¢
বিজয়কৃষ্ণ গোখানির প্রশাবলির উত্তর	4	কার্দ্ধিক ৩৩৮ সংখ্যা	
A Lecture in reply to the Query	1		
'What is Brahmoism'	>>	भरुक छोर	24
কৈয়েষ্ঠ ৩৩৩ সংখ্যা	j	পর্মোর উন্নতি সাধন	K.C.
		হিন্দু-শাস্ত্র ও হিন্দু-জাতি	205
4 4) 9	নাকার-উপানকদিগের প্রশ্ন	204
and makes	२ २	व्यथम मृत्रे मनूरवाद क्षथम रेमहिक-शिक्त,	
	26	व्यथम देखिय-व्याप ७ व्यथम वृद्धि-किया	
	29	मश्रक्ष बाया-इंडीख	১০৯
A. Lecture in reply to the Query	•	অগ্রহায়ণ ৩৩৯ সংখ্যা	
	4.5	छे शटमम्	.220
	,	পর কোকের সম্বল	330
আ্যাড় ৩৩৪ সংখ্যা		হিম্মুকাভি ও বাহ্মধর্ম	559
	೨೨	ঈশ্বরের সহিত আমাদিগের সাক্ষাৎ সমৃদ্ধ	>5.
	oc	পৌত্তলিকভা ব্রহ্মজ্ঞানের সোপান	328
· ·	99	পৌৰ ৩৪• সংখ্যা	
	B 5	জগতে ঈশ্বর দর্শন	>00
A Lecture in reply to the Query		পর্মোগতি	303
"What is Brahmoism" 8	3٤ أ	ধৰ্মত ও ধৰ্মতাৰ	5.99
শ্ৰাবণ ৩৩৫ সংখ্যা	<u>}</u>	বৈদান্তিক মত	500
S		স্বাস্থ্য	304
as of the banks	32	নামবেদি কর্মানুষ্ঠান-পদ্ধতি	787
-	1 6 1 1 8 1	আত্ম-নিবেদন	5.82
francisco Stanza	9	ম্ভনপুস্তক	>80
**************************************	55	মাঘ ৩৪১ সংখ্যা	
14	00	পাপ ও পুণ্য	184
		देवमांखिक मण्ड	300
ভাদ্র ৩৩৬ সংখ্যা	i	সৃষ্টির অন্তর্গত নিয়ম	280
	26	Theistic toleration and	
ভবানীপুর উনবিংশ দাষংশরিক ব্রাহ্মদমাজ ৬	าใ	diffusion of Theism	>69
	35	মূভন পুস্তক	300
		beds over a set appearance	
T)	9	कास्त्रन ७८२ मश्था	
Prayer 4	3	ষাচত্মারিংশ সাংবৎসরিক রোক্ষাসমাক	292
আখিন ৩৩৭ সংখ্যা		Professor Max Muller's Opinion	340
Borns	r5	अक्तनकीख	26.4
with to exact some	, , , ,	টচত্ৰ ৩৪৩ সংখ্যা	
ব্রান্ধ পরিবার			31-3
धर्म विषयक श्राटमाञ्चत	9	देवमांखिक यख	320
कीर উद्धिमानित वर्ष-छेरशंखि विवयक मण ।	۵-	কোরাণের উপদেশ সংগ্রহ	11.9
चारता आत्र अस्मानात्राकातीन वक्ष्णा व	33	नाबद्यती कर्षात्रुक्षान-शक्षात्र	322

क्षाकादापि वर्गकरम असम करणत अथम स्टारगत मूठी शब

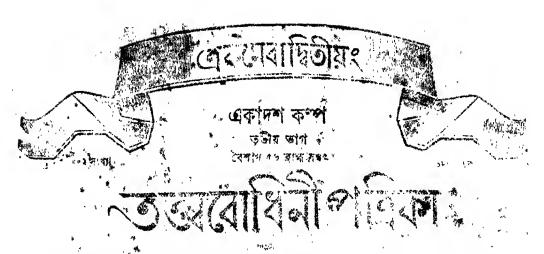
	नःशा.	श्रुवा	विकास करिया विकास करिया विकास करिया विकास करिया विकास करिया करिया विकास करिया करिया करिया करिया करिया करिया कर	781
Minn Mich Genielt	ল া		ध्यंम रहे मस्त्रात्रधार्यम देव विक-	
কাজীন বস্তু তা	७७٩	22	গতি, প্ৰথম ইন্সিয়-বোধ ও প্ৰথম	9
भाषा निर्देशम	vg•	1,785	বুদ্ধিকিয়া সম্বদ্ধ সাম্ম-রতার ৩৬৮	303
आविताद्वत्र छेश्टमभ	: 606	95	शृथिवी ७ महर्या ७७৪	৩৭
क्षेत्रत महिल जामानित	ta '	٠.	श्रीवरो ७ मझ्या ७७६	¢8
সাক্ষাৎ সমন্ত্ৰ	دون	320	उम-मनोज ७८७	360
छ नटमभ	৩৩২	' &	-ব্রাহ্ম পরিবার ৩৩৭	bet.
डेनरम न	७७७	. 29	ভবাদীপুর উদবিংশ সাস্বৎসরিক	-
डे नरम म	gog	৩৩	डाक्रमङ ७७५	৬৭
उग टमण उगटम ण	996	88	ভারতবর্কে হিন্দু ও মুলমান	91
खनरमम खनरमम		3¢		_
	909	F2	ক্লাতির সাম্মলন ৩৩ছু বর্ষশেষ দিববের ব্রাহ্মসুমাক্ত ৩৩৩	ع
जैशासन उत्तरम्	10100	330	विक्रम्करू भागामित	45
		3	প্রসাবলির উত্তর ৩৩২	• .
খাখেদ সংহিতা	101010	29		٠
ধৰেদ সংহিতা	***	ን ৮ ዓ	S	300
क्ष्म्बारगढ छेशरमण मध्य			1	74 €
क्षारक मेचन मर्गन	980	200	देवमांखिक मंख ७८७	71-7
🕶 ও উত্তিদাদির শত-			সহজ্ঞ ভাব ৩৩৮	24
्रे विशास-मञ	909	49	সাকার-উপাসকদিগের প্রাশ্ব ৩৩৮	707
बाटकाटकत्र कुलनाम	800	, 82	मांगदर्गि कची स्रष्ठीन-शक्षि ७४०	787
क्षेत्रिक्ष जार्वस्मति	*		मामद्यमि क्यांस्कान-शक्षा ७८७	786
্ৰা শ গশাব্দ	७१२	393	चन्नश्र (मांबी छक ७७७	28
वर्ष श्रामा	७७७	२२	चाक्रांगांशम ७८०	70F
वर्ष निक्	७७५	47	স্ফির অন্তর্গত নিয়ম ৩৪১	300
ৰৰ্জনি দা	900	42	হিন্ধর্মের ইতিহাস ৩৩৫	49
सर्व ७ अमार्थ-विमा	৩৩৭	20	হিন্দাতি ও ত্রামধর্ম ৬৩৯	273
वर्ष विराहक श्रीरवी छह	৬৩৭	٧٩	হিন্দু-শান্ত্র ও হিন্দু-জাতি ৩৩৮	705
ৰপাৰত ও ধৰ্মভাব	७ 8०	500	A Lecture in reply to the Query	
वर्षके सर्वत्र मून	७8७	74.7	"What is Brahmoism" ooz	77
बर्ट्याम िं	980	202	A Lecture in reply to the Query	
बर्गाव डेबर्डि गांवम	vov	ઢૂંઢ	"What is Brahmoism" 999	5.5
नव-बटर्वत जान्यनमाञ	80°C	ં હ	A Lecture in reply to the Query "What is Brahmoism "".	~
সূত্ৰ পূত্ৰৰ	soe	35	Prayer	8२ ७७
नुष्ण शृंखन	५७५	. 99	Prayer	93
-	ບບຊື່	≥ 8	Letters from and to the Vada	
कुष्म श्रहक	- v80	3. 380	Somajam, Madras	Þ
1 11 137	485	700	Theistic teleration and	
ৰাশ ৰ পুৰা	485	784	diffusion of Theism ves	36 9
अक्टबाटका जनन	دود	, 33¢	Professor Max Muller's	
COMPANI SAWITE		· ·	Opinion 982	7h-
A CONTRACTOR	200	329	सम्बद्धांक्षाः । कवित्रकृषि कार्यः । व देवत पूर्वात	4 .

व्यक्ति बाक्षमगाटकत श्रुक्कानग्रह विटक्का श्रुक्क।

বিজ্ঞাপন।	उद्योगार
व्यानामी ३५ माच माचदमद्भिक आक्रममान	
উপলক্ষে আদি जानागगात्मत शुक्रवानग्रह विकास	
शुस्तक नकन निम्न निधिष्ठ न्तर्गम भूता विजना	Comments to the borner of the second of the
इहेर्दर ।	शृहकर्मा।
মক্ষরের ফেডাগণ ১১ মাথের মধ্যে মণিঅর্ডার	Rs. As 1
বা হণ্ডি দারা পুস্তকের মূল্য ও আনুমানিক	Defence of Brahmaism
ডাক মাশুল পাঠাইলেই পুস্তক প্রাপ্ত ইইবেন.	and the Brahma Samaj)
ভাকের টিকিট পাঠাইবেন না।	Brahmic Questions of the Day 6 Brahmic Advice, Caution and Help 3
gunnaldumpun	: Adi Brahma Samaj,
निर्दाति मृता।	its Views and Principles 2
ননুসংহিতা	A Reply to the Query: "What is
उक्तविमानिय	Brahmoism" 4
নারীক্রাতি বিষয়ক প্রস্তাব ১০০	Reply to Bishop Watson's
অপুর কারাবাস >	Apology for the Bible 5 Lectures on Pathology
কাশীশর মিজের বক্তৃতা।।০	of Fever 1
शीक कांग्र कांगी में कांगा ।०	
জীবনের উদ্দেশ্য ও তৎশাগনের উপায় 🗸 ০	· अर्फ मृत्ला।
. গীভুমালা !•	•
গীভান্ধর /॰	সংস্ত বালাধর্ম (দেবনাগর অক্রে) ॥০
A Discourse against Hero-	वामना उम्मिपर्य 10
making in religion As 12	वामना जामभर्मा विकीश थे छ ०
An account of the late	বাৰণা ব্ৰাহ্মধৰ্ম ভাৎপৰ্য্য সহিত ॥•
Govindram Mitter 9	मार्चाः मव
	কলিকাতা ব্রাদাননালের বক্তা । ০০
२৫ টाका कमित्रन वारमः।	ব্রাদাশনালের বক্ত। ।।/০
ব্রাহ্মধর্ম প্রথম ওদিতীয় থণ্ডের ভাৎপর্যা	विश्वामा अभिग्ना अव विक् जा ।।
বহিঙ (লাল কাল অক্রে) . ২	ভবানীপুর শাধৎসরিক সমাজের বক্তৃতা ৴৽
ব্রাহ্মপদা প্রথম ও ছিতীয় থণ্ডের	(बाग्रामित्र। उपमानमाद्याद
ভাৎপৰ্য্য সহিত ঐ ভাল বঁখা ২॥০	প্রার্থনা ও উপদেশ ১
ব্রাক্ষপর্যোর মন্ত ও বিশ্বাস গণ	ভ र्दविमा। धिष्ठीय मश्च्यत्य ১॥०
जाक्यरक्त्र वाश्यान—ध्ययम ध्यक्त्रण ॥०	ধৰ্মাতত্ত্ব দীপিকা প্ৰথম ভাগ >
उम्बद्धाः वाक्षान—विजीव श्रवनः ॥०	ধর্মভন্ত দীপিকা ছিডীয় ভাগ >
गानिक जाकानगारकत्र जन्मा ॥०	धर्माण्ड्मीशिका अध्य
मटनालटम्भ ॥४०	ও বিভীয় ভাগ একন ২
	धर्मा ७ खारनद मीमारमा ।
রাজনারায়ণ বসুর বজ্জা এবদ তাগ ॥•	প্রান্ত্যহিক ব্রক্ষোপাসনা ১০
রাজনরারণ সমূর বজুজা বিভীয় ভাগ ৬০	उद्योगामना /०
भारकार्यक विधान करने के अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपने अपन	अस्तानानमा नष्ठि /-

ञामि वाक्रमभाटकत श्रुकानग्रह विद्वा श्रुक्त ।

বৃদ্ধান	वर्गामा-अथम मर्था।
धर्मा-विका	वर्गमाना विकास तर्था
व्यवहन् मध्याहः	দীপ্ত-শিরার অভিয়েক (১০
कार्यमा ध्वर मझील	Hindoo Theism As 1
उच्च मभीक	Theist's Prayer Book
	Signs of the Times 1
ব্ৰহ্মসঞ্জীত চতুৰ্ব ভাগ	Vedantic Doctrines Vindicated 2
স্থ কাৰ সঞ্জীত ।	Doctrine of Christian
मर्शीक मूलावनी	Resurrection
কুনার শিক্ষা	Physiology of Idulatry 2
	Miracles or the Weak Points
	of Revealed Religion 8
প্রভাত-বৃত্তম	
उत्पादनाञ्चल	निकि भूता।
ন্তোত্তমালা	ত্তাদাধর্ম অথম খণ্ড (দীকা ও ভাৎপ্র্য্য
	সূহিত্ত) c ॥০
and the last of the same of th	সংস্ত ব্ৰাহ্মধৰ্ম (দীকা সহিত্ত) ৷৭
चर्मा अभितिभी शिकिको ३१ ६२ भेटकत	अनुष्ठीन-शक्षि
একজ বাধান ৬•	
द्धमार्थम	রুদ্ধি সহিত কঠোপনিষৎ দেবনাগর অক্তরে ১০
उक्कान	১৭৬৯ শক অবধি ১৭৮৮ শক পর্যাত্তের যে
ব্ৰন্মজান সূত্ৰ ভাৎপৰ্য্য সহিত ১০	সকল ভৰ্বোদিনী পৰিকা পুস্তকালয়ে উপদিও
ব্ৰাহ্মধৰ্ম ভাব /১০	जारक, उदम्माग्र छेक निवत्म अक्ष्मत्मा अर्थाः
वा मार्थ्या ७ ज्ञामानगांत्र विवयक अस्ताव /	অভি ৰংগরের একত ব্যাধান খাণ টাকার হিমাবে
धर्मा मर्श्राह	विक्य हरेटव ।
आभारावश्व /०	নিদ্ধারিত মুলোর পুত্তক সকল অন্থান দশ
इर्लाएमंब /॰	টাকার ক্রয় করিলে, শভক্রা ১২॥০ টাকার হিনাবে
প্ৰুবিংশতি বংগরের পরীক্ষিত হুডান্ড 🖊	क्षित्रम् (मञ्जा मार्चेद्यः ।



का सन्तिभिद्यापचारात्रा वस् विभावता प्राप्ति दे सम्बाधनात् । सदय नित्य जासमनम् विभावता व्यवप्रकाषेयादि । । भ न वापित्य विश्वक्षा सम्बोधन सम्बोधन सम्बोधित सम्बोधित पूर्वभैदितामित । स्कास नवीविधाय । अव सम्बोधित के स्वाप्ति । सम्बोधित स्वाप्ति । सम्बोधित स्वाप्ति । सम्बोधित स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । सम्बोध

初國主

न्तासित महिमा नाम्ना हर है जन प्रारम त्याधित किए दाव भनी मध गण्डेम । दानक विश्व भूगी प्रमुख गाम सारमक केळक कारन स्थादि द्यांगक मारमक केळक कारन स्थादि द्यांगक महीदान सारम केळक मार्गक गण्डेम मार्गक । , जाव स्थादेन मुंद्रमी, द्यंच भारत ॥ त ;

নৰ বৰের প্রাক্ষনমাজ।

বেশাগ আৰু সমাধ ৫৮।

আলাহোঁয়ে উপদেশ।

নববর্ষর উষা —নব-বর্বের নিক্সেক্ট প্রিক উ: — পুর্মানিক আলো করিলা সাগর পর্ব চইতে বারে পারে সমুখান ক্রিডেছে। বং শরের প্রথম সুর্য্য করি পরে আগ্রম্ম কার্বে— তাই কল্লাশমনীতিয়া ওল্ল জ্যোতিতে গ্রা-াশের অবান্যর প্রকাশিত ক্রিয়া, সুর্যার প্রথান-ছার স্থাসল পোরার ক্রিভিড ক্রিয়া, রহিয়াছে। তার শ্রমেল প্রার্থিক ক্রিয়া, মার্কিয়ে নব ক্রিয়াক ক্রিয়াক ক্রিয়া হার্কিয়ে নব ক্রিয়াক ক্রিয়াক নহণ গ্রুত-কোট কির্গু-রেশ্ব আসিতা নাহাল ছারিদিক্থিরিয়া বর্দিল্প সমস্ত জ্ঞাও

াটোকে আলোকৈ আলোকি ছৌশা উ

ি । পার্গোর আল এরই সময়ে বাংলবিক
লো নৈলত মুই গাওঁর লাগ এব সজ্জা হট্না

কিলে । এই প্রশাস বহুর্তে অবিদ্যু আমরী

দিবদেব অবিপতি—বংসরের অবিদ্যুক্ত ক্রিদ্যুক্ত আর্থিক

ভারার অবিপতি—বংসরের অবিপতি—

ভারার অবিপতি—প্রয়াভাগে ক্রিমান মতিন

ভারার অবিপতি—প্রয়াভাগে ক্রিমান মতিন

ভারার অবিপতি—প্রয়াভাগে ক্রিমান মতিন

ভারার অবিপতি—প্রয়াভাগের অব্যাহির এবং দিবদের

প্রথম মসল কার্টোর অব্যাহন গ্রেন্ত হন্টা

এই সময়ে দূর্যা অবাশ এবং পুলিবার
দাল-কাল দণ্ডায়মান হইয়াছে—জ্জীত এবং
ভার্যাৎ জুই বৎসরের সন্ধিত্বল দণ্ডায়মান
ইইয়াহে,—সন্মুখে বার বংসর পশ্চামেন
অতাত্ত্ব বংসর;—সক্ষা-জগতের চফু যেন ই
নিজ-ছান হইতে ভূলোক জ্বান্যার প্রাবেমাণ করি তেনে অতাত হানাগত প্রাবেমাণ করি তেনে অতাত হানাগত প্রাবেমাণ করি তেনে অতাত হানাগত প্রাবেমাণ করি তাছে। আমানোও কলেন যে
জ্বীত বংলারে নিকট হইতে কি নিজ্ঞা
নাজ করিলাম তাহা একরার প্রাবেক্স
করিলাম তাহা একরার প্রাবেক্স
করিলাম তাহা একরার প্রাবেক্স
করিলাম তাহা একরার প্রাবেক্স



ञञ्जसारिमीट्यावका 🗝

তদেব নিতাং আন্মনুকুং শিবং প্রত্ত্তির্বয়ব্যেক ক্রুক্ত বং বিজাতিননিতি। একনা তবৈয়বে, । লব্দ তিকান্য প্রিকার্যনাগ্রহণ তদুপাস্ব্যের।

১২৬৭ ২ যাবদিদং ভুবনং বিশ্বম-ভার্মতা গভীবং। ভার্মত ব্যোম্যে জ্ব

यांदर क मर्काशा (मोर

क्रिक् 'खाबी'

'द्व (क्वांतर '

বাম্ভি কিবনানি চফে।

ত্যানা হিবত
কাম্ভি কিবনানি চফে।

ত্যানাম কিবত
কামে

क क्रिकेट के नुशु 3 कु कि कुकर मुद्दीतीया युक्तस्या के कुछ है। कार्यकारी नुशुक्त निषका वृक्तः क्रिकेट सुरुश्व देवका

THE RESERVE OF THE PROPERTY OF

इन्छ। प्रकित्रं नेकोन्स्य (ग्री)

3.5

.

· **

শন্ত্ করে ।

শন্ত্ করে ।

শন্ত্ প্রতিপ্রস্থাতারা হবির্দান ও জাক্
প্রবণ এবং বেদীতে কুশা আন্তরণ করেন।

শত্রব হে ইন্দ্র ও অগ্নি! প্রচচনসাদিতে
পরিষিক্ত শীঘ্র উমত্তকারী সোমের নিমিত্তে
আমারদিগের প্রতি অনুগ্রহ পূর্বক অভিমুধে
আগনন কর।

758€

৫। यानी खाशी हक्ष ही या।

ि शामिक गुड न्कारित। रोट श्रेषानि था। निक्तिः हैं-हिः क्रियमा प्राय - जिल्ला भारता राष्ट्र

नटद

many ales

त मकत विकास कारामा कार्ति । य मकत कार्य मणि कार्तिमान यकत कार्य कार्तिमानित्स कार्तिमान स्वारित्स कार्तिमानित्स कार्तिमान स्वारित्स कार्तिमानित्स कार्त

ভারতবর্ষে হিন্দু ও মুনলম। জাতির সম্মিলম।

ক্ষাৰ বিচাহাটী ভিন্ত-মানসকোলে বিভিন্ত বিভিন্ত বিভাগ

।পথের বিজেতা মুদলমানদিগের নিক্চ হইতে সংগৃহীত ক্রাছে।

মুসলমানদিশের আসিবার অঞ্চে ভারত-বর্ষে কিকণ সামাজিক অবস্থা ছিল, ছারার মীমাংসা করিতে গোলে কর্তক এলি অনুসান, ভিন্ন আর কোন সিন্ধান্তে উপনীত হওয়া মার মা। ভারার কি কণ লাসন্ত্রণালীর অনীলে বাস করিছেন, কান্তা ক্রিক্তির করা, অংশকার্ক মার্ক ক্রিক

পুরতিন কালে সমস্ত ভারতবর্ষে কি এক शाकात मानन हिन ? ना कि बकारिताका कालकः म् क्ष क्ष द्राटका विकक्त दहेता কোন কোন অসাধারণ বীর পুরুষ »্ৰত হইয়া কি এই ৰুদ্ৰ কুদ্ৰ রাজা ্যুর্ব একত সন্মিলিত করিয়া পরে এক श्रमके तहर मांचांका महाश्राम कर्णक ह ार सहाबाद्यान गर किन के मकल वादा 8'वन কৰিয়া রাখিয়াছিলেন, তত দিনই ঐ গ্রন ^{লক্ষা} সমগ্র ছিল ও পরে ভাঁহারা পৃথিবী হ₹ং৲ অপসূত হই**লেই, পু**নরায় সেই সকল काका सुक्त गुर्ज अरटन विज्ञुख धरेस रहात ३ র্কিই সকলে প্রশ্ন আমরা কোন মতেই ः एक्षा कलिए भाविन। याँगिनिभएक ornal fein afei, Stein fenfein vollm ্_{সংহল} পর্যান্ত সমস্ত্র উপদৌপটীকে যাই।দি-গের অভিনয়- ্লয়া নির্দেশ করি-माकि, मिका के असे १ कोषा इस्टि भागि-য়াছেন, তাহাও ই গেরা নিশ্চিতৰূপে বলিতে किता।

আদিম জনস্থান নতে। সাধারণ বিশ্ব ইত্য করিছিল ইতিহাসবেতাগণ কেট ইতিহাসবেতাগণ এই ৰূপ অনুমান কৈছে কিছে ভাষা হিন্দুগণ উত্তর পশ্চিম কিয়া The Care And the पर छात्रकवर्ष नामानिकार एत् । हिन्दुशासन काल है। इसि मुक्तिकार करति । एस्त्र नामा प्रशासिक पूर्व विलग्ना निक्शन महिमा करति। तार्छेत शन्त्रमाख स्ट्रेंट यह ७ वरुत वास्तरमंत्र भूर्व-मीया क्लमाइत भर्वेड व्यंगी প্রান্ত শাসন করিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন।

এতহাতীত, মনুর কতকগুলি বচন ছারা हेहा श्रेकी समान हम त्य. हिला कर कारल उ বিস্নাচল অভিক্রম করেন নাই, কিয়ৎ-কাল পরে এই সীমা উল্লন্সন করত ক্রমশং দফিনে অগ্রসর ছইয়া অবশেবে সমস্ত উপ-ষীপদয় ব্যাপ্ত হইয়া পড়িলেন।

উত্তর হইতে দক্ষিণাভিমুখে যাসা ধালীন, নিজ সভাতাও উলিৱা সঙ্গে সঙ্গে আনি-গ্লাছিলেন। এই কলে উল্লেখ্য अनिक्षानाहोत विकाय विद्यार व्यक्तिस्त्रम् बाहे हरू भित्र समान भेगावाली काम कार् জ্ম বিশ্বতে জ্ব **ड**्रांपिटशंब घटन है ५ ८३ई वान्डा क्षणानी (पशिष्ट पाएश) मानः (ग मकल वावका- क्रिन প্রকৃত স্থিত্দিরে বলিন। সর্বারণ করা यहिंद्र भारत, आह एरिय अन्तरामा पेडिस्य क अध्यापिकोस अञ्चल व्यक्तिस् 湖内厚树 耐郁色 175.

शेष्ट्रभाषीम अथग महास्त्रमण्यत् (

মধ্য ভারে

5/5/ SA

ST 18

শৈ জগমে

क विश्व

তেও ভিন্ন বলিয়া প্রতীয়হান হর। সক-त्नरे व्यवशेष काट्यन त्य किन्ध्र मान कर्यू-र्वार्त विञ्चल, स अहे ठल्ड्रालंड भराग १ मामा বিভাগ, যে এই চতুর্বণ ব্যতীত পাহাড়িয়া নামক আর একটা সভন্ত জাড়ি আর্ন্ড, ভাহারাও এই রূপ অসংখ্য পর্নংশে বিভক্ত। अकरन (मिथिएक भां अहा न्यांत्र (र मनूत वाद-द्वात वात्रवात गाहा निरात उद्वाश चाटह, ध्यर अधिकाः म नीष्ठ त्वांगीत त्नादकता

^{🎾 (ঃ)} তিৰেটায়লিংগৰ অক্ষর দেবনাগরীয়ের সহিত मदस्य भाषा दर्भा गाष्ट्र I. Brigge

⁽१) (ब के कि केंद्र के देवनम् मारक्व च उ उ च उ उ THE REP PRICE SHATS EXILER! inter a hand-fee in India.

याशायत अवर्गक, पाशिक्रणत अकि पूर्णा स्वश्न करा अक उरमाह एउड़ा महर, धमन कि नगाल पामिके हहेशाहर, महे भातिया काठित मर्गा। फेल्ड पार्टिका मिकिटा स्विक मूर्य हम, हाशत मुखेल मिकिना-रंगित कान कान द्याराम करण ममस् वास्ति-मर्गात जूननाय तहे काचित मर्गा। स्वाय कित प्रश्नात कृष्टे प्रन्म।

ছেখিত দংগ্রন, তাঁহারা অনেক বার একের ক্ষের গহিত যুক্ত করিয়াছিলেন কিন্তু তাঁ-ারা যে কত দূর এই দেশে প্রবেশ করি-ছিলেন, তাহা বলা সুক্রিন। সামিপ্লা-ছান্ত্র কাল বংশও এক সময়ে এই উপ-পার এক অংশে প্রভুত্ত বিস্তার করিয়া লেন। অবশেষে তার মুসলমান ধর্ম সমুদায় রুষা দেশকৈ অধিকার করিল, দেশ করিই যে ধর্মের একমাকা উদ্দেশ্য, সেই

थमाडे कह दारश श्राक्तमन-त्यांटक श्रात्र करते। वृष्य यन श्रद्धांत्र, कतिन। पाइन विक्रिन, यिनि थात्र २००० श्रृकोटक जातमा ও सन्। स्त পাৰ্যবন্তী খেশের রাজা ছিলেন, ভিনি चनरमत्न (भारमा रेण्डिममदन्त्र करत्वान বচনানুসালে) ভারতবর্ষ পানে মুক্ত केंद्रलन" किनि कामन बांब करें (पट् क्रांश ने किन करिया हिएलमा । उरे हे भरतां क भा ,मदब्बात मक्टे बढ़ाकि शहेर ना. मानुष मा अपार्था स्टा इन्न अभाग नहे छ অংকলে করিণ লট্রা যান, ছাচান খ্যু THE DESIGNATION OF ः (मर्थाः सिशि अने वः ু আঁতা সহকারে অবল ा, नेपातामान व वहि भाविषेष अरमम हि भी बाकशीनपिटगत व्यक्ति हिता क्रम मान में के दिया গ্রেম কর্ম আরকার কামণা ১৯৬ বাল জাজিবস গাঁৱ মোগল ফে बीएल महा वंगात नात व्यवन हैं हु পড়িবে এই রূপ ভয় প্রদর্শন ক ১৮৮৬ কিন্তু এই প্রবল ব্রোভ ভাগাবশ ক্রি मिटक कितिया (शन । शदत है। देखत है। এই দেশ ছারখার করত "ধংশ রাজ্য" এ, अलकीवगुर् छेलासिकी लन्हादक ताचित्रा एकः। आक्रशास्त्रज्ञा श्रेनशास रेन्स्टर्डड विश् र नेटन प्रिक्र लग. बिस गाँउ गाँपक पात थक प्रेचित्रावरगत श्रथान, छाशांषिग्रक. पूर्वा । किता निक भूक द्यामाग्रन्तक छारो-मिलात चारन रमास्ताम । मेनि अपहर निश्हात्रमहाट हरेशा, शहा छारा भूमवाह व्यक्तित कत्रक व्यवस्था कार्यत विक वश्मादक ভारात উखत्राधिकाती कतिया याम । त्मार्गल ताका गीखरे छारात पुत्र साक्नद्रत गामकारीटन श्रष्ट्र ७ श्रीवरवक्ष नहान्। वाश रहेन ताशन हामवरभीरहता क्ष

উড়ার ভারতবর্ষে বন্ধমূল হইবা যাত प्रक्रिय अर्थार माकिनाचा **ऐंशिंगिं**शिव প্রকৃত্ব বিস্থারের সক্ষাপ করিলেন। ইতি পুরে আছগানদিগের রাজত্ব কালে তথায় ए कडक्छलि मुनलमान जाका नः सामिष्ट हडेशाहिल, जोहां क्रम कर करेंगे कतिया शाधिकार स्थाद निसी नजादीत ছইল. এই ঘটনাটী আর্ঞ্জীবের শাসন-কালে সমাহিত হইয়া অবশেষে সমস্ত ভারত वर्ष त्यानमामित्रात अथीन इटेल। ग्रमलयान ধ্যের সংক্ষ সঙ্গে তদ্ধগাবলহীরাও সমস্ত দংক্ষিণ ক্ষম বাপ্ত হইনা পড়িল। गाइनास क्रम लालमांस প্রিচালিত হইয়া া খেল হওত হিল্ড দিংগ্রে মধো কাম এনমে '''* কংকে লাগিল। হিত্যান ও ণক্ষবার অবিকৃত হইল, আবার_{্ধ} P. State O. A. Control of the कार्डि अस्टान्टर्स आफि. २ वर. १ । भूब-अलगः ७ ६४। इन्ट अंत्र हार्य कतिवात या-১০ জন্ম সৈত ধর্ণগ্র সেনা বলিক প্রভৃতি १ (कार्यक - जानमध्यक्तिमः अन्यत् प्रदेश जार्यक्तिसः च बंदना विशेषक प्रसार अहे करण **अदि**-ादबंदे 🗪 धूनलयानितिशत मन्था। ध्यास এক ক্রোর পেড় ক্রোর अधन कि कुते क्तांत्र पर्यास स्टेशा छेठिल। এই समलयानगन ক্ষদ কৰলে পৰিচালিত হইয়া এই অভিনব উল্কুলে উপনীত ছওত হিন্দুদিগতে এপে-খারে যেন আৰুম করিয়া ফেলিল। তথাপি হিছুগণ প্রাপনাদিগের আচার ব্যবহার. हो है मीडि, विशास शवसा, चक्रमरे छाड़ि गत्र नहकारत क्रका कतिशाहित्सम्, किहुम् विक्रु वर्षेट राम नारे। कर करन त्य कुरेंगे युव्य नवन्त्रत विक्रम लाकिन्सि যাৰা কোন কালে কৰিছত বা মিতিত रहर्ष बहर, ककान काहान कता महिना।

लागिन, देशत मध्या वह सूमलमान ममाज অপরাপর তাবৎ মুসলমান রাজ্যের ন্যায় একই পত্তন ভূমিতে প্রতিষ্ঠিত, একই ভাবে भागल भाग करे नमारकत व्यथान, कोंद्रोक रहात मूल गायक । छा-লানা যে যে স্থানে নুধনমান ধর্মের প্রাক্ত-ভাব, দেই দেই ছানে যুদ্ধ, বিচার ও রাজ-ৰীছিৱ গে ৰূপ জলালী এখানেও সেই ৰূপ व्यनानी व्यक्तिक मध्य, हेट य शहर्य है हिन्छ-**দিগে**র স্থা**ল।** হিন্দুস্থারল্মীরা আপ-नथं १ तांक्रमोडित প্রতি এরপ দুদ্দপে আস্তুত **ছিলেন, যে ष्यदर्भारय विकाशी मिशदक ठाइः भाना है।** विशक्ति **চলিতে हरेल। अधिकशु धनलेशी वार्थ**ा-যক্ত কুন্দর ৰূপে পরিচালন 😮 🚘 नश्मापनार्थ क्षित्रिक क्षित्री निर्माण करिट्ट लागिला कराइता असे ७७: मभाक्षके त्यान**्यमा मध्या** सत्रस्यत मर्क्का व्हेट लीशिल अं वह नाम महत्तामा व्यावशाक बहेश द्विक शिक्क एवं लेका मम्ह करे त्य य व वातका तुम्हा करांगा ली भारान मुखाउँ केरे मैंशक हा का ए**रख**ी पूरस् थाकिया, हेराटच गीड अ बल निःशांत्र स्ति धरे खाल अनाना **यरान्** তেছিলেন ঃ পর পর বিরুদ্ধ ও ভতত্ত হইলেও এই উট্টে সমাজ কতক ভলি সাধারণ বিষয়ে স্বিতিট हरेशा विक-गुमलगान-ग्राह्य-अगली अविकास इरे**ल्ड**ा हेश्शकां निरंग्न निरंग के स्थाप वर्ष अहें नामन अनामीक अधीतने भरविष् করিছেছিল ও এই ব্রুইশায়খন সাক্ষা এ भागनावीदन मार्गम त्रामार्गेत श्रामानक कर शहिल, क्रिक क्रिका मधारम्य ग्राम्बर् ्रावटक लाक्ष, क्रिकाटकत चीत्र होते क्रिक খালোচনা করিতে হয়।

थित्त, उत्द धनाना धानूमांकक विषय भा-

डेशदम्भ।

20 माम २२%२ माक !

वज्रकाश्वरती वह वा वा जारवाशां वर्गावरमकान्
- मिहिजार्था मधान्। निरोधि घारस विश्वरात्नी
जरभवः नरमाबुद्धाः छण्याः मध्यमाङ्

যিনি এক এবং বর্ণহান, যিনি প্রজা দর্শের প্রশাস্তন জানিয়া বহু প্রকার শক্তিযোগে বিবিধ কামা বস্তু বিধান করিতেছেন, সমুদায় ব্রহ্মাণ্ড আদান্ত মধ্যে ঘাঁহাতে ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছে, তিনি দীপামান প্রমেশন, তিনি আমাদিগকে শুভ বৃদ্ধি প্রদান কর্মণ।

্ট্র বিশ্ব ব্রস্কালের এই ই ইন্পিনি তিনি সতী ইরপি জ্ঞান স্বরূপ অনন্ত স্থরণ পরব্রহ্ম। সেই একেরই এই বিচিত্র রচনা। সেই নির্বিশেষ পরব্রহারের আ সাম্যা বিশেশ কুশ্ব বিচিত্র বর্ণের স্থানিত ভা হাহার কুশ্বিচনীয় শক্তি সুস্তি বিভাগের সহিত্

वाशीन व्यक्त वस्तावक बालाह, हैके गरधा द्वांस् निक् विहा निहास खेटदेन कहिन र प्रुठशन, याहा व्यापता नित्रक क्षणाक कड़िन रुष्टि, छोशाएनत नकरततारे विटनन विरन्त द्वा, এक छाद्य मक्ति से स छशान ; ভাগদের মধ্যে কোন একটি প্রবল হটুয়া কেন না স্বীয় শক্তির এতাবে সমুদায় জগ-কে তাহাদিগকে ধরিয়া রাখিরাছেন ? সমুক্র रकम ना शृथियोक्क खरी**जू**ङ क्রिट्ड शाहिल ? বায়ু কেমনা সমুদ্রকে ওফ করিকে পারিল? তেজ কেননা উত্তাপ প্রভাবে মধুদায় জগৎকে এদীপ্ত হুদাশনে পরিণত করিতে পারিদাঃ छ्छाभन कनना महाकारम विलीन इरेना জগতীয় কার্যান্তার হইতে একৈবালে চিব্ লাত করিকে পাবিল প্রাক্ষ**্ট**ুর্বিচন . । पट्टाइन ए काल क्षेत्र हेत्। व गर लोकांनार अमत्छ-এই হৈ लाक मक्त गरां मा मः जिन হট্য় যায়, এজনা প্রমাত্মা সেতু ব্রূপ চট্টা ভাষার পিগকে ধারণ করিয়া রাখিয়া-क्रम । क्रम्पार क्रिकाश्य हेत এই যে এক পরমোৎকৃষ্ট শোভা ও সুশৃত্থ-लात थारम छेशनीक श्रेमारक, त्क श्रेमारक শুর্ণ্ডিতে সমূলত করিয়া এবং মিয়মে সুবিনীত कतिमा सामाज्ञदम्ब ठक्क ममदक अश्रादन আ-শ্রন করিলেন ১ উত্তাপের ক্রুব্রি হইতে গতির স্কৃতিতে, গতির স্কৃতি হইছে গ্রাণের ব্দুর্ত্তিতে, প্রাণের ব্দুর্ত্তি হইতে মনের ব্দুর্ত্তিতে, भरमत कृष्डि इरेटक कामात्र क्यूबर्ड विर्मान केह रहेट डेक्ट्र ताथान निश्च कान् मुक्क गर - त्वान प्रजाब त्वरा-विशित ্বিৰকে নত্য, শোভা এবং মন্তুলয় পৰে महेशा 'एमिटएटक्स ?- "शिनि अक वेबर अर्थ-क्रीनः चिति अनिपारिते श्रीयान निया वर्ष अकात लिखारमारा विविध कामा त्रव

विश्वक क्रिक्ट्रवस - वितिरे तारे गुरुक महा किसिरे टार श्वाप करा। भवरतम क्षात्मा अस् कश मटर, भन्दत्तत क्षात्रास्थ क्र कटलं नाविक इस मा। पार्कु क्लाउत वर्ष्ट्रम अक बल, छिक्टिमत वर्ष्ट्रम अना कल, क्षेत्र कडत शायन এक दश. पत्रावात शायन অনুয় ৰূপ, একেন যাকা বিশ্বতি অন্যোৱ हेंग्रेक शहरि अक्रुकि-आहत याहार की उस विसक्त द्रम, अत्यात छाशाद्य कीयानन मक्षांत्र हस्। याद्या উদ্ভिদ্ধণ পরিতাগি করে, हारा भीरतन मेश्रद्धांशादर्थ धार्व करत, যাহা জীবগণ পরিত্যাগ করে, তারতে উদ্ভি দ্গানের প্রাণ পোষণ হয়। প্রকৃতির অনু-গামী হইয়া চলিলে পশুদিগের সকল কা-ু দনা পুর্ব ২া, িক্ল**ন্ট** প্রকৃত্তির বিপরীত পরে b'.০০০ **অগ**ি জ্ঞান ধর্ম প্রীতির পথে या प्रमुखाँ न न ं भार छक्त अहे साल छक्तिर हरेटल्ट्स। अहे 😁 ু চন্দ্র স্থর্গোর উদয়ান্তে—ঋতুর পর্ণ্যা-केटा काटन गर्श नित्राम स्मर्टे अक ক্ষেত্রীক পুর্যায়: ককলের কামনার বিষয় कारत पूर्व काल शक्तिवर्गन कविटकरकन, ेयापार्व्याद्वारकार्यान्यान्याद नायहानाः नमान्त्रः। वश्मत्र वश्मत्रीनत्ववि यथारन ष क्यान भटर्यन ध्वदशासन, । छ। हा है छिनि विदान केंद्रिकास । अहे भूथियों जक-কালে বাশানয় কুজ্বাটিকাময় মেঘারত লোক रिना ककरा धनधाना पूर्व त्यां जागा ताका ्रहेंब्रोट्ड. कठकान अठिकास इरेग्नाशिग्नट्ड ক্যাপি কাঁচার সেই অতব্রিত জান এবং े ने अंडिश्क भन्त रेक्। এक निरम्दवत कना ७ विकृतिक अनेवा मश्कृतिक हम नाहे, कि अविदय, कि बदक, कि महना, कूळाशि छाहा क्षेत्रक वा कादाकां का स्म नारे, "म ध-बाह्य के कि कि से कि स्वाप्त कारहत, रुला अ भारता अमार विकास गर्वनाम, पाउ हुउ-

क्य मक्ताब किलिये वर्कणान, मकल कारन সকল কাজে শান্তিন থাকিয়া ভিনি প্রজাদি-रशत नामा मर्भ विकास कार्नाट्टम । विद्रान यकः सनुषाहकः विकेतः । । । हर्कतः । । भानन स्वित्रहरूम, अविष् गाँविका सा व्यक्तिया मनुषा निर्फ १९७१, नार ४ मान शहसाक्रम ३ त्मरे स्था । एड्डा १० १० १०० माधाना ●新の一個個語は 🏙 リー・オインション 前海山 新文· 在这时 中国 · 图图图图 বশবন্ধী কইয়া লোকামত ত্রু পঞ্জিস পরিধান করিভেজে, বিশ্বন প্রদেশ মঞ্চর मगरी ७ गई। एक मुस्तानिक करेशा सुस्ता व्यापाय काम हहेटाइ, यम मधी अनुहास भनुषा धालन घडेके माण्डन निहनां। कदि-टकरक । अने करण अनुदयान भागा ८०छ। নানা দিকে সিঞ্জিতে গ্ৰিচৰ চন্যা আনন্দেৰ উৎস উন্মৃত্যু কবিল কিন্তুলা বিজ্ঞ ১৯৮ **७७ यमुण मार्ल** अकाम गाविस CECE 到11 网络中部 古事中的祖子 12 আহার পানাট ওঞ্চিজ বিষয় ১ সই মনুযোর উপজাবিকা নলে, 🔑 😂 🦖 भनक्ष (४ ४(३२ १३३) 🐇 🤊 **সহিত সংযুক্ত হ**ৈছে ৩ - ৩ ৯৫৫ नियुष्ट अन्यक्षर । . . सक्षात् च को अना भागा है। े किष्टूर स्ट्रे পরস্তু মনুষ্টে 🤏 👛 पुरुष बिर्देश कर एक एक वर्ष अस्ति करास्त्रिक 一一一一一一一一一一

मण्यास्थ । स्था भारत इत दिशामि (महे क्षा । (यसम कीवटन एक्मिन मृक्टिक, ঘেষন দুখে তেমনি ছাথে, সকলে অবস্থা-তেই তাছার কল্যাণ সঞ্চিত হয়। এই ৰূপ অঞ্জন্ত কলাবের আশ্বে কোথার অবস্থিতি ক্রেন : আমরা ঘখন অসৎ পথে প্রবৃত্ত ' কই, তথন কোথা কই**তে শু**ভ ুদ্ধি জাসিয়া आमाभिताक मध्यद्ध कियारेता आर्ट्य र আমরা যথন ভ্রম প্রমাদ মোকের অন্তকারে याकार इहे, उधन क बामानिभक्त था-त्याक शमानं करत्न । (भरे **এक प्यवि**ष्ठीः প্রমায়া যিনি বছ একার শক্তি যোগে সকল লোকের সকল প্রকার কাম্য বস্ত বিধান করিতেছেন, সিনিট আমাদিগকে ঠাছার সংপ্রাপ্ত বুলা, করিবার ক্র क्षार्ट अज्ञात एउ दक्षि विभान করি। তছেন। তিনি আছাদের আছাতে कोलाहान . आर्ड्स, गर्थम डीक्टिक आपड़ा ল, ভখন সংঘারের কেনি 'শবছাই নিগাকে ভার দিতে পারে মা। শরীর ুৰ ছেবে শুক্তাক স্থাসন যে আল্লা ভাষাকে ग्राम तंत्रभाषा में लोही के जाति আল্ডেন, তথ্ন মণ্সরি কালে ার বর্গ সকল व्यागादात इतक किम नित्र भवामक योहाइ। (बाध इटेरा ? डें।हारक यथन आमता साति তখনত তিনি বর্ত্তথান। ব্রুর ক্রাপ্তাশ एक्स मंत्रीदत्त अपि निवातन इस महे जुल উচার অমৃত্যয় সংস্পার্শে আমানের আঁকা প্রাণ পাইয়া প্রকৃতিত্ব হয়, আছার ভারতে मुक्त ८७७ मा, तारे न्यार्ग-मनित्र मृश्राद्रा আত্মাতে অনুরাগের উদ্দীপন হইয়া মাত্মা टिटकाम्ब इस । य পथ शूर्च तकनीत **अक**-কারে আরুত ছিল, আহা দিবালোকে উৎফুল পরব্রের জোতি আন্মতে উবিত

লোকে তাহার যেমন কল্যাণ সাধন হয়,

রজনীর অন্ধকারেও সেই ৰূপ হইয়া থাকে,

হইকে পাপ ভাপ তয় শোক বৃহনই তথা হইতে পলায়ন করে। বৈই দীপামান পরবাদ পরমেশনের সহবার রূপ ভাত ঘটনার জনা ভ্ষিত্তিত হইনা আমরা সকল আতায় মিলিয়া ভাহার সমীপে দণ্ডায়মান হইতেছি, তিনি আমাদিগকে ভাত বৃদ্ধি প্রদান করুন।

শ্রীযুক্ত বিজয়ক্ক গোস।মির প্রশাবলির উত্তর । মুপ্রশাবলির উত্তর ।

১ম প্রস্না আন্মারা সর্বন্তি গইতে সভা গংলু কুরিটত পারেন কিনা।

উত্তর। সর্বশাস্ত্র হইতে মত্য গ্রহণ কর। जाकाधर्मात्रे छेश्टरम् । चयत् रायम स्थत शनख अजास मः कारतत वर्नदर्सी क्लेश मकल कुमुभ इरेटवरे मधुद प्रम धर्ग करत. ना निर्देश स्थाप ने मा निर्देश জ্ঞানের দৈব আলোককে আপনার গধ প্রদর্শক করিয়া সকল শাস্ত্র হইতেই সভোর भाग मक्लम करतम। ब्रांकामिरगत छेमात চকুতে কাব্য, সাহিত্য, ইতিহাস, বিজ্ঞান, গণিত, ভুগোল, বাইবল, কোরাণ এছতি नहीं सिंहे अर्थनां अन्य वानाच वार्यक ম্পিত্ৰ এই সভোৱ গুমা<mark>ৰ স্কুপ দ্ঞায়-</mark> भाग विश्यादक। তবে এই माद करजम, टम देशयादताम अवर आदमतिकात अनुनाकन র লাগণ বেমন পরমার্থ তত্ত্ব বিষয়ক **বভা** সঞ্জনের নিমিত বাইবলের আতায় এছণ করেন, ভারতর্যীয় আক্ষণণও সেই ৰূপ क क्ष्रांचन अविनित्रोत क्ष्म क्ष्मत-

১ইনি জীযুক্ত প্রধান আচার্যা নহালয়ের নিকট কথকটি প্রশেষ, উত্তর প্রার্থনা করিয়া এক বানি পত্র লিখিয়াছিলেন। প্রধার আচার্যা নহালয়, আমাদিয়ের নিকট নেই পত্র খানি নাটালী লাগালগের উপকারের নিমিত ভাছার উত্তর দিয়া প্রিকাকে প্রকাশ করিতে ক্সারোধ ক্রিয়াহেন। विष्णुक तका जुवान शांक अव्देशन निमिष्ठ तप्रिक कृषिक स्थ । शिक् शिकामशांकित अफिनिटनव अनुमाश मनुषा गांदजनरे चकाव-

হয় প্রশ্ন। ঈশবের সভ্য দেশ ভেদে কাল তেনে অপবিত্র হয় কি না ?

জন্তর । আমরা এই প্রশ্নটীর মর্মার্থ
সম্পূর্ণ রূপে প্রহণ করিতে পারিলাম না।
স্থারের সভা কর্মনও কোন কারণে অপবিত্র
হইতে পারে, এমন আমাদিগের বিশ্বাস
নহে। স্থারের স্থা কিরণ যেমন পৃথিবীর
সর্ব স্থানেই বিকীর্ণ হইতেছে, অগচ কোগাও
পৃথিবীর মলিনভা উচাকে স্পর্ম করিছে
পারে না। স্থারের স্থায়ি সভা সেই রূপ
ারে না। স্থারের স্থায়ি সভা সেই রূপ
ারে না। স্থারের স্থায়ি সভা সেই রূপ
ার না বিশিষ্টে, কাল নির্দিশ্যে, জাতি
নির্দিশ্যে এবং বাজি নির্দিশ্যে জাতি
নির্দার অপবিত্রতা উচাকে অপবিত্র বিত্তি মানুদ্রের অপবিত্রতা উচাকে অপবিত্র বিত্তি স্থার্থ হয় না।

ত্য থাকা। হিন্দু মুদলগাল, শৃন্ধী রান্দির্গের শাস্ত্র নতন যাদ কোন সভা পাওয়া যায়, ' বাহা ঈশবের সভা কি না ?

কপান্তর নারে। সুকরাং ইনার পৃথক উত্তর আনার্কান কলিয়ান হটাদেছে। যাহা সভা তাহাই ঈশরের সভা। সভা মনুযোর কপোল কিপাত যন্ত্র নহে। তেই স্বয়ন্ত্র ক্রাংই সভা স্বরূপ। তিনিই জগতের সমুদ্য সভার আন। গাঁহা হুইতেই সকল সভা নিঃসুভ হুইতেছে।

वर्ष क्षेत्र । **अस्त्र উপদেশ** ও সাধু দৃষ্ঠी छ निकार क्षाराकनीय कि मा

উত্তর তন দ্বার বিশ্বের শক্তোচনারণ এবং প্রকাশ্বর সমুদার শিকাই শংশতঃ উপরবাশ এবং দৃষ্টান্ত বাবেক বিষয়ক শিক্ষাও যে অংশতঃ পরের উপদেশ এবং পরের দৃষ্টান্তের উপর নির্ভর করে, একথা বিজ্ঞাসা করাই অনাবশাক।

६म क्षत्र । विषान्, मूर्य, धनी, धितिस, विष्कृ, सूमनमान, थृकीतान, य याकीत य क्षित्र वाकि करेक छेलाममा लाहेता क्षेत्रक अला वाल करेक छेलाममा लाहेता क्षेत्रक श्री क्षांत्र करेक वला यात्र कि ना ।

উত্তা হলি বাজি নিলেক। নিকট কোন মনুগা বিশ্ব বিশেষ বিশেষ শিক্ষালাভ করে, সে অবশাই উলোৱে কলা নিলা আকার করিবে । হলি বংশালা বিশ্বে বাকো, কিয়া দুইটারে আহা লগা নিলা পিত হল্যা দিহরের জনা লগানিক। অগবা দুইবের বালে মানুল্য বিশ্ব বিশ্ব বালিক প্রকলন কেন্দ্র কলাল কলা বিশ্ব বিশ্ব কলান সকলা লাকেই নিলা বিশ্ব বেন না। মন্ত হিলি জ্বান কল কলিয়া সকলোৱ পুকা প্রত্যে কলিয়া সকলোৱ পুকা প্রত্যে কলিয়া

मारे ।

বায়ু প্রভৃতিকে ১০০ তা ১৯৯০ বায়ু প্রভৃতিকে ১০০ তা ১৯৯০ বার ১৯৯০

ইতিয়া কেশ ক্ষান্ত কৰারের হালিয়া কেশ কিল্পু ক্ষান্ত কৰার ক্ষান্ত করা বিলয়া পুজা করা রাক্তিনের বিলয়

१म अनु। मनुषा सम अध्य नाधू लाक-भिग्रेटक अवजात विलिया शृक्षा करत, छाहारक नाधू पिर्श्व अश्वताथ कि । के गक्स नाधू-जीवरनत कृषीरक पणि मन निर्माल इस, छरव

डे माड

ধন্যবাদের সহিত সে দৃষ্টাস্ত গ্রহণ করা । উচিত কি না ?

উত্তর। এই প্রশ্বাদীর উত্তর প্রদানে আ-মাদিগের অন্তঃকরণে ছংখ এবং কর্ম যুগপৎ উভয়ই উপস্থিত হইতেছে। ঘাঁহারা জগতে সাধু এবং অবভার বলিয়া সম্প্রদায় বিশে-যের শ্রন্ধা এবং পূজা লাভ করিয়াছেন, উাহাদিগের নিন্দা করাও ছুংখ জনক; অথচ ্যে সম্ভ ভ্রম এবং অসতা ঈশার এবং মনু-त्यात मत्या ध्यस्ताम करण मधार्वमान हमः, क्ष्यान्य त्राज्य निवास्तर्भ विषया विराम्बर्ध त्कः माध्र भटिश् थाकां अ क्योजनक। জগতে জন্মগ্রহণ করেন, অংথবা বিশেষ কোন गूष्ठ अटर्न मानू इस. अहरतः झारम् ७ कथा-তেই সরল চিত্র লায় দিকে পারি না। मनुषा, ८६म्डे। अवः माल्यान नरम, उञ्चित्र १८८ यह टान फाजनत कंपन मा, उनानि ता भनुषा है, का भारत ज्यात भः भारत गारी। वाश्वाशत ্ একৃতি, যে প্রকৃতি, যে আছো, महें द्वादृष्टि नमें हे देखि,

নিহিত মহর, বিচয় উপদেশ এবং, মতের
এতাপে নিদ্রিত রহিয়াতে, যাঁহাকে আম্রন
নাপ বলিয়া নিশেশ পূজা কবিতে ইচ্ছা কৃরি,
নাহার হয়ত দেই সমস্ত শ্রেষ্ঠ ইন্দ্র অবস্থার
অন্তর্গতায় অধিকতর নিজমিত কাঁশাছে,
অথবা অধিকতর সাজলামান রূপে লোকলোশনের গোচর হউতে প্রার্থিছে। সাধু
ে এই মন্দ্রী কি আপেন্সিক, না উপ্যা
নির্গেক্তা এক হউতে অনা অধিকতর
সাধু, ৩ বেথার অর্থ সকলেই বুর্নিবে এবং
থে দশ জন ইউতে কার্যা কর্পে অধিকতর
নাধুতা প্রদর্শন করে, সকলেই তাহাকে অধিকতর
নাধুতা প্রদর্শন করের সকলেই তাহাকে আমি

वाभादत नगासत भव व्यवस्था करिक ভাষারাও সাধু শব্দের ছাচ্য ছইড এবং এখনও শত गहन वाकि इतना, वक्षमा, পূৰ্ততা এবং শঠতা ইইতে বিবৃত পাৰিয়া সাধুরপে জগতে পরিগৃহীত এবং সন্মানিত क्ट्रेटबर्फ । नाधूनिगटक त्रीं क्रिक मणान করিছে, ক্রজ্জভার সহিত তাঁহাদিগের দৃষ্টান্ত গ্রহণ করিতে, সংসার কি বাকো, কি কার্য্যে, कथन अभिन्य करत नारे, जवर क्यन अ निरुष्ध कतिरव ना। किस्तु यणि मश्भारतत व्यक्तिकारण प्रमुश्राहण कामासू ट्यानीटक निदय-শিত বরিয়া, সম্প্রদার পূজা কতিপয় ব্যক্তি-विटमयटक मांधू साम अमारमह जसा यज्ञ इहा, তবে ন্যায় ও ধর্ম এবং বুদ্ধি ও উদারতার ভাব हेगात। सकलारे दिस्ताधी गरेस्त । यान **হটতে এম্পুর্ণ বিক্তিট যদি সাধ্তার অর্থান্তর** इत, তবে সেই শুक्रमभाপविक्यः পूर्वेबक विना জগতে সাধু আর নাই, এবং যদি তাহা না হুট্যা সাধুত্রে অর্থ আপেফিক হয়, ভবে क्षां के भविष्य के किन्स माध्य ध्वर मकत्त्र ष्ण्या कार्य । जारून, कार्यस्त सन्त्र्या "অ'ম নিম্পাল হইয়াছি" বলিয়া গ**িৱত** উক্তি করিতে সমর্থ হইরাছে : এবং কোখারা ≗ें उल मनुषा पृक्त करेशांटक. याशांत अपटा NIN WILLIA TENT THE VALLE - STRICT অভি সাধ্ বলিয়া সংসারের প্রকা ভাজন ংইছাছেন, জাঁহারাও সময়ে সময়ে **অনুতাপ**ি বিষে জত্জবিত হইয়াছেন, এবং শাইবি चन्त्रभा चनाशु विनत्ता मनूषा नमाटक पूर्वा न्भाग व्हेसद्भः कार्यसंत्र नगदसं नगदसं नगित कि नहां किया वर्ष दुक्तित वनवर्जी हरेग्रा कार्यः बिरमरगत जानूकीन क्षिप्राटक । .गांधू-ক্ষান্ত এবং অসাধুতার অসমান আ-भड़ा नर्बारुग्दहर्ग काममा क्रिन्न क्रि मनुवा कांद्रिक चानात माथू जबर समाधू जहे हरेंगे। न्ताका माधिए रिच्छ स्त्र विद्वार

सनुत्मापन सन्दिक भारत ना। आमानितात दिस्कनात्र देश छेपात खास्तर्यस्त मन्तृ ने दिस्क भटा देश मनुत्यात छेमछि धरश आमात सर्द्यमु त्म श्रेम्नाचाड करत धरश मनु-त्यात निस्नय स्मादरक शतक्ष्यमाम नेका छुम के भक्ष कतिया कृतन :

র্যাহারা পৃথিবীতে অবতার রূপে গৃহীত ¥हेरण(इस, ध्वर सन्दात स्प्यमाण के करत প্রাপ্য ভবিন-কুমুমকে সমান ভাগে ভাগ করিয়া ঈশরের সহিত উপভোগ করিলাছেন, मिक्र निक अवसाह । अहिलाश्रानत निभिष्ठ দীহার বাক। এবং কার্যা ছারা চেকা করি-গাছের কিনা, তৎসম্বন্ধে আমরা অধিক বাকা बता कहा आवशास गत्न कहि ना। जगरजह रिकामें जादाद मार्की लाउन्म, कुर्क ্ এবং সহক্ষম প্রজ্ঞতির মীরন রুড্রেই আহার আমরা তাঁহানি **建筑的作用** 1 বন্ধক ও বলিতেছি না, অথস अधित अग्रमिक् वन्ती ना व 13 THE ... थाकिएक पाति सा। থ্ব-ভারত শাবাল না করিলে. , भंद शङ्ग निक निक श्राहित धर्म क्रांस्ट विशाम अवश असात महिक गृशींक हरेटब मां, त्वांव रहा अहे जाडित अयोग श्रेमीहे छोहाता मन्त्यात শব ভাউর অপবাবহার করিয়ালেন গ উল राश्चिमत क्षिर्मण वावर मुखीटखत मटता सामहा वक्षेत्र छोन नाई, सामदात महिल कारा वादन करिया। किन्न चन्यान्त्र प्रमूटगान महिक दीशामिन्दिक भागता दकान परदान चठक अवर नाष्ट्र रक्षशीत मनुगा विलाश विचान कति मा, धारः श्वरतित माम श्रकातत मतक नत्त केलिटनइ व नाम लाजाइ कवा. ज्ञेयत विकास सारमानको अधिना प्रमह महन गहन विश्वास सहिमाक्ता कविलापन THE WARE AND APPROXIMATE

৮ম প্রশ্ন। উদার ত্রাক্ষণর ক্রমার কর এক মাত্র ধর্ম কি না

উखत्। डा**या**वर्ष गयन न प्राप्ताः আবন্ধ, কিয়া জেনার ্তা সর্মাতিক্ত চ ভূতি বাৰ্ষিক জাগে ১০০২ না হইছা ১০ बहे कि हा कि इसके हैं। अपने महिला कर বোধক ৰূপে জনতঃ * 18**64. 2**004 -छेहा मधुमात उत्तर है। - বাল্যা ১০০ श्रदीह हहा। F Chilly State W. যাবং ব্রাহ্মধর্ট হয়ে ত প্রাহ্ম ক্রিক্ত करिक्ष साम्राहर स्थान प्राह्म स्थान করে, যাবধ আজালালে প্রামান্ত্রিকার দেশত **श्वरत भूमात कान्य** प्रमुक्ति गाँ स्था राज्य डेरा मस्यमारण्य भाषा है। हा स ना शाहत. छेवा कावल, महाबद्दी पण व वाप কাৰির ধর্ম কর্মান এবং উস্কেশ্য প্রাক্ত वर्ष जान व्यक्तिक्षण व भागति । १ ११५ **ें हे डेप्टॉ**स कहिन लें के इंटरपून प्रकृत জ্বাকে প্রচারিক 🚁

A LECTURE STATE OF THE PROPERTY OF THE PROPERT

Place decrees. as far as it by so to and a principal do so. Brains Jak to the bear day in me of the fundamental treels, or referren, which are the equation of party or the whole burguernes. Moself concludes las troutles manual than Philosophia Trackeneres of the Age with muck part The fight and all you got truth which get a course of the court services and arrange of the survey THE CHARLE WHITEH OF THE PLANT THE handoney of religious shares in the same direction. Its renderty is now in reveal itself in its trat chracter as ed on the universal consciousness

The Brahmos have been of mankind. charged with making self as the standard of religious truth, but how can this charge be properly brought against them when the universal belief of mankind is the basis of their roligion? Brahmoism is the highest developed and the truesi form of religion. Each form of religion played its part of interpreting the fundamental truths of religion to mankind. Each form religion succeeded in some degree in serving as such interpreter, and fails I also in a certain degree. Brahmoism has proved to be the best interpreter Of the or truster. Profession, as mich terpreter, embodies in itself the crath other phylins, ar share he has parely and down to consequent to shown religion one of the old malightus, out that, in conscioutionsly fulfilling its task of being the corremest laterness. er of the fundamental truths of religion. the correct interpretations given by other religious cannot but rear december on Party on continue the oths of all order of his are as it is only true religion unnic with and absordition and wort of acceptance of so mankind and as it admits whose himanity to a participation of its benefits, it is called the Universal Boligien

According to the plan which I have said down for my tecture, I should now treat of the assential characteristics of Brahmoism. They are:

in -- It truthfuluges.

and -its simplicity.

3rd .- It : catholicity.

ath .- Its sprituality.

5th.—Its barmonious ch.

eric-Its sublimity.

7th. - Its swentness.

8th. - I is utility:

oth.-Its humility.

10th. - Its progressive nature.

11th.—Its friendly demeasour to wards other religions.

12th.—Its benign but effective mode of propagation.

The first essential chracteristic of Braumoism is its truthfulness. It does not stand on the authority of a single individual, but on the firm rock of the common consciousness or universal reason of all mankind the only medium through which God reveals Algious truth to man. Its scripture is the outtion; its teacher, God. It is pure truth not mixed with errors and absurdities as other religious of the earth are, In this respect, it is the express image of Him who bar. have control our Vertils that truth of tifucione ene great abode of truth.

The next essential chracteristic of Brahaoisra is its simplicity. Its truths are what fall in with the universal belief of them, and are so simple that they can be suderstood by men of the content as well as interior intellects.

the next essential chracteristic of Bralmoism is its catholicity. It does not believe that truth is confined within the narrow circle of a party or It believes that religious truth is to be found more or less in the scriptures of all nations and the writinga of the pious men of all ages and Brahmoissa does not tell comstries. us to love only our own nation but all mankind—only our own nation the paore. It does not make any such distinctions as the Greeks of old did. between the Greek and the Barbarian, or as the Hindu does between the Hindu and the Michobha but admits whale humanity to a participation of its benefits, which as the air of beaven it imports to all mankind. It does not believe that God loves one particular nation or the followers of a particular religion in exclusion of oth

nations or the followers of other religious, but that, in every nation or religious denomination, he who loves Him and does the works He loves is accepted with Him. It however believes that one path to God is straighter than another.

The next essential feature of Brah moism is its extremely spiritual character. It does not believe that a particular time or particular place is necessary for the worship of that lieves, whenever the mind become: concentrated upon God, in that time and at that place should life in worshiped. It believes that there is me particular place of pilgrimage upon Charles of the American F. Phone many A by . . . 4914 and is its only place of pilgrimage. todays not believe that the offering of drawing and fruits is necessary for the workin of God. The flowers of love and veneration and the fruits of grand works are its only offerings to thin. It does not bolieve in the esproper allower of cites and coremonies. lus and cornaunies are actions promoting the good of mankind. though is does not believe in the ospecial efficacy of rites and ceremonies, it does not at once dispuse with them. It does not believe that lavo lessness is religion. It does not be lieve that austerities and severe more which will the flesh are necessary for grating the favour of God. The res traint of the pro-

penances are necessary for the expintion of ain, Sincere repentance is its only expintion. It acknowledges no services his sairy sacrifice is that of selfishness at the alter of directions.

The area of the feet of the fe

ject, I repeat what I have said cises where:

"Brahmoism is the relegion of hermony. It is weither a religion of ferney on the one lead are religion of duit quiedism our sie. . . . It is neither a १९५१) पुराक्षक कोई अक्रमें ए ए । हिंदू , अनुसार्यायक को स्थितन हैं स or the a time known in Lorent of work. the there will be a second to the first welling. rogion of medication Bx 额 如 好机 。 at the conservations on the bands a a religion of aution at the as , of moditation on the same neither a religion of the state of the one hand nor a 1 to ... those no the other. I'm n of land penals believe in this c The State of Land Call Fag. of of proceedings to the finited at a suffer of the lated thith on the office a religion of forms and consequence the one term and a higher of an-& I worked with not now farmer at Later Briger Reader in the Samuel

Lamber a pliging in Sand Forot root to telegous touch to on the one hand pura religion to coning total want of the same on It considers religious . med to correct in a factor was ation that one **建数位置 机**多位。 "不少时间被"有限"的 " 。 " WHICE. 華. 湖田鄉 智,42 commission and quality, deserted in the second, or appetite t greens for a Color of an unnecessary; that it requires only grapes regulation to subserve the temperal and eternal interests of man. From divine communion down to the

practice of common prudence and the enjoyment of innocent recreation, it considers the exercise of every himman faculty under proper regulation and a harmonious discharge of all our duties, duly subordinated for the seke of harmony itself to be true religion. This law of harmony is the true by wheel and all common is the the any religious docume really notices with his liminsm. Any doctrine or practice that cannot have doctrine or practice that cannot have been facilities.

The next essential characteristic of December is the subspaces of acdescribes Villa our be near with Airect A Committee of State and the said by Beautional of a second of the light so appear as a the idea entertained 1. H. M. Minn's a riph some. Christ larger and Malasan lards a believe Conf. though omnipresent to be partisuarly manifest in a certain place called he wen, but Buddensism saws that their as the transport in which is the inand the limited of the comment of regard to of any other some buildings laws, be such a softler Chartines, began of the production. This is w well by Photon.

an incrementaries. Its peculiar continue to the continue to the peculiar and the bould and the bould and the continue part and thirdly, its ideas of the least and the continue part and thirdly, its ideas nearly and justice, or makes nearly of religion. Chart, or rether the libbrew prophets before him, said: "Low thy God with all thy mind and with all thy beart and with all thy strength." And "Love thy neighbour as throat." Here the Bible makes soff the standard of our loying others. But

Brahmeism makes our love of God the principle from which should flow our love to others. It says that the love of God and doing the works he loves constitute His worship. In this respect, as in all others, it is superior to Christianity and other religious. It is this complete pervasion of Brahmoism by the spirit of divine lovewhich makes it so peculiarly sweet. Its temperating spart also communicates out sweemens to it. It makes God mar to man and man near to man It believes that God loves man as a theher has child and is easily Back Sectionaries all as said as brethen as some of the Talle of the same gress, national W-feelling will disaspear of cause nationalities will Man will become brost buto amain. men all over the gradd. The following lines of Tennyson very well express the connecting spirit of Brahmoism

You so the whole, round earth is, every way,

"Restal by gold cuttins about the foot of God,"

The next cause of the peculiar connection of divine agrees with divine pastice. The Christica and Mahoinedan religious say that a piers will be consider roasted in Hay But Brahmoism tells us that since, being puplished for their since.

alization of the Father's all-mercifulnous which, in addition to other causes, tankes Brahmosm so particularly sweet in its nature.

The next essential feature of brokmoism is its utility taking the ware even in its strict Benthamits assas. If Brahmoism prevail in the stry evil customs and restitution will appear from it Brahmoism seven the

[.] So, Bolima advice, Camion and Holp.

man and this would necessitate the adoption of an effective system of education, causing such development, and what blessings can we not expect from the universal adoption of such a system of education 1. The prevalence of Brahmoism will diffuse true love

among the different nations of the

earth and abolish war from the world

The next "essential coarse produce of Brakenoism is its humility. With regard to its minima, apports of m, it is worthy of remark that a does not pretend to know more than what all men know. Its mode of illustration and explanation of the truths of religion known by all men is of comes superior 3.1 1.00 1 子形为《精麻蜂 to that of all ist. in the east! our substantially it does not profession to know in shon what is record to all mankind by God. L. this point of humility, it is superior to all other religious of the earth. With organd to its humility towards God, it is to in observed that it does not proceed to preserve into his mysturius... Ily is a thrown a screen before our spiritual same. What is outmilled the spreading on a course because . in hidden the surface - over a not about sacrifigeous on on part a try to lift up the screen and to many what is bahind it. We think we surreed in lifting up the screen but in remite we cannot do so. The consequences of each presumption at erroself-contradiction and confusion. What is ligoessary for our salvation, God has given us to know. What is unnecessary for our salvation, He has not given us to know. Perhaps it is good for us that we shaped not bow more. Had we man the notions forgerty and the see of God in Milita fulness we would be so seen the Sensie in the Grecian Live religion to selves for the if we

had seen more vividly the happiness to be enjoyed in a future state of existence, we would have been at once disgusted with the present life and become completely until for worlding tensions.

實際的 多硫烷基 人名英格兰特别 医二氏病 医二氏病 Brahmedway and sugar a constraint Of the sayout ! Harley Same win by grant grant Brief Harris will be progressed to the poetical expansion 14 to \$ \$ 15 miles and their applies for the term and ed conserns of File State of the second " Whose religious v and minimum differ news of square . Now that a second of the second as year provailing are a country to contra proper interpre um neuformaket o with more to race. The same SCHIR (1) ed. Sant a grant of have shown in st axional in al y or known front in profession Burga stience of . of Greatment the rallyioump or our humbiy pur i 😘 re wheely of religious to Buy more than the second of the second of the second second second well in twen it will needly the intelliger and the toarned parties of manked by as scientific character and the man of the people by the simplicity and the sweetness of its doctrines. This scientific exposition of its doctrines will highly oundire to its inlyantage. There will also be progress in the poetical exposition of them. Poets and preachthe inspirational more than the scientific element in them and illustrate the doctrines of Brahmoism with increasing beauty and felicity. There will also be progress in their applies tion to the manifold concerns of life. If the doctrines of Brahmoism be practically applied to all concerns of life, society would wear a completely different aspect from what it does now. But that progress should be gradual. We should not everturn society inorder to improve it.

(To be continued.)

বিজ্ঞাপন

বর্ষ কর্মা হওয়াতে ধাহাদিনের অপ্রিয়
মূলা নিংশেষিত ইইয়াছে ক্রিলা ক্রিয়া
বর্ষের নিমিত্ত অগ্রিম মূলা প্রের্মিত করিরে। অগ্রিম মূলা অগ্রে প্রদান না করিলে সমাজের ক্ষতি করা চর।

যাঁহাদিগের নিকট পতিকার মূল্য যাদশ
মাস অনাদার আছে, তাঁহারা অনুগ্রহ করিছ।
বৈশাথ মাসের মধ্যে উহা পরিশোধ করিবেন। নতুবা সমাজ কৈন্টে মাস অবধি
তাঁহাদের নিকট মাশুল দিয়া পরিকা ক্লেরণে অসমর্থ হইবেন।

আগমী b বৈশাখ রবিবার প্রাচ্ছের ঘটকার সমত্যে মাসিক ব্রাক্ষসমান হইবে

व्यागामी २० देवनाथ द्रविवाद श्रादक व चिकाद शद्र व नातः काटन १। चिनाद श्राह क्शली खान्तनमार्द्भद्र नावश्निद्र विकास क्षेत्र

The state of the s	
CONTROL OF THE PARTY OF THE PAR	SALAN SA
	The strength of
*11	17 ET 10 -
747 TO	A STANGER OF THE STANGE OF THE
ক্ষান্ত	3084 1/18
414	さず(れ)という かいとうし 一つ場合 新生 さかか
***	222 10
হিত	
129	V
Territor	
श्राम	
उपनियमि	3 P 3 # 3#
उन्दर्शिको शक्ति।	
्रकानम	A. T. Take
	EP 130
TO THE STATE OF TH	285 IV.
গ স্থিত	
	202 100
नम्कि	The state of the s
464	2284 M.
* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	
ंडा च नमाळ	
	425 m.
जतररा अभी मधिका	39910
3.54 100	
	3 c 8 1/3c
य अविष	5 8 8 h/t

The state of the s	3 b 9 harman
ামষ্টি	. >> 1.
सान क्षां क	t t
विश्व माराक्षमांत्र के दिवे :	
विश्व माराक्षमांत्र के दिवे :	
विश्व स्वत्यक्रमात्र बोक्तं । धोर्थाम जान्या महानद्वत वाह	
श्रीपुक्त रमरतकामांच केल्का व्यथान चाराया महान्यद्वत वाहे चंद्रा वहेटक मान काक	
विश्व स्वत्यक्रमात्र बोक्तं । धोर्थाम जान्या महानद्वत वाह	
श्री कुल स्वारतकार्य के कि व धार्यान जांगाया महानारहत वाहे वदा वहेटल मान काल स्वार हतिस्वारत कली	
श्री क रमरनक्षमांत्र के क्रिके व्यापन का कि महा नहीं के क्रिकेट का के क्षित्र के क्षत्र क	
श्री क रमरनक्षमांच के क्रिके व्यापन का कि महा नहीं के कि	
श्री क रमरनक्षमांच के क्रिके व्यापन का कि महा नहीं के कि	
श्री क रमरनक्षणांच के क्रिके । ध्रीन जांकार्य ज्ञानरहत कार्व पता वर्षेटक मान ब्याके स्था वर्षेटक मान ब्याके स्था वर्षेटक मान ब्याके स्था क्ष्री काममान प्रधानांचाव व्यक्षणांच वर्षे स्था क्ष्री कार्यक्षणांचाव व्यक्षणांच वर्षे स्था क्ष्री कार्यक्षणांच्या	
श्री कुल स्वरंग्यमां श्री है वें द्यान जाहारा महान्द्रत वाहें वश वहेंटल मान ब्याद श्री कुल हरितालन कली " वासमझान स्टबानांशांत्र " व्यक्तांव यह " त्या कुलक निश्च " व्यक्तांव स्त	
श्री क रमरनक्षणांचे के क्षेत्र ध्यान का का विकास का कि स्था करेंट के मान की कि स्था करेंट के मान की कि स्था करेंट के मान की कि स्था करेंड के मान का की का का समाव का की का कि का रमाइनक्षण की का का का कि का का का की	
श्री क रमरनक्षणांचे के क्षेत्र ध्यान का का विकास का कि स्था करेंट के मान की कि स्था करेंट के मान की कि स्था करेंट के मान की कि स्था करेंड के मान का की का का समाव का की का कि का रमाइनक्षण की का का का कि का का का की	
श्री क रमरनक्षणांचे श्री क्षेत्रं व्याप्त कार्यः स्थान कार्यः स्थान रहत कार्यः स्थान कार्यः स्थान कार्यः स्थान कार्यः स्थान कार्यः स्थान कार्यः स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान	
श्री क रमरनक्षणां के कि व श्री को को कि मान को के भवा करेंटल मान को के श्री के रिट मान को के श्री के रिट मान को के श्री का सम्मान के स्वादित के रमा के सम्मान के स्वादित के सम्मान के समान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के समान के सम्मान के सम्मान के समान	
श्री क रमरनक्षणां के कि व श्री को को कि मान को के भवा करेंटल मान को के श्री के रिट मान को के श्री के रिट मान को के श्री का सम्मान के स्वादित के रमा के सम्मान के स्वादित के सम्मान के समान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के समान के सम्मान के सम्मान के समान	
श्री क रमरनक्षणां के कि व श्री में को कि विकास का कि भवा करें कि मान को कि श्री के श्री का मुख्यानां था कि सामकां मुख्यानां था कि रमाय मक्षणां निर्देश रमाय मक्षणां में का कि	
श्री क रमरनक्षणां के कि व श्री को को कि मान को के भवा करेंटल मान को के श्री के रिट मान को के श्री के रिट मान को के श्री का सम्मान के स्वादित के रमा के सम्मान के स्वादित के सम्मान के समान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के समान के सम्मान के सम्मान के समान	
ध्यान जानाया नामराहत वाहे ध्यान जानाया नहानरहत वाहे वया वहेर छ मान क्यांक स्वारकाल बल्यो वासकाल प्रधानायात वासकाल प्रधानायात वासकाल पर भारतकाल में भारतकाल में	
ध्यान जाठाया महानद्वत वाहे ध्यान जाठाया महानद्वत वाहे ध्या वहेट ज मान क्यांक ध्या वहेट ज मान क्यांक ध्या वहेट ज मान क्यांक बारमहान स्टबानायात्र विक्रमाय स्टब्सामायात्र विक्रमाय स्टब्सामायात्र व्यवस्थात्र स्टब्साम् व्यवस्थात्र स्टब्साम् व्यवस्थात्र स्टब्साम् ध्यामस्यात्र स्टब्साम्	
श्री क एकरनकांच श्री के व्यान कांचिया महान्य कांचिया महान्य कांचिया क	
श्री क एकरनकांच श्री के व्यान कांचिया महान्य कांचिया महान्य कांचिया क	
ध्यान जाहाया महानद्वत वाहे ध्यान जाहाया महानद्वत वाहे व्या वहेट ज मान क्यांक क्षेत्रक हीत्याणन कर्णा " वास्त्रकाल युट्यानायात " व्यापन कर्णा क्ष्यानायात " व्यापन कर्णा क्ष्यानायात्त्र " व्यापन क्ष्यानायात्त्र व्यापन क्ष्यान्त्र व्यापन क्ष्यानायात्र व्यापन क्ष्यान्त्र व्यापन क्ष्यान क्ष्यान्त्र व्यापन क्ष्यान क्यान क्ष्यान क्ष्यान क्ष्यान क्ष्यान क्ष्यान क्ष्यान क्ष्यान क्ष्य	
श्री क एकरनकांच श्री के व्यान कांचिया महान्य कांचिया महान्य कांचिया क	
श्री के त्या का कि विकास के क	
श्री के एक एक कार्य के विकास कार्य के प्रथम कार्य कार्य के प्रथम	
श्री के एक एक कार्य के विकास कार्य के प्रथम कार्य कार्य के प्रथम	
श्री के त्या का	
श्री के एक एक कार्य के विकास कार्य के प्रथम कार्य कार्य के प्रथम	
श्री के त्या का	
श्री के त्या का	
श्री के त्या का	
श्री के त्या का	
श्री के त्या का	



অক্ট্রাক্র 福州平 事。有 रेगा । १५३ मन



विवयं का निवास किये ना बी किया अर्थ कर । प्रमान किया आर्थ कर । के किया मिल्यानि में श्री के में में बिन में बिन में गांत्रज्ञिकदेवनिक्या राज्ञभ्यक् । जिल्

-मटाप मर्विता।

munden einenefalte dojac die. के अविः विके न्द्रमा देखांची दशान।

यम इति श्रमार दार व १ देन ७ २ १६ दिना । असूदेव-डार गुड़ार-द

AND COMPANY AND ADDRESS OF THE RESERVE THE PROPERTY AND ADDRESS. BL. PERSONAL THE MEN' PAIN TO STATE OF THE ST

form and transferration क्षिणा विकासितां राजक प्रमूप्तां स्टार

म्ह्रा शापर कर्ड विश्वस स्टब ना धई त्राम

१। यमिखार्था मान द्रिर्देश गष्ट्र कांगु उपक्रिक व।। छाङ् शति वृष्णुः म्थाद्मध्यूष्ट्र हिन

Table' a

क्ष्मा क्षेत्र किस्ति । रा जात - करिया माक सामाग विमानका विद्यासक, रक्षरंश्वनिति अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । क्षेत्रेक कि किर्दे कामानार रहिलासानकामी । स्थान क्षीक्षर हिं कालक्ष्रकात खेलात्रीमार मा आर्थेर क्षानुर MARK SON

के अ मार्गा के प्रक्रिक करायम हैता ७ माति है । यह बार शहर बर्च बाक. किया यक्षपादनेत निकटि यारेबा ऋषे थाक, व्यथवा ब्रांकात्र निकटि शिक्रा क्के शाक, मिरे मकल कान हरेट आगमन कर, आ-সিরা অভিকৃত লোম পান কর।

ষদ্ধ হাৰতার প্রশ্ন কং । স্বাভা পরি ব্যণাবাহি লাভমণা কো মানা পিবতং সুহারী।

का बाद यह विज्ञानीति शक यद्वरामामाना देव 'हेळाधी' 'यद' विवि वस्तु 'मियर उस्तु शद्वरामासि। देव स्वासी 'एद' उत्तर वर्षायं, यित वा 'कूर्यरमानू' विश्व-त्म्यू समूरवान् वर्णायं, 'यद' यित वा 'क्यानू' व्यावश् श्रद्धार उत्तर्भव वर्णायं समुद्धान् वर्णायं, यित वा आध्यान सम्बोध्य व्यादेशीयं क्यान्य वर्णायं, यात्रि वा आध्याम् आरम्भादिक आदि। सिक्त्याः आध्याम् अमूकोद्व्य सम्द्रधाम् आरम्भादिक आदि। सिक्त्याः आध्याम् अमूकोद्व्य श्राम्याम् आरम्भाद्याम् अस्ति। सिक्त्याः आध्याः स्वर्थ-श्राम्याम् व्यावश्याम् व्यावश्याम् विवि अस्त्राः अप्तरः सर्व-स्वावः स्वर्थायः स्वर्थाः स्वर्थः अस्तु स्वर्थः अस्तु स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

ক্ষা কোময়া বুলি বার নিকটে থাক.
কাম কামেলের নিকটে থাক. অথবা
প্রেটালেরে নিকটে থাক, কেয়া ভোলিতের নিকটে থাক, কেয়া ভোলিতের নিকটে থাক, কেয়া ভালিতে আগমন কর, আসিয়া অভিযুত সোম

থিবাং মধ্যমন্যং পদ্পাদ্ভ তঃ। অতঃ পরি ব্যণাবাহি যা-তমপানোমন্য পিবতং ক জনা।

৯। বে অভিলয়িতার প্রদ ইয়ে। সমি। তোমরা বুদি সমিষ্টে সামে কার

১০। যদিন্দ্রী পরমন্ত্র থিবাং সধানসামর্মনাযুক্ত বং সতঃ পরি ব্যণ্যাভয়। ভব্শীরোমনা পিবতং হ তথ্য

· I de saitentes meinten ermen Ame Aufe-

1500

১১। যদিজোগী দিবিটো বছ থিবাং যথ প্রতিভাষ্টের মুগ্রা জাতঃ পরি ব্যণাবার বাজনপর্তানাসা লিক্ত তুর্মা

निक्त अधिक अधिकार द्वार १ । ३१

क्ष्मिक्ष प्रकृत बहुन स्टिट सम्मा गामट्यं-

A PART OF THE PROPERTY OF THE PART OF THE क्षामा काविकामा मवाबाद विवश व्यावकामक क्ष fames was anathirmal and the common fami Comment of the second raise & AND MINISTER AND M Zas car s want

्र ति मिक्निविकार्थ अर আন ক্রিক স্বাস্থ্য অস্থ্য মধ্য वार्ष कार्य है । इस्ट्रिंग, तारे वर्ष-হিক কাকে আগমন কর, আসিয়া অভিযুত

क्षा क्षा तकन पान शिरात करे क्षाचित वर्ष श्रमान करून। >

বর্যদের দিবলৈর ত্রাক্ষদাজ।

७० हेहळ ५५३२ मांक ।

णाण वदनततः भाग निमः वर्षकाल भविभूर्ग स्टेबांब क्रियम करे जिलक्किए बक्की मान MALLOW MINE THAT TOMBOX BOX ATTO TO SEED SANTE BOOK.

可以 多数一次并 教育教育 क्टेक्टवबरे कान्छ। अतिमान वरे डेश्मर-स्मात THE REAL PROPERTY AND PROPERTY OF THE PERSON CER COLOR THE MARKET A PRINT 18. 京美型器C重要 植6. 中 THE RESERVE

W DOWN - AND LOTHER PROPERTY OF THE PARTY OF हरें छ, मात्रीतिक क मान्याविक समन क्रवार The state of the s न्त्रण क्रीयबद्ध काइनार १७ कोदन केतिहा क कि के काल कामार कामता (नहें नकत শাসাক্ষা * ইকে উত্তীৰ্ণ হইয়াছি ? কোন্ अवस्था का का का का अवस क्षा कृतिवादी। भाक्तवन क्षिक्रव

the transfer of the second

TRAILE : STATE OF THE SHEETER त्रक्त चक विशेष कविताहि । साम्य वि निक निक शतिगाय पनिकात क्षेत्रांतरे শতর্কতা-সহকারে নির্বিমে এই দুর পার্থ পরি-जमन कतिता चामा वहे वर्ष-त्नान मीमान উপস্থিত হইরাছি । ना কোন মহান পুরুষের अख्य रख आंशांनिशत्क त्रका कतित्राद्य ? ना दराम मर्जनमी विश्वजनक् महान् भूकव गांकात नाम जागांत्रिंगटक शतिशालन कतिमां चानिएछह्य विनम्नोहे, चान रक्षकां। क्रान-गर्भ क ना बिलान एवं और करणा कर्मन मन्त्रात. अस्ति प्राप्ता आयुर्वास्ति क খুত্র বলের প্রভি নির্ভর করিয়া এক পাশত हुद्देव केहिएड शाहि ना। त्क ना कार्ड टंग का निरात पूछ तृति अवानकाः भाक-किन्द्र कि वाका ना बीकात कतिरव. एवं धार शास्त्राक्ष्य-भूर्व मश्माद्व थया-वरन वनौशान् ना इहेरल, रमव क्षत्राम थाल ना इहेटा, मश्मादत अविकृत्त बावता वक स्कृष्ट का-লঙ দুঙায়মান থাকিত পারি না—এক हस्रक भैषात्रत श्रीक क्यामत हरेएक मक्स **इहें ना। अक घन्छ। नय, अहा किन नय, आकृ** পূর্ণ এক বংসর কাল, 🥕 পালিত ও রক্তিভ बर्गिक, विनि सेव शाम

राहिक सूच नाहि तियान कडिया मानावरक मन्द्र भारत में इहास अपूर्क दर्श कतिया, व्यामात्रकत्र वाचात्र 🕶 तिशामा निवादक कतिरणस्य । भाग केंग्नरे गरिया सामग्र महारक, कांबर त्यार करूना मीचन कांबर

- द्विमा- नक मस्य, धकाइ च-

MATAMAN -

for the second ण्ये गणा नकत तथ्य तथे। इ.स.च्या क्रण्डात विश्वीन प्रता स्वाप विरमाहन मुत्रकि कम्म के सह offe the Surface State States बीतन अत यथा न्यूष्ट्रीमवर्तन कविद्याल भार धक निरम्पत्तत करून भन भविर-भन्न कता यात्र ना. जन्यवर्त्तत्र काटलात विश्व विश्वक्ति स्टेट छेखीन हरेगा, जात्र भून धक नदमद्वत त्वर वीडि यहन कतिया योत क्रुटकार्ड सून ক্নরে তাঁর ঘারে উপস্থিত স্টতে না পারি, **छटर भाव पत्रा माटमत महेलू दिला** afert and street to the series भारेला.

केंच्य निश्चीम ७ निःचार्य छात्व जावात् निगरक क्षीठि करिन्दरम् क्षेत्र समास त्नारकत्र, मक्षत्र कोत्वत्र कुलनात् व कुरुता थं पन्या जाकि वेनताएकरे आहरत स

THE PERSON NAMED IN

de Alban Abanie a The Bridge State with his con-बार्क के प्राप्ति विन गुणिशीएक ११-निका केरता काकरक यार्गत जानक विशय निक्रकरमा हर्गम धरे मकल पंचा की तरक त्यव-कार्ता उक्रांसन्य नद्वाद्यंत प्रविकाती करियोद्दर्ग किन श्रामा क्षमा, धर्म अविक, शिक्ष कर सक्ताना है कामरा-कृतित बहर जानिए क स्का श्रीक काचारकरे প্রিপালৰ করিতেকে প্রতিষ্ঠেরই যন-क्षात्रमा भूनं कशिरकार्क किमि करांद्र नश्भात महत्वत **उँखाल उत्तरक**त घरा मिसा, নিরুদেরে সেই শান্তি নিকেতনে উদ্ভীর্ণ ইট্রার জনা ধর্মকে—প্রতিত **রাজ্যবর্মকেই** ্তরণ করিয়াছেন। বল কেবি, আমার-দিগোর এমন কি গুণ, কি গুণা ছাছে. यानात अलाटव आमता डाहात अहे नकल লেহ প্রীতির কণা-মাত্র **আ**কর্ষণ করিছে পারি ? যেমন নিপ্ত ণ অসহায় শিশুর এখন क्लार अक्ति-नामधा नारे त्य. तम याखादक 🌃 💏 শীম রক্ষণ ও পরিপোষণে নি-গোগ স্বার্থক পারে, আমারদেরও তেঘনি कान मरुवरे नाह, माहाटक टनरे " महटका विशान दक्ष वासोत्र विदश्च मुथ-प्रकृतिक श्लानात नामा कडिएक नाहि। बान्त शहात बादबंद किन्न-जियांत्री, आयता दी-शत जनक कारनव स्वराजिक कीत. विनि रही हैं जी शिक्त कार आयात निगदक প্ৰতি প্ৰিয়াছেন, ভিনি আপনার অকর-राजिन्द्रालगरे अवस्य हिन्दिन पाणाह-THE SECOND STORES AVII

वनस्य वन्न-कामा अधिकश यतिहत्त्रे कि उत्तिकित्तिक निक्कि भवीषा या ज-काञ्जी एवेटल सूबा सूना काश्राहरणत जीरकल करहरका कहिल्ला महाद्मात शक् र्देशहरिक्षा अकृतिय त्यह त्यांच मसी-कुछ ±ेडा सरका अवस दिर्ग्टय **डाहाता** ७ শুস ক্রাগেরে চরিত্র কলক পরিমার্কনে 🐃 ছপ্র-ধনকেও পরিত্যাগ क्रका द (मड़े दिश-ভূপ ^কেছ গ্ৰে**ন্তম-ছে-**িলা 'অ'কোচনা Autoro America Tillo Marina Callery (AA) (16) कार निर्माण होते नाम अधिक केन स्वीति कान কো তাম্বেল চৰ সভলেল কৰিলেছি, অভ টেড্ৰিংশ সমেহ মধ্য নগ'ন এই, ইছ, মা চালাহার প্রীভিন্ন স্রোভং **भ**ः भटनर भि^र्य मम्बाटवरे श्रवाहिक िक्ष हिन्द्रक :- ऐ अमन नगरन ভ ত প্ৰিপ্তিক **নি**ত্ৰীক্ষণ কৰিছে**ছেন**। কে-रल क्लार्य न**ामक क्ला**न क**रे कान्यम**् रिंश गाँक लगेश अध्याल खोविछ प्रहिन াট কেলল কার করুবার বলেই সামরা ारक 🕬 🖰 स्मारी क्षेत्रा—मञ्ज शहल ম্বালিন কইমান ভাঁবে কর্মন লাভ কর্ম কুতাথ হইটোছ, তার পুজা করিয়া মনুষাত্ব সম্পা-मृत्य मधर्थ इटेटिकि । जिमि दोटिशेत यक्षणा পাপের দণ্ড থাহাই বিধান জাবন, মামাধ-দিপুকে শিক্ষিত ও শোধিত কৰ'ই সে সক-त्मरहे जक्राक्र कार्यमा । दिनि स्कार कार्याः सकत निगात-काविक कि केरस স্তুট্তত খিনি ভাষার করবা ব্য**ত**্রেই वर्षेत् कशिरकाहन। धनन शिका, धनन गांडारक, अमन छित्र वक्-धांग गर्भारक त्कार कारक की कि केलावात का किया केला-विक न्सरक विक्रवारमा करा दिला कित् THE PERSON NAMED IN PARTY AND PARTY.

তাহাকে প্ৰায় প্ৰায়ুৱিত ক্ষমজ্ঞতা কুয়ুম সমৰ্পন না করিয়া কি মাপেই বা বৈষ্ পেব বজনী অভিবাহিত করিব।

थान-नथा। छात्रात धनात्म नक्तरे লাভ করিয়াছি, তুমি নিতা মুখন রুখ, भूटन जामक वर्षन कतिया नदीव मनदक পরিপোবন করিতেছ। তুসি বহুতে নিতা ভূতন সভা পরিবেশন করিয়া আত্মাকে জ্ঞান ধর্মে, প্রীতি পবিত্রতাতে উন্নত করড প্রশোক**—ত্রন্স-লোকের** প্রতি ক্ষাকর্ণি ক-ভুমি সংসার সাক্ষার রিতেই। কাপ্তারী হটয়া এই দীন-শীন প্রভাজন পুত্রগণকে প্রতিক্ষণেই পাশ তাপ ক্ষা উৰার করিয়া শান্তি উপায়নৰ কটিয়া গাই-তেছ। দংবৎসর কাল গে । হইরা আছ্ সুস্ত ১৪। এসলি তেও এই ৰৰ্ষ-শেষ দিবসের উৎসৰ্ ফেত্রে 🔁।স্থিত हरेशाहि, व्ह क्क्रमा १ १ श्वरम्बत ! ब क्वित रहागात्रहे क्या । छोगात्रहे क्या ।

তোমার আদেশ উল্কান রা পূর্ণ
এক বংশর কাল যদি কোন প্রবার অপর্যাচরণ করিয়া থাকি, তুমি প্রশন্ন হারা আমারদিগোর শকল অপরাধ মার্ক্তনা করে হুদর
থাল প্রীতি কুসুমে পূর্ণ করিয়া তোমার আনে
উপস্থিত হুইয়াছি, হে প্রতিত পাবন, অকিক্রম ধন। তুমি রূপা করিয়া আমারদের
প্রেম উপহার গ্রহণ করে ব্যক্তি করে এই
প্রার্থনা করিয়া

७ এकस्मराविकीतम् ।

धर्मा अठात।

धर्ष श्राह्म का हा कि विकास के हैं। स्वाह्म के कि विकास के कि वि विकास के कि विकास कि विकास के कि वि

PACTE TO TRANSPORT STATES SHAPE STATES লোক-জ্বরের অস্তঃপুরে প্রেরণ করিছে गरुगात कर पूत नमर्थ कहें।एड अबर विक भन व्यक्तरे श्राटतम विषेत्र एक प्राप्त में প্রচার কার্য্য কি কপে লাপান করিছে श्रेष्त, श्रेष्ठानि विद्या स्था अवस्था स्तिप्रा **क्टक पूत्र शमन कतिराम अकि उक्रमिनी** वृक्ति अवमन स्टेश भएए। छेमान-तान-अन्य वा कि त्यमंत्र काल्यादक वाकी क्रम-তের সার প্রকোক ব্যক্তিকেই উন্নাদ বলিয়া मत्न मत्न हामा करतः, चाक्तर्यात्र वियम कहे, विक विकास रामा क्षा अनुनीतन महसूत्र-🏂 ्रिकत धरकाक मत्यमास्ट (महे बला) তিল সম্পারটা বাতাত আর সমুদায় সম্প্র-भाग्नदक्र मःकीर्ग मास्त्रमान्निक धर्म क्रम ভ্রান্তির সেবক বলিয়া ব্যবভা ও উপেকা करत । मूख्द्राः अवे व्हेशास्त्र, शृष्टीशास्त्र निकृष्टे धर्मश्राहां नार्यात रा व्यर्ग, बुनल्यादनत নিকট তাহা নহে; এবং ধর্মপ্রচারের নাম धारन कतिएल भूमलभारनत प्रसःकत्रान एम काट्यत छेमस इस, थ्की बाटनत क्षस-पूषित ত্রিসামাতেও সে ভাব পাদবিক্ষেপ করিতে शास्त्र ना। यपि स्कान स्मरण नामूका, नूभी-लठा. मरमारम, अध्यत-शीक व्यवर शत-हिटेक्पना अकृष्टि अगन्तन श्रूमनीत्र अन निष्ठतत्र यानामूक्ष महाव मृद्धु वृद्धे विश्वत नाग ज्यात अधानिक मारक, भूकी-য়ানের চক্তে ঐ কেল প্রকাশ ক্রাণান্তর अर्थ यात्र त्मार्थ उपना अमेकिन भारत आहे. जातांशी हरेगां (शतरीत महामदसर नीटन बिलिक शास्त्र, विकामी अमलभारता विकास क्षाकात अधिवातीका क्यालि विकासका Media all sites also established mirai Suites ter exte i Biete ? WALL AS BEEN LISTED AS

AND AN ARROWS THE REAL OF THE AREA OF THE REAL PROPERTY. क्रेगा रच बन क्रांचर, कि करण पर्यंत क्षात्र कविएक क्षेत्र क्षिणात्र अन्तर राहे EN SIE CON CALL A STAIR FLAS মন্তকোপরি মন্তপুত বারি বিজ্ঞান কপ ক্রিলা-क्ट्रे ध्रमें श्रादात चलतिकामा चनुकान বলিয়া বিশাস করে। কোন সপ্তাশানের निक्ट बारांत गराकत मन्त्र मुखन कल वााभाउरे धर्माधाराहर खर्थम कामा बनिहा পূহীত হয়। দেশ দেশাতরের কথা চিন্তার वाहित ताथ। धरे बातकदर्दि खणाणि कठश्वलि धर्य-अञ्चलाम दर्खमान दिनगाटक अवर जे नमछ जिम चित्र मण्डामाहरू माथा ধৰ্মপ্ৰচাৱের নিমিত্ত কত ৰূপ অনুষ্ঠান ক-শিত ও পরিগৃহীত হইয়াছে, ভাষার আলো-जनाई आमानिशंदक श्रेखाविक विवदत गर्थके শিশা প্রদান করিবে। আমরা একথা वालकि सा विक्रुर्विक स्त अर्थकार्त ्रवन कडक शक्ति पृष्ठीम शहादहर का शादक । अनुका 💉 तुन नरक गा भूगा, माधूका कार्र के व सार निक्, रेकानि विकास मा थानिक एत बर्रे किंद्र करमञ्जाः नासनात्रिकाटक हे 🛒 ,े ब्रोटक ना. क गास्त भूकी बाता, स्तार वरेटर का गांचा महामा 7.00 कार्यात त्राम के बद्धानांका लगावे भावकृति । ति भटक गटक

विनिद्धा प्रकृतिकार कार्यालुका सुनिर्देश व्यक्ताकर के प्रकृति मुख्यादात निकिते काळ वाल्य क्रियानुका योगाता बीक्रक क्रियान ध्वर व क्रियान कामल श्वकृति उ महत्ताहाद्यात जल्ला निकां उ क्या कला-क्रियानका क्ष्य श्वकृत जलान्यादाका वाद्याके श्वकृत्व क्रियानका क्ष्य श्वकृत जलान्यादाका वाद्याका व्यक्ति लित्या कि क्ष्या ना।

भृषिदीह वर्ते ११७ घर्षेना पारलाहमा কড়িয়া অন্তেকেই একেবাৰে হতাবাস হন वनः धरे क्षा निकास कतिहा वामन व. e প্রপ্রচারের জন্য বিশেষ চেন্টার কি**ছু**ই ংরাজন নাই, ধর্ম যদি বস্তুতই প্রচা-👯 হটবারু হয়, উহার আপনার লোকোন্তর ার ক্রান্তের কার্য্য করিবে। ভাঁছারা योगता मनुत्गात अठात कार्तगत পুর্কণার আরু বিশাস করিতে পারি না। স্থন क्रैलिश्टिशीर, मनुषा आश्रमात मल वल वर्क-्या क्या पा**र्वण याच. नेयादाद रा**वक मत्या। शति। कित्व क्या तम क्ष्म उन्त गरह, सर्वत स्मिथिकोहि, बाँहात नाम अठात कतिए हरेत, शृथिनीएठ कि धक व्यक्ति-र्वक्रमीर कार्याण अकार्याकर माम कारा व्याप काल अधिक क्षान्तिक दश, प्रयंता सिर् क्षित्रम मायाक आक्रवाद পृष्ठे चूमिएकरे रक्तिहा (भर। १६न क्विटक्डि पुक्ति किन्द्र मन्त्र वर्ष विषदा धक हेत् स्रोधीनका ্লয়ন করিলে প্রচারকের অভিসন্পাত ৰজাবি ভংকণাৎ ভাষার মন্তবে বিপ-त्मग्र, क्षेत्रांत कार्या मांचित्र संग्रंटक च-ां है। क्रिक्ष स्मितिन करत, जाक्कार्यक प्राप्त तरेशा लाक खनत माहन करत धनर क्षीका अध्यक्षात अनादनत करल करके हर्मा शास्त्र हाम् व्यर्तन करतः जीन धरेकन अवस्था विकास मानक बोका कार क्या के

धर्म अठादात विकटक व नीय भागांख उल्लिक रहेल, छारा आमानित के करणाल किन्निक नटह। आंगता अपनेटेकी प्रत्ये रहरू वह क्य क्था **ख**निया **खराई** हरेगा। विश्वाहि। आभानिरशंत तुन्नि ध्वर नेत्रश यमि उ वहे कथा शिलाङ विमान कि व्यवः इंशाटक मजीनीन बहानुकृष्टि व्यवान করিতে ইচ্ছা করে না, কিন্তু রুস্তান্ত জগতের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে, ইহার অনেক কথাই আলাততঃ অকাটা বলিয়া বোধ দ্ইতে পারে। পৃথিবীর লোকের এই ৰূপ বিশাস যে, ভুকস্থানকে গণনার বাহিরে রাখিলে मञ्जूनात इटबाटका ११६ पृष्टियर पद भारत १५ ई भारतांकिक हरिहार । १ दि वारेराण्य বাছপুজা এবং জলংহক ৰূপ দিশেৰ এব 📆 व्यमुष्ठीय शालय शृष्ठे धर्म श्रहन इत्र, 🕬 अकथा **अदिम**्दानिक मत्न्ह माहे । दिन् जाहा ना हरेग़ा. **श्रमा** ७ कीवान श्रेकेशासीत প্রকৃত ভাবকে পোষণ করাই যদি শৃক্টধর্ম हरा; छद्द हेहा व्यक्तिक मदन दला माहेटहें পারে যে, যদি কোন দেশ অ্দাাপি খুহী ধর্ম बाहर १ का मार्ग्य व्यवसाती बादक, हरव म्बर्धिक स्वादान । वृष्टिक्षा अक श्रधान छेशरमभ এই, शृथिवीत जान ७ देव-ভবের জনা ক্ষণকালও চিন্তা করিও না किस यु गियान है द्यादता श्री मान ७ देव स्टब्स् मान ७ देवज्यात शुक्रा कविशाहे ইয়োরোপ সহজ হইয়াছে এবং যত 🗓 शेरबादबादभत व्यान चाक्दिन, श्रेटबाद থতে মান ও বৈভবের পূজা ভর্তারন (वरे रहेरव । वृष्ठे विनिग्राहर्व, ना जन्म গতে আঘাত করিলে ছাহার কিন্দু আর এক গও অর্পণ কর। भृ**बे के बना** रेद्धाद्वाशः अपमत्य वाषाच स्रवृक्तः विकि शरकत रकक्त विनात्र मा रुद्धि किहरकर भविष्य स्त्र मा। हैदबादबादभ स

লাক ও প্রথানত রিকিয়াতে জন্ম । জি কর্ম নিংসংশার প্রথান চর না কে নাকিও নাকর ইরোরোপ ক্ষমপ্রের সংগ্র জন্মন চর-রাছে, কিন্তু গুল ভথার জন্মানি প্রকৃত ভূলে প্রচারিত হয় নাই। ভ্রমনানরে কিংবা রসনার অন্নভাগে প্রৌর পূজা করা এবং হুদ্যে সিংহাসনে ভূবনাধিপতি প্রমেশ-রের কর্চনা করা এক প্রশার্থ নহে।

कि बार कंत्रीक धर्म क्षेत्र कवित्र গ্ইবে তাহার পথ প্রদর্শন ক্রিতে নদিও খামরা আমাদিগকে অযোগ্য এবং অক্ষম घरन कति, विक्ष क्यांत्रि आमानियात कृत देखिए के मा निन्मश्या द्याप रश त्य, क्डि-शत मांच्यमात्रिक अनुष्ठांन अठात जवर কতকগুলি দিশেষ-সম্ভাগায়-সূহীত মত ও ভাব প্রচার থক্ত পকে ধর্ম প্রচার নছে। कां जि मार्थावर्ग अक्टिंग शतिवर्जरमञ्जू थर्भ ७क अधि । । भहात्र । धर्मात स्म क्ल প্রচার দেই উচ্চ লক্ষা সংসাধন করিছে मधर्व इहेरव. यामानिरशंत विरव्हनाम काहाहे র্মাণ প্রকৃত প্রচার। কালের শাসনে অথবা প্রাণৰূপ পরম দেবতা সেই অচিস্ক্য प्रदर्भक्टरज्ञ हेकांग्र कांत्रकवर्ष ५६क विश्वदंश में भा परम उनिक्क १। कि कट्र छोत्रचर्यरक श्रमणी र्रात्र हरेदव, कि बल उनाज व्यवस्थान कात्र वर्दार्थ अने आहात कहिए वर्देश किया करिया अहेक्स अहमक प्रक्रिक facelified salessal affr a fance CAS MINISTER DE COMITI DES, MINIS वानिव, कात्रप्रभू पेत्र विकासमार्थे द्वास नाम्याः WIGHT METERS THE WIRE THE THE

महिक साथ पर्याप जाता गाँ भाग भाग भाग

Server Server

विकास अपने व्यानिक का अरहते हैं। बर्ग्या अक्रम कार्य का का तार्गाहरीय Maria 310/413 2000 0 7 1 15:534 2014 कारा त्यान स्वीवस्त्र का न हर STREET CAS TO STREET अस्त माद्यमाविक भागतन यहार महित नामाबिद्यात ज्ञानात हित्रहार्यहा इहेटम न ্র রূপ হব্দ প্রচার ভারতবর্ষের অন্য কার मि इक समार्थ (क्याः मकाव कि एक-শৈষ্টিত ভারতবর্ষকে ভাগেরিক করিলে শংস্কা কিত্ত ভারতবর্ষকে প্রণায় প্র**তি**শ क्षेत्रकाह मार्च क्षेत्रक सम्ब हराव. Co अर्थ अर्थ अञ्चादत छोत्र व वर्षी यमिद नेव अर्थ-কং গ শেষ ব্ৰভের দুত প্ৰতিজ্ঞত , বুগিছি এর मक क्यान, नकारनत किटनिस्तर कर পুরা আহাপদগণের ত্রন্দর্যার ভাব পুন-्म वस श्रीतरण शातिरव "त्य कश धर्म श्राहरत ক্রাহ্মবর্ষ উদ্বে ঈশ্বর ভক্তি এবং লৌকক स क्षेत्र क्षानिक कि अरे इसे दित काता गत अर्थ **अनिरम**ें कृषि कोथिया नर्वटराहर इहाँ बहरादत क्राय मुख्यीत क्रांटि मणाए পাৰৰ পাৰ্ডিছ কবিডে অধিকারী 👯 अन्तर्भव भाष्य काराहे पर्य उ wards elb. 54 at MACHE 33 54 SEC 10 15 में ब्राया क्षेत्र के विश्व के विश्व कर कर के THE PARTY OF THE P तर का दावरायंत्र नाटर शर जिर "" THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH THE CONTRACTOR OF THE CONTRACT

यप्र (मारी अका

नापु-ल्या श्रम्भ हेतारे काममा त्य, नियंते प्रक्रिक क्लेम, अवर प्रमुख दौनात प्रमा क्षिण वटा क समझ लांक कक्षण। दिनि स्थाप क्षण काम ना अवर देशांच स्थिति स्थाप के स्थाप के हांच नियंति स्थाप के स्थाप के हांच नियंति स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप

8 2017 计可谓 多斯士

CONTRACTOR OF THE PROPERTY OF

প্ৰশিপাত প্ৰভূতি ধৰ সমন্ত বাহ জিয়া অমু-তিত হয়, শুদ্ধ সেই গুলিই যে তাঁহাকে মৰ্শ্ম-त्वमना त्मस अ कथ नटर, किस छाँदात महत्क त्कान मनुत्यात सप्तात क्रम करनां कि वाकि-মাত্র নির্ভরের ভাব সন্দর্শন করিলে ভাহাতেও তিনি সাতিশয় খিদ্যমান হন, কারণ মনুষ্যের হৃদয়কে ঈশরের দিকে গ্রেরণ করাই তাঁহার কার্যা, ঈশ্বরের জ্যোতিঃ ও মনুবোর ক্ষ্মু বিনিঃসূত ভক্তি এই উভয়ের মধ্যমূলে অন্ত-রায় স্বৰূপ দণ্ডায়মান হইয়া দ্বিমুখ চৌর্যা बाता वर्ग ७ शृथिदी এই উভয়কে এক मगरस वक्षना कता काँदात कार्या नरह । यनि किनि यथार्थ वार्म्भिक ও अख्रुदम् उम्र कि हन. তাহা হইলে মনুযাকার পরিতাণ ছারা ঈখ-রের ইচ্ছা পূর্ণ হউক, ইহাই তিনি চান; কে সেই পরিতাণের পথ, তাহা চিন্তা করিয়া তिनि जाशनांदक উषिध करतम मा। রের করুণা যে একমাত্র তাঁহারই স্বারা অগতে প্রবাহিত হয় এ কথা মুখে আনিতেও তাঁহার माहम हरेत्व ना। छिनि ना लाक ग्रुट्थ छान-नात नाम कीर्जन अवन कतिएक हेम्हू क हन, ना क्षारक अन्यद्वत्र नांटमत मटक मटक अन्यद्वत् নাম ভৈচারকের নাম ধনি অবণ করিয়া সুখী হন। এখন কি. সেই নিত্য সত্য পুরুবের নামের সহিত ভাঁহার আপনার নাম এবিত इहेटन। महा পार्शित अनुष्ठीरन य अश हरा. তাহার ক্দয়ের গভীরতং স্থানে দেই রূপ ब्रह्मान देशाईक स्ट्रा अकर .

পাপ যদি পাপ কলেই লোক চক্ষুর
নক্ষ্মীন হয়, তবে উচা অতীব ভয়ানক ও
কতীব ক্ষিকট-মূর্তি চইলেও কগতের ভারণ
কানিক্ষেত্র-মূর্তি চইলেও কগতের ভারণ
কানিক্ষেত্র-মূর্তি মুর্বি ব্যাহন ক্ষ্মীন
নার ক্ষম ভূমিতে উচা ব্যাহন ক্ষমীর
পূর্বেই মনুবার বাতাবিক গুড় র ক্ষিতিবাক
প্রত্যাধান করে। কিছু পাশ ক্ষমী ব্যাহ

शब प्रदेश करेता कराइक नार्टशह बोरका कर केक के केत्रिश तमा । शांच नावास कारक गिकिए स्टेटन बात शाल बेलियाँ नाइसिक रह ना, के भूगारे देशह शिवकांत्र अवस्थ প্রমাণ কলে পরিগৃহীত হইরা লোক-কাদরে উহার आगम मेश्ङाणिक करता। धारश्विध প্রমান যে সীমাবন্ধ ও অপূর্ণ ভক্তেরা, ভাহা শীঘ্ৰই বিস্তৃত হইয়া বান এবং এ পাপ মিত্রিত পুণা ৰূপ পুরাত্ম ভিত্তির সীমা वक नामर्थाटक कानीम (वाथ कतिया छेशात **डिश्रत सरम्बर ध्यम मकल क्रूब्स स्ट्रन का**न्न অর্পণ করিতে থাকেন, যাস ক্রমেনে আগত वहेंत्न मधुमात विश्वामतक धक वादवह मि-ষ্পেষিত করিয়া ফেলিড। পরিণামে এই इत्र ए क्डक्छीन लाएक के व्यवस्थात জনা সভাকেও পরিত্যাগ করেন, কতগুলি লোকে সভাের অনুরোধে অসভাের দৃঢ় निगद्ध वक्ष हम धवः चात्र कछक्छलि লোকে সভাকে সম্পূর্ণ ৰূপে পরিভাগি করি-ता, त्य जनका के बदकातरे पाहारे बिता প্রচারিত হইয়াছে. ভাষারই সম্পূর্ণ দাস रहेशा शर्फन। एक जन ज्ञानरान् राक्टि কহিয়াছেন যে, সভ্যের সহিত অসভা মিজিভ रहेटल छमात्रा मरकात स्य क्रम क्रमकात स्त्र, অমিজ অসভ্য ৰাবা সে ৰূপ অপকাৰ সম্ভা विक नरक, कांशात कर केखि वसकार कि धक यादा चलाक, यान देशात किछात कर् 51%, कारा र्केटन बर्ड क्लिका लेख (बर्ज के मगर बेक्टि कारात निकार की कार कार-The ever, when every seems when we are BITTACE CANA PIECES SECTION न्त्रपूष्ट सर् ना, त्वरिकार राष्ट्रिक स्वकारक THE STATE OF THE SOURCE STATE OF

CONTRACTOR OF THE PARTY. the site of the Sea see for कर् पत्रवानिक से स्टब्स्टिस नी , पन्ना जाकि वह बदलहें सांश किंदू भूताचन, वर्शिहे महत्क विकास कतिया महेशाटक धर धरे श्रकादा आहोंक कांकिर य य तिर्म श्रहानिक अगका काहिनी श्रीमाद , कोमाद्र अवद्यात শ্বপ্ন গুলিকে প্রীয়াবস্থায় বিশাস করার नाव, मछा वीक्षा मध्यक्त कतिया कानि-क्टर । किस यकि अधन-अहे वर्डमान সুময়ে আপাত দুৰ্শনে সাধু ও শুদ্ধ চরিত্র এक क्रम शक्त भाग माधरमङ्ग এक चानी जुड বস্তু বলিরা আগনাকে লোক লোচনের मिष्पादन निरक्षण गरतन, छोश हरेतन छीशत পৰিত্ৰতা পাপ কুৰিন আচ্ছাদন বলিয়াই পরিগৃহীত হইবে এবং ছিনি স্বপক্ষ সমর্থ-नित्र निमित्र य क्लान गुक्तिरे श्रमर्भन करून, জ্ঞানবাৰ বাজি কখনই ভাঁচার কথায় কৰ্ণ-भाष कितिरास मा। धहे का मार्का जमा কার দিবে যে আর প্রমাণিত হইতে পারে ना, इंहाई क्रगटंडर अगाए विश्वाम। य खंडर আপনাকে আপনি লোক সমিধানে এই पत्ना पानय करहेत्त, किनि मुख्दाः जाननात मारवरे जाश्रमि जलकारी दलिया मध्यमान **७ गर्नक क्षणांगांछ इत ।**

वैश्वाकी वरे

'जगटमन्।

नितृक जामकारस र्वगावरातीन कर्क

14418 3134 WA

elle del nichtense erbententense:

STREET, NO. 10 THE THE PARTY OF THE PARTY OF

ব্রস্থিন।, সতাক্ষর, ও অফোম , সর্বের এই দশ্ থকার লক্ষণ।

শ্রেমর প্রথম লক্ষণ থৈয়া। স্বভারত মতঃকরণে কণে কণে নামা বৃত্তির উপর হয়:
কথন ছংখ বৃত্তি কথন সুখ বৃত্তি, কখন
শোক বৃত্তি কথন হর্ষ বিভি, কখন পাপ
বৃত্তি কখন পুণা বৃত্তি; অতএব প্রতিকৃত্তা
বিষয়ে মনোরতি উদিত হইলে ভালা হইছে
আকর্ষণ পূর্বক পর্কুল বিষয়ে অন্তঃকরণের
ধে ধারণা ভালার নাম গৈয়া।

এই বৈষী তিন প্রকার; সাজ্বিক বৈষ্যা, 'রাজসিক বৈষ্যা ও তামাদিক বৈষ্যা।

যাহার ছারা ভাবিহিত বিষয়ক প্রকৃতি হইতে মন ও ইঞ্চিম্গণতে নির্ভ করিয়া বিহিত বিষয়ে গ্রন্থ করা যার, তারার নাম সাজ্বিত বিষয়ে। এই সাজ্বিত বৈষ্টাই ঈশ্বর লাভের সাক্ষাৎ সাধন।

যদ্বারা ফল কামনার ধশীভূত হইয়া অন্তঃক্রণকে ধর্ম কামার্থে নিযুক্ত করে, ভাষাকে রাজসিক বৈর্যা কছে। এই রাজ-সিক বৈর্যা গরম্পরায় ঈশার প্রান্তির হেছু।

আর যাহার দারা অন্তঃকরণ লোভে
আর্ম্য হইয়া বিবর সেবা সহকারে নিজা
ভয় প্রভৃতিতে প্রহুত হয়, ভাহারে তামসিক
ধৈষ্য কহা যায়। এই তাদসিক ধৈষ্য
সাক্ষাৎ বা পরস্থারা ঈশার গ্রাপ্তির উপায়
না হইলেও অবিহিত বিবয় ক্ষান্ত শতকে
বণকে নির্ভ কার্যার কনা ইহাও ধর্মের
লক্ষণ কলে পরিগণিত হয়।

धर्मत विजीय लक्ष्ण क्ष्मा। यान अ अलगान अङ्खि नमल विषय किर्डत श्रीक् इच्छ अवश्रीत नाम क्ष्मा। क्ष्मा लतम क्ष्मा क्ष्मा बाता लगान वनीज्छ हता, अलगाती ताक्षित नामकिक नालि निवात क्षमा। वाक्षित ग्रीकिक नालि निवात क्षमा। वाक्षित ग्रीकिक नालि निवात क्षमा। त्य चन्ना कन्ना इत्र, जाशास्त्र का स्व

তৃতীয় লক্ষণ মনংসংযম।
সুশিক্ষিত অবের নাায় মনের যে বল
ভাহার নাম মনংসংযম। মূলকে সংগ্রত
করিতে পারিলে চক্লংজোতাদি ইন্দ্রিয়গণ
সার প্রবৃত্তি বিশেষের বশবর্তী হইয়া মথেষ্টা
চরণে প্রবৃত্ত হইতে পারে না, সূত্রাং তদ্ধারা
ধর্ম সাধিত হয়, অতএব ইহা ধর্মের লক্ষণ।

চতুর্থ লকণ অচৌর্য। চৌর্যা ছই প্রকার, সাক্ষাতে বল পূর্বক পরস্বাপহরণ, এবং অজ্ঞাত সারে গৃঢ়ভাবে পর দ্রবা প্রহণ; এ উভয় প্রকারই সাধারণ অনিষ্ঠাপাতের হৈছু সুত্রাং তদ্ভয়ের অভাবই একটা ধর্মের লক্ষ্

গঞ্য লক্ষণ দেহ ও অন্তর শুদ্ধি।
দেশের প্লানিকর মলা ও অন্তঃকরণের বিকার
পাপ: যেমন জল হারা দেহ সিন্ধা ও নিমাল
হয়, দেইরপ জান হারা অন্তঃকরণ নিস্পাপ
ও পবিত্র হয়; বাহ ও অন্তর পবিত্র হইলে
ভাহাতে পবিত্র স্বরপের আবিভাব স্পান্ত
উপলব্ধি হইতে থাকে।

সঞ্জ লক্ষণ শাস্ত্ৰ জান ক্ষিকাই কৰ্ত্তব্যে শাসনের নান শাস্ত ক্ষিক্ত জানকে শাস্ত আৰু কাহে। ক্ষেত্ৰ হৈ পূৰ্ব আচাঠ্য হৈছি লিখিত শাসনের নামত

জানের নাগ একার কা বিভক্ত: একোর করা করার প্রতি বিষয়ক জান, ও উচার ভালা হার্য বিষয়ক জ্ঞান। এই তিনিই ক্রম্পর ক্রম বস্তর করপ জানিলে তথ্য প্রতি থীতি হইলে সুতরাং আপনা হইকেই বর্গি অনুষ্ঠিত হয়।

নব্য লক্ষণ সভা ক্র্মন। যথা দৃষ্ঠ ও
যথা প্রাভ বিষয় অবিকল বাক্ত করাকে সভা
কথন বলে; প্রোভা অনা অর্থ মনে কর্মক
এই অভিপ্রায়ে ভার্য ঘটিত বাকা প্রয়োগ
করাকেও অসভা বলিয়া বাবহার করিতে হয়,
যেশেতু সভা কথা জগতের অনিষ্ট নিবারণের
হেতু। যদি সকলেই সভা বাবহার করে,
ভাগ হইলে এই জগৎ স্বর্গ জুলা হয়। ভারা
হইলে রাজশাসন প্রভাত কোন প্রকার বাাবহার
হাত্রিক নিয়ামের স্কার্ম ক্রিকার ক্রমন

Tatalen Benja was earen familiaria.

Can a conse sole service was earen dan earen dan

ত্ত্ব কৰিব কৰাই ধৰ্ম এবং ত্ৰিক্ষাচৰ্গই অধ্যা

তে ধর্মাবহ পর্মেশর। তোগার ধর্মের

ইকা নিয়ম সকল আমরা সময়ে সময়ে
অবধারণ করিতে না পারিয়া যে তরিরুদ্ধাচরণে প্রায়ত্ত হই, ভূমি তাহা হইতে আমারদৈগকে প্রত্যায়ত্ত করিয়া তোমার দিকে
অভিমুখীন কর মেন আমরা কখন তোমার
ধর্মা নিয়ম জাতিক্রম না করি। "ইন্দ্রিয়
নিয়ম লাভ রক্ষামা"।

উল্লেখনামিতীয়ং।

A LECTURE IN REPLY TO THE QUERY: "WHAT IS BRAHMOISM?"

(Continued from the last number.)

The next characteristic feature
Brahmoism is its friendly demeators
towards other religions. As its true
are substantially the same with wha
may believed in by all mankind,
does not at all bear a hostile attitude
to other religions. It believes that
every form at religion contains some
tenth in it and breathes more or less
of divine love. No religion could have
the large of believers
the same of believers

and whoity - Thou O God | art the one and the ultimate goal which all men reach, following diverse paths, straight or devicus, according to their different tastes and inclinations, as riv do the sea." Every religion also breath. es of divine love. I cannot better express this scatiment than by the following line of another Persian poet, the lyric poet of Shiraz ;- "Every place is the place of divine love whether a mosque or a church." Every religion has some truth in it but Brahmoism is the truest of all. Every religion breathes of divine love, but Brahmoism does so most of all. Brahmoism has come in fulfil the old religions and not to destroy them. It has come as a friend not as an enemy to the old religions. The true Brahmo, far from hating, actually loves the pious of all religious denominations. He considers that the mme a traislian or a Mahomedan ras the ego : of charity and divine love in him, the more he is a Brahme. He considers even the pious and virtuons idolater to be nearer to him than the Brahmo who leads a loose praveriesa life. He heartily echoes the mayer of Newman -

"Lord! enable us to discern and love thy servants

Under whatever strange name or take ered they may be hidden."

The next characteristic feature of Itrahmoism is its benign but effective mode of propagation. Every religion has some truth in it. Brahmoism bases its appeal to a nation on that truth. It adopts a national mode of propagation. It adopts the national name of God, national texts for discourses extracted from the national scriptures and the national mode of worshipping God as well as national rites and ceremonies and national customs as far as they can be

retained consistently with the diotates of reason and conscience, and the requirements of progressing civilization. What is deficient in the national spiritual store it of course supplies by borrowing from other nations, but it takes care to give a national shape to what it borrows as far as practicable. Although it expresses sympathy with the theists of other nations and encourages them to exert their utmost to propagate. theisin among their respective nations it exhorts them to maintain strictly the national aspect of their propagandistic policy and not jumble up the mode of propagation suited to one nation with that suited to another.

L. I have described, Contlamen, the doctrines and the essential chracteristics of Brahmoism as for as the limits I have assigned to my lecture allow me to do. I now address myself to the Brahmo portion of my audience and ask my fellow-religionists how far they are acting up to the dictates of such a noble and exalted religion-noble in its regard to the sacred interests of truth, noble in its auxiety to maintain catholicity of feeling, noble in its solicitude to meet the requirements of nationality-"a name" to quote the words of Professor Newman "dear and sacred as the name of wife and mother to every sound hearted man." An enquiry of this port is at times necessary for purposes of self-correction. I shall conduct this enquiry in the present instance in a critical and searching but brotherly spirit. As an elder of the church, it has been my duty to remark at times upon out tions and practices prevailing in it not consistent with true Theire am glad to observe that any bround Brahmos book my remarks in a conper spint and have hated to

advice in certain respects. I have investigation of the present occasion also will not be without effect.

An erroneous opinion now prevails in the Brahmo church that spiritual excitement is true religion. A principal member of our church has declared the highest religious state to be a state of "passion or frenzy." As long as, we remain in a state of spiritual excitement, we think we are acting like true religious beings; when that excitement leaves us, we consider ourselves as spiritually miserand complain of shushkuta or spiritual dryness. Excitement is no true test of spiritual progress. spiritual progress consists in the cultivation of steady and sustained divine The God-animated man is superior to the God-intoxicated man, A state of intoxication is transient. love of God should be natural to us as breath. An attempt to keep the soul in a continual state of spiritual excitement is not only ineffectual in the nature of things but is also a bar to spiritual progress. It is true that the first sight of the Altogether-Lovely intoxicates a man but as his love becomes gradually mature, it attains a steady and sober character. Constant silent communion with God. is the best means of promoting spiritual growth; we should constantly drink life from the Life of life and thereby grow in spiritual strength. If life do not come from Him, let in always secretly pray to Him in our hearts for it and freely shall it flow from Him. If spiritual excitament land to this self-nurture, it is good, elem

try to make it steady and sedate. A continual seeking of spiritual excitement without self-nurture keeps our love in an immature state and thereby proves a trar to our spiritual progress. Occasional excitement we cannot avoid; nay, it is a source of great spiritual felicity but let there be excitement upon life and not excitement-galvanic excitement-without life. If spiritual excitement is followed by spiritual vacuity, where then is life? If, in the state of excitement upon life excitement leaves us, there is life to fall back upon, else all is blank and dreary. Now-a-days there is less of internal communion with God and more of external excitement. Excess of spuritual excitement or, in other words frenzy, besides not being an of true spiritual progress, leads us also to commit acts which, like those of the men who took a part in the frish Revivals, lower the dignity of religion in the eyes of mankind and thereby prove injurious to its cause. Processions through the public streets after the fashion of the Chaitanya Vaishnavas of this country is an act of this character. Such acts should b avoided by our brother Brahmer It should be always kept in mind that our religion is a religion of calm dienified enthusiasm. It is as much removed from the Ecstasia of Plotings and the other Neo-Platonists, Mustee of the Suffe, and the Dasa of the Chaitanya Vaishnavas on the one hand as from Vodentic or Buddhis tic quietasti on the other. We should not lower the digney of our exalted religion by sets like these just now

adres de present de la lépend de la for

culture. For that purpose, we depend more upon lectures and speeches and festivals and processions apon "increspection and meditation," to quote the words of the most celebrated of our missionaries used by him when addressing a foreign audience in a foreign land. We ardently look to a "high festival of once a year" to collect "spiritual steam." I quote the very words ci certain Brahmos, which will last throughout the year for purposes of spiritual life and action. Alas ! if these lectures and speeches and festivals and processions were deducted from our present Brahme life, what would remain? We will then be reduced to poor shrunken things aithout any spiritual animation. In our feebleness, we depend too much upon some great man to help us to the path of spiritual progress, torgetting that self exertion, aided by divine grace, is our best help so the path of such progress. I am sick of the excessive glorificatone of great men. Brahmo brethrent at we cease altogother for a time from glorifying great men. Let us now only glority the great God to our heart's content. Let us cease altogether for a time from seeing God manifest in the flesh. Let us now see Him as manifest. in Himself. I do not at all deny the utility of speeches, lectures, and festivals and the assistance to be derived from spiritual teachers. But this I mantain that we should depend more upon ourselves and the grace of God . upon external aids. Nothing can be a greater proof of the extreme dependance of some of the present Brainos upon external aids than the doetrine lately enunciated by the sditor of a Brahmo journal that union all the members of the church t

dogma, the doctrine of external de pendance is carried to a ridiculous extent.

While treating of the short comings of the present Brahmo Church, 1 cannot but notice an erroneous doctrine which has been introduced into it. is this that, unless we venerate visible man, we cannot venerate the invisible God. I think this doctrine has an injurious tendency. If it be allowed to prevail, men, knowing that the best way of venerating God is venerating man, would, in their anxiety w venerate (lou, concerte non more than he deserved and would be gradually led to the degradation of hero-worship. It is one thing to say that we should venerate our spiritual teachers more than other men and another thing to say that, unless a man venerates his spiritual teacher, he cannot venerate God and thereby place him with regard to veneration in the same class with God but only a little lower. One step more and the Goorgo is exalted to the rank of God. The pernich as tendency of the doctrine referred to was manifested in certain practices which lately prevalled among some of the Brahmos, strongly smelling of Avaturism and hero a mo Who knows when the sore will back out afresh?

I should next now the despair of God's forgiveness of our which prevails among some of the followers of our church. Such despair is a bar to our spiritual progress. The All-Merciful Father is ever ready to take us in his arms wherever we sincerely repent. He does not look to the messure of repentations as to its sincerity. If we are to repent according to the heimousness of our sins, then we may repent for ever but such repentations is not

cerely repeat that moment our and are taken away from us. His arms are always out streethed to accept the sinner; the latter despairing of for giveness, pervariely shuns his offered embrace and faments for eval his fallen condition. Despair of God's forgiveness thus proves a bar to out spiritual progress. Some of the Brah mos grieve that sincere repentance does not rise in their souls but they do not consider that when they grieve for want of sincere repentance, sincere repentance has already come to them.

Another short-coming of the present Brahmo Church is the absence of instruction on particular morality from its pulpits. The heinousness of sin is described in general terms but no positive instruction on such particular moral duties as justice, veracity benevolence, patriotism, is given. A plain unvarnished sermon, treating with clearness and felicity of a particular moral duty in all its bearings to a rarrity in our days.

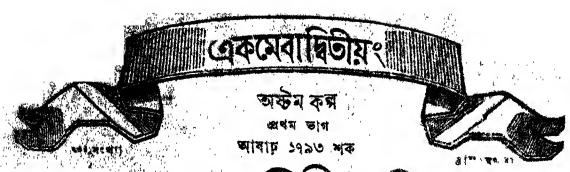
(To be continued.)

বিজ্ঞাপন।

विश्व कात्रण वर्णकः (व नकल कंकुरनाथिने প্রিका विना मूर्ला (श्वित हरेत्रा श्वारकः भाक्त माखल कृतारेरलरे भूनतात स्विप माखल ना পাওলা পর্যান্ত সেই नकल প্রিক স্বাচিত থাকিবে।

> के बान महस्य (वनांचनां तीन नक्तांती मानांत्रक

নূ চন বিজেনর পুতাক টি



তঅরোধিনীপ্রতিক

हिस्त्रीक्षेत्रिक्षेत्रक्षात्रीक्षात्रिक विक्रमात्रीक्षित्रक्ष नर्भायपुत्रकः। उत्तर निक्षः का नामणु विका वाल्यकित्रक्षण्यकः

• दमवाचित्रीयः शक्तिशात्रि नर्कतिवस्त्रक्षः मर्क्षाक्षयः मर्कति व मर्कविक्षमम् क्षतः अर्थयः अर्थवस्ति । क्षमाः उत्तरात्रालासम्बन्धः

नाहिकिद्देशिक्षदे द्वाक्षति । जन्मिम् क्षीजिकाश्च विश्वकार्यस्थानस्थ जन्नास्थानः

उल्लाम ।

অযুক্ত আনন্দচন্দ্র বেদান্তবালীশ কর্তৃক বিহুত।

ই আৰু চ বুধবার ১৭৯২ শক।

হল বাৰ্ননী সাভিং সমাকু আনিহিতে সদ।
ভপজাবিক সভাঞ স বৈ প্রম্বাপ্ন যাৎ।
ভাষাবৃদ্ধি শুও ও অধ্যায়।

याँगात नाका ७ मन मर्नमा ममाक् करण नश्यक शास्त्र अवर याँगात कणमा, मान । अ नाका कथरमत अनुकान शास्त्र, जिनिशे शहम श्रम आश्र शहान।

বাক্ষংখন, মনগ্ৰহ্ম, তপ্ৰাা, দান ও নতা কথন এই পাঁচটার অনুষ্ঠান প্রম পদ আছিল নাধন।

"मान्याक बट्ड विक्रिक निष्ठत नानशांत्र निर्द्धात बांका आध्यात कतात नाम यान् नश्चम। निक्रमाधादक बाक् नश्यम दला यात्र वाः नाम्याद विक्रमाधाद क व्यवस्थायन से स्वत्र इस्मीत्र निक्रमाधादक कृत्य करह अवश् वर्षात्र विक्रमाधादक श्रम करह अवश् वर्षात्र वर वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र স্থলে বর্ত্তমান এবং ভিদ্বেষি ও পর্য পদ প্রাপ্তির কারন।

অনিষ্ঠকর বাকা চারি প্রকার : নিঠুর বাকা, মিথাা কথা, পরোকে পরনিন্দা এবং অসমন্ধ প্রলাগ। সংগ্রেম্ব অভাবে লোকে এই চারি প্রকার বংগ্রোমে দুবিত হইয়া নানা অনিষ্ঠ উৎপশন করে। নিঠুর বাকো লোকের মান জ্যাত দিয়া স্থাৎ নিন্দনীয় করা, মিখা জ্যাত লোকে প্রভা-রিত হইয়া অনুসাধ নাম, পরোক্তে পর নিন্দায় বিশাল আছক প্রিন্ধা অনাদর করে, এবং অসমন্ধ ক্রাণ্ড ক্রান্ত্র আক্রিন্ধ বাকে। অত্তর বৃদ্ধ কর্মণ ক্রিন্ধ বাকে। অত্তর বৃদ্ধ সংগ্রেম্ব করিয়া বাকে। বিশেষ।

त नार्यात न्या प्रमाण क्रिक्ट व्यक्त व्यक्त न्या वाक प्रमाण क्रिक्ट व्यक्त व्य

हिलात थर हरेता चारी सूर्य निद्धार्थ करहा का अब मन पथन दूकित विटब्हना मिलिक निर्मा अक त्यादर्श कार्या करत, जर्मन रेल्लिस्शिट्य प्रधीन जा हरेटक सूक्त हरेता शतम श्रम श्रीक्ति ज्ञास बार्यवट्य महा ज हता।

ানসিক \পাপ তিন প্রকার, পর্জবা লান্তের আলোট্যা, লোকের অনিউ চিন্তা, ও দিখ্যাভিনিবেশ অর্থাৎ ঈশবে ও পর-कारते व्यक्तिमा । पन मः एक हहरत कहे ত্রিবি পাপ হইটে প্রফ্লুছ হওয়া যায়. অত্তা মনঃসংঘম বুরিক শাসামাকে পাপ হইতে বিরুত করিয়া 🕰 ধ 🐯 কার্য্যে রুত্ত कतिया शतम श्रीम व्यक्ति हरेटवर्द्देश "मनजद मनुवाशि कोटले वक्ता किका वार मन जन -यक इटेल्न वद्भंत (इप् इत्र, अवर मर्यक रहेटल प्रक्तित ग्रेजन । विक "कमाहर निखहर मत्ना हिंदेए निष्क नुष्कतर" त्यमन বায়ুকে আয়ত্ত ফরা কহিন ব্যাপার, সেই ৰূপ মনকে সংয়ত কর ৬ অতীব ছ্ক্কর, किंख माधरकत योच्च माधने हे छटन **क्रियं**त व्यमारम घडीव प्रक्रिकार्या 🛊 सूक्त्र स्टेशा উঠে। অভএব भृश्यदम यश्रमाजिक्षंट वि-बान् गटहर वां जिना है" সার हि । रामन अव मकरलं मध्यम करता एका होनी वाहिन यनः मः यदम यज्ञ कतिदः न।

শরীর, মন, বৃদ্ধি, বাকা ও কর্ম এই
সকল দার। কোন প্রবৃত্তের পাপ হল্চিত
হইতে না পারে, তবিষয়ে সাবধান, গাঝার
নাম তপস্যা। পূর্ব পূর্ব শার্ডারের
উপবাসাদি শারীরিক ক্লেশকৈ তপ্সা বলিং
বা ব্যাখাা করিয়াছেন, "শরীর শোষণাদি
ক্রেশ বর্নপং তপ্ত" অনশন অগ্রি সেবাদি
বারা শরীরকে শুক্ত করাই তপ্স্যা। ইহার
তাৎপ্র্যা এই যে নারীর শুক্ত হইলে ইক্রির
সকল নিক্ষেত্র হয়, বুলুরাং ভাষার আরু

चात नान चम्री रहेश्वर स्वादशस्त्रहरू HI- WOOK OF PAIR CONTACT STATE বৰ্ব প্ৰকাৰ পাণের স্বৰ্ত ক'লে ভলকা, তাৰ্গ সকলেই শীকার ক্ষিয়া কাৰেছু নতুবা কেবল শরীর গুড় করাই যে জপনী ইহার কোন অর্থ নাই। কারণ শরীয় 🕳 🛣 করিলেও তদারা নানা পার অনুষ্ঠিত इटेट शादा। **ग**तीत **अक** र न, रेक्सित मकल निरस्क घरेल, मरनत हिंदि सकल कीव व्हेन, उथानि इन्द्रिया मनत्क निविद्यान করিল না, এ শবসা কি তপ্রাার অবস্থা । देशादक कि जनकर्षा। वला याग्र : किन्छ नाजीव वितर्थ. हे स्मित्र नक्त गर्डक ७ मरमत तृष्टि मकल अवल ; अथेर मन मश्येष । मकल একার পাপানুষ্ঠান হইতে বিরুত, এই অব-স্থাই তপ্রা। চতুর্ব্বিকে বিকারের চেতু সকল বর্ত্তমান থাকিতেও যথন মনে বিকার উপস্থিত না হয়, এইৰূপ মনের সংখ্যাবস্থাই তপসা। তপ্নাতে শরীরের লাবণা রুদ্ধি क्त, मदनत दृष्टि नकत एमक क्य, है सिय দকল নিয়মিত হয় এবং ব্রহ্মরুস পান করিয়া তৃপ্তি সুথ নভোগ হয়। কিন্তু শ্রীর শোষ-ণে উহা লাভের অভিলাষ করা শ্লার মস্তক বেষ্টন করিয়া নাশিকা স্পর্শ করা উভয়ই मर्गम ।

शहात (य तस्तत अस्तात, स्वाहात त्वहें रश्च अर्थन कताहें मान भरमत प्रशासर्थ। मान अर्थका पहर कमा आत किहुहें नाहे, अस् এव स्थातकारिय स्टेश हरेगाह "मानसान स्तारिकार मान कत्त किह भाग वास्तिक धन अर्थन किंद्र सा स्वतन प्रशासन कार्य कताहें मान भरमत स्थापन प्राप्त कार्य कताहें मान भरमत स्थापन प्राप्त कार्य अस्ता मान सास्त्र स्थापन प्राप्त कार्य स्वता मान स्थापन स्थापन प्राप्त कार्य स्वता मान स्थापन स्थापन स्थापन साधित हरने हैं सहित की अवर के से निश् हैं का हा हर की अद्याजन हो हो दि तहें देश हान ने नहीं कि सदान प्राज्य अर्थ कू हतार शिक्ष तिम तम तम अश्वित मानन के सम मान होंडा अ गृशेंडा छेंडगर करें अर नात्न बरक्यार छुख करत, स्मि मान्य मान स्थान मान मारे अवर विमा। मान बादा हरें-रू अर्थेडात र्यागाडानुमारत करने ना वह कल आश्व हरान।

যেমন জল হার। গাত্র শুদ্ধি হয়, সেই
কপ সভা হার। মন পরিশুদ্ধ হয়, সভার
সমান আর ধর্ম নাই। অতএব সভা কহিবেক কিন্তু প্রির সভা কহিবেক, অপ্রির সভা
কহিবেক না, প্রিয় মিধাাও কহিবেক না।

হে পরম সতা পরমেশর। তুমি আমারদিগের উপরে সতত যে করুণাবারি বর্ষণ
করিতেছ, আমরা যেন জীবনাত্তেও তাহা
বিশৃত না হই, এবং ভোমাকে যেন চির
দিন হৃদরে বিরাজ্যান দেখিতে পাই, তুমি
আমারদিগকে এই রূপ ক্ষমতা প্রদান কর।

नव-वदर्यंत जायमगाज।

ুঠ বৈশাশ ব্ৰহম্পতিবার ১৭৯৩ শক।

नाम रेगमारथंत क्षथम मितन। आंक् नव-वर्णन क्षथम मिन। मिन्छ रायन कननी गर्ड स्टेंड विद्यक्त हरेता म्याज-र्मानगा, नीतम-र्म्माफ-पूर्ण फुरमारक मानिया च्यत-देश का नामाफ र्फ्यान म्याज-क्ष्मारम वर्गा वर्गना किनीम किता च्या स्टब्स-पार्ट में नाम प्रमाण किलामा क्रम-पार्ट में नाम प्रमाण किलामा च्यान का स्टब्स कर राज्य के स्वीम्बद्धात च्याव का स्टब्स कर राज्य क्ष्मण्य नामामा

পরিশোভিত করিয়া, কেম্ন বিচিত সুংখ नुनिक्कि कतिया भागावतम् नम्मुद्रेय शावन कतिशाह्न ! तरे बहुविम त्यर-पूर्व भूकत, रमम कतातु-नगात घठिका कोन्द्रल चम-शंत मिखरू तका करतन, तह नहींने গর্ক কোটরের মধ্যে তাহার যাবতীর প্রয়ো-জনীয় বস্তু বিধান করিয়া তাহাকে পরি-পালন করেন, এবং তাহার ভাবী প্রয়োজন व्यवगंच इहेन्ना मञ्चत कला । गायम छेरकदम्, তাহার অজ্ঞাতসারে বহিন্দ্রগতে দর্ব-প্রকার ৰুখ-সজ্জা প্ৰস্তুত করিয়া যথা কালে তাহাকে অদৃষ্ঠ পূর্ব ভূলোকে আনয়ন করেন, তেমনি দেই পুরাণ "পরমেশ্বর বিগত বর্ষে আঁমায়-मिशदक यथारयांशा द्वह खींकि महकारत প্রতিপালন করিয়া, জাবার আত্মার মত্তর উন্নতি-সাধন জন্য, এই অভিনব-বর্ষ ক্ষেত্র-কেই তাহার উপযুক্ত ছল নির্দেশ করিয়া-ছেন। আমরা তাঁরই আদেশে এই মিতা উদার সদাত্রতে প্রবেশ করিতেছি। এই অভিনৰ-বর্ষ-গরে নে কভ দুখ-রত্ব সমিটিত तिस्तारक, जाजात छेरकर्य-माधन छेशरयांशी যে কত প্রকার বিচিত্র উপকরণ, করুণাময়-পরমেশ্বর ইহার মধ্যে সংস্থাপন করিয়াছেন, আমরা এখন ভাহার কিবু ঝিব? সন্যোজাত শিশু যেমন পৃথী-তলে পদার্পণ করিয়াই জানিতে পারে না যে তাহার সুখ-সাধন ভিদেশে এই ভূভাগার মধ্যে কত অমুলা निधि तकिक इहेग्राट्ड, आगातरमत आञाल তেমনি এই নববর্ষে প্রবেশ করিয়াই বলিতে शोदत ना, त्य त्मरे त्मरमही जननी नामात-म्बर्ग मर्डोशीत काना कर्ष मुद्दा छान अपूर्व সঞ্জ করিয়া রাখিয়াছেন এবং কি অভাবনীয় विधान, बाबाई जिनि बाबाय क्र शिशांका निवातन कतिया काशादक क्रवार्थ कतिरवस्त नक्ष करते हे श्रीव्रगान रहेता दकता नव्यक्त

দাকাশের প্রক্রিবের পাত করিয়া কেবা शंबना बाता रक्यांचिक शूरक्षत्र गर्था। विवश्व कतिर्द । तरे भगत प्रकारत मक्तर भगत — फाँहात (ज्ञारत त्यर माहे, व्योचित भारत नारे, नमात्र यह नारे। आमता आक्रयनान তাঁহার অক্ত কেই সম্ভোগ করিয়া আদি-তেছি, তাঁহার অজুলন প্রীতির বর্ষণে আমরা. न्यायातरमत कीवन धन, मूथ गांडि मक्लरे লাভ করিয়াছি। বিগত বর্ষে তাঁহার যে श्रीकि-मूधा शान कतिया, कुर्पय मश्मात প্रधात यसा किया निर्मित्र छनिए। बाजि-लाय, त्क त्म क्षीजित भविषां क्षित्र! बिदन निभीरथ वर्षात श्राहिन्याबाह माहि किबि आगाइटम्ब छेलाइ एवं अमृशम टक्सर বৰ্ষণ করিতেছেন, কোনু বাজিই বা ভাৰার मरका निर्देश कतिएक ममर्थ स्टेटर ? दिश्रक वर्ष्म भाषता डीरांत स्व मकल कक्क्म अक्क উপলব্ধি করিয়াছি, তাহাই যথন গণনা ক্রিতে পারি না, নিশির শিশির পত্তকের नात्र चकाड-माद्र चामात्रकत डेशद्र ई-হার যে কত করুণা-কণা নিপ্তিত হইয়া. সামারদিগকে রক্ষা করিয়াছে, কোন্ রসনা তালা কীর্ত্তন করিতে পারে? তালাই যথন चत्र हरेल मन चत्रक हर, दोका स्रक হইয়া পড়ে, আবার এই অভিনৰ-বর্তে---আন্নার উচ্চতর উন্নতি সোপানে যে কাঁহার অধিকভার স্থেহ ব্রুপা বর্ষিত হইবে, कांका चत्रम करिस्त कहात्र महोत मा रहा-माश्चिक रहा ? टीहात तारे मानक मानाव ঈবং আভান বৃদ্ধি-নেত্রে প্রতিকার চনক कान् कार्य ना कुछकाका करत म्यानम হটতেই তাঁহার চরণে আবনত মুইয়া পরে

উচ্চার করণার কথা কি ব্রান্থ। জার না ভাচার প্রশন্ত সূব সাম্বরী করোর করিয়া সাম মইতেতি, অগচ ভিন্তি লাম করিয়া পরিজ্ঞান বা ক্ষান্ত মইডেছেন রাগ্ THE STREET winisfrance interes for all in the second Gieig vicus for-fweißt ein, biene शित्र डार्ग कतिया विशय थानिक स्वेटबाक भागि जिम त्यार-छता भागात्र विदेशक अमू-मत्र कतिरकाहम । भागता विकास र्फानात त्मेरक, फीनात एक भूतकाहरूत धनाक ष्यीन इरेशा. उशित बादम्य व्यवस्ता करिया एटणकाठाटत अञ्च स्टेट्स्, अपेठ विति भागात्रिगटक गावात्र माति च सान. कतिरस्टर्कतः असीन त्यस सूर्यक क्या ेट्ड्रफेटत मुथ. जानत्स्त छेनत पर्वत আনন্দ, উন্নতির উপর উচ্চতর উন্নতির সো-भाग विधान कतिहा, आशात निर्धेत स्थानाक চিত্তকে ফাঞ্জে ও প্রকৃতিস্ করিবার চেফী। कतिरहरून। कार्यस्थ करे हेनात नकन मृष्टि, অনুপম-পিতৃতাৰ অসমুশ দাকু জেন আৰু कड़ठ: उठेइ इहेग्रा कि त्मरे त्मव-त्मत्वज्ञ काशासनाम अमनि शहुक करेव ना ? जाहाइ बाहे हेमात नमाज्ञ चारत मखातमान हरेत्रा. জী হাতে হাণিপাত করিয়া কি আৰু নৰ বৰ্তের ALBERT SA ACRES WAS AND BUT OF त्मन, भार केवन सूचा, सुक्रमीत स्वस्नात रक्त कतिहा, करे शर्विक आका्काला नव वर्षत्र कार्या आतम् कतिल। श्राटाक अनुस्त कर. बरे मुक्कि काण्यमीत्र नुवर्वात क्रियात्त्र महिमा अहारत अहन गरेना, शुनियी आहात त्र्या-प्रकारक व्यवस्थित क्षिक सम्भाष CON ATTENDED AND STREET, MAIN were the state of the second state of the second

CONTROL TO A THE प्रकारमा बार्गाएक न न्याचार नाम गटनएक बाब्यंत व्यवस्थात । शारेन नकत्न जाशह क्षांत व्यादक महीत हर वाषादक निरक्त कति, बाहेन, नकरल छोहात मधूत बाह्यादनत अवि क्रोध्वेच केतियां केशित क्रानिके शर्थ भाविक हरे। दिक्शांत रनकः मस्य लाद त्वाची हरेता, महस्त्र शार्थ भागी हरेगां उ तर्गाद वर्धन कर मुर्ग-मासि लाक क्रिटिटि. उथम कांत्र मनलगती केन्द्रात चानूगेक वरेता इलिटन डोशंद्र पटर्पत चार्तन छिडिशासन করিলে, আন্বাতে যে কি অননুভূত আন্ধ-श्रमान मकातिक रहेर्त, जाजा काँगत व्यक्ति-কতর সন্নিকর্থ লাভ করিয়া যে কি অপূর্ব ভৃত্তিসুখ অনুভব করিবে, এখন তাহা कल्लनारक७ धातन कत्रा गात्र ना ! এই পৃথি-वीट- अरे পরিষিত পৃথিবীতে রাখিয়াই তিনি আমাদের আত্মাকে কতই না উন্নত क्रिंडिट्रम। तिरे भूताका हता स्टर्गात मर्था ,সংস্থাপন করিয়া অহোরাত্ত, পক্ষ মাস, ঋতু সম্প্রের পরিবর্তন সহকারে মানব আত্মাকে क्टरे वा श्रिक्ष क्रिएटहर, क्टरे ना सर्वेद क्लानिए पूर्व मासि विधान क्रिटि-द्यन्। त्रा भन्नत्माय उक्षत्मात्कत जना नर्जना समग्र निशानिक तरितादर, कानि ना त्तरे विराधारम भून यवन भग्नरमध्य भारत्या-मिक माध्याद कि विकित स्रोमनक्लाभरे तिकात गतिका प्राचिकारहन । थिए वर्षत र्गमका नमान पामव पामा एवं निवा थाएगड नाव जानमा करकटाः साम वा तथाव र्वात जीविश्व केमात केम्स क्ल मस्य भारतहे केलेलीक स्टेडिंड - तन्त्रद्धाः विति कर

CENTINE IN MARK THE WATER विवयं प्रशेष पूर्वा कविता जीक तमें नर-नर्र केर्ड क्षेत्र (सार-मकास-मफुनाउ करेट उकात कतिया क्षामात स्मर् उक्तन निवास करेता गांधा भाग-कान नुकूर-मानान हरेट छडीर्न कड़िया भारत-चवन যে ভূমি ভোমার প্রতি দার্ক্য কর। কব-वर्सन और भविक आक्राकाल खेबा-कि প্রীতির সহিত আমরা ভোমার শরণাপন নুইভেছি, হে ঈশর। তুমি ক্লুপা করিয়া আ্যার্দিগের নেতা হইয়া কল্যাণ পথে लहेंग्रा ठल। याहारक मंत्रीत-यन व्याचा यथा-সর্বন্ধ পণ করিয়া তোমার মহিমাকে মহীয়ান্ করিতে পারি, ভোষার প্রিয়-কার্য্য সাধনে অধিকতর यज्ञभील हरे, आश्राटक कान-প্রেমে প্রীতি-পবিত্রভাতে উন্নত করিয়া যা-তোমার প্রিয়-সিংহাসন ভূলিতে পারি, ভূমি কুপা করিরা আমার-निगरक अवन मन-दृष्टि कान-पर्य विधान কর। হে জাত্রত জীবন্ত দেব। তোমাকে প্রণিপাত করিয়া নব-বর্ষে প্রবেশ করি-তেছি। তোমার অনুপ্র-ক্ষেত্, পূর্ব-মকল স্বৰূপের উপর নির্ভর করিয়া এই স্বজ্ঞাত অপরিচিত পথে অগ্রসর হইতেছি, ভূমি আমারদিগকে রক্ষা কর। হে ছুর্বলর বল! গতিহীনের গতি। তুমি আখার্ষিপ্রে পরিভাগে করিও না

७ क्लामनाविकीसः।

পথিবী ও মনুবা।

Refi, than e genera of Con represents are even area of Fria was bear of the free than referent water was at a squar and him are even area of basis নক্ষর করিছে থাকুল এবং পরিনের করিছে বিবাদ করিছে করক আন বিধাদ করিছে। এই যে, মনুযোর ভারতল হউক মনুষ্য পাপের পরে নিরন্তর সফরন করিছে থাকুক, এবং পরিলেযে ভারতলাল নরক যন্ত্রণ ভোগ কলক। মনুষ্য লইয়া ঈশার ও শরতান গরস্পরের মধ্যে এই রূপ বিরোধাচরণ চলিতেছে। তাহারা যে রূপ বলেন, ভদনুসারে ছার্ভি শয়ভানেরই অধিক জয় হইতেছে, সর্বাভিত্যান ঈশার যেন প্রাজিত হয়া পড়িতেছেন—অধিকাংশ মনুষ্য শয়ভানেরই বশায়দ হইয়া চলিতেছে।

द्य मकल मल्लामां ठापृश्य यह क छहत व्यक्ति विश्वाम करतम मा. डीहारमत गर्था व्यक्ति विश्वाम करतम मा. डीहारमत गर्मा व्यक्ति मात्रात्क मांग्रार्गित व्यक्ति व्यक्ति करित्रा वर्षमा करतम, छाहात व्यक्ति कर्मित व्यक्ति प्रमुखारक श्रक्त शर्मा व्यक्ति क्षा द्य, ज्ञेन्द्र ममुग्रारक श्रक शर्म क्षान्तिक करिर्द्यहम, व्यात मश्मात स्पन क्षान्तिक व्यम शर्मा व्यक्ति करिर्द्य हमा शर्मा शर्म स्मात्रहे छन्न गुल्क क्षा व्रक्ति व्यक्ति उ नर्षमाल्किमाम ज्ञेन्द्र शर्म श्रक्तिक इटेर्ड्यहम ।

পৃথিবী ও সমুদায় পার্ণির কর এবং
মনুধা জাতি যদি দংসার শক্তের অর্থ- হর,
তবে শয়তানের অন্তিত্র বিষয়ক মাধ্যে ন্যায়
উক্ত মতকেও পরিজ্ঞাগ করা জীবন। সংসার যদি আর কোন ক্রিপ্রাক্ত শাস্থা তাদুশ সংসারের অন্তিত্রও আপনা হুইটেই জীবনবান্দিগের অন্তানের হুইবে, তাইটিই সাক্তেই
নাই।

মনুথা অনৈক ননত্তে প্ৰেম ও লোভ এক প্ৰাৰ্থ ভাৰিয়া প্ৰৱঞ্চিত হয় বছতো উচা মানোক ও অহাকানের কাল ক্লাণার ছিল। সাগা প্ৰেম আপনাকে বিশ্বক করা হয়। লাবা বিব্ৰহ কা কোনে এই নামান্ত কা বিব্ৰহ কা কোনে কাৰ্য্য কৰিছে কৰেছে কৰেছে কাৰ্য্য কৰিছে কাৰ্য্য কৰিছে কাৰ্য্য কৰিছে কৰেছে কাৰ্য্য কৰিছে কাৰ্য কৰিছে কাৰ্য্য কৰিছে কাৰ্য কৰিছে কাৰ্য্য কৰিছে কাৰ্য্য কৰিছে কাৰ্য্য কৰিছে কাৰ্য্য কৰিছে কাৰ্য্য কৰিছে কাৰ্য কৰিছে কৰিছে কাৰ্য কৰেছে কাৰ্য কৰিছে কাৰ্য কৰিছে কাৰ্য কৰেছে কাৰ্য কৰেছে

মনুবা বাহার জনা পৃথিবীতে কল এইণ করিয়াছে, পৃথিবী তাহার লপ ও প্রেন্থানী হান, ইলতে কিছু ঘাত সন্তেহ নাই। বিনি সন্তেহ করেন, তিনি ঈশ্বের শান্তিতে, জানে ও মলল ভাষে—হারা, পুল স্বরূপে অভাত্যারে অবিশাস করিতেছেন। ঈশ্বেরের শতিপ্রায় কলাগণ্যা, যাহা কলাগি, তিনি ভাহা জানেন; বাহাতে কল্যাণ লয়, ভিনি তাহা করিতে পারেন। তিনিই প্রেন্থার হালার করিছে, মনুবার ছাপরিতা, তিনিই সমুলায় নিম্নের নিয়ন্তা। তিনি বর্গন মনুবাকে সংসারে আনম্ন করিয়াছেন, তর্গন সংগার বিষয়ে ব্যার উপযুক্ত হান, ভারতে কি কাল

गनुग निर्णेष पश्चि वरणात्र गरमादत अमार्थरन करता क्षेत्र कारात ना दुक्तितल, ना रे क्षित्रयम मा रमस्यम, दकान महल शाटक। क्कि मरमात्र काशांटक विश्वित दमस्त्रा। भूगा করিরা পরিত্যাগ করে না। ওত্ত্ত, আন-त्मत नहिक कंत्रकाली मिन्ना काशादक आहना করে। তথন শুকোমল ক্রোড় ভাহার বাদ-हान इत्र, ह्यू किंक् बाहात छे नत्र (सह वर्षन) करत ७ त्रख्मभूर्न खन इक्ष निरंठ थाटक। তথন তাহার নিজের কিছুই থাকে না, অথচ সংসারে ভাগার কোন অভাবই থাকে না। ণেমন তাহার বয়োর্**জি হয়, অমনি সঙ্গে স্**ঞ্ সংশার তাহার পোষণের ও উন্নতির সমুদায় উপকরণ প্রদান করিতে বাকে। অন পান তাহার ক্ষা ভৃষা নিবারণ করি-তেছে; বিবিধ বিষয়-সুখ ভাহার ইন্দ্রিন াণকে পরিত্প করিভেছে; সকল পদার্থই गरादक खान निका निर्छट मांछा निछा शका जीतो की शुक्क दन्मा अ राष्ट्रराव गरात सम्बद्ध नित्रकृष्ट कतिरक्टः, विस्तर्भ ।नम्माक ७ मिक्क निक्स मधुताचान चाच-।मार्ट्स रहेक एक मास्त्रम् रक्त हरेना णहात जन् । जनाविक वर्षाच्या नकत पात्रात प्राथव कार ने ने ने ने ने निर्मा स्वाप्त प्रदर्श-IN THE STREET STREET, TOP OUT INTERNATION OF THE STREET A MAIN MANER AND MAIN SECTION OF THE REPORT OF THE PARTY.

शास्त्रका (र महता। कृषि काम कृषि है क्षेत्रमा कृषित्व शास्त्र कृषि निःमहास रहेश कृष्णारम कृष्णिक्षित, किस्तृ कि मा भारत्वहः

स्य मन्त्रा कर मगल छेशकतन आश हरूत्रांख क्रवार्यका लाख कतिएक ना शादत, मि
वाखित य कारात खाकाकिक वर्ग जादारन कतिया खरी रहेरक शातित, कारात ध्रमान कि विख्या यरी रहेरक शातित, कारात ध्रमान कि विख्या यरी रहेरक शातित, कारात ध्रमान कि विख्या यरी स्विक्त ध्रांतिक भागित कारात ग्रम्म कतिरत, नतक छोशत मर्क्य मर्क्य यारेरत! कारात, यमन छोशत भाक विलिया द्यांत्र स्वेर्ट्याइ, शत मरुमात्रख मिक्र क्रिंग भाका विश्वा वास हरेरक शांकिरत! यर्ग अनतक चन्दात मर्का छेदश्य हरू।

पहरे चारलाहना क्या यात्र, उठहे अही-ग्रमान इम्र हा अहे मश्नात मनूरवात छेटामना माधानत मार्स छेशमूक शान ; विद्रुष्टिई ब कल ताथ इस ना ता, हेड्डा धन नायत्नत थि किन्। हेश चतुंगाई चीकात कतिए हरेरव रक अटकाटका अक अकिंग मस्कीन বার্থপরতা আছে, সংসার সকল ছামে তাহার সম্পূর্ণ অনুকুলতা করিতে সমর্থ নহে তথাপি এক জনের সার্থ বত কণ আব এক जत्मत्र चारर्थत विद्याधी मा इस, अवः मण कृष विश्वजनीन चार्थवन्त्र (सह शहमादर्वत हानिकत ना इत, छठ कर धहे नश्यात कारात अधिकृत रत मा। मन्द्रात गत्न त नकत स्वीष्ठ १ समहाक सारह, गरमात्र महत्त स्रोत सामात्र अव्यूक्तका कतिए अवर्थ मारह। छवानि से प्रान भटनेड मारक फाराङ निद्धार छन्। कर मा रा, तर पान को गरत शब्दावाब त्वान श्रीकृत्वका कारे। चरनाकत अहे वना MALE ALCE TO ME ALAST AND VIOLENCE OF VIOL

খান, কিন্তু আনোচনা করিলে ইয়ার বিশ্ব-রীত নিজান্তই উপহিত হয়—সংশার ভার্ব-পরায়ণ ও ইন্দ্রিয়পরায়ণ লোকদিগেরই ঘোরতর শক্ত, নিংসার্থ জিতেন্দ্রিয় ধার্মিক-গণের সহিত ইহার শক্ততা নাই।

পারলৌকিক সহল কি, তাহা না জানিয়াই
অনেকে পারলৌকিক সহল আহরণ করিবার
নিমিত্ত বাঞা হইরা থাকেন এবং সংসারের
সহিত তাহার সহন্ধ কি, তাহা না বুঝিয়াই
সংশারকে ভাহার অন্তরায় ভাবিয়া ভিরস্কার
করিতে প্রবৃত্ত হল। বস্তুতঃ এই সংসারই
পারলৌকিক মহল আহরণের উপসুক্ত স্থান।

আমাবের অমর আরা কতকগুলি অকর সম্পত্তির মহিত জন্ম গ্রাহণ করিয়াছে। ভক্তি প্ৰেম বৃদ্ধি বিবেক প্ৰভৃতি আধ্যাৰীক বৃদ্ধি मक्त आभारमद (महे हित्र्याणी अकत्र मन्प्रमु, চির কালের উপজীব্য ও অনশু জীবনের সহল। গৰ্ডন্থ শিশুতে চফু কৰ্ণ প্ৰভৃতি ইন্দ্ৰিয় সকল যেমন অপরিক্ট থাকে. সেই ৰূপ একৰে আতাতে এমন অনেক সম্পদ্ গুপ্ত থাকিতে পারে যে, ভাহা লোক লোকান্তরে আবিষ্কৃত हरहा जागानिशंदक উভরোভর बव बव 🏝-দৌভাগা প্রদান করিতে থাকিবে কি**ভ** তাহার গণনা পরিত্যাগ করিলেও ভক্তি ন্যায় দয়া বৃদ্ধি প্ৰভৃতি যে সমস্ত সম্পূদ্ আবিদ্ধৃত क्रेश आगाटमत क्ष्मां क्रेग्राहक, काशांत উপরেই একণে পরলোকের জীবিকার জনা নির্ভর করিয়া নির্ভন্ন ক্রীয়া বাইতে পারে। के नमल ज्याचि न भारते श्री बहुई नहें भारत तोकिक मश्रानत आहतन। **अ विश्वारत** पनि কাহারও সংশয় থাকে, তাঁহার ক্ষরেত্রের নিমিত উলিখিক হইতেছে বে, আৰক্ত শং (भका उक्, यद्भगो यद्भका दभ्मो, निर्देश जरशका नहां तु, अनाही जरशका नाहराहर पूर्व जातका कानवार, ७ जनक जातक कर्षिके त्य त्नानाबातक मीतिका केशांकाक

गरकर करियात रकान काइन्हें बाहे। के नमल छन तमन नहरतात्कक महावृक्षा कलाव अ श्वासीयः रणवरमार्कक विश्वारमाङ् रमहे क्ष माननीत रहेत्व । शृषिदी नईरकाकादव **बहे शांतत्नोकिक मध्य चारबार चनुकृतका** कतिराज्यह । वीराजत नहिक ब्रुट्यात, ब्रुट्यात সঙ্কি পুলেশর ও পুলেশর সহিত কলের যে বাপ সম্বন্ধ, ঐহিক জীবনের সহিত পারতিক कीरानत चिक्त तारे क्ष महस्र । अधादन ইশরের আরাধনা, পিতামাতার ওঞ্জারা, खी भूटबर अिंगानन, भटतांभकात, विमां শিক্ষা ও কর্মকেত্রে পরিক্রম করিয়া আ-चाटक य मयस कल डेब्लम हम्, काहाटकरे আত্মা পরলোকের কন্য প্রস্তুত হইতে থাকে। যদি শিশুকে সুস্থ শরীরে ভূমিষ্ঠ দেবিতে চাও, তবে যথানিয়মে গৰ্ডকে প্ৰতিপালন क्त्।

पूर्व प्रदेश जैस्पेड्र क्यांचाण हिंद (व. किट ए द्वांकर हिंगांत्रज्ञ सर्वेश स्थानंत्र शर्माक श्रम् करिया हो स्थितंत्रका श्रमेत्र रिक शिक्टक्डा स्थानका स्थानक द्वाक स्थान रोज काम शुगायक स्थानक द्वाक स्थान स्थानका श्रम क्षेत्रका स्थानका द्वाका स्थानका स्थानका स्थानका स्थानका स्थानका के स्थानका स्थानका स्थानका क्षण्यकः । वस्त्रकेशाविककः १६ वरणस्यकाः रक्षणस्य कर्षे क्षण्यः एकः दर्गाणस्य वर्षतः । प्राप्त नक्षणः स्थि क्षण्यः वर्षते अग्रत्यकः उत्तरभागामस्य क्षण्यितः ।

खीटनादका कुलनाय।

শুভসাবিদী হইতে উদ্ভ ।

मह्तामधारक मक्त विश्वतंत्र क्रमनः छेविछ इद्देश्वर अवनी जडा इद्देशक काम नर्वात मर्वात. मि-गण्ड दश बादे। यमि देवदित नीठि सक्त ध्यमर्गन कत, ध्यक्तिनाक जान कि निर्मान महकादि • धारम किंत समाप्ति लक्षण देशकारिया बिस्त । किंक छेप्रकि मा इडेक, श्रविवर्डम एवं बहेटआई। श्रतिवर्डमत প্রবল ক্রোভ বে আমাদিশের চতুদিকে অবাহত व्याप अवाधिक इंडेरकरक हिंदू। देशम निःमर्भातः তেম্ন অবিষংবাদিত। অসমাদিশের চকু কর্ণ উত্ত-हाई इंडात माकी। अमन अकृष्टि निम यात्र मा, व मिम सामय ल्याटक कान ना ल्यांन विराह किछ ना কিছু পরিবর্ত্তন উপস্থিত না হয়। ভাচার, বাবহার, ধর্মা, রাজনিয়ম, এবং ভবো আভৃতি যাথা বিস্থ মান্ত্রিক, ভতাবভই পরিবর্ত্তমের অধীন। প্রিবর্তন लेशदारभार जारभका करत मा ; त्नीक क्रमता र प्र इ.थ महादेव कागरसारमञ्जूष टाउड हां है है। है है। কর তার না কর, তাল বাস আর না বাস উত্ आश्रमात्र वालाई व्यागाठ शहरत, माश्रम बत्तहे वाकन कहिरत। समा समाखरहत कथा शतिकांश कर, आमानियात निर्वामक्ति अहे वक्रमान दिन्छ অৰ্দ্ধ শতানীতে কড পরিবর্ত্তন উপস্থিত হটয়াছে, এবং আৰুও কত হইতেছে, ইহাই ফে গণনা কৰিয়া নিশ্চিত কৰিতে পালে? আময়া অব্যাবসদেখীয়ান-শের আচার ঘটিত একটি কুল ক্ষমত অয়ত্রপুল নীর পরিবর্ত্তন সকলে, পাঠক্লিথের সমল্ফ অভিক5 कथा बिरवनम कतिएक छाडे। यान कामापिरभव बक्क दिवस्ति इक्टिए सुरु मा सह, छेश जामानु छ बरेटलरे जामहा जुथी बरेंब। किस यनि छेटा गुडिए এবং বামাভিকতা উভারেরই সমত হল, আমলা कत्रमा कति, किया बहरण महामग्र गास्त्रि भारते कामाभिरमेत भक्त खंडन कतिद्वन ।

मखानीति ब्राणित प्रयोग नहिल्लान करिएक रहे मा, बरे कमाने क्षेत्र, जावना जांद रे रमान गाउरावे क्षेत्र, जोर्लास्क क्रमान नावदात गांच नावि बर्णान क्षांक कमरा ६ दिर्गरहरू कार्णिक क्षित्र कर्मा क्षांक क्ष्मांच कार्यात गांव क्षांक नाविक रक्ष्मांच वाक्रिक क्ष्मांच व गांव क्षांक करित क्षांक क्ष्मांच क्षांक क्ष्मांच गांव क्षांक करित क्षांक क्ष्मांच क्षांच क्ष्मांच क्ष्मां

देश कियार के अला-भगाकांक कुनकमा। करार क्रमेंबर्क के राक्ष पंछा किएंड जिस्स निक्र नांग नान-शक्ष के ब्रोड के देश का निष्यों, कार्यन मरण men high the new general alow real की गालका के भारत मान किया कर क्रिकेन के देश के कि कि कि कि कि कि कि कि कि THE WORL WIND BEEN WESTERNER ARTHUR BOOK ASTALL ASTALLA ASTALLA CONTRACT रकार का विकास अकेंग्र अकेंग्र का स्वाप्त राजिया दांश करिकार जिनास क्षेत्रक राज्य राज्य है। विषयमा अवर गाक्षित हाकी सर्वापिक ४४ । श्रीरमां-द्या पुरस्कास र प्रशास क्षेत्रप्रक, व्याप, क्षाप्राकित्यप ज्यान्ति माझ । अर्पन् राम्म हेम्पन एक स्थान माह-**লো**ই আপেন্তি শ[্]তের ইঞ্ছ পার । সংসুদ্ধ কলে क्टोबरेंड क्टोब्रा वकस्थान हुए । असे बहा है है है मध्युटलक्षरे क्रमान्धि। मन्द्रपतन नौजन्मगतन মসভাষাতেও ভাষাগত কডক-বুলি নিলম *প্র*ণ্ঠ व्हेरार्ट्श औरमारकत देशमाथ बात्रहात ए राज ব্যান্ত লক্ষপ্ৰতিষ্ঠ নিৱমের বক্ষান্তলে দকিণ আঘাত रेट्टिकर्क, डेक्ट्रेड कामाजिएक ठक्त मूलकरूप । धार ले लक्ष्य मध्मग्री नमस्रकाल देखानि वाना অভিব্নের নিক্ট বেরপ বেশি হয়: চন্দ্রকা रक्के अध्यक्षी प्रदेशियांबाःय, भहरूकांविनी धारि, ্টু সাল্ড গোণাহিক-মানত আমাদিণের মিকট 👣 ালী গণ প্রতীয়মান হয়, অণুমাত্র প্রভেমও গ**়িশ** ৪ হর না। বি**দেশীর সভাতার** অভ্রেখে পিলেশীয় সংস্কার এবং মাতৃভাষার তল্পাহন করা আমাদিবের নিকট কিছুতেই যুক্তিসম্বত বিবেচনা গয় শা। আমরা এই নিষিত বিনয়ের সহিত প্রতার প্র যে জীলোকের ভূলন।ম ব্রহার করা যদি পুস্তঃই আৰুশাক হট্মা উঠিয়া থাকে, তবে উহা *হম্*ন ভাবে হউক বাহাতে আমানিলোর, ভাষার এক কভবিকভ নাহয়। চন্ত্ৰকলা দেন না বলিয়া যদি চন্দ্রকলা মেনজায়া এবং শিকুকুলের পরিচয় निएक प्रदेश की पठी गालांक मुन्यती क्यू मा विश्वशा যাঁল মরোজনুম্বরী বসুজা কি বসুভূতিতা বলা হয়, তৰে প্ৰয়োক্ষণও সংসাধিত হয় অথচ ভাষাগত সং-कात अविकृष्ट पाटक। हटके। शाशांत बटनगामाधारत अकृष्टि करमक्षि नांद्रम्य खीक्षरांयक क्रम माध्यस्य इत्ना अकृषि स्नाकात्र मश्रद्यांग क्तित्न इंड्रेट्ड तारक। रव ममल नारम अहे युविधारि नाहे. जाहांब र्भणांद स्रोता नंस रावद्रोत क्वित्वहे कांग्री हता। है। एक वन् कशाम बहु भाका है। निर्मात मीजिक जानाबिर्द्यात ध्यक्षांविक होस्त्रिक क्षरकार्य करन । स्थापन जिल्ला कर कार्यान মান্ত্ৰীকে এনেশীর ছামার অনুবাদ করিতে ইইলে. किम-तथ, वाकीज मात्र किन्नुहे हहेटद मां धरश जिल रामन और मामकीत स्टानक हरानत कुमाही और मान अवस्थित विदेश राजकात क्या गांत । यक्षताह खागात ज्यान बका व्यव बाडीकेनिक वह उपन्त বে উপাত্তে স্থাপত সম্ভাবিত হয়, ভাছা উপোকা रहिशा करते सन्ति का का समाहित नेप करमसम नवा अवका रिक्टरोत । आनुष्ठा लागाविद्यान अस्था-

বিত বিষয় সম্বন্ধে অদ্য এই মানে বাছি ই নিহত ইইলাম ইহা লইয়া সাধারণো আলোচনা হইলে আমাদিণের বলিবার যাহা অবলেব ইহিল গোহা হথাকালে প্রকাশ করিব।

A LECTURE IN REPLY TO TAKE QUERY: "WHAT IS BRAHMOISM!"

(Concluded).

Another shortcoming of the present Biahmo Church is that there is treet of sentimental than practical bead volence within its pale. Do we be tend to the calls of the meedy und the unfortunate as we should? we provide those who cannot affect for their education with its necessard Do we watch the beiappliances? side of the sick and minister to their requirments without repini | 1 Do we assist our poor neighbours with money and advice as much! it lies in our power's Do we take notice of a poor Brahmo family after his douth? are questions which we perhaps cannot an swer to the entire satisfaction of our own consciences. By practical benevolence I do not mean that dry charity, charity of subscription-books; the which contents itself with paying a certain fixed sun: to a Charitable Society every month and thinks it/ enough, but the charity which flows from the true milk of human kineness, moistening the whole soul and exercising a mollifying influence upon all the affections of the human heaft. Perhaps in this personal kind of behavolence, in matters of mutual syldpathy and assistance, our orthodox ancestors were better than we. A poor Brahmo, who shares his meal of rice with another poor man, is more religious than he who merely indulges in sentimental conversation on the love of God for hours together,

A Brahmo, who nurses the sick with his own hands without repining, does more for getting forgiveness for his sins from God than weeping at church from a sort of spiritual contagion caught from his neighbours instead of a feeling of deep repentance for his sins. He, who loves God, loves his fellow-man. The best proof of man's divine love is the love which he bears to his fellow-men. The Arabian story, rendered into English verse by the poet Leigh Hunt, illustrates this precept of Brahmolen. with great significance.

Abou Bon Adhen (may his tribe increase !)

Awake one night from a deep dream of peace

And saw, within the moonlight in his room,

Making it rich and like a lily us bloom,

An Angel, writing in a book of gold;

Exceeding peace had made Ben Adhem bold,

And to the presence in the room he said:

"What writest thou?" The vision rais'd its head

And, with a look made of all sweet accord.

Answered "The names of those who love the Lord."

"And is mine one?" said About

Replied the Angel. Abou spoke more low,

But cheerful still, and said : "I pray thee then

Write me as one that loves his fellow

The angel wrote and vanished. The next night

It came again, with a great wakening

And showd the names whom large of God had bless d

And lot Ben Adhem's name led all the rest."

I should conclude my remarks on the want of practical benevolence in our church with saying that they do not apply to all the Brahmos. There are many worthy members of our church who are models of such benevolence.

The next defect of the present Brahmo Church is the non-prevalence of a spirit of lave among the different classes of Brahmos. Parker says "As many men so man, theologies." It is natural that differences of opinion in non-essentials may lead to different church-organmations and the adoption of different modes of propagation but I cannot possibly imagine why should these circomstances cause ill-felling in the memhers of our church towards one another? I know not why we should not act according to the celebrated English saying. "Though heads may differ, hearts may agree." When instances have been observed of cordial friend ship existing between sceptics and Trinitarian Christian divines, should not Brahmos love one another? An honest regard to the interests of. Brahmoism may require us to set what we believe to be true in a strong light to those Brahmos from whom we happen to differ in opinion and this attempt to set the truth of our opinions in a strong light may naturally lead us to use strong language. This use of strong but not abusive language arises from inevitable necessity and cannot be helped. Admonition and reproof to our Brahmo brethren are sometimes necessary; they cannot be conveyed in milk-sop language But these things instead of being contrary so the spirit of brotherNothing can therefore prevent us from cultivating that love amongst ourselves and manifesting it in the various ways in which it could be manifested except the hellish passions of hatred add animosity. When we should, according to the dictates of our religion, entertain a feeling of love towards the followers of other religions why should we not love our Brahmo brothren the more? Where the spirit of love prevails, there is true religion.

The last defect which I notice in. our church is that all its members do not adopt a strictly Minda form of propagation. I wish to dwell on this subject at some length as many of the Brahmos do not clearly see the paramount necessity of such a mode of propagation. But, before I introduce the subject, I should premise that, according to the principles of Brahmeism described before, the adoption of a strictly Hindu form of propagation can be no obstacle to our prevailing upon our friends belonging to other nations to embrace Theism and introduce it in a national shape into their own communities. For instance, we can prevail upon a Mahomedan friend to embrace Theism and introduce it in a Mahomedan shape into the Mahomedan community, a Christian friend to embrace it and introduce it in a Christian shape into the Christian community and so on. But to return to our point of adopting a strictly Hindu mode of propaga. tion for our own countrymen. Brahmoism, as its name implies, has arisen out of Hinduism. Bajah Ram Mohun Koy, the founder of our religion, showed to his countrymen by extracts from the Shastras that Theism was the ancient religion of India. Before we

eyen dreamt of Parker and Newman, our venerable Pradhan Achariya had compiled the Brahma Dharma Grantha and embodied the esence of Theism, it those immortal sontences called the Brahma Dharma Vijam mistaken by people for sentences of the Upanishads. The form of divine service prepared by him contains exfrom the Upanishads inculmost sublime spiritual caung the He has also prepared the Annshan Paddhati or Brahum ritual containing as much of the ancient form as could be kept consistently with the dictates of concience. He has thus initiated a mode of propagation adapted to the great Hindu community at large. It is framed with so much wisdom that it is not suited to a particular section of the Hindus such as the Chaitanya Vaishnavas only but the great Hindu community in general. It is to be desired that all Brahmos should adopt this form of propagation. The Hindoos are an essentially conservative nation and a strictly Hindu form of propagation is necessary to bring them over to Brahmoism. Our principal aim should be to bring over to our creed the great Hindu community at large and not a few English-educated natives. Our present missionary efforts are almost entirely confined to the English-educated class the members of which are but a drop in the ocean compared with the vast population of India. This large disproportion of non-English-educated to English-educated men will continue for some conturies to come: It will take a long long time for English education to penetrate the lower strata of society, the great mass of people in our country. Besides, when we countrier that English aducation depends, in whi o - familian movers

ment which lately showed signs of a desire to withdraw their aid from stab education, our prospects of availing ourselves of it as an auxiliary to our missionary efforts become very limit-Our great aim should therefore be to convert the orthodox mass of our countrymen to Brahmoism andnot a few English-educated natives. There should be greater rejoining amongst us if we can convert one non-English-educated orthodox Hindu to our fairs there for English the goes Hindus as that would be an earthest of our being able to work service fully in finare upon the great Hindu community at large. The English-educated class is of course not to be neglocted. The system of propagation inby our venerable Pradhan tiated Achariya is adapted also to the Enghish educated class. Take for example his immerial Rekty, and those ressters pieces of pulp t stepensee who hawaken our souls to their inmost depths and stir them up to endeavours after a high. or religious life, deeply saturated as they are with Hinda thought and profusely illustrated as they are by quotations from the Hinday Meatrus, do they not move alike the bearts of English shouted as well as orthodox Hindus? It is therefore evidentthat his system of propagation is suited to all classes of the Hindu community provided of course it were sustained by a piety as deep as his. It is to be regretted that all dance of Braimes do not solow it. I do not say that the mode of which and the gretom of progression meanined by our veserable Profilers Acting ye should hat he improved from time to time econoling to the gammeies of Brahmo igns we wrving simely their nationa sopre bot this I maintain that, i Apprior constant Brainses think the

propagation to be best suited for winning over the assiority of their country. men to Brakmoism, it is their duty to follow them although a scutimental catholicity may lead them to desire a so-called universal but grotesque form of propagation, a jumile of Hindu, Mahomedan and Christian forms, not likely at all to comound the respect of either Hindus or Christians or Mussulmans. They should sacrifice their individual tastes and inclinations at the shrine of duty, and support a strictly Hindu mode of propagation. more at English-educated Brahmos sincorely desire the success of their beloved religion, they should themselves try their best to bring over their orthodox friends, relatives and neighbours to the Brahmie faith instead of consid ering them to be a separate race with whom little communication is to be kept. For the purpose of accomplishing the great task of winning over the large body of their orthodox country men to Brahmeism, union and concentration of purpose are necessary on the part of Brahmos for without such union we cannot expect to succeed in accomplishing that great object. As yet we have not been able to work much, if at all, upon the orthodox community. However limited their success, and however almost entirely confined that success is to a particular class, that is the English-educated class, it is a matter of great joy that our missionaries are carrying the banner of Brahmoism into distant parts of this large continent but more glad would I have been had they been able to influence orthodox India. The present great want of India is a reformer whom the Hindus can call entirely their own and who shall devote amostic wholly to them, strictly

mode of working and that system of observing a Hindu form of propagation. Our present great want is a Hindu reformer in the strictest sense of the word. Such a reformer will consider it his good fortune if his course of missionary conduct could lead the acis no while all head of the orthodox party range of the Governor General of India to see the Brichma Samaj. Such a reference will make it his ambition to ourse a successful agitation on the sarpet of Prahmoism amongst Sharris and the Routtaniariyas ladia instead of the dergy of Enghad and thereby influence to great Hindu Community at barge which is led by the former. He will exert his propagate Brahmoism best to Benares and Mithila instead of London and Edinburgh. As Sakva of old did with respect to the eligion which he founded, he will fight the great battle of Brahmoism with the Pundits of Benares, that apparently impregnable stronghold of id-datry and superstition, and, winning that battle, convulse orthodex India from Cape Comorin to the Himalaya. The task secons at first sight to be beset with insuperside difficulties but to a really powerman those difficulties are nothing. Great qualifications are required to fit a man for the post of such reformer. The most prominent of these malifications are fervid low calm love of God libs that of the Rights of old; more of Aryan plants dity than Shown is presion; more of simplicar, unostentationeraes and silent action than Buropean cenvontionalism and noise, such unostentatiousness being evinced by greater dependance upon modest friendly visits to people and familiar conversation with them on the subject of religion. than upon any other means of propagation; complete irradiation of the

8৩ intellect by the light of Western know- one of the defects of the present ledge accompanied at the same time by the possession of a firm Hindu east of mind; a competent stock of Sanscrit learning capable of commanding the respect of Brahmindom but deeper appeciation of the sublime spiritual truths contained in our Shastras than such learning; and extraordimary powers of elequence but the style of that eloquence suited to Hindu tastes and feelings. There is one amongst us who presesses these quarifications in a grout degree but this main portion of his life was devoted. the determination of the prices ples of Brahmeisu. its 😶 from the errors and 1-7001 113 Vedantism, the introd e of what may be called do slip in the proper sense of the term into the Brahma Chu b. the compiletion of a book or Il istir toxts containing selections from the Shastras and the Shastras visit, capable of commanding the rescrence of orthodox India, the population of a ritual which is likely a prove acceptable to it and the unlinktion of a system of propagation which may at no distant period e conditions the whole India. He could not occumulations time for the actual work of propagation althor what he he done in that department of adjion is not small. The evening of years is now stealing supon him and we cannot now expect much here him in that direction.

his mantle fall on a worthy success-

Who knows that that success-

be may be present in this assembly

listening to those words with eyes

t with outhersiasm and making a

am resolve in his mind to ex

1 Imboo Debendenath Tagore?

The want of the universal adoption

'a actional system of propagation is

Brahmo church. The zeal, the earnestness and the noble self-sacrifice of cl some of our younger brethren are highly to be praised. If they all adopt a strictly Hindu form of propagation, what admirable results would follow! I recomend a strictly national form of propagation but let it be clearly understood by my brother Brahmos that I do not hereby approve of the conduct of those umong them who follow idolatrous practices under the cover of nationality. Their conduct is to be highly deprecated . the many of conscience. I ask how can a man believe in the Ope True God and have the heart to observe idolatrous rites at the time. of marriage or the performance of obsequial ceremonics? In the name of common sense also, I ask how can we drive away idelatry from the land by following idolatry? The very orthodox Hindus whom we wish to bring over to our religion would desruse us for our insincerity if we follow id-datious practices. It is to be regretted that many of the Brahmos want that proper degree of enthusiasra which is required for carrying on the work of reformation. Some of the Brahmos are purely vegetable averse to any locomotion: beings others again are railway locomotives cunning with furious speed, and " makthe earth," to quote the words of a modern Bengali poet, "tremble with their tread and rending the skies with a dreadful sound." I wish that the so-called conservative Brahmos were a little more enthusiastic and the socalled progressive Brahmos a little more temperate than they are now. We should be conservatives without prejudice and progressives without violence. I wish that the barmonious

fusion of both the elements necessary for the well-being of our church would take place. Would to God that such a result would follow the endeavours of its well-meaning members with lighting speed!

আদি ব্রাক্ষসমাজের পুস্তকালরস্থ

বিক্রেয় পুস্তক।

अध्यक्ष व्यथम अधिकीय चटलत लांदर्भर्गा महिख (जान कान जनदा) जाचापनी क्षणम । विकीत चट्छत ভাংপৰ্য্য সহিত এ ভাল বঁখা সংখ্যাদ প্রাহ্মধর্ম (দেবনাগর অক্ষরে) 10 जाक न्या व्यवंभ थ्य (शिका य चारशंग go. महिल) ... ×९ प्रत जाकार्य (डीका महिन्छ) 10 दाभव वाकामग्री 10 वालका ताकरमी हिछीत पर 7 राम्या उपायम् जार्यम् गरिक ্রাক্তরের সত ও বিশাস पायदर्गात वर्गायम् न त्यायम् व्यक्तन ्षाधरमञ्जू याच्यान—विकीय अकत्र ন:সিক প্রাহ্মানমাজের উপনেশ भरभाभारमभं অনুঠান-পদ্ধতি माट्यादनव কলিকাড়া জ্বাক্ষ্যনাক্ষের বস্তু জা والورا ज्यांनीशूत्र ज्ञा विमान्तरत्रत्र जैभेरतम **उक्तिगान**म् जोनागगात्मत रक को রাজনারারণ বসুর ব্জু তা এখন ভাগ নালনারায়ণ বসুর বজুতা বিভীয় ভাগ विश्वा आकामगढमा बहु का शिशिनिया सम्बन्धारकत्र वार्थना ७ उन्हाम च गानी पत्र ता बदराहिक अवादका व Gafarn freit rent

वर्षक मीर्शका विक्रीप्र कांच	3
धर्मे छ दुनी शिका अध्य	1
ও দিতীয় ভাগ একর	a
অাজোৎকর্ম বিধান	210/0
उद्यक्षण	Jo
धर्म ଓ उड़ादनत्र मीगांध्या	do
অ'ভাহিক ব্ৰয়োপাগনা	Jo
, जंदकाशांत्रना	10
ব্ৰন্থোপাসনা পদ্ধতি	10
এক-স্ভোৱ	136
প্র-শিকা	epl o
পৌত্তলিক প্রবোধ,	ş n
त' ड गरिक कटंडा शनिवर पारनी पत याताः	ەلى تۆ
बीरानत डेप्समा ७ डरमामरनत डेमाव	do
চ্ রিডমালা	d o
पत्र क्षि	Œ
িজেপিংবদ্ন যালা	10/0
ধর্ম সংগ্রহ	do
धर्मा इन्हें।	10
क्षिताम् मर्श्रह	/50
ार्वतः अद्देशकील	10
इंग्लेड	10
্ শ্ৰাণ্ড চতুৰ্য ভাগ	70
गरशील गुक्तांवर्णी	1c
भी क्रमांम्	{ o
पुरुष महीत्	10
नीकाम्ब	10 .
व्यसमञ्जूषे	10
প্রাক্তাত-কুমুন	1/0
উ द्याचनाक्ष्म	10
गुरुकर्म	[• •
স্থোৱনালা	10
थर्म भीका	20
ধর্মা প্রজারিশী পরিকা ১৭ ৮৭ শকের	
बक्ब वाँधान	4•
पर्या था गाँउ विका १ १ । भारत व	10
वर्षाकातिनी शक्तिका ३१४४ महरूत ।	10
কাৰি বিশ্বন	10
ীপ্ত-শিরার জাতবের	(>9

ত্রদাধন দিভীয় বার চুক্তি	J	19
विश्वाम	10	
ज्ञाकार्य छाव	150	•
ত্ৰাক্ষথৰ্ম ও ভ্ৰাক্ষণমাল বিষয়ৰ অস্তাৰ	10	,
ব্ৰাক্ষরবার	10	•
म्हर्ति स्मव	10	,
পঞ্জবিংশতি বংসরের পারীক্ষিত রভাস্ত	/•	
र्वभावा-अथग मर्था	(3	ø,
वर्गाना विक्रीय नश्या	ەر	
নারীজাভি বিষয়ক প্রস্তাব	3110	
R.	A.	p
Defence of Brahmaism	4	_
and the Brahma Samaj		
Brahmic Questions of the Day		
Brahmic Advice, Cantion and He Adi Brahma Samaj,	ip a	
its Views and Principles	£)\$	
Reply to Bishop Watson's		
Apology for the Bible	۶,	6
A Discourse against Hero-	a	
making in religion	12	
Selections from the Vedanta	2	
Hindoo Theism	1	
Theists' Prayer Book	1	
Signs of the Times	1	
Vedantic Doctrines Vindicated	2	
Dectrine of Christian		
Resurrection	2	
Physiology of Ideastry	6% (%)	
Miracles or the Weak Points		
of Revealed list plea	8	
Lectures on the Parlinlegy		
A 1979	4	
of t'ever 1		
় নৃতন বিক্রৈয় পুস্তক।		
রাজনারয়ণ বসুর বক্তৃতা বিতীয়	জাগ	
म्सा ७० जाना।		
X -10 and M -10 (%)		
- Commence of the Commence of		
বিজ্ঞাপন ৷	. Si .	4

বিজ্ঞাপন।

আগামী ৫ আবাদ রবিবার প্রাতে ৭ ঘটিকার সময়ে মাসিক ত্রাক্ষরভাক হববেক।

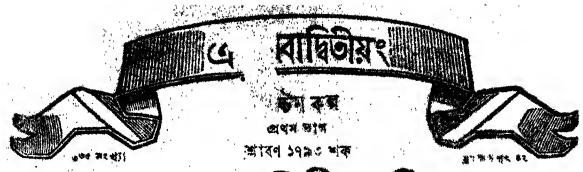
খাগানী > ভাৰাড় রহ'লভিনার লছা। ভাট ঘশার সময় ভবানীপুরে উমবিংশ সাহৎসরিক ত্রাক্ষমনাক হইবেক।

আর ব্যয় ়া

टेक्स ३०२ ७ देशमार्थ ३००७ मक । कार्नि वासमाक

	1	
জায়	***	650130
পুৰ্মকান স্থিত	• •	o a a helsa
সমষ্টি	****	* 1314
राव		6 6 4 4 5 4
নিত	13	* * * **
	আয়	• •
वांधानमाङ	***	8 5 E/St
ভন্নবোধিনী পত্তিকা	•••	684 4 4
পুতকানয়		
यक्तानम्		३ % १००
শ দিছত	***	33110
		39 1/30
मम्कि	144	820130
	दाम	
उक्तिम्माक	1 - 概 17 car	. 3 b 10 132
उद्ध ्य विनी गढिका		3 3 4 11420
श्क्रवानम	***	8 2 1/4
पञ्जालय	•••	38%0
गॅम्डि	***	3 4 19 0
×**		and the state of t
***	gene kanan manan 1842	1 3 9 450
भारत स्थित है। भारत स्थापन	THE METERS	
		3. 4
मर्गारमास्य अ	,	a
" ठक्षराभाग गर्का	नावाम	** 3
" कामीनाथ प्रश्र	180	S
" কেত্ৰনোহৰ ধর		, 3
काम्ब	विक काम।	
《数据/图》 多型制 1.1 图 1 图 1 图 1 图 1 图 1 图 1 图 1 图 1 图 1	18.84	
ीत् क तमगीरमाञ्च क " कर्नाकाम क्रिकेट	भूती • सर्वाच	
" क्रांचिमक स्टेंडा	শাখ্যায় 📉	
कार्युक्त तमगारमाञ्चल ८० " कुर्गाच्यालक घरकी। जानाबारत व्यक्ति	শাখ্যায় 📉	\$ 1/50
" इशिक्षमद स्टडा	শাখ্যায় 📉	5 8/30
" क्रांचिमक स्टेंडा	শাখ্যায় 📉	\$ 1/30
" क्रांचिमक स्टेंडा	শাখ্যায় 📉	3 1/20

THE AND THE REAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PROPERTY ADDRESS OF THE PROPERTY



তভাবোধনীপ্রতিকা

র্গাবাএকমিদমপ্রতাসীয়ান্ত কিঞ্নাসীতিদিত সর্ক্ষেত্রও। ওচেত্র দিব জাতালয়ত শিবে ক্ষাছিল্বমর্থক-্মবালিনীয়ং স্ক্রাতি সর্ক্ষিয়ক্ত্ সর্ক্ষাছিল সর্ক্ষিত্র স্ক্রিন্ত ক্লাব্রিক্ষিতি একাত এই ১০০ তেওঁ এনি পার্কিট্যাহিক্ষ ক্ষাজ্বতি। তক্ষিন্ জ্বীতিস্থাস ক্রিয়ক্ষ্যিক্ষা কর্পাস্থাবিক্ষ

फेशटमन।

শিল দৰ্শ শাসক্ত বেৰান্তবাগীশ কর্তৃক বিবৃত।

৫ প্রারণ রুধবার ১৭৯২ শক।

্রার শীলসম্পন্ধ: প্রসন্ধান্থাকবিদ্ধান।
ত্বাহ্য ক্রান্ত প্রভাগ কর্তি ॥
ভালাব্য ২ বও ৪ অধ্যায়।

নাচরিত্র, সুশীল, প্রসন্ধা ও প্রমান্তানী, এইনপ বুজিমান্ বাজি ইহলোকে স্মাদর লাভ পূর্বক পরলোকে সদ্গতি প্রাপ্ত হয়েন। স্দাচার, বিনয়, আত্ম-প্রসাদ ও ক্রত্ম-জ্ঞান, এই চারিটী ইহলোকে স্মাদর লাভের এবং প্রলোকে সদ্গতি প্রাপ্তির কারণ।

थरंग नगांठात नरगांकत वर्ष नापू.

णांठात गंद्यत वर्ष तादरात, नापू लांद्यता

त्य नकल वनुकान करतन, कांराद्य मगांठात

करह, धवर व्यनापूषित्मत व्यनुक्ठिक कर्यादक
व्यन्त धवर व्यनापूषित्मत व्यनुक्ठिक कर्यादक
व्यन्त धवर व्यनापुषित्मत व्यनुक्ठिक कर्यादक
व्यन्त धवर व्यन्त वादक। नक्षा क्यात्मा,

नांद्रां क्यां मंत्रा, नांद्रिया, नांद्रां मंत्रां नांद्रां व्यक्त वाद्यां मंत्रां व्यक्त व्यक

त मनुनाग्न माधुरावहात। বিপরীত ছুংখের কারণ যে সকল অনুষ্ঠান, क्रानाई व्यमानु वावशाह । "माधुकाती माधु-গৰতি পাপকারী পালো ভবতি। পুনের কর্মণা ভবঙ্কি পাপঃ পালেন।" यिनि मांधू कर्ष करतन, छिनि मांधू इरतन, জার যিনি পাপ কর্ম করেন, তিনি পাপী হয়েন; পুণ কর্ম ফলে আত্মা পবিত্র হয়. আর পাপ কর্ম ফলে আত্মা পাপময় হয়। कल প্রত্যক্ষ मा इहेटल কোন্ কর্ম সাধু বা কো্ কথ অধারু তাহা জানা যায় না; কর্ম অনুষ্ঠানের পর যথন তাহার সাধু কল দুকী হয়, তথন তাহাকে সাধু কর্ম বলা যায়, জার যখন অসাধু ফল প্রত্যক্ষ হয়, ডখন ভাহাকে অসাধু কর্ম বলিয়া ভির করিতে হয়। কিন্তু সাধুদিগের যে আচরিত, তাহা ष्यदशाहे नांधू कार्या ; षाक्रवा नांधू निटशत আচারের অনুকরণ করাই কর্তব্য। "আ-कारकार्या पर्यावरमयव । वावहारतार्था मांबुमांर श्रेमांगर (रामरण्डतर । " नपाठात्र ! यम जवर नांशूनिटशंत वावशांतरे व्यमवर অমান। আর অসাগুদিগের যে **আচরিত** कारारे जनाधु काकी, कारात जनुकीन कर्डवा

নৰে; "আচারহীনং ন পুনস্তি বেদাং।
সাধু আচার বিহীন ব্যক্তি পবিত্র হয় না,
সুতরং ইহলোকে সমাদর বা পরলোকে
সদ্গতি প্রাপ্ত হয় না।

দিতীয় বিনয়—কায়িক, বাচনিক, মান-সিক ও পরিচ্ছদাদি-বিষয়ক অহঙ্কার উদ্ধার পরি লাগ পূর্বক অকগট নম্ভা প্রদর্শনে নাম বিনয়। বিনয়গুণে শতু মিতা, রাজ अजा, धनी पविक्र, क्लानी वर्त्वत, मकरलहरें; भन आंकृष्ठे रहा। विनहीं कि किर्हे अन्तर्भा করে না। বিনয়ীর প্রতি ঈশ্বরও এসম থাকেন। বিনয়ীর সকল কামনা সিদ্ধ হয় **সংসারের উন্নতি হ**য় এবং ধর্মা বল লভ रुप्ता विनयी विशक्ति इटेटल एक इत ७ সম্পত্তিতে শোভিত হয় । "বনস্তা অপি রাজ্যানি বিনয়াৎ প্রতিপেদিরে।" অনেকে যমবাসী হইয়াও বিনয়গুণে রাজ্য লাভ "ভৰতি বিনয়নশ্ৰং লোকনাথঃ প্রসর:। "লোকনাগ ঈশ্বর বিনর নম্ভের थि अमस **इ**रस्म । " **अ**थभर छ। विमी छाप्रा নিতা ভজাণি পশাতি।" দিনি প্রযাদ র্ছিত ও বিনীত স্বভাব, তিনি সর্বুদা কুশল দর্শন করেন। ভাতএব ঈশ্বরকে হৃদয়ে বর্ত্তমান জানিয়া হে হানব সকল ৷ অহ্স্থার উদ্বভা পরিভাগ পূর্ব বিনীত হইয়া ইহ-লোকে সমাদর ও পরলোকে সদ্গতি প্রাপ্ত **FB** 1

ভতীর আছা-গ্রসাদ -ধর্মানুমোদিত
কার্যানুষ্ঠান পূর্বক অন্তর্মার প্ররিতানের
নাম আছা-প্রসাদ। ধর্মের অনুষ্ঠানেই
আছা পরিভূটি হয় আছা-প্রসাদেই ঈশ্বরের
ক্রেনহা লাভ হয়। "আছানা পরিভূটিন
ভূতী ভবতি দেবতা।" অন্তরাছা পরিভূটি
হইলেই পরমদেবতার সন্তোম জনো। "মং
ক্র ক্রিভিন্ন গ্রিভেন্নেইবর্মিনঃ
তৎ প্রমদেবতার সন্তোম জনো। "মং

বে কর্ম করিলে আন্ধ-প্রদাশ হয়, অভি বন্ধ পূৰ্বক ভাহার সনুষ্ঠান করিবেক, ত্রিপরীত কর্ম পরিত্যাগ করিবেক। "সম্ভোবং পর-मात्राय प्रथार्थी नः यकान्यत्व । नत्वायमूनः हि मूर्थः इःथम्लः विश्वागः।" मूर्शार्थी वाक्ति मत्क्षीय व्यवस्था कतिया मश्यक था-किरवन, खरहजू नरस्रायहे मुरभन्ने मूल अवश তদ্বিপরীত অসভ্যোষই ছংখের কারণ। " এসাদে সর্বজ্ঃখানাং হানিরস্যোপজায-তে ৷ " অন্তরাত্মার প্রসন্নতাতেই সকল তুংগ দুরীভূত হয়। "অসচ্ছোদপরামূলঃ নভোষং যাতি পণ্ডিছাঃ। অন্তোনান্তি পিপাসাবা। দরোদঃ পরমং **সুখং।" মূর্যেরা অসন্ভো**ক-পরায়ণ হয়, পণ্ডিতেরাই সঙ্গোষ ভাবলয়ন করেন। বিষয় ভৃষ্ণার অন্ত নাই, সভোষই পর্ম সুখ। অতএব যাহাতে অন্তরাক্স প্রদন্ধ লাভ করে, একপ কার্য্য করিয়। रेम्टलाइक नम्मन ७ প्रत्नादक मन्त्रकि व्याखः, समेदवकः ।

চভূগ ব্রহ্মজ্ঞান—ব্রহ্ম বিষয়ক জ্ঞানের নাম ব্ৰহ্মজ্ঞান। বৃহ থাতু হইতে ব্ৰহ্ম শ্ৰুটী निष्णम हरेगारह, तृह शाजूत वर्ष तृहद-मर्द्रवाशी। यिनि कर्ग मर्ख ाठाल, पुठ তবিষাৎ বর্ত্তমান, সর্বতি ব্যাপ্ত हरेड आदिश्न, তিনিই তল। তাঁহার সর্ব্যাপিত নির্ণর করিবার নিমিত্তে জগতের প্রত্যেক পদার্থকৈ পাঁচ অংশে বিভক্ত করিতে হয়; বিদ্য-যানতা, প্রকাশযান্তা, প্রির্ত্ব এবং নাম ও क्षा । প्रनार्थमाहबहरू बरे नांहण जिन भात किहूरे नारे। देशत गर्पा धार्यम তিনটা ত্রন্ধের পরিচারক, এবং সেই ছইটা জগতের জ্ঞাপক। যেবন আমার হস্তবিত এই সুস্তক খানি জগতের এক পদার্থ বিশেব, चक्र वर हेश (व विमामान जाटक छ क्षेत्राम शाहेटलट बबर देश त्य यात्रात थित्र, कारा-त्वरे अत्यत गढा शक स्टेल्स्टर माह

रेहात माम रव आकार वे उ रेवात तथ रव धारे तकावर्ग छक्तान, छाहाहे काशस्त्र

वाशि हरेबा जाटहरा।

এই প্রত্তক ছুইটা লক্ষণে লক্ষিত
হয়েন। স্বরূপ লক্ষণ ও কাইট লক্ষণ।
"সভাং জ্ঞানমনতং ক্রমা" তিনি সভাস্থরপ,
জ্ঞান স্বরূপ, অনন্ত স্বরূপ; ইহা তাঁহার
স্বরূপ লক্ষণ। আর "যতোধা ইমানি
ভূতানি জাঘতে" যাঁহা হইতে এই ভূত সকল
উৎপন্ন হর, ইভাদি লাহার কার্য্য লক্ষণ।
অভএব স্বরূপত তাঁহাকে জানা ও কার্য্যত
তাঁহাকে জানা, উভরই ব্যস্ত্রান শব্দের
হাচ্য হয়।

উত্তরপ শ্বরূপ লক্ষণে লক্ষিত প্রক্রজন বিবাহে উপনিবদে উত্য় প্রকার বিরুদ্ধ প্রতি দেখিকে পাওয়া যায়। উপনিবদে কোন স্থানে আছে "মনসৈবেদমাপ্রবাং" কেবল মন স্বারাই তাঁহাকে প্রাপ্ত হয় "যমনসা ন মনুতে" যাঁহাকে মন স্বারা মনন করা যায়না এই উত্য় প্রকার বিরুদ্ধ প্রতির এই প্রকারে মীমাংসা করিতে হয়, যথা—ব্রন্ধ-জ্ঞান করিয়া তিরিয়্রক অভ্ঞান বিনষ্ঠ করে বিলিয়াই "মনসৈবেদমাপ্রবাং" বলা হইনাছে; আর অন্তঃকরণ কেই সর্ব্ব্যাপী প্রকাশ শ্বরূপকৈ প্রকাশ করিছে অসমর্থ

্বেদ্র কোন বস্তু চক্-সমিকর্ব হইলে ভবিষ্ট্রের জ্ঞান কানে ভাত-করণ সেই বজর আছাত্রে পরিগত হয়—অর্থাৎ নেই বজর বে রূপ স্বর্থন, লাজ্যকরণ্ড ত্রুপ অব্যব শারণ ক্ষিয়ে ভবিষ্ণক স্বজ্ঞান্তা বিনাপ পুর্বিষ্ণু ভবিষ্ণু ক্ষিয়েক স্বজ্ঞান্তা বিনাপ জ্ঞান জন্মে, বেমন এই পুস্তক ধানি দর্শন করিবার সময়ে শুরুকেরণ এই পুস্তকের

নতা বিনাশ পূর্ব ইইাকে প্রকাশ করিলে তবে এতবিদয়ের জ্ঞান ইইল, নেই বপ্রপথ ব্রক্ষজ্ঞান সময়ে একাগ্রচিন্তে খ্যান-থারণা বশত অন্তঃকরণ অথও চৈতনাের আকার গারণ করত স্বপ্রকাশ স্বরূপকে প্রকাশ করিতে না পারিয়াও তথিয়াক অভ্যান বিন্তী করাতেই ব্রক্ষজান সম্পন্ন হইয়া থাকে। এই প্রকারে স্বরূপত ও কার্যাত ব্রক্ষজান সম্পন্ন হইলোকে সম্যাদর কাতি ও প্রলোকে সদ্গতি গ্রাপ্তি হয়।

হে অন!দি অনত পরমেশ্ব ! জুদি সকলের অন্তর্যামী, আমারলিগের কোন ভাব—কোন কাৰ্য্য তোমার নিকট অবিদিত নাই, ভুমি আমারদিগের ক্রদয়ের সকল ভাব ও কর্মোক্তিয়ের সমুদায় কার্য্য বিশেষ ৰূপে অৱগত হইয়া যথা উপযুক্ত ৰূপ कल विशान कतिरुक्। আমরা যাহা क्थन मस्तरह ७ क्ष्यन। कति नाहे, आमात-দিগের শুভ উদ্দেশে তুমি তাহা আমার-দিগের প্রতি অগরহ প্রেরণ করিয়া আদার-দিগ্রের সুখ বিধান করিতেছ অতএব আমরা ভোমার নিকট আর কি প্রার্থনা করিব। এফণে আমার দিগের এই প্রার্থন। যে তুমি আমারদিগকে শুভরুদ্ধি প্রদান কর, আমরা যেন কথন তোঘাকে বিস্তৃত ना इहै।

शर्या निका।

প্রতি মনুবোর অন্তরে যে ধর্মবীক নিহিত আছে, ভাষা উপযুক্ত কলে পরিপক্ত ও পরিণত হইলেই ত্রাজধর্মের কণ ধারণ করে যাহালা ভাষাতে ধর্মের করে না, তাহারা ব্রাক্ষবর্ম লাভ করিতে পারে না। আত্মাকে পাঠ করিবার নিশিত ও খাত্মাকে পাঠ করিয়া যে শিকা লাভ হয় তাহার দৃঢ়তার নিমিত্ত অনোর সাহায্য গ্রহণ, অন্যের উপদেশ প্রবণ ও অন্যের সহিত আলোচনা আবশ্যক। কিন্তু কোন্ পুষ্প ৰেডও কোন্ পুষ্প পীত, তাল্ ৰচকে দৰ্শন না করিলে হেম্ন ভাচার প্রকৃত ভাব প্রাপ্ত হওয়া যায় না, সেই ৰূপ কি ধর্ম কি অধর্ম, কি পুণ্য কি পাপ, কি পবিত্রতা কি অপবিত্রতা, আপনার भरीका ना कहित्त **७९मम्ना**दहत यथार्थ জানও উৎপদ হইতে গারে না। পদার্থ বিদ্যার শিক্ষক যদি যন্ত্র সহকারে পরীকা . করাইয়া ছাত্রগণকে পদার্থবিদ্যার তত্ত্ব গুলি শিক্ষা না দেন, তাহা হইলে কেবল মতগুলি মুখস্ করিয়া রাখিলে ভাহারা কোন কালেই সুশিক্ষিত হইতে পারে না এবং কার্যা **কা**লে ভাহাদিগকে অ**স্কের** নাার চলিতে হয়। পদার্থজান অপেকা ধর্মজ্ঞান বিষয়ে এই রাপ অক্ষতা আরও क्शना। किन्त प्रः एश्व दिगम धई (या, अर्थ বিষয়েই এই ৰূপ অন্ততা অধিক ছলে দৃষ্ট इंदेगा থাকে। এই ৰূপ অন্তন্তা হারা आ-পাচতঃ অনেক কাৰ্যা সাপন হইলেও ত্ৰান্ধ-ধর্মের শিক্ষককে ইত্বা 🗰 ত উন্নতির সাংখা-ভিক প্রতিবন্ধক বলিয়া গণ্য করিতে হইবে এবং এই অন্ধতা দূর করিবার নিমিত্ত চেষ্টা ক্তিতে গেলে উন্নতিবৎ প্ৰতীয়মান ব্যাপার-সকলের বহু জংশ **আপাতত ছিল ভিন্ন** इहेरल अ जीव इहेरक इहेरव ना। जारनरक धरे कल क्रिकी क्रिडि**एन एवं, नकल मर्छ**-मारगत धर्मभाज क्रेंटि जान्यम चारिकांत कतिता छ।इंतिशहक निका नाम कतिद्वत : क्ति वक्तरन क्रम वर्षनिकरकत ब्रह्माकन

जाविकांत्र कतिहा त्याक्षित्रंटक केटबाधिक क्तिद्वन ।

खेरगारकत बाबारवरे वक वक्षि करा-ধারণতা আছে—কতকগুলি সাধারণ ভাব তিল এক একটি অসাধারণ মহত্তের বীক লইয়া প্রত্যেক আন্ধা কর গ্রহণ করিয়াছে। আকাশভেদী বট রুক্ত ও ভূপৃষ্ঠশায়িনী দুৰ্বা লতা উভয়ই স্বতন্ত্ৰ ৰূপে পৃথিবীয় 🦚 धक कार्य। मणायन कतिए मुक्के क्षेत्राहर । कित मृत्रुचि १८५७ की १८७ में महरतन मिकिया (एक्ट प्रस्त व्याप्त व्याप्त अपने इत् भूके लाइ। सारका अ त्या चौहात्रहे इ**छ वितायन**-মান রহিয়াছে ভাষা দেৰপ দেখিতে পায় না। প্রত্যেক আত্মাই যে ঈশরের প্রেরিড, প্রত্যেক আত্মাই যে ঈশ্বরের বিশেষ বিশেষ षानीर्त्वान वहन कतिरहरह, अटहाक श्राचारे रा विरमव विरमय मन्द्रपुत वीक लहेगा कथा প্রহণ করিয়াছে এবং প্রত্যেক আত্মা ধারাই যে সেই প্রত্যগান্ধার জ্যোতিং উজ্জলরপে विनिः मृष्ठ रुरे एड. मामाना मृष्टिक रेहा প্রতিভাত হয় না। সুতরাং একাল পর্যান্ত मांवांत्र लाटक कथन वीवटक, कथन कविटक, কখন বিজ্ঞানবিৎকে, কখন ৰাগ্মীকে, কখন ধর্ম প্রচারককে ঈশরের বিশেষ অনু-গৃহীত, প্রেরিত বা অবতার বলিয়া পুঁজা णांनिटल्टह। त्नांटक ट्य नश-ফার বণতঃ জড়জগতের সকল পদার্থ পরি-তাগি করিয়া তুর্যা চতা পর্বত ও ইচ্ছ ইচ্ছ महीदक (मदछ। वा स्मर्कानित्रं मानि-ভাব-ছান বলিয়া আরাধনা করে,ুমেই नःकात वर्णावरे नक्षात मनुवादक लेतिकार्य कवित्रा रिटनर बिटनर कमाकाराह द्वार निशंदक क्षेत्रा, क्षेत्रत ध्यतिक वा লাধিখাৰ খান বলিয়া পুঁলা কমিনা, বাকে, जिल्ल अमार्थ विनादि आदमांक विकीर्थ क्रेस Tal man are winds where 're.

HATE CONTRACTOR OF THE CONTRAC क्री की होते व शका के बीचे हमा भारती नामान पूर्व स्थान मामान नहें जार जकन नेपार्थ गरान करण क्रमारतत महिना क्षकान क्षतिकटकः वहे जन क्यांच विकात नम्भिक सार्टनाइमा कहिरन मुन्द बर्म প্রতীয়দান হইবে যে, প্রত্যেক আন্ধাই অসা-ধারণ কাপে ঈশবের আবিভাব ও মহিমা প্রদর্শন করিতেছে, প্রত্যেক আন্ধাই ঈশবের গোরিত ও প্রত্যেক আত্মাতেই অসাধারণ गश्दल्वत वीक निहिष्ठ हरेग्रा चाटह । त्लाटक एक । আত্মাকে পাঠ করিতে অভ্যাস না করিবে, তছ দিন অনোর মহাত্ত্র পূজা বা অনুকরণ করিছে গিয়া আপন'র মহজের वीज दलिमान कविएक शांकिएव अवर गांवर আপনার সভন্ততাকে সন্মান করিয়া ঈশ-রের বিশেষ উদ্দেশ্য সম্পাদনে যত্নবান্ ন। इहेरव, তার্ৎ ঈশবের নিক্ট তাছাদিগকে আপরাধী থাকিতে হইবে । অতএব ঈশবের সংগ্ল আপনার বিশেষ যোগ ও আপনার ৫ চি তাঁহার অনন্যসাধারণ আদেশ কে-বল আত্মাকে পাঠ করিয়াই শিক্ষা করিতে स्टेट्र ।

যাহারা আত্ম হইতে ধর্ম শিক্ষা না করে, তাহারা পাপ ও ভ্রম হইতে মুক্তিলাভের প্রকৃত পথ প্রাপ্ত হইতে পারে না, প্রত্যুত প্রারশই এক পাপ হইতে অন্যাপাপে ও একবিধ কুসংখার হইতে অন্যাবিধ কুসংখারে পভিত হইতে থাকে। তাহারা ধর্ম শিক্ষার জন্য বাহাদের উপর নির্বি-চার্লিভে নির্কর করে, তাহাদের ভ্রম ও পাপ্তে আৰু ও পাপ্তে আৰু ও পাপ্তে আৰু ও পাপ্তে আৰু ও পাপ্ত বিনিয়া অনুভব করিতে

ক্রাং নেই সমত ভ্রম ও পালে আক্রামাত ক্রাড ক্রা পাড়ে এবং শত বিশ্ব নিজ্ঞানতা ভাষা ক্রতে পার্তাগ লা পাল, আহ বিশ্ব ক্রিয়ের ও পার্তাগ

পারেন না। সচরাচর এই ৰূপ के इस दन, यारा वर्ष नज जारा वर्ष विनता ক বাছা অধন্ম নয ছাহা অধন্ম বলিয়া ৰোৰ জনস্থাজ্যে যথো এক বার প্রচলিত হট্য়া গেলে অধিকাংশ লোকেই তানার যাৰাৰ্য নিৰ্ণয় করিয়া উঠিতে পারে না क्षात्रिक मक्टकरे निर्मात एक विलिया चका-क्यारत व्यवस्थिक इस 🐧 किंद्रम, भृथिवीरक भगानि এই क्षेत्र धर्म निकटकत मः चाहि व्यविक, एडिएम्स चान्छत्त नियागटनत मनन কামনা অপেক্ষা আপনাদের গৃহ অভি-मिक्क मांबरमंत्र कामनाहे मगविक ध्यवल। **তত्रে** हेश यथार्थहे खेळ हटेग्राध्य त्य, "मि-যোর ধনাপহারক গুরু অনেক, শিষোর মশ্বাপহারক গুরু অতীব ছুর্ল্ভ।" বস্তুতঃ তিভাপত্ত মনুধা বাহাতে অমৃত-কল-প্রস্তি ধর্ম তরুর বিশ্ব ছারায় প্রবিষ্ট হইয়া শীতল দর, যাহাতে সম্ভাপের হেডুভূত মলিন বা-मना ও दिव क्रिमा। यह यह मत्र अकृष्ठि योग-সিক ক্ষীণতা হইতে মুক্তি লাভ করিয়া শান্ত দান্ত উপরত তিতিকা ও স্মাহিত হইয়া জন্ম লাভ ৰূপ প্রম পুরুষার্থ দাবনে क्रडक्ट हा, क्य कर एक अहे क्य लका রাখিয়া ধর্ম শিক্ষা দেন ৷ সচরাচর উচ্চা-দিপের কার্যো শে সকল বুটিল কামনা नूकाशिष्ठ थादक, काका भारत कतिरल मञ्चलश লোকের অন্তরে ভূত্ব ও ঘূরা উৎপন্ন হয়।

আমাদের পরম লোক ও চরম গতি, আআ करम करम डीहात जाकाद जम्म अनुक्रव করিতে শিক্ষা করে। ইহাতে ধর্ম শিক্ষা ও ধর্ম সাধন উভয় কার্যাই মুগপ্থ সম্পন্ধ হইতে থাকে। আত্মা যে ৰূপ- শিকা বারা এক বাবে পরমানার সম্মুখীন হইয়া দণ্ডা-सभान इहेर्ड अखान करत, डाहाहे उदहरी শিক্ষা। আত্মা যদি সেই ধর্মাবহ পাপনুদ পরমান্নার সম্মুধে উপবিষ্ট হইয়া ধর্ম শিক্ষা পার, তবে সাধারণ লোকে ধর্মের নামে কি অসার কম্পনা ও জম্পনা লইয়া ঘূর্ণমান হইতেছে তাহা অনায়াসে বুঝিতে পাবা যায়। কোথায় আমাদের আত্মা ও আখ্যা-ত্মিক সাধনা, আর কোথায় ঐ সমস্ত সার-খুনা আড়যর। তখন কি পুণা আর কি পাপ, কি পবিত্রভা আর কি অপবিত্রতা স্পর্যাক্ষরে পাঠ করা যায় এবং কোন্ नकल वाशानुकारनव मरक ज्यम्पारात কৈ ৰূপ সম্বন্ধ, তাহা প্ৰতীয়মান হয়।

शृथियी ও मसूरा।

পূর্ণস্থার স্থার মনুষা জাতিকে মানার নায় প্রতিপালন করিতেছেন ও পিতার নায় শিকা দিতেছেন—পালনের জন্য নানাবিধ লোগা ও উরতির জন্য নানাবিধ শিকা প্রদান করিতেছেন। অতিনিবিফী চিন্তে আলোচনা করিতেছেন। অতিনিবিফী চিন্তে আলোচনা করিলে প্রতীয়মান হইষে যে, পরম্পার সহকারী এই ভোগা ও শিকা আমাদের জীবনের কার্যা । আত্মা ভোগাসুখ লাভ করিয়া অধিকতর উন্নত শিকার উপ্রাভ করিয়া অধিকতর উন্নত শিকার উপ্রাভ করিয়া অধিকতর উন্নত শিকা প্রাপ্ত হয়, ততই উক্ত উক্ত ভোগের যোগাতা লাভ করে। বিধাতাপুরুষ মনুষকে যে কপ্রকার স্থিতি করিয়াছেন, পৃথিবীকের তত্ত্বপ্রাণা ভোগাও শিকার আলম করিয়া রাণিয়াছেন।

THE REPORT OF STREET विविध कार स्टूडिंग हे जातार प्रविध त् अपर्के केलाजी सारमञ्जू करे स्वरीत गरन पात कारा जूनिक परेश आहर। गर्ब**े थाउन मनी मन्**य **अधि नाडू** दूक-লতা কল পুষ্প চক্ৰ স্থা প্ৰভৃতি সমস্ত প্রকৃতি সেই অধিন্যাভার আদেশে অন-बत्र व्यामारमत পরিচারণা করিছেছে 🤡 **ক্লানাবিধ উপভোগ্য আহরণ করিয়া দি-**তেছে। এই সমন্ত পার্থিব বিবয় উপভোগ করিয়া মনুষ্যের সুকুমার আন্ধা পুঞ্চি লাভ করিভেছে। যদিও-পৃথিবীর সহিত মনুষার मध्य जिम्हा, मुख्याः এই ममस भाषिव উপভোগও অচিরস্থায়ী; তথাপি যত দিন মনুশাকে এই পৃধিবীতে অবস্থান করিতে হইবে, তত দিন ইচা তাহার পক্ষে নিভান্ত আবশ্যক। ঈশ্বরের এমনি আশ্চর্যা কৌশল যে, এই সমস্ত অনিতা ভোগা হইছেই নিতা কল লাভ করিবার স্থক্রপাত হইয়া থাকে।

কিন্ত বিবয়সুথ একংশ আমাথের শক্তে ঘটই আবেশাক হউক, এবং ঘটই বিশুল চাহা ভোগ করা যাউক, ভদার নাকাৎ সময়ে মনুবোর কোন উচ্চ প্রবৃত্তি চারডার্থ কয় না। প্রশুল্লবাতি যে লোভ, বিষয়স্থ কেনল ভাত্তিক পারিত্বত করিছে नारक ज्यांक विनालक बरेगा लेटक ज्यांक नारक ज्यांक विनालक बरेगा लेटक ज्यांक देशक ज्यांक देशक ज्यांक देशक ज्यांक विनालक बरेगा लेटक देशक नारक व्यांक व्य

আমরা যদি কেবল আধিভৌতিক পদাৰ্থে নিৰ্দ্বিত হইতাম, তালা হইলে আধি-ভৌডিক বিষয় সকল উপভোগ করিয়াই সম্পূৰ্ণ সুস্থতা, সম্পূৰ্ণ তৃথিও সম্পূৰ্ণ শান্তি লাভ **করিতাম। কিন্তু আমাদে**র এক অংশ আধিভোতিক ও আর এক অংশ আধান্ত্রিক পদার্থ। আমরা যে পরিমাণে অচিরস্থায়ী পার্থিব প্রকৃতিতে জড়িত হইয়া আছি, সেই পরিমাণে অনিতা পার্থিব বিষয় স্থানাদিগকে সুস্তা ও ভৃঞ্জি দান করিছে পারে। যে পরিষাণে আমরা অন্যর আ-शांभिक श्रकृष्टि शांतून कतिरहि, পরিমাণে আমাদিদের অনুষর আধ্যাত্মিক বিষয় উপভোগ করা একান্ত আবশ্যক। নতুবা সূত্তা ও শান্তির কথা দূরে থাকুক, पनुसारक व्यक्ति होन्छत् ७ क्येच्त्र व्यवहात প্ৰতিত থাকিতে হয়—রাশি রাশি পার্থিৰ विषदंत्र अतिरविष् भाकित्मक मनूरा चलता विवास सामान शास मा।

TO THE RESIDUE WINDING AND STATES

निर्व तकार बहितार कुमत मुर्छ। भन्छ। कार्य शास्त्र । कार्यनेशाम कार्यानेश ক্ষরিলেই ক্রান্তবের পশুগুরুতি করল বন-रका भूरकात मात्र गरक रहेरा शरक, ভাষার নলে নলে আধ্যান্থিক প্রকৃতিও পুতা-शर्डक वीटकत मात्र घटण घटण भूके हहेटड भारत्व करत । अरे कमा मिखेता रा मम्ब বিষয়ে পরিভূপ্ত থাকে, যুবারা আর ভাষতে থাকিতে পারে না। শিওদিগের শন্তরে যে বিষয়লোভ অতি শৈশ্ব অব-স্থাতে অবস্থান করিতে ছিল, যুবাদিগের **অন্ত**রে সেই লোভ যৌবন ধারণ করে এবং শিশুদিগের অন্তরে যে আধাাত্মিক প্রকৃতি গর্ভস্বৎ অলক্ষিত হইয়া ছিল, যুবাদিগের অন্তরে তাহা শিশু কপে সঞ্চরণ করিতে প্রবৃত্ত হয়। এই জনা মুবারা প্রগাঢ় আ-**দক্তির স**হিত বিষয়সুখ ভোগে **প্রবৃত্ত হ**র এবং মধ্যে মধ্যে অভৃপ্তির যন্ত্রণাও ভোগ कतिया थातक: अधिकाश्म ममग्र शृथिवीव मूर्थ मन्न**रमरे मगछ जाना वस्रव क**तिएड যায় এবং কখন কখন বৈরাগ্যের স্বাবিভাবে কুঠিত হইয়াও উঠে। অধিকাংশ সময় বিষয়দেবাতেই নিত্তি হইয়া থাকে, কখন বা তাহাতে অতৃপ্ত হইয়া আধাাত্মিক জগতের প্রতিও দৃষ্টিপাত করে। প্রত্যেককেই এই ৰূপ বিষয়সুখে অতৃপ্তি ভোগ করিতে হয় : কিন্তু কি ৰূপে যেই অতৃপ্তিজনিত যন্ত্ৰণা হইতে মুক্তি লাভ হইবে, তাহা নির্ধারণ করিছে গিয়া ভিন্ন ভিন্ন লোকে ভিন্ন ভিন্ন পদ্ধতি অবলয়ন করে।

যে সকল যুবা কুনংসর্গে ও ক্রুন্থান্তে
খভাবচ্যুত হয়, ছাহারা বিষয়-সুখে সেই
খাভাবিক অতৃপ্তির যথার্থ হেছু অনুসন্ধান
করিতে পারে না, অথচ সেই অতৃপ্তির ধরণা
অন্য উপারে দুর করিবার নিমিত দিখিদিগ্
ভারত্বা হইয়া মনে করে আরও অধিক

कतिशा विषय्रमूथ छोत्रा कतिरत कृत हरेरक भावित , भरे जारिया मोमाटक अकिका করিয়া বিষয়োপভোগে প্রকৃত হয় , পুতরাহ क्षार्क मृग त्यमन मझ कृषित मत्रीहिनां॥ প্রভারিত হইয়া প্রাণ ত্যাগ করে, সেই ৰূপ **षाविद्यको मनुषा बाठान्तिक दिवश्क्**शंश আক্রান্ত হট্রা যতই বিষয়ের অনুসরণ করে, ততই শাস্তিও আরামের পরিবর্তে দুর্বিক অশান্তির কেতৃভূত मक्ष्य क्रिट्ड थाटक जवर यथन भूर्व यक्ष পিতার শিক্ষাদান কৌশলে ভাহাতেও चशरिष्ध हरेशा उंदर्भ, তগন অমৃতারমান বৈরাখ্যের পরিবর্ত্তে অন্তর্ণাহক গরলময় প্লামি ভোগ করিতে হয়। তথনও यनि अनुकृत अवसा ना शाहा. काहा स्टेरन श्राश्वामि मन्मेजुट इरेवा शास्त श्रावात षक रहेशा विकाद लिए श्राहर श्राहर व्यावात नगरत नगरत टेंड उटनामित्र इंखतारक व्यसर्माहरू मस्क्षे इहेग्राः छेट्छे। এक बात পাণ ও আর বার সন্তাপ, এই রূপেই তাহার জীবনের অধিক ভাগ অভিবাহিত হয়। এই बार परे यांग छाहा नगर धोवन पाठ वाहिक हरेहा याग्न, जाहा बहेदन जाहात वार्क्तका অতি কদর্যা হইয়া উঠে। যে কীট পুল্পের মধ্যে প্রবেশ করিয়া আরু তাহা হইতে বহিগত না হয়, সে কীট পুস্পোৎপদ কলের মধ্যেও অবস্থান করিয়া ভাষার রুদ্ধি, সাদ ও मोन्हर्या मकलरे विनष्ठे कविया कटल: य भाभकी है योवन् भूकण व्यतम कतिया আর তাহা হইতে বিশিগত না হয়, তাহা वार्षकार्यभ कलाक मीत्रम ७ अभेके करता। কিন্তু যে সকল যুৱা শীঘ্ৰ এই ৰূপ বুৰিক্তে शास्त त्य. विषय्मार्थ कथनहे मण्यू विष् लाख दरेटक भारत ना , दबन ना कमाता পশু-প্রকৃতি লোভই তৃপ্ত হয়, সামার কোর ভোগঅহতি চরিতার্থ হয় না সামাকে

CONTRACTOR OFFICER AND MADE धकात बरेश भारक, रहोतन कारन समाधिक लात्कत नात कारात्क अतिहिक जात नकल व्यक्तिक अवल रहे बढ़े, किन्द्र विस्त खांश विषय अथमाविश नावधान क्**रे**श ह-লাতে আধ্যান্তিক প্রকৃতি লীড লীড নতেন इट्सा উঠে এবং यह काहा मटकम इहेटक थाटक, उठहे डाहात डेशरखांत्रा बाधाबिक विषय मक्न डाहारमञ्ज निकृष्ठे छेलच्छि ह्या । যেমন চকু বৰ্ণ প্ৰভৃতি আধিভৌতিক ইন্তি-एवत मण्यूरथ **এ**ই मृश्यामान व्यक्षिक क्रांट विख्य के किसारक. साधार मध्यक (सहै कर्प অত্যক্তির অধ্যান্নলোক গ্রনারিভ আছে। আন্মার দর্শনশক্তি উমেবিত হইলেই তাদা धरे अना माश्र गुनात मुक्टि-भाष्ट्र क्य । অধ্যাত্মভাব যে পত্তিমাণে প্রবল হয়, অধ্যাত্ম বিষয় সকল দেই পরিমাণে প্রকাশি**ত হ**ইয়া षाचारक पृथ कदिए थारक। যথন তাঁহার যৌ**বন দশা বিগলিত হ**ও-য়াতে শরীরের শহিত শারীরিক প্রবৃত্তি সকলও বাৰ্দ্ধক্য দশা প্ৰাপ্ত হয়, তখন ভাঁহায় আধ্যান্মিক একতি অকীটদৰ্ক পুলা চইতে উৎপর ককত কলের নায় পরিপঞ্চা প্রাপ্ত क्रेवात निभिष्ठ व्यविनामी स्मेवत्व व्याद्वाहन তাঁহার ক্থা তৃকার মতে মতে কাম লোভ প্রভৃতি বিষয়তৃষ্ণা সকল মন্দীভূত হওয়াতে ফিনি পার্থিক উপজোগ হইতে यण्डे भवनत धार्व कतिएक शादकत, क्याहे ভাঁহার আধান্তিক ভোগভাঁকুকি কাল PEN DES ARE THE MEETS BREWING भारतिक दिन्त नकत कहा कर केलाह TRIES STOR WILLS AN AND SING PROPERTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE BANKSALAN MAK KIR ALAND ALA

राष्ट्र अवर रच विवश्रास्त्रीन नगरका पूर्व कळावर अध्यक्षमान वर्ग्यकारका SIT ONE SIDE PACE SIGN PURE नात कीनकाकि रानता ताथ श्रेटक पाटक विवि क्रमें शक्तिश्वितारक विनद्शिय व हलपाटक शकाटक जारिया भूबीविध्रय উদয়োগ্ন অসণ হর্ষের কমনীয় কিরণ-মালা বিশ্বারিতলোচনে পান করিতে গ্রহত इस । शर्फ निक् अथटम उर्कृतिहाः स्टेश भवजान करत ; अभव काल यक निक्छे रही इत, ज्रंड कर्म कर्म स्लिमा পড़िए . থাকে: প্রসব সমরে সম্পূর্ণ বিপরীত ভাব হয়, তথন ভাহার পদময় উদ্বেও মন্তক नित्त अवस्ति कदतं नाशु यूना यथेन बुद्धावया आख हम, जिनि अ त्मरे क्रम कार शातन करतन-- अक नगरम य ठक् विवय রাশিতে আরুষ্ট হইয়া থাকিত তথন তাল আঁপনা হইতে বিরুত্ত হইয়া আর দিকে श्रनादिङ इहेशा थाटक। क्लरम, भूका रामन कल्टक धानव कतिया नश्क विश्वलिष्ठ इहेग्रा পংড়,দেই ৰূপ ডাঁহার সমুদায় পার্থিব প্রকৃতি যে আত্মাকে এড কাল গর্ভে রাখিয়া পালন করিতে ছিল, তথন তাহাকৈ লোকান্তরের নিষিত প্রশ্ব করিয়া শ্বয়ং বিদায় গ্রহণ करत्।

हिन्तूश्रदमात देखिहान।

৩২৪ সংখ্যক পরিকার ৮৪ পুরুদ্ধ পর।

कि बार्श विश्वनमात्म बार्ग्स बार्ग्स वर्ग उन उन वा मानि क्लिन्द्र स्वागान रह, देनि शूर्स भाराह मानाम अमर्गिन रहेग्राहर अमर्ग वामन वर्गद्र केश्यांक क्षांपाना नार्ज्य विश्व विकास क्रिंग क्षेत्रिक स्टेट्टर

त्रभव कटन डायन त्वनी देवनव रहेगात त्रभवनीत अस्ता जगारक त्रवनिगरक अस

বৰণ প্ৰধান ক্রাইবার ব্লীভি প্রচালভ इल, बारबंप मर्शिकारकर देशात क्रमान व्यक्ति इत्या राष्ट्रक्टर । दनान् नगरत् वरे कर्म निका मान अथा आहक हम, छोडात कामानिक विकर्णन पृष्ठे रहा ना वटि, किन्द अंतर व्यनुगीन व्यन्तर नरह रह, रह नगरह আবা কবিরা সূত্র মূত্র ঋক্রচনা করি-एकन, छाहात समिषक कान मदेशहे, अञ्चलः चत्र পরিবার ও অনুগত লোকদিগের নিকট, ভাহা এচলিত হইত। সেই সমস্ত ঋকু যত পুরাতন ও সংখ্যায় অধিক হইতে লাগিল, প্ৰকৃত ৰূপ শিক্ষা দান প্ৰথা তত আবেশাক रहेशा छेठिल। अ फिरक नामांकिक कोश नक्ल विस् छ हरेश। डिटाट काटकरे, धनना-याबनाव रहेवा निकार्शीमिशंदक श्रक् मकल ष्यक्षांन क्ताहेबात निमित्र जालना इहेटक कारमाक्रम बनेगा छेठिस । उथकारल त्लगात मुख्य क्ष मार्ड, सुख्दार निका जान श्रधां उ मिकास महत्व वर्गाणांत हिलासा। अहे नार्भ নমাকের একটি গুরুতর সভাব দূর করিবার নিগিত আগনা দইতে একটি পৃথক্ জেনীর स्टगाउ वहेल । स्टाटनंत्र वर्श्वर खिवगटक खाफर मारम धकि भूषक् रहर्ष श्रविम्बिक হয়। ত্রাহ্মণ শব্দের অর্থ ধারাও ইলা প্রতি-भम **इरे**डिहर । या अना सक जेन्द्र कारन निविष्य यहार शूकर नेश्राव श्रीविशामक इत, क्षथरम छाठा दरामत मामासत हिल: भरत दिरमत महिक दें। मामिरगत विदेश महका हर, तहे त्थनी व उन विना অভিইচ **হইতেন** এবং পরিশেষে ত্রান্ধাণ বলিয়া পরি-क्रिक स्टेटक शास्त्र । केन्द्र काटल जास्त् भटमत नामादिश धर्व देशमध क्वेजाटक स्टेड. क्षिक अपटम केराता जन्म नर्गाट त्यम बाहन শ্রিকেন, উর্বায়া ত্রাক্ষণ ব্যালয়া পরিচিত্ত क्षेत्राहरून : क्ष्मान कार्गानदगढ़रे व्हटन के बाम कड़ीशब रहेता जागिएएए

्रतरमञ्ज अधारामा दकान मनत अवस् त्यं त्करल खानान वर्त्त्र विमाधातन व्यक्तित বলিয়া গণ্য হইয়া আসিতেছে, তাহা নিৰ্ণয় कता यात्र ना । छेशनियरंग शार्ठ कता यात्र যে কথন কথন ব্রাহ্মণ পুতেরাও ক্রিয়ের নিকট বেদ শিকা করিছে যাইতেন। কিন্ত যখন শাকাসিংহ ব্রাক্ষণ্য ধর্মের বিরুদ্ধে म आग्रमान इन, उथन मिथिए পाएगा गांग যে, ভালার প্রচারিত মতের উপরে যে ৰূপ জাণাত্তি উত্থিত হইয়াছিল, ভদপেকা অধিক আপত্তির বিষয় এই স্ইয়াছিল যে, তিনি ক্ষতিয় হইয়া উপদেশ দান রূপ ত্রাক্ষণ রুত্তি আচরণ করিতেছেন। বেদাধ্যাপনা কার্য্য এক মাত্র প্রাহ্মণ বর্ণ ভিন্ন স্পার কোন বর্ণের অধিকার নাই, এই মহটি যে সময়ে প্রচলিত হউক, ইক্ ছারা এইমাত্র প্রতীয়মান रम त्य, कर कल यक उद्याद श्रह्म द्यापाण्य क्षेत्र काण्य वक्षत्रल स्टेशां हिल।

এক দিকে ধেষ্ন অধ্যাপনা কার্য্যের **জন্য ত্রান্তাণ বর্ণের** স্ত্রপাত হইল, আর এক मिर्क (महे क्रश जानिम जार्याशत्व मगरत প্রচলিত তিয়া কলাপ সকল যত পুরাতন হুইতে লাগিল, তত্ই কি ৰূপ সময়ে কি ৰূপ मद्ध ७ कि अकारत ७९ मञ्जूमारतत व्यनुष्ठीन করিতে ইইবে ভাহার ব্যব্তা প্রকল সাধার-ের ছর্বেধি চইনা উ**ঠিল। বেদের অ**ধ্যা-প্ৰুগণ ভিন্ন দেই সমস্ত বিষয়ে ব্যবস্থা দান করা আর কাহারও সাধ্য ছিল না। সুতরাং অধ্যাপন কার্য্যের নাায় 🔊 হাও তাঁহাদের इत्स्र निপ्डिड इहेल। "अदश काल करम ষার্যাগণের ভাষারও আনেক পরিবর্তন হইল। আর্থা সমাজের কবিগণ তৎকাল প্রচলিত যে ভাগাতে গৃক্ সকল প্রস্তুত করিয়াছিলেন, উত্তর কালে তাহার অর্থ জ अप वार्मके इत्या दिला। अतिवर्षानत নাৰে সংক পুৱাহন ভাষা পার এক প্রতি

পরিত্রই করে, উত্তর কালে দীকা বাতীত সাধারণে তাহার অর্থপ্রাহ করিতে সমর্প্রহ না। সূত্রাং পুরাতন ঝকের স্থাবি ও ভাবার্থ সংগ্রহ ও ব্যাখ্যা করা সেই অ্বাপ্রক শ্রেণীর কার্যা।

वावका मान ७ तरमन वाका वह प्रकृति কার্যো প্রবৃত্ত হওয়াতে ত্রাক্ষণদিরের মানদিক উন্নতির উৎকৃষ্ট সুট্রোগ উপস্থিত হইলা তাঁচারাও উৎসাহ সহকারে উক্ত উভয়বিধ कार्या अरूड रहेशा (क्रूडकार्याङ) लाउ করিয়াছিলেন,বেদের ব্রাহ্মণভাগ উজ্জাল রূপে তাহার সাক্ষ্য দান করিতেছে— ই হারা মান। বিনরে যে সমস্ত ব্যবস্থা প্রবন্ধন, অপ্রচলিত : শব্দ সকলের যে কথ অর্থ একাশ, যে ঋকু হইতে যে ৰূপ ভাবাৰ্থ নিষ্কাৰণ এবং ঋক্ সকলের মধ্যে ইতিহাসের যে সমস্ত ইঞ্চিত আছে তাল হইতে যে সকল ইতিহাস छेष्टावन कड़िएडन, स्मर्टे मग्छ छाछ् धक्ज भःकितिङ हरेता जाकान नास्य व्यक्ति जैक অংশ হইয়া গিয়াছে। ত্রাকাণ নাম ছারা मुम्भर्य श्रुवीयमान इरेटल्ट्स (य, त्वरमत ব্ৰাফণ ভাগ প্ৰস্তুত হইবার পূৰ্বেই একটি निर्फिष बाजन खानी छेटशम इहेग्राहिन। যে সময়ের কথা উলিখিত হইতেছে, তথ্ন বেদই আর আর সকল বিদার সুমটি স্বরূপ ছিল। অতএ**ৰ সহজেই প্ৰতীয়দান হইতেছে** व यथन त्रहे त्रतन्त्र क्रका गांचा ७ वावका मान প্রভৃতি यावछीय कामाई आमान-দিগের হত্তে আদিয়া পড়িল এবং ত্রিবুজন रानिक डेरकर्र म्(४८म छाहाताई जाउनत रहेटलन, उथन दक्तल वर्षानुकान विवदम नटर जनगास्त्रत उरकादनाडिक क्षात्र गार कार्यारे जाभगणित्मत्र छनारम्भ ६ मार्थमा वाइव हरता चार्नाक इंडेस छेठिल धर् निक डाठक व्य कल चित्रा बादक, कंपनुग्रदक ताका करावि सका अग्रेख केवानर केवा

कारशेर आका मनाक्रिकार माहित हरिएड नारिता । और कम बाद में बाद दे दावादी है **७९ कारतत भूजारक**। ट्रमंत्राहका त्वपुष राष्ट्रीत भात्र किहरे दिस ना । शत्क श्रीयान প্রধান বাজকতা, রাজনিয়ম প্রণক্ষনে বাব-शानका, निक्त विधशीन काटन पश्चित्र, अभीविक्द्रत्न विष्ठांत्रक्षा, अन्याना दाणांत महिक करशानकथन बावगाक नगरत पोठा कार्या अवः यूक काटक वृार तहना श्रञ्जित कोमल प्रकल উद्धावन कता है छानि य प्रमुख কার্যো শিক্ষিত লোকের প্রয়োজন, তবিষয়ে রাজা প্রজা প্রভৃতি সকলেই উক্ত ব্রাসণ नाशिक्तम । ভোগীৰ মুখাদেশশা করিকে সূতরাং ক্রন্যে ক্রন্যে ব্রাহ্মণ ক্রান্তি অসামান্য প্রাধানা লাভ করিলেন।

আর্যা সমাজে যত দিন বর্ণ তেদ বংশা-মুখারিনী পদ্ধতি অবলগন করে নাই, তহ पिम निर्दिश्य गक्ल वाक्तिरे भग्यका उ রুচি অনুসারে সকল কার্য্য করিতে পারিত। दः भानू माति शे दर्ग छ । सानी वसमूल इंटेल **भिरं खेथा माधातगढ**ै तहिर हरेया योत्। এই কারণে একপ ঘটিয়াছিল যে, বর্ণভেদ উৎপন্ন হইবার পূর্বে যাঁহারা ঋষি যলিয়া शृक्षित इहेरहम, वर्ग उन वक्षमूल इहेवात পরে উছেটদের কাছার বংশ ক্ষত্রির কাছা-ब्रु वश्य देवमा व्यवः अवन्त्रा विट्यादय काहा-রও বংশ বর্ণ-সংকরের মধ্যেও প্রবিষ্ট ইইয়া शिवादक । 🤻 🗗 नगरत दर्ग उन् छिर भारत नारे, मर्शि विकाशिक त्मरे ममत्यत लाकः किंद्ध या नगरत वर्ग किंग छेर भन्न हत्न, त्म नगटम शाही बर्द्याता कविष्ठहिं धवलक्र र्शिमाहित्सम । अहे क्य घटनक छेना-स्त्र महत्त्व क्या बहिट्ड शास्त्र (यं, यामाता प्रवाद कार्य कार्य वर्ग हरेटक शृथक् हरेता शिकारमञ्जू केशानितम् शूर्व शूक्रत्यता

ব্রাক্ষণের। তংগানা ্রেড করিল। একটি পুণক্ বর্ণ কলে পার্থানিত চললৈ পর ছিল্ফকমাজে একটি গুলন যুগ উপাছিল চইল।
ক্ছিজাতি এক ব্যুন মূর্তি পরিপ্রহ করিলেন। কিন্তু বলে দিনে ও অপেশ অপেশ এই পরিব্যুন ক্রয়াতে হিল্ফ জাতি থে কোগা ইতে লোগায় উপন্থিত হইরাছেন,
ভাষা অনুভব ফ্রিব্রুও পারেন নাই।

ক্ষিত্ত ও নৈশাগণত ব্রাল্পনিতার নারে বেদ শিকা করিবতেন, কিন্তু স্থাবর্ত্তনের পর গার্মস্থা আবেদ এবেশ করিয়া যে সকল ব্যবসায়ে প্রত্ন ভাইতেন, তাগতে তাঁহাদের গকে শিক্ষিত বিলার চর্চা, প্রায় এক বারেই রহিত হইয়া ঘাইত , বিশেষতা তথ-কালে লিপি প্রচলিত ছিলা না, বেদ সকল কেবল গুরু তুর হইতে প্রবণ করিয়া মুখছ রাখিতে হই ত, যুত্রাং গাঁহারা করে হতি কা বৈশা হতি অকলন করিতেন, তাঁহারা ব্রাল্কাদিসের, নাায় আর তাহা পুনঃ পুনঃ অনুশীলন না করাতে অনতিকাল পরে প্রায়শই । বিশ্বত হইয়া যাইতেন। এই তির্মতা হইতে পরিবানে যে কি কপ বর্ণ করিছা হইতে পরিবানে যে কি কপ বর্ণ করিছা হইতে পরিবানে যে কি কপ বর্ণ

করা কি ত্রাহ্মণ কি ক্ষতিয় কি বৈশা কৌন आर्या महात्मत शत्कारे महानिक हिल मा त्य मगरम मृग्नाचे का कि त्यन छेर भन्न रहेत-यथन अट्याक दर्ग आश्रमानिशदक अक একটি তিল ভিন কাভি বদিয়া অনুভব করিতে লাগিলেন, তথন বর্ণ তেপ ঘটিত मामाजिक निसम এ वः श वक्षमूल स्टेशाहिल य महमा काम वर्ग होश लक्ष्म कतिएड পারিতেন না ; করিলে আর ব্রাহ্মণ করিয় व। देवना समादन साम आश इहेरछन ना : रेगरे वर्ग-महत छेर्पाहित मृत कातन। यक्-র্বেদ শংহিতার শতরুদ্রিয় স্তোত্তে স্তর্থর কর্মার প্রভৃতি কডকগুলি সংকর স্কাতির উলেখ প্রাপ্ত হওয়া योहेटलाइ: বোৰ হয়, জাতি তেদ ঘটিল সামাজিক नितम चि भूर्वकारनरे तक्षपृत रुरेताहिल। **এই कार**ण क्लूर्निंग दर्ग ७ नामाविश वर्ग-সকর উৎপন্ন হওয়াকে হিন্দুসমাজ নানা ভাগে विस्क हरेगा भरित्व। बाक्स বৰ্ণ অবিসহাদিত ৰূপে সকলের উপরেই প্রাধান্য লাভ করিলেন।

ভাষ্মণেরা যে দকল নিয়ম বিধিবন্ধ कतिएका, लाहाई मर्जन धार्तिक इश्का. কেবল মধ্যে মধ্যে কোন কোন বাজার সহিত कें।शिक्तित विवास विश्वाम घठेक; जिसक য়াজা ও বেণ রাজা যে ৰূপ গরিভি ও যে ৰূপ খেচ্ছাড়ারী বলিয়া পুরাণে ধর্ণিত হইয়া-ছেন, তদার। উহাই **অনু**ণিত হাইরা থাকে। ভিশন্ আকাদিনের ঐতি অভান্ত বিশেষ कहिट्टन , शुहारन डिलिबिक चारक त्य, ভাষ্ণগণকে ভিশন্ধুর **শিবিকা বদ্ন করিছে** হইত। বেণ রাজার বিষয়ে এই নাপ অভি-হত হইয়াছে যে, তিনি কাশাৰ্ড হাইয়া স্কুল वर्णत कनाएक विवाह कताटक भूमितीटक वर्ग मक्त्र फेल्म्स न्त्र। जादात्र নেখিতে পাওয়া যায় যে, জনক প্রভৃতি

arel sien erfor brits क्षापामा साम्य कवितासितम्ब 🕒 बुरुमाद्रशस् कर स्टूल अवेश्वर करे दन **के कि कि कार्ट रहे, जायार क्रांकि महसका** कविश काठि टार्क, धरे अन्। हाक् केठ वानदम ७ जाकार्यहाँ निद्य छैनद्दमन करतम। अरे नकल विकिन क्षकांत्र डेमाइब्रन পाঠ कतित्त काकीशमान इस त्य, गाँदति। नाक ভাবে ত্রাহ্মণশিবের প্রতিষ্ঠিত আচার বাব-হারের বিরুদ্ধাচরণ করিতেন, জ্রাক্ষণের: তাঁহাদিগকে পয়ু দিয় করিয়া রখিতেম : জার ঘাঁছারা সমূচিত সমান প্রদর্শন করিছেন; তাঁহারা আধান্য লাভ করিলেও ব্রাহ্মণ-मिटगढ़ अभइनीश इडेटबन ना ; डेडाट डा-ক্ষণদিগের জাতি সাধারণ প্রাধানোরও কোন হানি হইত না।

ব্রাহ্মণ জাতির সহিত ফার্রিয় জাতির একটি ভয়কর বিবাদের আভাস প্রাপ্ত হওয়া यारेट्ट । ७३ विवास अक भटक ममस ত্তাকাণ জাতি ও জন্য পক্ষে সমস্ত ক্ষতিয় काठि मधायमान इरेग्राहित्नन: यस काल ব্যাপিয়া পরস্পরের রক্ত জোতে পৃথিবী কলঙ্কিত হইয়াছিল এবং সমস্ত ভারত বাসী অনেক দিন পৰ্যান্ত অৱাজকতা জনিত নানা উৎপাতে আক্রান্ত হইয়া যন্ত্রণার এক শেশু ভোগ করিয়াছিল। পুরাণে এই সমত রুভান্ত নানাবিধ উপাধ্যানের সহিত জড়িত হইয়া আছে। হৎসমুদায় আলোড়ন পূৰ্বক रेकिशन मरबार अवस्त करेंद्र त्यांक छ वृःश्य অভিভূত हरेरण रहे । अहे दिवास ক্ৰিয়গণ আৰুণ কাভিকে ৰভ কৰিবাৰ জন্য যত চেডা করিয়াছিলেন, রাক্ষণের **७७रे छेरमार महकाद्व ज्ञानमानिस्मा क**् क्षांना त्रका कतिएक श्रेषुष रेव । शति। श्रेष বৰ বক্তপাতের পর জান্ধণেরা কর লাভ ACRE | CLAIMS BILL DIRECTO

पक्ष सह ग्राह्म का कि पूर्व दिलाए श्राह्म का कि इसे का कि पूर्व दिलाए श्राह्म का कि प्राह्म के कि स्टें का कि इसे का कि कि स्टें का कि कि स्टें का कि कि स्टें का कि स्टें का का कि श्राह्म के कि श्राह्म के कि स्टें का का कि श्राह्म के कि श्राह्म के कि स्टें का का कि श्राह्म के कि स्टें का का कि श्राह्म के कि स्टें का का कि स्टें का स्

এই বিবাদের পরিণামে যে আর একটি ঘটনা সংঘটিত হয়, ভালরও উল্লেখ না করিয়া কান্ত হওয়া উচিত নয় ৷ কাল্রিয় কাতি ছুই ভাগে বিভক্ত: এক স্বর্থা বংশ थात এक उस दश्म। भूतान भार्क करे ৰূপ এতীয়মাৰ হয় যে, ইন্যাকুর পুত্র পৌ-कानि महान श्रद्धणाता स्पा दश्मा दलिया প্রসিদ্ধ হন এবং ভাঁহার কন্যা ইলা ও জা-मांछ। तूथ श्रेटि (य तर्म छेर्म स्य, डीहा-बारे हुन वर्गा कालिय विनय विथा ह रुन । अर्व म्बर्स स्र्या दश्भी कालिसनिर्धात প্রভাপে ভারত ভুমি উদ্ভাসিত হইরাছিল। তখন চন্দ্রহশা রাজাদিবোর তাদৃশ প্রব-लक हिल नाः छ०्भात महम। हेल्पिराजन व्यक्रामम् (स्थिति शाउमा याम्। श्रुतान उ रेजिशादमत अधिकाश्म कर दश्दमत वीदि कीर्जरन शिक्पूर्व चारह। त्कान् गयत कि बन किया स्था त्रभा त्राकामिटगत रीक्स के प्रवह बर्लानियांत्र छेमछि हरेल. कारात मुख्या हवाब थाल रच्या गाई-रकरक को हैं। दक्का शहकातारगत शरक धने रिक्ष के कार्यक सरवाह स्ट्र था विह

वर मक्न पालाम शहसा वह कम अनुमान रत्र (र, उपमानिराम्त महिर मूटक अर्छ रहेता स्वीवश्या कलिएइस निएक ७ वि-MOT 0 12 ९६६न ०२: जामार्व्हा युर्कत अर्थ : माजाबा कुन, कुछ ने ४ विकास स्वीकास स्टाबन, 國司書 題名 15(5)之 (中国) 無利益 () পদে প্রিভিত্ কুলার ETRATE MY नार्डित रे.ह क्लिहरणाड प्राप्तान हातिहा द्रोजगरम अधिकिक हो ता स्टब्स भारत हैश स्नकीकराई सिविधिक सार्ह বংশ্য রাজাদিগ্রের অধিণাভা কালে আক (पदा मणाद्यज भवासांका आख करेगा हिट्टन ।

नडन युक्तः

5 (An account of the कार्य क

ব্যাবিদ্যবাদ মিন্ত প্রাচীন ক লে বিবাদ বিবাদ বিবাদ প্রথম করিব বিবাদ বিবা

The second of the second collection in the sec



अप्तानिक इरेनाटक के हिन्युनिटनाई नामि विश्वास त्वरत व्यक्ती विश्वास गाँव, शूर्क रेशांत अव्यक्तींत गण आवता हिल मा, आव आवनाक इरेटन रेश जानिया एम्डय, बारेटल भारत मा छारा छ नटि। वन्ता वरे गाँजि वस्तम हरेटल विश्वास भाष कमा गवर्गरमा हैत निक्ति दिनाभ कतिया बक्त जा गमांख कतिग्राहन।

ত। সুক্ৰিড কাৰা।—শ্ৰীদক্ষিণাচয়ণ চটোপা-খ্যায় কৰ্তৃক প্ৰণীৰ্ড। ক্ৰিকাডা গুল্ব হয়ে মুদ্ৰিত।

gi The Christian Repentant—A Parody.
ভাড়াগাঁকো আভাহিক ত্রালাসমাজের সম্পাদক
ত্রীযুক্ত সোঠবিহারী মালক কর্তুক বিয়চিত।

१ বিনয় প্রিকা।— ওরুদুখী ভাষার কতক গুলি ব্রদ্ধনালীত বিহারীলাল কর্ত্ক রচিত হইছা।
 পুঞ্জিবা আকারে প্রকাশিত হইছাছে।

ত। বিজ্ঞান বিনোদিনী — কাকিনীয়া ধর্মা সভার সাময়িক বজুভা। ইহাতে ধর্মা বিষয়ক দলটা কুল কুল বজুডা আছে।—কাফিনীয়া নম্ভ চক্র যন্তে মুখিত।

१। हिन्दू अप्रमंक। १म छात्र १म नद्शा। —हेश बक थानि यामग्रिक शक्तिको, मध्याञ्चरम मुख्यिक रहेरतः। अथानि हिन्छुरमनाद्र नजापिरण्ड बाता अवाभिक स्टेशाटक। विकालान धर त्रभ तिथित प्रदेशहरू था, हेहाएक क्षरामकः हिन्दू খালে হিন্দুসমাজ, ইন্ছিল বিয়ান ও শিশ্প दिर्घत । धान्छ । व महिन्द्र निष्ड एटेटन ; অনেকে দিবিধ শাজের আলোচন। করিয়া স্থভন পুতন গঙা আবিষ্ণার করিয়া থাকেন, কিন্তু ভাই। व्यकाम कदिएक शान मा, अधानि स्म मकता अञ्चाव अञ्च कहित्यः ; हेलुगानि — मान अहे नाम-ছিক পত্ৰ থানি স্থায়ী ইইয়া অক্সীকাহাতুদ্ধপ কাৰ্য্য क्तिएक शारत, काश क्षेट्रल स्मर्ट्सत अवकी सक्द च्यार भूर्व कड़ित्य । अध्य भर याग्न ता करबक्की बिरप्र निभिन्त करेगादह, छाहा अभरमनीग्र। 🐃 🖈 महा करात्र गरिक अध्यमः कतिराविह, वहे नी थानि नीर्पकीरी ७ मिन्न-मध्यम्भ हंत्रेक।

FI Δ Dictionary in Sanskrit and English.—Part 1. Approximate সভার ও জীবুল ক্ষেত্রনাথ কর্মান ক্ষান্ত সংগ্রাহ কর্মান কর্মান ক্ষান্ত প্রাথিত জীবুল আনে ক্ষান্ত কর্মান ক্ষান্ত কর্মান ক্ষান্ত কর্মান কর্মান ক্ষান্ত কর্মান কর্মান

२। ननारुन धर्मानसमिते। विजीव वर्ष क्षथम मर्था।

ননাত্রন ধর্মার্কিণী সভা যে বছ বিবাহ ও
কনা পণ রহিত করিবার চেটা করিবেচনেন,
এই পত্রিকাতে ভাষার কার্যা বিবরণ প্রকাশিত
হইরাচে। পত্রিকাখানি ' মুকলিত ভাষায় '
দভার কার্যা বিবরণ সভল প্রকাশ করিয়া সভার
অনেক উপকার করিভেছে। এতসিনের পর সভা
যে দেশের প্রকৃত কলাণ ও গৌরবের দিকে
দ্বিপাত করিরাচেন, ইহাতেই আমাদের গণেক
ক্রিণাত করিরাচেন, ইহাতেই আমাদের গণেক
কলাল করিয়াতে আবার তাঁখারা সক্ষাভিবে মুইটী
বহু অনিউক্র প্রথা রহিত করিবার চেটা করিছেভেন,ইহাতে আমরা বিশেব প্রীতিকাশে করিছাছি।
ইহাতে কৃত্রকার্যা ছইজে পারিবে ম্থাবিই সেন্সের
কল্যাণ সাধন করা হইবে, সংক্ষা সাই

ममाजन धार्षाशास्त्री वालन

कि ब्रामाण्य कि नम क्षेत्र को स्वयं विवयं विवयं विवयं को का का विवयं निवयं के विवयं के विवयं

कामहो जात्री कवि ननाचन धरणाः वानिनी हिन्निम अहेन्द्रभ छेनदम्भ विद्वन । निम्मु खाना-रंतन नर मंत्र कहे ता, कांशात जिलटनटमंत्र मृत शक ना रक्या (क्षु काहा कल्यूत कत्नाश्रधाप्री हहत प्रका यात्र मा। यहभाम नगरप्र छिमि याद्यापिशदक अक्लड़ीक शहना शाकित्छ उनारमण मिरकरक्त. ভাষার। ইহাদে । কালের এক বিভয়না বলিয়া त्वात क्षित्क भारतः यमि जन्निस्तित बाल ही खेशान व कार्याकत कतिया जुला हय, जाहा हरेता उ ৰ মুলগত লোগ হইতে অন। প্রকার অনিষ্ট **उर्**लामिक क्रेटल थाक्टिन। शङ्कीत कताक्षी লোব খটলে পাত্রে পড়াত্তর গ্রহণ করিবার বিধি मारह : यति वह तिथि धारण बाटक, छाला स्ट्रेटन অনিটের মূপ অমুক্ত রহিল। অনেকে পাকে আশারে সেই সকল দোৰ ঘটাইয়া নিরপরাধা পড়ীর উপর সভ্যাচার করিতে থাকিবে।

PRAYER.

Having placed it in this light as the natural and fitting expression of the creature's sentiments to the Creator, it will appear perhaps somewhat harsh and legal-spirited to speak of Prayer as a Duty. And it is, in truth, a token by which we may all measure our own religious status each day or year as under the law," or under a freer covenant, whether Prayer to us is easy, and spontaneous, or an act for whose performance a certain measure of moral force needs it be exerted. To many who have velocitied has an actificion of spiritual actification is a religion of spiritual actification in the contract of the contract of spiritual actification is a religion of spiritual actification in the contract of the contra

edough to discover in how deep a region of love and inion with God such freedom can alog o be truly experienced, it is common to find that all statements implying that Prayer is a Duty are more or less fupuguant. They seem to such persons like commants of the fetters of an old-world slavory which has been abolished. To by, the to happy is he who never need to be reminded that it is his duty to play ! But if, immersed in the interests of this life, the thoughts of Direct dungs grow rare and dim, and the order of hely amb. tion sinks down and carolessness and selfishnes, and sin come creeping in upon each other's footsteps, is it not then a Duty-nay, the most imperative of duties-for the soul to lift itself up to its God, and cry, "Lord, save me, or I perish "? Is it not a Duty so to replicable the lamp of our pritual life, as that such perils of darkness rasy never overtako us? I must confess that I believe the revolt against the ductrine of the Duty of Prayer arises, not so much from a greater sense of the rightful freedom of the spiritual athetrous, as from an imperfect and unreformed conception of the leveableness of Duty Ton time Theist, the idea of a firm ground of meral obtigrition underlying the flowery pastures of love, is no subject of regret, but of rejaicing; for, wanting it, they would be in his judgment but decounted mor-Duty is to him the cron fearuswork within the sculptor's clay seeks to cover it with softer and more beautiful forms; but he knows that those sweet shapes would soon collapse and perish, were it not for the firm granding beneath them. Is this a hard saying? Not so, surely, for the man for whom " Duty " means no alien law imposed by an unloved external Power, and enforced by arbitrary penal-

ties, but the free choice of his own highest will, the voice is his heart of the God he adores, to which he joyfally gives, not so much his Obedience as his Loyalty, and to which he would strive to be faithful still, if instead of earning for him admittance into heaven, it insured his punishment in hell. To speak to such a man of an act of any kind as being an "act of Duty," is not, then, to present it to him as something naturally repulsive, or, at best, hard and stern; but, on the contrary, as something necessarily welcome, if not to his lower nature, yet inevitably to his higher self. It is practically telling him that, whether pleasant or unpleasant to his transitory wishes and the impulse of the moment, it is in accordance with the permanent desire of his heart and bus deepest consciousness of what is good and noble and beariful in barrier conducts.

That Prayer is such a Duty as this for the Theist, there cannot, I conceive, exist any doubt. It is a Duty which meets us at the threshold of religion, of the staff by which our faltering steps and to be upheld and our backslidings recovered; and it is the wing on which, from the loftiest summit of morality, we must see into the spiritual heaven of love.

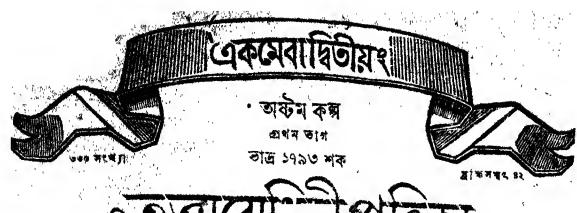
But, albeit Proyer is a Duty-in a source, the beginning and the climax of Duty-it does not follow that for the Their their should be in it anything rigid, formal, laid down by rule and roto. The lesson taught by the originator of the Fligh-churh movement in England: "In your private prayers use the prayers of the Church," together with ordinary ecclesiastical direction to pray at stated hours and decimal in pre-arranged notes of festal gratitude or Lenten sadness—such lessons. I say may well be given by Churche Chain.

ing divine authority over the human intellect and conscience But they have no sort of meaning outside their jurisdiction. Fur such leading strings of the soul, it behoves every free worshipper of God to substitute such strength of aspiration, such hunness of will, as shall ensure the only point which is of spiritual importance, namely, that he lives a prayerful life. Whether he actually prays formally seven times: a day, or once a week, is nothing, provided he is always ready to pray, and lovingly thinks of God and to Him. as often as in the psalm of his life that sweet key-note of all its music may fitly sound. If he feel himself weak, and lonely with that loneliness which even the firmest faith, when socially isolated, must needs endure, he may, if so it please him, make rules for himself of hours of devotion, and so supply himself with a frame-work in which his days may seem more safely and evenly to go on. Or he may be better pleased to make no such formal lawgiv. ing for himself at all, and trust only to the unflagging ardour of his heart. The rule of the poet may be his rule also:

"Keep up the fire;
And leave the general s flames to sl

And leave the generals flames to shape themselves."

Above all, I conceive that the practice of yielding readily and joyfully to the impulses of religious feeling which at any time some to us, and the habit of filial trust enabling us freely to speak to God of all that is in our hearts, are things of infinitely more importance than the rigid adherence to any rule of the the rigid adherence to any rule of the tax appear.



ञञ्जाता ीथिविका

क्षणविश्वभित्रभक्षणांत्रीश्वासाद किकसानीष्ठितितः न्यासान्द्रभदः। उत्पाद निष्ठाः व्यासम्मन्यः शिदः व्यवक्षणि उत्पादम्यः भित्राद्विष्ठीप्रश्ने निर्मात्रभक्षित्रण्यः मसीसम् नर्वादिक गर्वत् क्षिणम् क्षावः व्यास्थिति । এकमः उद्देशस्य भागस्य। भागतिकदेगिककः संस्थापि । उत्पाद व्योक्तिमा भित्रकाम् प्रस्तिक एन्श्रीस्थापः।

छिश्राम ।

গ্ৰীযুক্ত আ**নন্দচক্ৰ বে**দান্তবাগীশ কৰ্তৃক বিবৃত্ত।

ং কার বুধবার ১৭৯২ শক।
একো পর্যঃ পরং তোষঃ ফটেনো শান্তিকজনা।
নিনোকা পর্মা ভৃত্তিরহিং শৈকা প্রধানত।।
তাল্যার্থ ২ বন্ধ হব অধ্যাদ।

ধর্মই এক মলল-সাধন, ক্ষমাই এক উত্তম-শান্তি, বিদ্যাই এক পরম-তৃত্তি, এবং ফ্রিন্মাই এক সুখেব কারণ।

हरेया क्रेच्रत्वत निक्छे नरेया यान । अट्यंत लकारे एक्वन এक माज धर्मावर अहरमध्र । **नृतकात केश्व**रत अनुताश 244 এবং শেষ পুরুষার ভাঁহাকে দর্শন করা। याच्छदन्तः किस्तारहरू, "प्रमकालडेशासन अक्षिमश्चिक्ष পাত্তে প্রদীয়তে যত্ত সকলং ধর্মলক্ষণং।" সেশ কাল প্র বিবে**চ**ন ? শুজুগারে উপাজিতি ধনের প্রস্থা পুর্বক সংপাতে যে দান ভাজাও ধর্মের সাধন वटि कि "हेक्साइ।त्रमशहिल्मामानम्दासः কর্মণাই। ভাষক প্রমোধর্ম্মা মনেই তেগন।-अगर्भागर । " । ४७०, महाजात, हे स्मित्र प्राम. व्यहिश्मा, मान, विमाशास शेठामि (१ किहू কর্ম ধর্মের সাধন, সে সমুদায়ের গ্রে মনকে বিষয় হইতে আকর্ষণ করত আল্লাতে नगाधान पूर्वक व्यवाद्य रगाध बाता रच আত্ম দর্শন, তারাই পর্য ধর্ম।

ক্ষমাই এক উত্তৰ শান্তি,—ক্ষমাই শান্তি
লাভের অভিতীর উপার, ক্ষমা হারা সহিক্ষুতা অভ্যাস পূর্বক শান্তি লাভ হয়।
অনোর অভ্যুক্তি সহ করা ক্ষমার কার্যা,
বৈর নির্যাতন ক্ষমার কার্যা নহে। শক্ত মিত্র
সকলকেই স্থান সমাদর করা ক্ষমার কার্যা,

कहिएक अवनावना कता कमात्र कर्मा नरह। अञ्चलकारतत कमना मरबु अ बानाकृष्ट अन्तरात महिक्यु । अवलक्षम कताहै कमात কর্মা। কাহারও দোব দেখিলে ছঃখিত ३ ७ सा अवर महिन्दू हो **अवलवन पूर्वक धो**-ভির দৃথিত তাহা সংশোধন করিতে চেম্টা कताई क्षमात कार्य। अहे बरान कमा बाता দ্ভিফুত: অবলম্ন করিলে আর বিপৎ-কালেও বাণিত হইতে হয় না. সুতরাং জনাই শান্তি লাভের উৎকৃষ্ট উপায়। যা-इ व कमा नारे-गाहात महिक्का नारे, (महे वाक्तिरे विश्वकाति व्यक्ति वाथिक) কুটারা পড়ে, সুতরাং ক্লাগি লাভ করিতে भगर्भ दशमा। "क्रमा वशीक्र हिर्लाटक क्रमा हि পরমং ধনং। ক্ষমা গুণোছণজানাহ শাজানাং ভুনগ্ খনো। " কমে হয়ে। শক্ত মিক সকল লোক বশীভূত হয়, ক্ষমা পরম ধন, অম। শক্তবিমের গুর অশক্তবিমের ভূষর। ি বিদ্যাট এক প্রম ভূপ্তি,—বিদ্যাই ভূপ্তি লাতের উৎক্রট সাধন। বিদ্যার আলো-চনার যে ৰূপ ভূপ্তি সুখ অনুভূত হয়, এমন অত কিছুতেই হয় না। যদিও যাজ-ফকা ফুডিতে উক্ত হইয়াছে খে—"পুরাণ मात्र-मीमार्गावर्धना दानिकित्रिकाः । स्वतः व्यानानि विल मह धर्मा है. हजुद्धन । ' भूडीय, सरीय, भीगार्था, दखेमाख, निका, कन्त्र, साक्त्रश, विक्**क**, इन्हर ५ (आहिम ওট ছয় অংশের সভিত চারি বেদ, এই ५ जुर्म श्री तिशात वावात. এ मक्तार्ट ७ ुषि मुथ लांछ का यु है, कांत्रन विष धाष्ट्र इटेंटड विना नक्ती निष्णंत्र इनेगाहरू धरः বিদ থাতুর সর্গ ভান, দুত্রাং যে কোন খান হইতে যে কোন বিবয়ের জ্ঞান প্রাপ্ত ভঙ্গা যায়, তাহাই বিদ্যা **শব্দের বাচ্**য दशानि क मग्रमात्र पात्रकं विमा विका केंक रहेबाटक, त्य दक्षु ख जनाएक जात

বিশা বারা বানা কানকর নার্বার্থনের কান প্রাথি
হওরা যার, ভাহাই প্রেক্ত বিশা বিশা
হইলেও পুরার প্রভৃতি উপ্ত হতুর্বল বিশা
হানের যে কোন আংবে সেই অনার লাহ্ন
বের জ্ঞান প্রাপ্ত হওরা যার, ভাহাও প্রেক্ত
বিদ্যা, ভাহাও সর্ব সাধারণের আনোচনীয়
ও ভাহাও পরম ভূপি লাভের উৎকর্ম উ
উপায়। "জ্ঞানপ্রদানেন বিশ্রুক্ত বিদ্যান হারা বিশুক্ত তত্ত্ব রাজ্যি ধানিমুক্ত
হইরা সেই নিরবয়র অক্ষর পুরুষক্ত প্রাথি
হইরা সেই নিরবয়র অক্ষর পুরুষক্ত প্রাথ

অহিংসাই এক সুখের কারণ,—প্রাণি মাত্রের হিংশাতে বিরত থাকাই সুখ লাভের व्यविद्यास मार्थन । "या हिल्मार मई। जुड़ानि ।" कासम्यान। वादका कान व्यानित हिस्स। कति-नकल थानिहै क्रियरतत शिव বেক না পতান, দকলেরই প্রতি তাঁহার দ্যান ক্লিই, नकत्तरे डीहात मयान अखिशाला। बृहर কার করী অংবি, অতি কুদ্রতম পিপীলিকা পर्गत, मकलरे जाहात मगान औछित शाज। তিনি জগতের মলল উদ্দেশে কৃত হুত্ৎ नकन शाविर मुखि करिमाटर न. जाशब १८६४ একটা ক্তু প্রাণির হিংদা করিলেও দেই অংবে তাঁহার উদ্দেশ্য সাধ্যমর পথ রুক क्ता हरा। मुख्दार केषद्वत घनल खेटमद्वात বাাঘাত করাই পাপের কারণ হয়। অভএব क्लान आणित हिस्मा कहा तिरम् सरह। विटनवकः चामि अना बाह्ना हिश्तिक स्टेटन যে ৰূপ কট ভোগ করি, খনোও খাদার बाता व्यानक व्येशा केळण कर्क दकाश क রিবে, এই ভারটা বাঁহার অন্তরে টকিড চর किति मात्र कर्गन महत्रात्र हिस्सात्र क्षेत्रक श्राम रा। ता नारिक नवना विश्वाद वर्ष tice, crist correspondent

का विश्वपादक्षक (स्वानकात (स्वान) हर-(नवरक) कालका विश्वपादकार (काल श्रानित रिश्ता का कालका विश्वपादकार केना व शावत करता वारक कितने के इनोटने अस्त (नाटन हर्त काल करता

दि नहा नाष्ट्रवा श्रीतम्पत । जूपि

प्रदेश नाष्ट्रवा श्रीतम्पत । श्रीतम्पति । श्रीतम् । श्रीतम्पति । श्रीतम्पति । श्रीतम् । श्रीतम्पति । श्रीतम्पति । श्रीतम्पति । श्रीतम् । श्रीतम्पति । श्रीतम्पति । श्रीतम्पति । श्रीतम्पति । श्रीतम्पति । श्रीतम्पति । श्रीतम् । श्रीतम्पति । श्रीतम

७ ०करमवाधिकीयः!

ভবানীপুর উনবিংশ সাম্বৎগরিক ব্রাশ্বসমাজ।

भ कार्याङ, इंट्ल्यक्रियात, ১৭৯० माळ ।

विनित्त्राणिक रश्न. उथम करे अगट्य मजात नरक नरक जात कर करलोकिक मछ। जामा-দের সামার চকুতে নিগতিত হয়। যেমন वहें वर्ष वक् दाता वहें कड़मत भनार्थ मकल নিরীক্ষণ করিয়া প্রীত চ্ছ,তেমনি আধ্যাত্মিক চক্ষ্ হারা দেই জড়ের মধ্যে জড়ের অভীত এক অলোকিক পুরুষের সত্তা প্রতীতি করিয়া ভক্তি শ্রন্ধাতে বিগলিত হঠ। নেম্ন সহজে **छक् छेगो**शन कतिस्तरे ८३ कड़ खगर ष्याभारमञ्जानक है अधिक्षांक कहा समझ कार्य সহজে এক অধ্যায় কগ্য আন্তঃ সমকে विखादिक दमिरक शास्त्र। एपन अशीरम विविधिक्तिक मर्मावक शकिकालका ও জাবাহিনিক বিষ**াের অপেকাকৃত** অঞ্ গৰিচালনা, এজনা মনুষা জড় জগৎকে ে রণ এইডি করে আধ্যাত্মিক জগৎকে েৰ ৰূপ প্ৰভীতি করিতে পারে না, তথাগি এমন দেশ নাই, এমন জাতি নাই, এখন लाक नाई य क्रिकेट्स अकाम अवलाकन ना कतिशा थाटकः धने छ्वान सनूरणात १०म ध्वयुः म्डेर्ड्ड পরিফ্টিত হইতে া া প্ৰস্তু কোন সলোজাত শিশু— ্রার ইন্দ্রিয়ের মহিত ক্লগতের এই প্রথম 🕶 🐫 🗀 ভাষার চকু জোন্তাদি ইন্দ্রিয়ের শ' ক সম্বিক পরিস্টু না হওয়া হেতু সে াৰ জগতের ভাব পাই ৰূপে জানিতে ে'র অ' কেবল অস্পষ্ট ছায়াবৎ প্রতীতি करिय १८क, योशास्त्र व्यवस्थि छ-कर्पहरी का सक्ते व्यथांचा विस्त मनलाइ 阿爾斯 1 物於於東西東京於 建铁棒 建化物产生水水 神经 多水水管 不能 MAN METHOD OF STREET PROPERTY. TO THE WALL WAS A SECOND

ইহা ঘটে, সেই নপে ইহাও দেখা বার যে, বুলুকার হইলা এট নির্মাণ করিছে বিজ্ঞা থালারা জন্যান্ত বিষয়ের জালোচনা করে দিয়াহিলেন। তৎপরে এজনে নেই প্রথমি নাই তাহারা আত্মার ভাব বুঝিতে পারে বিদ্যার কড দুর উল্লেখি হৈইলেই, চুতি না। এই দ্বারা এই প্রতিপন্ন হইতেছে যে কর। যে মনুয়া তখন এইটি সামানা কুটার যেমন পদার্থ জ্ঞান ভূয়ো দর্শন সাপেক। নির্মাণ করিতে জারিত না, সে এজনে ভ্রমনি অধ্যাত্ম-জ্ঞান আলোচনা সাপেক। এ অপুর্ব অট্টালিকা নির্মাণ করিতে পারিকেছে

क्षेत्र क्राइंड निकंग्ने व्यापनीति श्राह्म क्राइंड निकंग्ने व्यापनीति नृष्ठे क्राइंड क्राइंड

यमि अ व्यथ्य मनुत्यात क्यांन तुकि नम्धिक मार्क्किंठ ३ छेन्नठ हरा नाई अवर अहे कना তাহারা ঈশ্বরের অনন্ত মূর্ণ্ডি স্পাই ৰূপে राव्या कविष्ठ भारत नाहे, किस मनुरणद সকল জ্ঞানেরই ক্রমশঃ উন্নতির নিরম। এই যে প্রকাত ভ্রহ্মাণ্ড, ইহা পূর্বে পরস্পর নিভান্ত বিশৃ**খ**ল ও অসমন্ধ বলিয়া লোকের বিশাস ছিল। এখন ইয়া কেমন সুশৃখ-लावंक ७ मत्माश्त विला छेनलिक इहेरउटह। यथन अहे नकल मार्माना अन् नि-छ्डान नम्रदश्च मनूरवात राष्ट्रमन विवय अम हिल, उथन व्यथापा क्य विषदा य मनूत्यांत सम थाक्टिय তাহার আশ্চর্যা কি: এক সময় সনুব্যেক अपन कमणा हिल ना त्य तम अविधि चड़ि প্রস্তুত করে। সেই ভাবস্থা করিয়া। अटलकाद्भक छेनक अवशांत्र मनूबा अहै

मिश्राहित्सम । क्रश्रद्ध क्षेत्रस्य तह भागव विकास कर पूत जिल्ली विकेशारक, पूछि কর। যে মনুষা তখন একটি বারানা কুটার निर्यान कतिए कार्बिक मा, त्र बकरन अपूर्व अग्रेलिका निर्मान कतिएक भारिएक्ट्र — य मन्या दक्क काउँदा वा अवँ शब्दत वांन कतिक, त्म धकरण शृथिवीत तांक निश्का-সনে উপবেশন করিতেছে—যে মনুধা বজু विद्वार बाक्षावारक महा उस थाल इहेक, मि জড়-ভীত মনুষ্য একণে ঐ সকল প্রাকৃতিক . বস্তুকে আপনার পরিচারক করিয়া ভুলি-য়াছে — এই জড় প্রকৃতির উপর মনুষোর কোন শক্তি আছে. পূর্বে মনুযোর একপ প্রতায় ছিল না, এক্ষণে আত্ম গুভাবে সেই জড় প্রকৃতি মন্থন করিয়া মনুখ্য আপনার অভিল্যিত অর্থ আহরণ করিতেছে। এই প্রভাক পরিদৃশামান পদার্থ সকলের জ্ঞান महत्व ३ यथेन मनुषादक এত অভ্যান অञ्चलात রাশি ভেদ করিয়া আসিতে হইয়াছে, তথন আসাবাবিক বিষয় সমস্বেও যে তক্রপ ঘটিবে ভাষার অসম্ভাবনা কি?

পরত ছাথের বিষণ এই যে, পদার্থ জ্ঞান সমন্ত্রীয় এই সকল পরিবর্তুন পরশানর রায় তত্তবিশহের মনুযোর যে প্রকৃত উমতি হইতেছে, ইহা যেমন আবাল রুদ্ধ বনিতা কাহারই অবিশাস্য হয় না—আধ্যাত্মিক উমতি সমস্কে মনুযোর সে কপ প্রতায় নাই। আধ্যাত্মিক বিষয়ে ইশার বাত্তবিক যদি দৈববানী আক্ষিক জ্যোত্তিং প্রকৃতি কোন অক্রোকিক অপ্রাক্তবিক কপে শিক্ষা না দেন বা অহুত প্রকারে কোন পরিবর্ত্তন প্রকৃতি কান না করেম, তাহা হইবার উপায় নাই।

অপেকারত উন্নত অবসায় মনুষা এই কিছ বিবেচনা করিলে প্রতীয়নান ইইবে বপ কম্পন। করিয়াছিল যে উপার সায়ং হৈ স্বর্গ্যের সে ক্রেক্ট ভাষি সাধিকা ও

तिन तियात काश्रेत समिति नाथम क्षित्रहरू - वर्षात्र द्य श्रव्हरि शृथितीत प्राची अपने जुण्गाचिक अतिहा जुलिहाएक, तिहै दिल्लि कारादन वर्षकीवी कतिशाहर-तार शहरका निकाधीन हरेगा मनुया नई-त्वा मननमत्र केचात्रत्र त्यवात अत्व हरे-सारक शत्राव भरे शक्ति वरेट जाना यारेट्डट्ड रय, मनुषा कुछ नत्ह-मनुषा नामाना नरह-मनुषा अनय परदेषुत्र जीत-কারী। সেই প্রাক্তিক গতিতে মনুয়েত वृधि भेरे अफ भनार्थ अधूनात्र उन कति। त्नरे अडी खिन्न भूतान भूकत्वत अडि शाविक इहेटबढ़ । धरे बना क्रेश्व कान (मटन, दकान कारल मनूटवात निकछ शक्त नरहन। কিছু যাহারা অধ্যাত্ম প্রকৃতিতে অবিশাস করে ভাষার: ঈশবের প্রতি বিশাস নাস্ত করিছে পারে ন।।

এই अशांक अक्रिक्ट व्यविशास हुई প্রকার। এক প্রকার অবিশাস ছেতু অধ্যাত্ম विषद्धत मञ्जादक चारमी भटनत मधारदण আর এক প্রকার অবিখাস তেতু শরের প্রতি যথার্থ নির্ভন করিতে সাহস य ना। ७ ई कना मनुरा मकत छटकरन क्यंन . इत Cमता, कथन मनूरवात छेलामना, कथन · র্থপর চা, কথন নিরাশা অবলয়ন করিয়া लाग हीन ७ निकि-विहोन इहेश शतिक्यन हरत । जम शाम विषदा प्रतिज्ञ परिस्त विक्रिता वात्मात शताबह हरेट इहेटल स्मूमा शृष्ट करे अनुख्य करत किन्न आधान्त्रिक বিষয়ে হীনতা সরিক্রতা পরাধীনতা প্রভৃতির के ता नक्तारे तरम कतिहा थात्क । हेर: नेन्द्रशत अक्षेत्र प्रस्तित दिएस, द्य काहात भाग अधिकतां सारे ?

च्यान अङ्गिष्टक चारियान कतित्व नवनांत्र अञ्चलित चरियान कतित्व हरा; लात्य कार्यक स्वतंत्र कार्यक हरेग्राहर,

देशात । प्रकास विदल नरहा व्यापक किछा-भील गाकि रायम अधाषा मृक्टिक विशांत्र केंद्रित्हें का तक्षाने धारे हमी हकूद वृक्तिक उ विश्वास अविश्वस्त मा । केंग्रिता धहे (मनी-भाषाक व्यक्तार का जिल्हा भाषार्थ-असूमाय 电影技术的 电水平管线电池 कि । विश्वाम WALL BUT 聖武 人 柳川湖南 丁香學不振聲 編書を成 マーラができまい 世界漢 福養性 「新春 でいま 中は ままい とうよく かけっ **有**情似于我们《我们的教育》。14、10月4日年初日以 कतिसः विक्रा

क्यान हेस्ट्राण जिल्ला मत्यान का नाश्चिक रहत वहल श्राहाह हेस्ट्राण किया द्वार हेस्ट्राण किया द्वार हेस्ट्राण किया द्वार हेस्ट्राण किया द्वार हेस्ट्राण किया हैस्ट्राण किया हैस्ट्राण किया है हिसाम विकास करात किया हैस्ट्राण किया हैस्ट्राण किया हैस्ट्राण क्या हैस्ट्राण क्या हैस्ट्राण क्या हैस्ट्राण क्या हैस्ट्राण हैस्ट्राण हैस्ट्राण हैस्ट्राण क्या हैस्ट्राण हैस्ट्राण क्या हैस्ट्राण

नेश्नप्र वाप वा नाखिक्छात्र विकीत्र, क्रिक् এই যে, ঈশর আমাদিগকে অধ্যাত্ম বিষয় সকলের প্রতি বিশাস বা নির্ভর করিছে একান্ত বাধা করেন নাই। আমরা তৎ-সমুদায় বিষয়ে নিউর করিতেও পারি. ন। করিতেও পারি। এই জন্য অধিকাংশ স্থলে লোকের অধ্যায় বিষয়ের ठाष्ट्रीला खान हरेगा थाटक। नजुवा যদি যথার্থ ভড়ালোচনা করিয়া দেখা যার, তাহা হইলে দৃষ্ট হইবে যে থেমন অধ্যাত্ম তত্ত্ব সকলের প্রতি সংশয় করা *হয়,* তেম্মি ভৌতিক তত্ত্ব সমুদায়ের প্রতিও मःगाः क्या गहिए शादा। शाहीन গ্রীন দেশীর বিখ্যাত পশুত সক্রেটিসের ं बर्फ व्यशाबाटक ममूनायरे दित ७ मछा, र्भमा**र्द** विमा। **मश्की**य़ তত্ত্ব मकल অবোধ্য ও ি অনিশ্চিত। তাঁহার সময়ে ভৌতিক হত্ত্ব সকল আবিষ্ভ হয় নাই, এ জনা তিনি দেশিরাছিলেন যে কেবল অধ্যাত্ম তত্ত্ব সমুদায়ই স্থির, নিশ্চিত ও লোকোপকারী: ভৌতিক পদার্থ তত্ত্ব যেমন অন্থির তেমনি অসংলগ্ন। সজেটিসের সময়ে পদার্থ বি-मात्र (र क्रश अंतका जिला, अर्थन उन्न विमात । সেই রূপ অবস্থ। বলা যাইতে পারে। পরস্ক িবেমন এখন জানা ঘালতেতে যে পদার্থ उद्घ षारवाशां नतः इय शृर्वे अत्रा.क्यितिश्व नत्, राज्यानि हेरा १ कानिए इटेरन रा अन विषाः । उत्ताम 'भर्रम मर्भरतत विषव सत्तः। যদি চফুর দর্শনকে বিশাস করা যায়, ভবে প্রাক্তার দর্শনকেও বিশ্বাস ক্রারিকে হইবে: য়াৰ আপুনার অভিত্য বিশা**স করিতৈ হয়,** দনে উদ্ধরের অস্থিত**ও বিশাস করি**তে . इस्त्व १.

ক্রান্সদ ভাক্ষণ। — আমাদের প্রকৃতি-ক্রান্স-প্রভান্থ-নিস্পাদিত এই ত্রক্ষবিদ্যা বিফার নিমিত্ত—এই ত্রক্ষের সাধন নিমিত্ত

वरे जानगारमा अस्तर में सह बनात वर उत्तिम्याक कार्रिक स्रेग्नाटक माराज वनारम छनविश्म, बर्मन धरे बाक्समान मूतकिक रहेशार्ट, जॉल ठारात और नाहर-महिक छेरम्य निवरम राम्हे स्मरकारक मध्यक्र थनावाम कत। य श्रम वाडीड পৃথিবী অরণা जूना इस य अर्थ वाठीक लांक पाळा निर्दार कहा करिने इस प्रा ধর্ম আমারদিগকে লোক লোকান্তরে লইয়া तकः। कतित्व-तम धर्म व्यवसारे व्यामात्रत्यते জীবন অপেকাও মূলাবান ও প্রিয়হর। मिर धर्म भिका कत, मिर धर्म भामन कत, मिहे धर्मात अधिको इन कहे जाममगाकरक त्रका कत अवश् अरे मकन मिष्कित निरिड সেই সিদ্ধিদাতা বিধাতার নিকট বার্দ্বার---অহর্মিশ প্রার্থনা কর। আমর্। ক্লণকের ন্যায় ট্রকা কর্মণ করি**তে পারি, বীজ ব্**পন क्रिट भारि, बाद भक्त विवस्त्रहे आमारमत नेपरतत थनारमत छेशत निर्धत। क्रेमरतत धनारमहे (महे तौक काम तिक इंडर् अवः कोश स्ट्रेटक कटलांधभागन स्ट्रेटन। क्यांभागन **बहे दिश्वटक** हरेदन, त्यन कांभाट ^{पद्म} केंद्धत ক্রটি মাহর। আমরা থেন প্রাণ পণে আ মাদের কর্ত্তবা সাধন করিতে পারি। জামত্র. কর্ত্তবা কর্ম করিব, ভাহার ফলে^{র জুন} চিতা করিব না। আসরা এই জানি যে, "भिया कतरन रका काम भागती, महा क तरन-का डेनिएक धरुम (मैं। ै **आ**मज्ञा क ^{देल} मिता कतिव, मशा कता छोहात्रहे भरमात छे०^{भत} নিউর।

হে পর্যাত্মন । তোলারই এই সংসার, তোমারই এই ঘনুষ্য। জুনি বৃথি করিয়া অববি আ্যাদের সলে সলে বহিয়াত। তৃষি আগ্রবৃত্তি প্রকাশক, তৃষিই ঘনুষ্যগণকে। অভ বৃত্তি প্রদান করিয়া কল্যাবের প্রকে। লইয়া ব্যক্তা হয়। হে দের। হে ইশার क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट के बाबादनत कर्केट क्रिकेट क्र

धर्मा निक्क ।

सिति निष्ण धर्म एकु जान लांच कहिग्रांटिन अनादक तिहें धर्म एकु उपापन
निर्वात निर्मिक हीहात अकिंग अवल रेका
कर्मा तिहें हैंका बांचा कि । याँ हात क्ला
धर्मा हर्ड भतिश्विक, जिनि, डाँहात सिर्हें धर्म
छात रम्परे, अनादक ठाहात जाम जाती
मा क्रिया धाकिर्ड भारतन ना । अहे बना
मर्च प्रत्मेत धर्मभाग्राम महाजाशन आभागत
आभागत रम्पिक धर्म अनादक निर्हात काम जाता
कर्मा विस्त आग्राम बीकात क्रिया शिग्राहिन
अवर अस्मा अहा अहन क्रिया इन्डार्गरा

যদি একণকার লোকগণ চিরস্থায়ী মেই পূর্বকার লোক মাজ হইতেন, তাহা চইলে এখ**ন আর ধর্মের নিমিত্ত এ**ত চেকী। করিতে हरेड ना, काशंदक अ ধর্মানিকা প্রদান कंद्रियात आवगास्त्रा इहेड ना। र्थे अ बनुरसाङ्ग म क्रि श्रकृष्टि नरह। धर्य আদিম মনুষা দিগের সময় অব্ধি উভৱোত্তর मश्च्य । जनक हरेशा चानिटक्टक धरश अट्डाक मनुगारक धरर्यत अथग वर्ग अवि निका कतिए इरेटक्ट । उटव এই मृशे শ্বতেহে বে, শর্মের যে অধ্যায় গুলি রচিত হৈতে সম্প্র সমুখ্যভাতির এত কাল বারিত ररेशाटक अकारन अकारी मनुषा छाहात अह ৰ ক্রিড ক্রিডেই ছৎসমুদার পাঠ করিয়া ক্ষিত্রের ৷ ক্ষিত্র নেই গর্মোমতি সাধনের क्या त्य व्याजातम् । अत्र त्य त्याजात्म अम

स्थाप्त नार्ठ कविष्ठ इत्र. इविष्ठ नाम्हे स्पेक वा विलक्षित भटनरे स्केक, तमरे सम्म कर्णारे मकल्यक पानिएक स्ट्रेट्ड्ड् म्हा माहे। अवर तमरे तमरे त्यांभारत वा तमरे तमरे स्थापत वा व्यवस्था स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्था

পূর্বে কহকগুলি নিশেষ ব্যক্তির এই ধর্ম শিকাকের পদে প্রতিষ্ঠিত হুইবার নিয়ম ছিল। তাঁহার। ভিন্ন যে আর কেইকাহাকেও श्रामीशामन मिरक्स सा अग्रस सह, किन्न मैं हात्रा दमेरे शतम अचिक्रिय, डीहादमत्रहे कथा विद्याह करण आक रहेंछ। हेहा छडेटफ त्य विख्य कामिसे डेबलानिक करेक, कति-गरतंत्र भारताञ्चः ६ श्रष्टाद् आवनातः इहे-With Sails with Barr टिए ना समीर्थ विभिन्न क्लेटनके समादक कार्य संस्थ-ভাগী করিবার জন্য স্বভাবত সহৎস্ক थांदिन ७५९ भनाइक (महे पाना-কথা বিদিত করিতে না পারিনে ফুরিত ও পারিলে নির্মল সুখ প্রাপ্ত হয়েন, তথন প্রত্যেকেরই সেই রূপ উপদেশ দিবার অধিকার স্বীকার করিতে ধর। আর ইকা म्लाकेरे एत्था यारेटल्ट्राष्ट्र त्य, त्यमन त्यान राक्षि क्लान जैवर हाता बाशनि क्लान ताग स्टेटड युक्त स्ट्रेग़ा, भारत मिट्ट देवद षात्रा अनाटक स्मर्ट द्वाश हरेटक मूज कविएक পারে, সেই ৰূপ সাধনশীল ধর্মানা ব্যক্তিও শাপনার গরীকিত উপায় বারা অন্যকে भाभ इहेर इंक क्त्रिज्ञ धर्म भट्य भागतन कतिएक मक्तम ब्रह्म ।

करे बरन थाउनम रहेरबंद ता बरकार वाक्षित्रहे धर्माभरममा निवात अधिकात चारका किन्नु जा विलिया धर्म विषया याहात याहा मदन व्यातिदर, जिनि करहारे मिका निदल इहात छोहा नटह। धर्मानिका मान पाकि छन्न-তর কার্যা। ঘিনি জ কার্য্যে মণ্ডায়মান হয়েন, ভাষার একটু ক্রটিতে অন্যের মহা অনিষ্ট ঘটিবার সম্ভাবনা। অতএব ধর্মশিক্ষককে গর্মের তত্ত সমুদায় অবগত থাকিতে হইবে . এবং সর্বদা অবহিত থাকিয়া কার্যা করিতে হইবে। শস্য সম্পত্তির নিমিত্ত যদি কোন ক্লুবক কাহারো কোন ক্ষেত্র কর্ষণের ভার গ্রহণ করে, তাহা হইলে যেমন মৃত্তিকার थन, दीरका धर्म जवर कान्यात कि मार्भ কোন্বীৰ শীঘ্ৰ শীঘ্ৰ অঙ্কুরিত হইয়া কল গ্রদর করিতে পারে, কি ক্রপে শ্যাদি রক্ষা করা যায়, কি কপে তাহার বিম সকল নিরাক্ত হইতে পারে,-ইতাদি সমুদায় রুঘি-তত্ত্ৰ ভাষার বিশেষ কপে পরিজ্ঞাত থাকা আবশাক, তেমনি যিনি মনুষ্যের ধর্মোমতির जना राष्ट्री करतम, डीशतं अमूरगत शक्ति, সংসারের অবস্থা এবং ঈশরের সহিত তথ-নম্দায়ের সম্জ্ব প্রভৃতি সকল ধর্ম তত্ত্ব অব-গত থাকা প্রয়োজনীয়। নতুবা তিনি কা-নারে: আত্মাতে ধর্মোৎপাদ্য নির্মাল পবিতা भूण ७ कलाांग উদ্ভব ক্রিডে সমর্থ হইবেম না। ধর্ম শিকাদানের এই গুরুতার ধারণ করিয়া ধর্মশিক্ষক কি রূপে শিক্ষা দিবেন ও কোন কোন বিষয়ে শিক্ষা লিবেন ভবিষয়ে विरवप्ता कहा ग्रहिस्ट्रा

প্রথমত ধর্ম শিক্ষক **নিম লিখিত** বিষয় গুলি সমস্কে আপনাকে সতর্ক করিব বেন।

(১) থাহা ভাঁচার সুচিত্তিত ও শাহাতে ভাঁচার দৃত্ প্রতায় আছে, তিনি সেই সকল বিষয়েই শিক্ষা দিবেন।—কৈহ কেই এমন भारतम त्यं अभ विकास त्याम जात कार्यक विकास विका

- (২) ধর্ম শিক্ষক কোন জটিল ভাবে কথা কহিবেন না। ভাঁহার একপ বাক্য বাবহার করা উচিত মাহাতে ভাঁহার মক পাই কপে ও সহকেই বুকিতে পারা হার মাহাতে করে। পারা হার মাহাতে করে। পারে কথা কহিয়া পরে বিবিধ উপ্পর্টেক,জ্যোত পূথিবীতে প্রবাহিত করিয়া শিলাছেন।
- ধর্মা শিক্ষক অব্যার ধথার্থ हिडाकाडकी इहेगा डाहादक धर्मा निका नि-(तन। - उम्र धर्म मक श्रील (य म श्रकाद्ध চারিদিকে কেবল বিক্ষিপ্ত করিয়া নির্মন্ত थाका এक कथ, भाव ता छनि बाता त्नादकते যথার্থ হিত সাধন হয় তাহার চেটা অন্য क्षा । हेरांत मध्या (नध्यांक श्रकादत कोर्यार ধর্ম শিক্ষকের যথার্থ কার্যা। ধর্ম শিক্ষক भरमात अञाकाकती करेगा गांबारक भरभंत গৃঢ় তত্ত্তলি তিনি ব্ৰয়েক শনুভাক िए भूनः भूनः छाहात **्रका** कतितन्त धावर माहाटक काहात धरनीत आहि बार्ताती বৰ্মিত হয়, আলা শাৰি লাভ করে ও হক্ত কার্য্য তৎপর হয়, ভবিবরে মনোবোগ क्षेत्रात क्षिट्रयम । राजक वर्ष प्रता राजaritorial di talente

(अ) धर्मा निकार कि हुत्र रे पिष्टमान कहिरवन ना ।-- किनि चनारक निका पिवात निमित्र েয়ে সকল আয়াস স্থীকার কার্বেন, তাং । তাঁ-দার কর্দ্রব্য বলিয়াই ভিনি করিবেন। তাহাতে चंग्न लोत्कन्न वा वछ मश्चाक वाकित निवा জ্ঞান লাভ হউক তদ্ধারা তাঁহার সেই কর্ত্তব্য কণ্ম শাধন জনা পুরস্কার ভিন্ন আর কোন পুরস্কার নাই। সার তাহার উপদেশে ঘাঁচার মৰল লাভ হইয়াছে, তিনিই যে তাঁহার मिहे भक्तित भूत, कोशां अन्दर्ध क्षेत्र (समन তাঁহাকে দিয়া তা্হার জ্ঞান বিক্ষারিত করি-লাছেন, তেমনি হয়ত আর কোন কাঠ প্রস্তর ৰা কোৰ পশু পকীকে উপলক করিয়াও णाराजः टेक्टना जन्नारेश नियाट्यन । अठ-वेद मनुद्रवात वर्ष लाएकत भएक धर्मावह **লিবরই মূল্য থাম শিক্ষক কেবল তাহার** উপলক্ষ মাত্র। বে ধর্ম শিক্ষক আপনাকে **धरे कथ भामिया बर्धाभरमम् रमन,** हीहाइहे उभागन विकास मनूद्रवात यथार्थ मकल-क्त रत, के इति छे अटनन मनुषादक नित्रकत লীবর বেবাভে বিয়োজিত করে।

वर्षे करने कालमात क्षणि मृष्णे तारिशा राष्ट्र विकास रूप मृश्र लांधा धन्याम छलीत्क पर्व विकास कहित्यम, त्य त्य विवदस्र विकास क्षणिक त्यार प्रकार विवस

/" (>) "नक्म पन्गई भन्न नगर्गी काशंत्रक धर्म काशद्रा स्टब्स मारे जान नाटकर जालनात धर्म नामन कतिया लहेटक रग्ना धर्म मनुत्यात चकीत्र त्रणाख्न, अक्रकि-নিক ও আতার অভান্তর হইতে সমুশ্বিত। অতএব কাহারো উপদেশ কেবল "অমুকের डेनटमग" विलगाई गृहीक इहेटल हिनट्व मा। তोशं गर्थार्थ भर्म कि ना, यशार्थ अक्रुछि-त्रिक কি না, অন্তর্মা তাহাতে সায় দেয় কি না, তাহা দেখিয়া লওয়া আৰশ্যক।"— ধর্মশিক্ষক শিক্ষার্লীকে প্রথমতঃ এই শিক্ষা করিয়া ভাষাকে আত্ম-চিন্তনে ও **अक्रुडि-**मर्भात अतुष्ठ क्षित्वम ! মনুষ্য আপনার আছাকে পাঠ করিখা ধরেছার यनुमक्कांन कब्रिट्ड भिका न। टट्ड, एडकान তাহার ধর্ম লাতের পথ অতি অপ্রশস্থ लाकः, यङकन भन्ता श्रद्धां कर्नान भग्न না হয়, ভতক্ষণ দে এক ভাবের উপনেশ অন্য ভাবে প্রহণ করে। এবং বছবিণ কুসং-कारत जाकत करेंगा विभाशामी हरा।

(২) ধর্ম শিক্ষক শিক্ষার্থীর নিকট আপনার জীবন রকান্ত ও সমুদ্রে হানবকাতির ইতিহাস উকান্তিন করিবেন এবং
ধর্ম বিষয়ক বে সকল জম ও সতা কিছার
নিজের কর্তৃক অথবা মনুষ্যসাধারণ ও বা
অবলম্বিত হইয়াজিল, চত্ত্বভাই প্রদর্শন করিবেনা ফারা ভাল ভাল ভালে তালাকে বিম্বরুর
রাখিবার চেন্টা করিবেন, হাল সতা ভালা
তালাকে ক্লাভ প্রণণ করিতে বলিবেন।
একজ্পা পেই শিক্ষার্থীর ধর্ম-বৃদ্ধি যেমন
মার্কিত হলবৈ তেমনি পরিশুক্ষ হইবে,
তালার ধর্ম ভাব যেমন প্রশক্ষ ও উন্নত হইবে
তেমনি তাই। দৃঢ়তা প্রাপ্ত হইবে।

(७) धर्माणिकक क्रेस्ट्र महिल गम्-यात मस्क स्थार्थ कटल क्षण्यांन करिएकस । —मननमत क्रेस्ट मनटलक क्षमाई क्षेट विक

गुक्रम कतिलीएमा जिल्ला विश्वासन चारहन, डिनि नक्टलत निकट्डे अक्निती नकटलत जाचाट्ड बाँकित्र, नकट्लत मनल ক্রিতেছেন, যাহা আপাততঃ অমুক্ল বোধ इत्त. डाहा পরিশেবে मनतकत इतः, मनुगा যালা ছুঃধ বলিয়া বোধ করে, ছাইঃ ছমবেশ-धाती मूथ भाग ; मनूरवात भातीत कण छक्त, আতাই অমর: মনুযোর পার্থিব জীবন কিয়ৎকালের নিষিত্ত, মৃত্যু ভয়ের বা অম-अत्सत विषय बर्द, आञ्चात जीवन अमछ-কাল: মনুষ্যের প্রতি ঈশবের অনুপম अध्यात करूना, मनूषा भाग कतिल देसत তাছাকে দণ্ড দিয়া শোধন করিয়া লয়েন, কিন্তু কথনই ভাহাকে পরিত্যাগ করেন না: ইংশর ছুর্বলের বল, অনাথের নাথ অগতির গতি, মনুষ্যের চিরদিনের পিতা ও পাতা এবং অনম্ভ সুধ বিধাতা ; ঈশর মহৎ, ঈশর **ष्ट्रांका गहर जात क्टिंग नाहे, मनुरंगत** সম্বাদ্ধ ও কেবল ছিনিই মহৎ, ঈশ্র ও মনুষ্টের মধ্যে আর কোন মহৎ পুরুষের মধাবর্তিত্ব मारे : मनुत्यात महीनीम लेबिक माधन क्य अवः সে ক্রমণঃ উন্নতি হুইতে উন্নতিতে অধিরো-इन करत्र এই जलहे मेचरत्र विधान:--वर्ष শিক্ষক এই সকল তত্ত্ব খনুষাকে সুস্পক ৰূপে বুঝাইয়া দিবেন। মনুতা এ পৰ্যান্ত যে সকল কুসংক্ষারে জড়িত হইয়া আসি-তেছে, যে সকল কবিপত ধর্ম মত রচনা করিয়াছে, পৃথিবীর এই সুখ স্থাপ পুণা জন্ম মরণ প্রভৃতির তাৎপর্যা অনুধাবন করিতে मः शाहारे छार्दांत्र पुरिश व्यक्षिकार एमत मनुषा जिचारते महिक आश्रमात क्रांबन्। কি বয়স্ত তাতা যদি বৰাৰ বংগ জানিতে शादत. काम क्रेटन कामान जानि जानि जाहा हरेला साहारक **यात मानूनक क्या** के ाटक सूरमान रुरेट का जा । ता मिन-

(8) असे शिक्षक प्रवृत्ति क्रिस्ट्रह उभामना क्रिएक निका विद्यम ।— अरे कार्याः रापन नहण एक्सन कठिन। नीहात नाटमटक् नमन्त्र पूर्वन स्मारिक हरेशा ग्रहिशाहर, क्रीकांत्र **छिपानमा कतिएक णिका (मध्या निकास्ट्** नर्क त्यां पर्टे एक । किस आयात्र ग्राहादक मनुषा ना वादकारक ना मरनरक किंद्रुरकहें. ধারণা করিতে পারে না, তাঁছার উপাসনা কেমন করিয়া করিতে হয়, ইহার উপদেশ ए उस कि कर्ने किठिन, जाहा विस्कृत अनू- ' ७व व्हेरण्टह । किन्न च्यालि बनुरशात मृहे १७३३ सर्वाव स्वान साहल शृथिती छ अस्ट ३३ **छि**शामना वस्त्र इश नाई। 'ए। ए। नास्त्र कैशिएक कान्टिकट्ट मा मिर्ट कटल्ड कैशिया छेभानना कतिरहरक । जेन्द्रहरू विस्ना कतिहा कानिवात अध्यह जाहात निक्छ मञ्जू অবনত হয়, ভাঁচায় অনন্ত ক্রুণা ও অনস্ত মহিমা অনুধান করিতে করিভেই হান্য প্রশন্ত হইয়া তাঁহার জনা আসন পাতিয়া रमह खदः जाशनात ज्ञाकाकगादतरे नत्रतमञ् অক্র অন্তরে ভাঁচার পূজা করিয়া বহির্মত্ত ^{३३}। जेगताशामनात **वहे गृह वस्तु**। जेग-রকে কে জানিতে পারে? ভাষার কভ করুণা ত্রোতে মনুবা অহনিশি ভাসমান রহিরাছে, কে তাহা অবধারণ করিতে সমর্থ হর: তথাপি দনুবা তাঁহাকে বত টুকু জা-निट्ड शास्त्र, जाहोटकर कारात समस् कला। । लांच रत्र। अनुवा चीरांदन त्यमेन कादद रन-बिटक्ट, क्यांन कार्यरे कारात उनामता क्रक, जावा स्टेटकरे जातात आग श्राधीत्वत डेविंड इवेट्या जिलामना क्रिएड विकेट करिएय मा, काहा स्वेटक विश्वक संस्थान A BROWST RELIEF THE BUILDING THE

SHAM IN MARKE THE TO I BAIRTI विचात्र अधीनका अवस्था कर नाम किन्द्रमण चिम्रा करे निका सिर्देश दन ने ने तर किन ৰূপে দুৱ করিয়া কেৰিছ না; তিনি আখার बाबा आत्म आब बार बार बार गर्यार বিরাজ করিকেছেন, সেই খানে তাঁহাকে দেখ. आदाम शाहरव । साहारक कूमशकात वा छशयम । বলা যায়, তাহাঃ য**ৰি আ**র কোন দোষ ন[া] খাকে, তাহার এই প্রধান দোষ যে তাহা ঈশ্ব-রকে এক প্রকার পর করিয়া দেয়, দূর করিয়া রাবে। ঈশরকে যদি প্রাণের প্রাণ আছার बाबा करन कान्टि नाति, बात किहून গদি না জাি. তাচা হইলেও ধর্মের জনা যাল চাই তালা লাভ দ্য। সেই প্ৰাণ স্বৰূপ क्रिकारको वा कि काल चाहायमा कतिएड ১৮ ৮ ছাল আর বিশেষ করিয়া বর্ণন করি-বাং বংকা নাই। ধর্মশিক্ষক পৰি সীয় को 🚊 राजा छोटा प्रभाहेटड लाटहर, यनि নাপনি উপাসনা করিয়া উপাসনা শিকা निट भारतम, करवहे किमि काष्ट्राट कृष्कारी হুইটে পরিবেন।

पूर के जन करहें, जासाह क्षेटि कहा-**हार क्यांटक अकर्जन दिला मक्टल** श्री-क् हि करत । धर्मानिकक मनुगारक नीकि ि ^{। यञ्चक} मञ्चनात्र निश्चय প্रक्रिशालम क्रिट्ड উপদেশ দিবেন। তিনি সকলকে এক भिष्ठांत्र मधानवद वावहति कतिहात विस्तित्ते, পকলের স্বাধীনত। বৃত্তি উত্তেজিত ক্রিবেন, পিতা মাজা পুত্র কৰা৷ আত্মীয় বস্তু প্রভৃতি किलाकीम अध्यानम्बद्धीर मक्न वर्षक्रिय পরম্পরের এটি সাধ্য ঘটো ক্টেরা ভ ছা তাহাকে পালন নির্দ্ধে শক্ষা দিনেন , সাধা-রণের বিদ্যা ^{শিহা}, লো, টি নির্দিশী বিভিন্ন বিদ্যার উন্নতি ^{ন্ধেন} এই ভ্রমন স্থান ভ্রমন विषात्र **एक्ट** ^{१० वर्ष} वावका व्यक्टिव ^{रू.चा}र्वका या अनुविधा-জনক তাহার সংগেদারী বা উল্পলের জন। मकलाक छेदमाइ ७ श । मर्ग लिखन । गाहात যাহার সাহিত মনুষ্যোগ কোন সম্পর্ক আছে: करममूकांस विवास भनुत्तात याहा भम्मिक क छा। शिया मिटदम । िकी সমুবায় পূৰিবার আতি মনুষোর চুঠা আকুই: করিবেন, সকলের এটি ছাইছি রাগ হার্ত্তি ক্লিনেন , ম্লাডে সম্বাচ श्रुधिवीत गण्न १%, णहाटक श्रुधिवीत मह-माप्त लाक माठू मिश्राई आहे हहेगा এক পরিবারেও ন্যার ফিলিছ ধর, মনুষ্টের कामांबरे डेलरमन क्षमान विविद्यन।

ता भिकारण अक्यां अधिनीय मृष्टतत राज्य भरम मर्क्त मन्गा अक छात अन्य क क्य अप मधुमारा भनुषा अक भारतात्रण वाक्तित नाम भाराभारत क्रिक्यों अभारत क्य छाहारे श्रद्धक धर्मानिका: य निक्क रेकारणे छेणायांनी निकारमन, किनिके प्रधाने धर्मानिकक।

ञाविशादतत्र छे भटन अ।

৩১৮ গংখাত প'রকার ১৪৮ পৃঠার পর। ল ক্রিয়ন জনত ত্রীয়া রাজ গাক্সিনে তা

ঈশরীয় নিয়ম সকল পালন করিবে। ঘাহাতে সর্বোক্তম কল প্রাপ্তি হয় তাহারই

সাধনা করিবে। সর্বদা নাায় পথে থাকিবে।

বাহা হোমার কর্ত্তব্য, তাহা কবিতে অন্তর্বি-লাণ কবিবে না।

কালারো নিন্দা করিবে ন নি কালারো শরীরগত ে নি

कार्गादता एक जन्मन इन्हें क मूट व्यक्ति व मा । कारमात अर

লেকের সহিত , খোপকখন করিবে না।
বিবেচনা পূর্লক অর্থ বাল করিবে।
শক্রর নিকটবর্তী হইবে না।
ইক্রিয়বিকারপ্রস্থ ব্যক্তির নিকটে লালি বালির সংস্কা পরিস্থাবা লাইবে।
বিনম্ভ ব্যক্তির সহিত আলাপ করিবে।
বিজ্ঞ বাক্তির সংস্কা প্রান্থির চলিবে।
কু লালেল ভাগে করিবে।
বিখ্যা করিয়া কিছু বলিবে না।
বিবাদ-প্রিয় হইবে না।
শিদ্যানুবাগা ভুলবে।
শং হুইবে।
শং হুইবে।

শাহাতে ভার হয় এমন করিয়া কথা কহিবে না। পিতামাতাই প্রথম-প্রিক্তাত দেবতা। আপনার গৃহ ভিন্ন সুধে বাস করিবার আর

বিপ্রনার গৃহ ভিন্ন **সুখে বাস করিবার আর** শান নাই।

ভ্রেটার ধন ভূষেট অপসরণ করিবে। লক্ষ্যা প্রীলোকের উৎক্লেট অলক্ষার। যে আপনাকে আর সকলের দৃণার্হ ক্রিয়া

তুলে শে সমূলে বিনাশ পায়। যদিও দরিত হও কিন্তু সাধু আচরণ কর। নিনি ধার্নিক জিনি নর্থা আন্নার জান ও অভিজ্ঞতার উম্বন্ধি করিবেন।

ধন সশাদের নিমিক্ত চেকা করিবে, কিছ তচ্চন্য কাহারও সহিত বিবাদ করিবে না। ব্রীলোক আন্ধ-রক্ষার্থ বিশেষ মনোযোগ প্রদান করিবে।

িনতান্ত যনিষ্ঠ বন্ধুবর্সের নিকটেও কোন অশিষ্ঠ কথা বলিবে না।

দরিত্র ব্যক্তির সহিত্ত বন্ধৃতাবে কথা কহিবে।

যদি কেছ দোষানুসন্ধান করেন ছিনি সকল স্থানেই কিছু না কিছু শ্রণ পাইবেন। যদিও তুমি বড় লোক, তথাপি ভূমি দর্গের সহিত কথা বলিও না।

প্রতিহিংসা করা অংগক। ক্যা করাই প্রেষ্ঠ।

অৰ্থ অপেকা বিজ্ঞতার মূল্য অিক। নিন্দক বাক্তিন মূখ দাবানল স্থৰপ। পরিবারের মধ্যে প্রধান শোভা একতা। জ্যেষ্ঠ যাহা বলিবে কনিষ্ঠ জাহা অবজ্ঞ:

कड़िद्द मा।

ইন্দ্রির প্রবল হইলে সমুদার গুণ বিনষ্ট হয়। বাসনে ও বিবাদে দৈনাকশা উপস্থিত হয়। ধর্ম কার্যো পরিণত না হইলে ভাছার গৌরব নাই।

শास्त हरेटन, मान कतिटन अवर अहे कतिया मुची हरेटन।

আলেন্য অনেক দুংবের মূল। ঈশরের করুণা ভিন্ন কিছুরই উনতি হয় না। কঠিন পরিশ্রম হারা অঙ্গ লাভ ভাল, কুরু

ভিক্ষা করা কর্জব্য নহে। বন্ধুর নিকটেও কোন নীচ কথা বলিবে স্থা। নিস্পাপ ব্যক্তিই সুখে নিজা যায়। কার্যা আরভের পূর্বে যথাবিহিত বিবেচনা विश्व देवेशन गीन्छ। करत्रम ब्रूट्य ९ तरहे 'अन्न वालम, वि अः नश्टलातः। वाहा जामता अन्ति ६, यः जामताहे नृष्ठा महकाद्य जान्त्र ज्यारत कतितः। जाश्च जान्त्रत्वत क्र्योटम शतिनाम हतः। जानमा जात्मक लग्न जामत्रम करतः। यमन वोज्ञः काहा हरेटक कल ३ ज्याल १ होतः। मात्रवान् वाज्ञि काहात् ३ मण्डि । अर्थ करत्र मा।

যথাৰ্গ মহৎ বাজিব নাম চির-পূজা।

মিধা কথাও বেমন, হতা। ও চৌৰ্যাও ১৯৯প।
নীচ বাজি ছইতে কি সদাচরণ প্রস্থানা
করা যায়।

পাত্মীয়বর্গের সহিত বাবহারে সভাতাব নিয়দ

গ্রানই অবহেলা করা হয়।
সালোকের মৃত্ব প্রভাগ শোভাজনা
লোকের মৃত্ব প্রভাগ শোভাজনা
লোকা বীর হাহারটে সর্বাপেকা সুকা।
লাই প্রকার অনহ বস্তু হইতে দুব থাবি ও।
কালেই স্থাপের প্রশাস্ত পথ।
কাল বানে যেন ভোষার সুথের খণ্ডাও।
হয়।

ষে উপযুক্ত সময়ে বপন কৰে হ'' এছ উছিছ শঙ্গা হয়। ও প্রাচান বাজিক উপ স্থা আফ্রোলন্ড দিন

প্রাচীন ব্যক্তির উপ শশ আক্রাণ দর দিন ব প্রতিপালন করা কর্ত্বর । যে কশক্ষম ভাষার অভাব গাংক ন

সন্ত্ৰীক জীৱন যাপন করিবে এবং গংগত হঠবে।

मध्यादिक कथनरे दक्षना करत ना।

भिषेत्र वाषांत्र श्राहिक व्यथनत कहिए।

त्यवरे तका कतिएक शादन ना।

नयुगांत कश्रद नेपादत महिमा गान व

नेपतन्त्रान वाजीक धूर्य नाह।

त्य वाकि शाश कि काश कारन, तर् कारी।

विकास काश्रद कारन तरे महिला

বির প্রথম জ্ঞানী ব্যক্তি ক্রমে ক্রমে ইশরের
পূর্ণ হার নিকটবর্তী হর।
শমপরারণ জ্ঞানী ব্যক্তি উৎকৃষ্ট সুখ সজ্ঞোগ
করেন।
জ্ঞানী ব্যক্তি কথা কহিলা কাহাবে। ক্লোজোৎপাদন করেন না।
মার্থনাই কেবল খ্যনোব ভোষামোদ করে।
শক্ষান । ও সন্মান পাইবে।
শক্ষান । ও সন্মান পাইবে।
শক্ষান । ভাকেনাই ক্র্যান্সফা দিতে প্রভ্রম্ভ হলেন।

भक्करक ७ वक्षमा कतिरव मा ।

नृष्टन शुरुक।

५ । ह्यार म.

के ८७ के हैं के हैं। इंस्कृत विद्वेष १९५ के े प्रवाहरात ४ ०.०१ मा विकास १४ ० के हैं। स्वयु स्वर्गात ¹36 त 山里市中で カナ ' ત "स १९७ ४४ हे कविः '5 स. हेवा ख^{रा}ण कर्न ्रिक्स प्रदेश से अ ६ च द्वी। म म बहेका १४६ जिल्हा छाईक न्य नाद र मार्थ्य मिल ५ रिस्स र्तिमा १० म ११ मिना १ व हर्या ग्री : क्षेत्रिक्य धान है। १ स्थम द्विय कर्त्व ०० ११०। वह राष्ट्रका म ે થાંબ જુકા क्षिक धर्मिता, २५ ० । र.जार दा व भार मार्टका अधिवाद विकास भारत , लासमी, # የተፈ ላ ለፕ^ተናክብ ፤

मा मार्य क्षेत्र में द्वार के कम्क निर्मा कार्य मार्थ क्षेत्र कार्य कार

উপদেশ দেন। টেকচাদ ঠাকুর একণে পেই অভেদীর আদন গ্রহণ করিয়াছেন। তিনি বলেন হাহা কিছু "বাহ্য" ভাহাতে বথার্য ধর্মা নাই, বাহা "আগ্যাগ্রিক» ভাহাতেই ধর্মা লাভ হল। তিনি আগ্রার হুই ভাব বাতে করিয়াছেন, বন্ধ এবং ফুল। এই বন্ধ ও মুক্ত আগ্রার ভাষ ভিনি যে ক্লা বাংখা। করিয়াছেন, নিমে ভাহা

''अभि विक धवर मुक्ता रक्षक वहे मानावन 🖦ব। যে পর্যান্ত প্রাকৃতি অপবা বাফু বিষয়ের অধীন দে প্ৰাস্ত আছে। বল্ব। বন্ধ আহা व्यादिश्वर-- व्यदक्षणीन क्षेत्रमा त्यकाम मध्यपिक गिल्ल, लक्ष, ख्य व्यवसा हेटा प्रियत विश्विष्ठ स्थानक जाणांत कामन। वक् या जात वित्यक्ला अदिगिष्ठ-विद्याय विद्याध मछ--- विन्यय বিশেষ বিশাস—বিশেষ বিশেষ মঞ্জ জা:-वन विस्थि दिस्मद भाभ भूगा--विस्मान विस्मार खेशांत्रता—विद्याद शिलार शांवदले किंक चाँच.— বিলোধ বিশেষ মরক কার্নি-বিশেষ বিশেষ সন্তথ উত্তর – বিশেষ বিশেষ উত্তরে তাভি প্রায় গুলন ও अधिक के दिल्ल । सम्बद्धान था। के पूँक देश के भाव । एक । আর্ক্ত করা সো আনিও ক্ষাজনান, কাবল জংকাতে शार्थित काम भेषात अपन लिख रगः । १० कातरण आकृष्ठ कोशार्विक हेर्न जात . कंतर के व्यक्ति তৃত্যালোঃ এই করেশ জগতে অসমীয় মহাভার : যেখানে মাহিক খানার প্রাবলা দেখানে উষ্যু জ্ঞান অসমাই উচ্চ হউবে কিন্তু সাল্লিকভার প্রাচ্ছ ঈশর জনে হটলে পারে না। সান্ত্রিক । রক্ত ও लग ११८क ध्यष्ठ २८६ किन्नु आविविक ७ ग्रहा আৰম্ভিক ভাষ: নখন—কেবল আতারে পূর্ণ শান্তি क्रमणः डिक्कोलन करा डिविड ७ शांतिक हरेगाः पांदक। प्यांचा एक ना इंडेटल दादा उंडेटड বজন্ত্র হইছে পারে না নমুক্ত না চইলে ভারাভীজ ংইজে পারে না—ভাব:ভাঁড না হইলে ভ'ব:🚣 ণ ভ ও নিওণ ইবর জ্ঞান থাপ্ত ইটভে পারে না—ভারভাত ও নিখণ ঈশর জান না হইলে ভাঁহার প্রকৃত অভিপ্রায় ও জীবনের উদ্দেশ্য জান্ সমূল। আনুমামুকে হটুকে বাহু বা একুতি अथरा आविष्य छान केंब्सू औरव लिस इश नाः याद्या सूज इहेटल शाधित भूषे, छु३ण, भीर प्रभा भन्नन, अमनत वा भागतिकिक जा ए कारनी क्टेटच किछित **दश छ कममं : त्रभक्टिड** डेंकड क्लेश' अर्थाविन, स्कृत, आधाश्चिक वैश्वतिक বিজ্ঞান কেই বর্ণাছীত আনস্ত **থর্গের, থর্গ** का अ इस-प्यानिनारक है तमन करत ।"

ত্তিক প্রতি প্রথম এন্ড প্রণয়ন ভামধি জাত্মার উপত্তির প্রতি উগ্রার বিশেষ চুক্তি প্রকাশ কার্ড 144 \$[# "40 [4]#4" die | 4 #134 #44 \$[# जानापटकात्रके दशायक इदेश व शालगान करेशा हित्तमा अर्थामा त्व ाहा मत्व, छात्रा बना नाहेन जिंद ना। किन्छ अवादि जीहात आहा-पृष्टि कि व्यातक ,कारण रहेशाहा । जाता जाका प्रतिक माल्यु मार्थिक नक्षणाकां करिया पूर्व व्हेटळ काही-मिगरक थे व्यासमीत मृखित्य प्रस्था श्रेशाहर । यंदिक किए । कार्नानम् ७ द्यापानम् नेद्विवारान् कित्तन, व्यटकनोटल व्यटकती अ व्यद्धमन्द्रक केंद्रा-रम्य स्टेर्ड अन यसम् आकृष्टित स्माक हरेगा मो ए दिशाएकम । यर कि शिट्ड " यर्थ मान, विमा न'न 'डेयर मान,' छल नान, आधार मान, शहामर्भ मान, जबर ज मकन अल्लाका नक् छत्। ट्यार्ड সংলার পাপ যোচনের চেকার ধ্রেক গোরব ক্ষিত হট্যা ছিল,--লভেদীতে "বাত্" এক. বারেই পরিভাক্ত ইইয়াতে ৷

প্রথ খানির অন্যান্য ক্ষাংশ রঙরিখার মন্ত ত ভার তথ্য প্রথাশ ছইয়াছে। কিন্ত ইয়ার ভানা উল্লেখ প্রথা চারি খানি প্রস্থ অংশকা নিকৃষ্ট ইইয়াছে। স্থানে গ্রাহন গ্রাহকভাকে আরুণ ক্রিয়াই গ্রাহু ত বাকোর ভাবপ্রয়া অন্যান্ত্র করিছে হয়।

२। अपूर्वकातावाम।

हेश कि शानि लेलभाग । अञ्चादात नाम नाहे। जेलमानि जेलमा हेशाटक विश्व कार्य के स्थान क

কাৰিক প্ৰক্ৰান্তৰ কৰিব কৰিব কৰিবাকৈ কথাপি কাৰিকাৰ বিষয়ে কৰি বিজ্ঞানিক কৰিব কাছে কীকাৰ কৰিবে কৰা কিনি-বিজ্ঞাননেত পেৰে বিজ্ঞান্তৰ উত্তৰ কৰোৎপাই কৰিব এইই আনাৱ শেহ' পাৰত কৰিব কৰিব প্ৰকাশ এইই আনাৱ শেহ' পাৰত কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব নেৰা বাছ মা কিনি কৰি কৰিব কৰিব কৰিব কিনি প্ৰকাশ কাৰেব কেবেল, উত্তৰোত্তৰ প্ৰতিক্ৰ প্ৰকাশ কৰিব কৰিব কৰিব কৰা কাৰ্যাণ ও প্ৰকাশ প্ৰকাশৰৰ কৰোপিকপ্ৰেৱ স্থান-সন্তিবেশ ক্ৰিবাৰ বিব্য নিয়মাধীন ক্ৰেন গ্ৰাৱ তিনি উচাও খ্ৰাপ ৱাথিবেন যে অসক্ষ্যিতা প্ৰীণ্ণ সাহিত্য-সমাক চইতে ভুৱে থাকিলেই সক্ষয়।

৩। চিকিৎসা সংগ্ৰহ।—২ য় ভাগ ১ ম সংখ্যা।

ইহাতে প্রতিগং হান বিষয়ক আয় কেনিব মত, বেদনা কতে জন্তপতি নাশ। তলকার মন বাল ছফুবোল প্রভৃতি কতকথনি পীজার নেশীয় চিতিখনায় ব্যুক্ত, সায়ুকেনীয় কলকথনি ইছার ক্ষিত্র হোলা এবং হাসপ্তেলে আনীত কভক্তবি রোগীর রোগন্দক্ষ লিখিত ইইয়াতে।

PRAYER

It imposes by a Hindard halst for Miss F. P. Calife on present of her collection of There is prayers using the to the thorought.

O Thou the Alone who dwellest in the awful depths of thy inaccessible imposty! Leaving the cares and distractions of the world behind me, I now approach thee alone. O Thou Allcahel with a calm, art art then to be worshipped; mak now my heart

calm. Place me now above the storms of passion and the waves of emotion. Shed the beam of thy most hely peace over my mind. Let not the fever of worldly ambition oppress me now that I come to worship thee in the inner temple of the heart.

Mysterious and Incomprehensible Being! The mind cannot fathout thee. Speech with the mind desist in their attempt to grasp thy infinite nature. This we know that we know thee not. They, who say they have thee know thee not.

and they who say they do not know thee, know thee not nor is it that I know thee not nor is it that I know thee. This only I know, O God! that then are Truth, Unity. Infinity, Intelligence Goodness, Peace and Pelicity itself.

O Then the Light of lights that dwelfest in light ineffable? Lead me forth from darkness into light. Dispet the darkness of ignorance and worldly illusion from may mind. Hereal thy blessed author to ma, O Thou Revealer of divine I avledge; It is then that saudest them thoughts to men. Engage to a changlets that lead to thee and the life eternal

O Gody ben only aritume, then art the truth of truth. The world exists through thee. To nothing is it reduced if then withdraw thyself from it. The world is not real, thou only art real, Then who art Reality itself! Lead me forth from the unreal to the real. Let me not be deserved by the image of life. Centre all my hopes and aspirations in the anti in time only

Thou who art Life and Immortality a off's Lend me forth from double to immortality. It is doubt not to know theo and love ther. arrounded me w. on all side beat Janh - by forgetfulness Refuse her from the bondage . the Quicken me with thy life, af death. O LT, or like Lite Eternal without Make me begin life thee is no life. propos here. Infuse life into me now to be continued and beightened beyond conception in the life to come.

Thou who art the All free! Free me from ignorance, projudice and the knots of worldly illusion that bind my soul. Free me from the world. Doing in the world, let me live free from it. Free me from the threldom of vice and the me thy servant now and for ever. It

is freedom to be under thee and with thee and it is slavery to be free of, and far from, thee.

of Thou the Alone; Man's concern is with thee alone and with others for thee only. Man is born alone, alone doth he die, alone doth he bear reward and punishment. For succour in the next world, father and mother and dear relative remain not, thou only remainest. Thou art my best goal, thou art my best wealth, thou art my best world to five in, thou art my best felicity. Of Thou my Portion for eternity! Make me wholly thing, I am thine alone, Of Thou who art the Alone!

O Thou the Alone who art the soul of the soul, the being nearer and dearer to me than I am to myself! When now I witness thee within thy temple, the soul, I am transported with felicity inexpressible. I lose sight of the world, I lose my individual existence, I am absorbed by thee. I now feel that Thou O Infinite Spirit and myself, the finite spirit are one. It is now I feel that Thou alone existest, O Thou the Alone.

নূতন বিজেয় পুস্তক ।

মূত বারু কাশীখন মিজের

्राप्रका आसानसम्बद्धः स्वत्रसम्बद्धाः श्रीकृष्टसम्बद्धाः स्वीत्रकादाः

,বিভ্রাপন।

আগামী ৫ ভাত রবিবার প্রাতে ও ঘটিকার সময়ে মালিক ব্রাক্ষসমান হইবেক

আছি ব্ৰাক্ষণ কৰে কতক্ৰী পুরাকন ইংরাজী ও বাদলা অক্স ব্যাহ কতক্ত্ৰী কেন ও ক্মে মুলক মুলো বিজ্ঞ হইবে। বিনি কা করিকে অভিনাধ করেন, নদালে আনিলে পাইতে পারিবেন।

काक्ष्मास !

देकाके कार्काव्यम अनाक भाषा । कांकि जोकाममाजा

			julus alu		
ert ar	19 2136	Section (1)			£3•
	100		A STATE	421	in/se
44.4			1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		18.0
तम् वि		elle.		> 3 h @	1
राम्	, '.	444	mana G	9 🕈 🖤	4.50
					and the same
হ ত	1.5	1. 4.4 0.1 × 4.3 × 1.	444	8.00	
, X	and the State of t	Page in	শায় ্		
314	-	***	****	5421	w/5.
	-	नहिका	***		Je.
	কলিয়			281	
131			. 47-	. 002	
51 50				ર ર	
		*14	e 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		e eprincial in
সম্	\$	***		F # F	(;0,
			বার		
715	ৰ সম জে			3 3 8 1	150
		ী পত্রিকা		333	
-	द्यादिन दिक्तिय	1 . (1 21 - 6.)	• • •	8 9	
				2 88	
ग्रा		4++			4 50
গ্ৰি		**\	***		
সম্	8			9 1 0	176.
			ांम सार्वि		•
मृं उ	রাম্প	ल भएक। थ	रेशार्यः	त जांग 8	5
2	क व	াতিরিজ্ঞ ন	ty sta	T	. (T
	75	कोमाथ (प	্য ল		. 1 4
		क्मल पूर्थ			•
•		मखनाथ है।			> 0
	4 28.29	विद्याती है	संस्था	120	a
	" #30 **	াথ মিত্ৰ ও	अटकार्च	दर्श ल	¢
بنا	- (E)+	प्रकारका	2774 (4)	territor	æ .
4	· ক	Late 1 o to al		(4,13, 114	9
ł	< देवः	र्धनाथ त्म	er e	* ***	3
1	и <u>В</u>	ानहत्त्र पूर	द्शासा	· · ·	-
1	a fai	गरीलाम ए	গ্ৰাহাৰ নি	•••	*
1		निवस नि	্মণ	*I#	
133	# 1	হৈতীচনুল :	· FIRST	PARTY SERVICE COMPANY	10 per 55"
•	• • •	it a light	·		•
1	4	रनेगाली क	X	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	3
İ	#	कुल्लान म		•••	
*	4	बदुमांथ प्र			
2	4	क्राक्रमात्रात	रन सम	• 1 take 1	3
7	66	क्षरगांभा	भ रमन	***	5 , who
	"	बीलमां दव	মিতা	***	3
	4	कानकीमा		रिशासाम्बर्गा	34
. 6	*	खेबाहर ।	VINT	with the second	
न	*	কালীকিছ		June 1	
7 7		मानाधारम		464 4	2 14/34
				-	the state of the s
F	সম্বি	7	**	علام سو	3 4 2 14 30
5	1			া লোভির	सन्। व राष्ट्रम

खन्यम् जिस कार्निश दिशाहन । जीशाह खन्यम् जिस्स कार्निश कि कार्निश कार्निश कार्निश कि नियान खन्य कि नियान खन्य कि कार्निश के हिंदा कार्निश कार्न

হে মকলম্ম কাগদীধর। তুমি সর্বাগা আমারদিগোর হাদরে প্রকাশিত থাকিলা জ্বলংক পবিত্র করে, অসৎ প্ররুত্তি হই।ত প্রত্যারত করিয়া সহপথে প্রসূত্র করে। আমারদিগোর ইঞ্চাকে তোমার মঞ্জনমন্ত্রী ইক্ষান অধান করে, ভোমার প্রিথ কার্যা নাগান খামারদিগাকে নিয়ত নিযুক্ত করে। ভোগার নিকট এই মাতে প্রার্থনা।

ं ७ वक्तभवाविकीयः !

वर्षा ও अमार्थ-विमा।।

वर्षात महिए लगोर्श-विमात कि क्रा महस्र धाई श्राह्मात छोगाई खाल्माहिए इहेए छा कात्रम, धाई विषय महत्राहा छुट श्राहण्य कुनल्कात मुखे इहेग्रा थाएक। क्राहण्य पत्न कार्त्रम, शमार्थ विमा श्रामत स्थानक मक वािंग्यिक विमात सामानामक स्थान महस्रा वािश्य विमात सामानामक स्थान महस्रा विमात खानक विस्तान प्रक्रिक खाला विमात खानक विस्तान प्रक्रिक खाला विमात खानक मुख्य निमात हो। विमात कालक मुख्य निमात हो। विमात कालक मुख्य निमात हो। विमात कालक स्थानक कालक हो।

विलिश छिद्धि हम, छांशहा काटमम मः ए मेडा वर्षात महिङ शमार्थ-दिमाहि कि कर् घिनिछेडत नकुछ।। পকাছরে, 🗫 🚟 यदन कटलन, आस्त्रकृषि श्रांता त्य त्रांत र क्ष প্ৰাপ্ত হ'ওয়া বায়, তাহা কুছ ্ৰাচিক দেৱন হ' ्यात नाम खंडीद खानाही Frid Wind र्शांक अधिक क्रिका । पाई। लाइन होता मा १ (घर १) 一個議員者以外 多种流生力等 医心脏性毒 विवस्क विकास संस्तृत के लेकर कर स्थापन ছওরা বাব, ভাজাই গটেয়র গামেডুনি স্ক্রিক भेश इ.अ. केंद्रक श्राम तिला बाजा य[धः भन्ने विकास । अ (१९) विकास स्ट्रेस्ट, स्ट्राई १८कंत अङ्गार छलान्। १ हेर्ना १७ विद्युजना व इत्स मा १४, अञ्चल शामार्थ-तिमा। ६२ वर्ष निकार गरण जांच व्याच्याम । अनेबदाव मिन्छ अभादा (१८४४) थालादा **डान्म** भन्द চিত্ত জনসার ব্যক্তির অবস্থান করে, करानि साराह अलामात साम शक्ष रह मा। काश दन शक शमार्थ-विमहाक शृथक् রাখিয়া মুকে মল নহকে কুসংক্ষারের মুলত दिन कडिश पूजिरटएका: इस्टब शकु भर्मारक ক্দর হইতে বিভিন্ন ভবিদা অসংখ্য করিয়া কেলিছেছেন। অভত্র কিনিয়ে পদার্থ-বিদানে শক্তিও অধিকার নিকণৰ করা অসমত ও জনাবশাক নতে !

अथग।—भारत श्रिक अस्मूर्व विश्वात्र डेव्यापन श्रमार्थ-विष्या आलाहाहनात अवार्थ कल। त्रजा त्य क्रकांत्र अश्रतिनर्जनीय अ अनुस्त्रक्षनीय, श्रमार्थ-विष्याः डेटेक्टस्यत् क्रेटे भिका क्षमान करत—ज्ञाणिहि, स्नक्ष, राज-विज्ञान, त्यां डिस्, त्रमायन अभातीत्र स्थान सालाहना इन्द्री मरणात स्थानिवर्जनीया अ स्मूस्त्रक्षनीया विश्वात पृष् क्षडीं छिट्यम् ह्य क्षवर स्थानीय निष्ठा निष्ठत्यत्र क्षि स्थ क्ष्म स्थान विश्वात हरेल, मनुस्थात धर्म

কার্যা কি পারত্রিক ধর্ম কার্য্য সমুদায়ই অনায়াদে নিজা শশাস হইতে পারে ৷ অভ-এব সকল আর্যো নিপুণতা উপার্জন করিয়া मकल पर्यंग कहारे आभात्रिपट्रांत कर्खवा। ' ধ্যাত্ শৰৈঃ ৰঞ্চিনুয়াৎ বল্মীক মিব পু-ব্রিকাং। পরলোকসহাযার্থৎ সর্বভূতানাপী-ভবন্: " পুভিকেরা অতি কৃত্র কীট ইংয়াও অংশে খণে যেমন অতি আশ্চর্যা রুং ব-गोक निर्मान करत एमें बंश श्रहत्नारक সহায়ের নিমিতে কে।ব 🗻 ীকে পীছে। না দিয়া প্রতি দিন জয়ে জমে ধর্ম সঞ্চয় করি-ट्ट शंक्टिदक। "क्याइन्द्रंश महागार्थः निकार मिक्किन्यार महेनः। ४८%। हि महाराम তমস্তরতি ছুন্তরং। " আছ এব আগেনার সহা-शार्थ निका स्तरम करम भग्न मक्ष्य कतिरवक। **জীব গর্মের সহায়তায় ছন্তর সংসার অন্ধ**কার इडेट्ड 🕏 छोतं क्या। धर्माचे धार्मिट्स्य दल भूक्ष्यन्तिश्वः (श्रीकृषः, नोदीश्क्षातः अनकातः । वर्षत्रे सूर्य लाएका छेशांत्र, आध्यमारमत धानत. उकानक श्राधित (हजू। मनुषा ক্রেন ধর্মের সংগ্রহায় ছুস্তর ভিমির রাশি হুইছে উত্তাৰ্ট্যা প্রব্রেক্সর স্থিত সমাগত केट्स्स ३

ঘালদা ^ রিভাগে পুর্বক কর্ত্তব্য সার্যো छेमामनील इरेंद्रवर । উদ্যোগी वाञ्चि कथन 'মবসর দ্যেন হা। উদ্ধোগের **গুণে অতি** গুরুতর কার্যাও জন্ম 🔊 পল হইতে পারে, কিন্তু চিত্রকারিতা লৈনে অতি সদজ কর্মাও সম্পন্ন হওলা ভার হইয়া উঠে। নির্মানুগত অবশ্য কর্ত্তব্য কার্য্য করিছেই ক্টবে, ইল মনে করিয়া সাধ্যম**্ভে ব্য** क्तिरदक, डाहाटड कमा कला कवित्रा होन হরণ করা বিধের মতে। যত্ন করিয়াও যদি সভাল না হয় ভাহাতে । লোধ নাই। क्षाः गडन्भक्ता (बार्ह्स आर्थ्स आवर्ध

किस निभूगण पानाम इरेटन कि जेकि थाएशा जबकि वर भूगमन त्य ना कि कर में पर मन्दा बनाधाएक द्वान सके काम कारत गन्न कतिगां के पनि शाहाटक कुक्की से सी हम, डवारि जिन स्कर्ण भूग लाख करान रेशेटड यामात मरमञ्जूषा मार्ड मार्ड सम्बन মনুবোর অন্তরের ভাব প্রতাক্ষ দেখি**তে**ছেন। विनि यादादक हम मिकि अमान कतिहादिन, तम তाहा व्यक्त भटि निरम्भाग करत, हेर्डि नेवात ্তিপ্ৰায়। মনুদোর স্বভাব অপূর্ণ, অতএব দে কোন ধর্ম কার্য্যের সমুদার সম্পন্<u>ন</u> করিছে ন পারিলেও ভবিষয়ে ভাষার আক্পট যুদ্ধ লেখিলেই ঈশার ভাষাকে হাজনিত শুভ্ 🚌 धर्मान करत्रन :

क्षितिम प्रकार भनः मरस्याग कतात নাম এখাদ রাহিতা। যে কোন কার্যা করিছে অভিনিবিষ্ট চিত্তে—মনঃ সংযোগ पूर्वक उरमाधान श्रद्ध इ. इ.स. व्यावमाक । যদি লক্ষ্যের প্রতি প্রণিধান না থাকে, ভাচা হইলে যেমন নিফিপ্ত শর বার্থ হয়, হচ্চপ कर्डवा कार्या श्राविधान मा शाकित्व छाहा क्थनहे मुहाक़ कारण मण्यम् हम् ना, रत्र क्लान जनम्ब असारशत नाम दाई हहे। गाउँ। धरे निभएड व्यथाच याग बाता भा न्यान विषया डाक्सरमं छेक इहें 🚉 " षा अगरक स तकताः " आयोग शृंगा ५ हेशा জীবান্ধা ৰূপ শর দারা ব্রহ্মৰূপ লক্ষকে বিশ্ব করিবেক। অভএব অনামনক্তা পরিতা।গ পূৰ্বক অভিনিবিষ্ট চিতে লক্ষ্ সাধনে প্রবৃত্ত হইবে।

जैसबरक नकल कार्यात्र हुल जानिताः অংকার পরিত্যাগ পূর্বক বিন্দ্রী হইবেক। দ্বরের অভ্যতনারে বা তাঁহার আভার ৰাকীত আমরা কোন কর্ম করিতে সমর্থ ছই नी। भाषता ए कान कार्य कति वा बाह्य किंदू मानदेश काशना कति, सामाविक्रके कारत जारात चन्नुत केरत स्टेंबात शुर्ख

क्रम्माह कि का निया हरिता है के विश्वान अवस्ति कि का का नियान अवस्ति का नियान अवस्ति का नियान अवस्ति का का नियान का

হে মঞ্চলমর জগদীশর। তুমি সর্বদ।
আগারদিগের হৃদয়ে প্রকাশিত থাকিন।
হাদয়ে পবিত্র কর, অদৎ প্ররুত কর্তে
প্রত্যারত করিয়া দংপথে প্ররুত কর।
আগারদিগের ইচ্ছাকে ভামার মধ্যমন্ত্রী
ইচ্ছাদ অগীন কর, তোমার প্রিয় তার্য।
বাগনে নামারদিগকে নিয়ত নিযুক্ত কর,
ভামার নিকট এই মাত প্রথন।।

े ७ **अकरम**राविकीयः।

थर्मा ७ अमार्थ-विमा।

বর্ণের সহিত পদার্থ-বিদ্যার বি রূপ সম্বল্ন এই প্রস্তাবে তাহাই আলে, িত হুইতেছে, কারণ, এই বিষয়ে স্চরাচ্চ পুই প্রকার কুনংকার দৃষ্ট হুইয়া থাতে। কেই কেই মনে করেন, পদার্থ নিদা গলের ভ্যানক শক্ত আধারিতে তিক বিজ্ঞানের সহিত আধারিক বিদ্যার নাশানাশক কার সম্বন্ধ। গাই বস্তু বিষয়ের প্রকার কি কিলা যে দিশা প্রস্তুর বাছার কি কিলা যে দিশা প্রস্তুর বাছার কি কিলা যে দিশা প্রস্তুর বাছার কি কিলা বিদ্যার সম্বন্ধ নাই। কি কিলা ব্যানিক বিদ্যার সম্বন্ধ নাই।

বলিয়া উদ্বিধ হন, তাঁহারা জানেন না 🐠 শতা ধর্মের সভিত পদার্থ-বিদ্যাস কি 🚁 ঘনিষ্ঠচর বন্ধভা। পকান্তবে, ক্লেম্বর मरन करहन, अन्तर्भृष्टि षाता रग क्या अनु প্রাপ্ত হওয়া যার, তাহা কুক্ত ক্টিক দ্বেল 🞸 ক্ষের নায়ে অতীব অংশকী ু বাচনে উপৰ ধৰ্মকে প্ৰতিষ্ঠিত ক্ৰিচেন্ত ত पार्टीकोक्त होत्त सः १५ १०० क्रिके विषयुक्त सिकार्स हमेर्डिंग रहे मक्केस लक्ष সভয়া **যা**য়, ভাল্ট পরার ও দুনভূমি রক্ষিত र्गेश इंख्या विक्रिट, शतार्थ-दिना। बाह्य বালা পরীক্ষিত ও পে: মিত হইবে, ভাহাই ব্রমার অক্লত উপজোম : কটালতে বিবেচমা करान के १८ क्षेक्ष भवार्थ-विकास सम्ब নিকান বারে, কার প্রাক্স**রাম ও ঈশারের** শ্রনিট এক ২ জে বের <mark>অভাবে ভাতৃশা ধর্ম্</mark> विद्राणाल क्ष्रापत काटकाइक खन्**कान कर**हे, কদাতি ভাগৰ খুভাভার স্থান হাথ হয় না। धर्वे कर्ष्य कर राष्ट्र रामार्थ-विमानिक सूधक् রাখিয়া সুকোমল নশকে কুসংভারের **সুলভ** বলি করিয়া জুলিবেছেন; ইতৰ গড়া ধর্মকে শ্দয় হউতে বিভিন্ন করিয়া অসার্থক করিয়া মেলিছেছেন: অভএব ধর্ম বিষয়ে পদার্থ-গিদার শক্তিও অধিকার নিক্পণ করা अनम्ह उ व्यादमाक नाट!

अपग ।— नरहात अहि मन्तृ नियान

डेक्शापन शमार्थ-विना। यारमाहनात अवार्थ

कल। महा य এकवारत अश्रतिवर्डनीय ७

अनुस्त्रकारीय, शमार्थ-विना। उरेक्टश्यरत अहे

भिका अमान करत—आपिहि, अह, यद्धविज्ञान, क्यांक्यि, तमायन ७ मातीत स्ति

यारमाहना असा मरहात अश्रतिवर्जनीयहा ७

अनुस्त्रकारीयहा वियरस पृष् अहीहि उर्शम

हम् अवर अर्थकीय निष्ठा नियरम्त अश्रि

आधाषिक वल लाज करत, शर्मार्च-विशाब चारमाहनारक काश थाल रखना बाहा। गाहाता दहदल कृतिका, कला, देकिशन, भू-রাণ ও রাজনীতি ছইতে শিক্ষা লাভ করেন, उँ, इरिम्त घन धांत्रहे अहे कल विचारनत দিকে নত হইয়া পড়ে যে, সভা ধর্ম ও নীতি अकृष्टि अकृत दिषदंशत्रहे পतिवर्त्तन हरेटक পারে, অতএব এ সকলের প্রতি নির্ভর করা যার না। এই জনা অপত্নীয় নিতা নিয়-মের অস্থিতে বিশাস করিতে চাঁহাদের মনের जावार करता, मा अबेर दागस वर्ष निवय त्रकरलात हिस्तानरमा छातुन गरका ह स्त्र मा। উাহাদের যে ধর্ম, তাহা অব্যবস্থিত মতের উপর অথবা দেশ কাল ও অবস্থার উপর এতিটিত, সুতরাং সর্বদাই শিথিল। সভার পরিবর্ত্তন নাই; ঈশতের নিয়ম সকল নিতা, কেহ্ই তাহার অনাধা করিতে পারে না; এই ৰূপ দৃষ্ প্ৰভাষ বাশিৱেকে মনুষা প্ৰকৃত ধৰ্ম-বল লাভ করিতে পারে म। পদার্থ-বিদ্যা এই विषय भनुष्यात याथके **चानुकृता करत**े. लनार्थ-विष्णा भरकात स्त्रोन्नर्या ও नित्रस्पत व्यत्काता धामर्गन कतिहा मनक नर्गत অনুবক্ত ও নিয়মের খশীভূত হইতে দৃঢ়-धरिष्ठ करत् ।

বিহার।—পদার্থ-বিদ্যা নিঠুব কপে
সন্দার কুসংখার উল্লেলন করে। যেমন
হার্য্যাদর হইলে দুশা বস্তু শ্বরপতঃ প্রকাশ
পার, নেইরপ পদার্থ-বিদ্যা প্রভাবে সম্দার
পদার্থ ঘটনার প্রকৃত দর্ধ প্রকটিত হইতে
থাকে; পৌরলিকতা, দলৌকিক কিন্যার
তাণ ও মমূলক আশহানকল পদার্যকরে;
শাবীন চিন্তা বিকশিত হন; ক্রীণ রাপ্রার্থ
হিকতা লক্ষ্য পায়; উদার্থ্য শৃত্র হর্ম
উঠে; এবং বিশ ক্ষাত্রের বাল্যে প্রকৃতি
একতানতা লক্ষিত হইতে থাকে। এই স্কৃতি
বিষয়ই ধর্মের পথে উপাদের সহল

THE SERVICE STREET, SERVICE STREET TOOT STOP STORES TO THE TOTAL कात्र. इतका, भविषाय, तत्राध्यस क अध्यक्तिक व्यमर्गन कतिए शास्त्र : श्रुवती चारका इरखत्र पूर्वा बिरवत प्रकृतित्य कृति। ভূরি এই ও উপএই সকল প্রকাশিক করে, এবং এইকপ শত শত নৌর জাগত আহিছার कतिर्देश थारक, -- यथेन डिस्न बारमान विकिन वाण ७ एकानूरका कोना असूमात्र (मधा-हेशा (मश:-- यथन व्यव्योकन-मृना कीछे। व পুঞ্জে জল স্থল ৰায়ু গরিপূর্ণ বলিয়া ব্যক্ত করে; তথন ঈশরের জগৎ কি অপরি-মের বলিয়া বোধ হয় এবং যে পূর্ণ শক্তি एरेट हेश छेदश्रम हरेगाट्य, काहा धारून করিবার নিমিত্ত কম্পনা শক্তি কেমন বি-**अ्ठ हरेटठ थादक ७ हेगात निव्नेकारक दक्यन** নবতর বেশে চিত্রিত করে। তথাপি সেই प्रमुख (मय प्रायादम्ब क्ष्म कण्णमादक अ-जिक्रम कतिबार विवासमान थाटकन वटछे, क्टिड एम्बारारे भागात्मत शान ७ शावना श्वीरशका जैयदित किविक्टत ग्रीविक इते: পূৰ্বাপেকা অধিকতর প্রানন্তা লাভ করে 44: अयागाण श्रेट अदशकाहर सुकि लाख करता हैरात महन नरन नामारमत वालदकाठिक खम नकल आर्क्स इहेगा यात्र : भागात्मत्र मन भारतकात्रच मन्त्र माछ करत क्षेत्र भागादम्ब भूमें देशोनन नीमात्र भादत्रास्य कत्रिक शास्त्र ।

वहें बारत वर्ष जागांव-विकास हरेएक जी-बीमी, यता, मामक्षमा, विकार, केरकके द्यानी, परंतु के विकारतीयका जाता कर किंद्र होंचे यक विकार विकास कर्मांत की-बेक्सन भाषात कर्मच विकास कर्मचार की-बेक्सन भाषात कर्मच विकास कर्मचार विकार होंचे नाएड की क्रिकेट क्षेत्र कर्मचार कर विकार होंचे क्षेत्र करेंचे क्षेत्र कर्मच क्षेत्र कर

बादका समाम नाटनाइना क्या मिछान् स्वता है। इस व देना के के हैं के पर सक ires, wie irie interten nagen महिका के क्वांश कर कारका कार्या अ नियम अवशंक एक्या चातः किन कर्णाल आशाश्चिक कार्बा ७ नियम कानिट शहा राक्ष मा । बश्यकरण परे माज विनालके श-गाल हहेरदे हैं। अमार्च-दिमा धर्मदक अदि मान करता किंद्र कमाशि खान मान कतिएड शादत मा-भर्मात यार्थके सामुकृता कतिएड পারে, ক্তি খর্ম কি ভাষা শিকা দিতে शाद्व ना । याँशांता क्वतन भगार्थ-विमा চইতে শিক্ষা লাভ করেন, তাঁহারা জড় রাজ্য % व्यवाचि ब्राह्म करें छेल्टात " नेश्वरतत भारता या काम् अश्राम क्षामानुमा ७ काम् অংশে বৈষাদৃণ্য ভাষার অনুসন্ধান করিতে भगर्थ इस ना : अजुाकः व्यवाचा ताकारक ७ कट्ड्र मात्र वश्र ७ मक्ल विषर्शहे कार्या কারণ শৃষ্পলে অনুস্থাত বলিয়া বিশাদ করি-**८७ यान । याज हेत्यिय बादा अ**लाक हम अ हेल्डि अविक भरीका बाह्रा मध्यान हरा, ভাহারই উপত্ন ভাঁহাদের দুঢ় প্রভীতি জন্মে: षाधीस्मित्र विषयं नक्त डीश्राटमत वृक्तिट शासात नाम अनिव्यान इट्ट शाटक। क्तिन **करे भूगांक नदर, ज**नाज कनटहरू শব্দির সংশ্র ও পরিণামে খাবিখাসও डेब्श्व स्टेंड्ड शास्त्र

পরিহার হরা উচিত। উত্য জগৎই স্থারের
নির্দিতে, সকল সভাই উচিহাতে একতান
হইরা আতে। আরুদু ক্তিতে যে সকল সভা
প্রাপ্ত হওয়া মায় এবং ক্রারা ধর্মের আন্ধা
ও প্রাণ নির্দ্দিত হইয় খান্যে এবং বাহ্য বস্তু
বিষয়ক আলোচনাতে লোর পোষণ ও
প্রসাধন হয়। পর্যায়া রুল, আয়া শিষা,
সমুদায় জগৎ আন্তাভ শাস্ত এবং ধর্ম এক
যাত্র শিক্ষণীয়।

ব্রাক পরিবার।

याँहोता बालालामक डीटाएक मन्हि वक्षी जाम शहनात। वह লোকগণ যে একত্তে বসতি ক্রিভিছেন, **छात्रा मरहः भू**निनीत **जिम जिम** अस्तरण डीशास्त्र निवास, इहाड शतास्थरतत निवासे তীহার। যথে।চিত কলে প্রিচিত ও নংক। বিশ্ব তথাপি উচ্চান্ত্রাই কল কালিবার চ প্রকৃত আহে উল্লেখ্যর এক গ্রুত ভাষার भृषितिहरू वम्, अक अन्। २०४ छेटम्हरून कार्ना जनर PRINCIPALS. भताभाव षाज्या जाजू महस्र। धूर्व धूर्व ত্রন্ধনিষ্ঠ মহাত্মাদিগের উপাত্তিত জ্ঞান बाश देशक मार्शां के की होता अवदलहें नि র্বিবাদে উপতে'গ করিতেছেন, আপনারা সাবার হাহা হৃদ্ধি করিতেছেন,গুৱে এই পরি-বারের যে সকল ভবিষ্য বংশ্য তংখারা ইহার উত্তরাধিকার করিবে। এই জরুত্রিম সম্ভাব দশার ভাতৃ মগুলীর ঈশরই এক মাত্র পিতা ও পাতা: তিনিই ডাঁহাদের সর্ব বিষয়ের নিয়ন্তা । এক কর্ডার অধীন একটা সুরুহৎ পরিবার বেমন যথা সময়ে ভাল পানাদি वाश रहेशा शतिरशाविक रहा, तारे बरण करे পরিবারের পোন্দ হইতেছে। এই পরিবারস্থ লোকেরা পরস্পারের অভাব যত দুর জানিতে

পারিকেছেন, সেই এক কর্তার ইছাধীন ও নির্মাণীন হইয়া ভাঁহারা ভাহার নাচ-নার্থ কার্মনো বাকে। চেন্টা করিতেছেন। এই কণে এই প্রিবার চলিরা আসিতেছে, এই কপে এই বৃহৎ পারিবারিক কার্যা নির্বা-চিত্ত হইতেছে।

এই গরিবার ক্রমণা হৃদ্ধি হইতেছে।
আনদ্যান ক্রমরের আনদ্ধ ক্রমণা অধিক
সংখ্যক লোকে উপজোপ করিয়া ক্রতার্থ
হইতেছে। সকলেয়ই সেই এক কর্ত্তা—
স্মান্তিম পিছা এই প্রিকারের মধ্যে
জীবত রূপে বর্ত্তমান রলিয়াছেন, ভাঁহারই
অনুশাসনে ভাহা রূপ সপ্ত লাভে সম্প্রিভিত্ত

এই প্রাক্ষ পরিবার বংশানে ও তারার রিদ্ধ করা তার্কা থেল বিশেষ কার্টা। অন্য কোন ধর্ম সন্ত্রা আতু ভাব এমন শিক্ষা দিতে পারে নাংগানে আক্ষাবর্ম শিক্ষা দেন। আক্ষামর্ম এই শিক্ষা দেন যে যেনন সকলের পিল। এক ঈশার, তেমনি সকলে মনুষাই এক পরিবার-ছুক্তা আতা স্বন্ধ এই শিক্ষা দেন যে যেনন সকলের পিল। এক ঈশার, তেমনি সকলে মনুষাই এক পরিবার-ছুক্তা আতা স্বন্ধ এই শিক্ষা পরিবার-ছুক্তা আতা স্বন্ধ এই শিক্ষা পরিবার বাধা আক্ষাবন পরিবার হন্ত পরেন করিবার আশারে হন্ত প্রান্থ করিবার আশারে হন্ত প্রান্থ করিবার আশারে হন্ত প্রান্থ করিবার করিবার আশারে হন্ত প্রান্থ করিবার স্বান্ধ করিবার করিবার করিবার করিবার প্রান্থ করিবার করিবার করিবার প্রান্থ পরিবার করিবার হন্ত পরেন করিবার। তার প্রান্থ প্রান্থ বিশ্বিক বেন্টন করিবার।

পরন্ত এই পরিবার বন্ধান কার্যা একটা গুরুতর ব্যাপার। ইকা বলিতে যেমন সহজ.
ভাবিতে যেমন সুথকর, কার্য্যে তেমন সুসাধ্য
ও সুলত নহে। ধর্ম বিষয়ে মত তের একটা
বিশেষ শোচনীয় ঘটনা। সর্ব দেশে ও সর্ব
কালেই ভাকা ঘটিয়া আদিতেতে। যদি এক
ধর্মাবলিছিদিসের মধ্যে বিরোধের আর কোন

कातन ना शादक, अक गड़ दक्ष अवस्थ दमहे এক ধূর্মাবলয়িগাণ পরস্পারের নিক্ট চুইতে नर्व विषदत मृत्र इहेशा शर्एन । विक्रमान মতভেদ হাত্র এত দুর হওয়া ক্লাশ্চর্যোর विषय मटहा अर्थ मनूर्यात इत्या मन आन मञ्जात अधिकांत करत । छम् विवदम् अस्नात সহিত ক্ৰয়ের সমিলন হইলে তাহা ঘৎ-পরোনা**ন্তি সু**র্থের কারণ হয়। তেমন জারার মদি ভিদ্বিষয়ে কেছ কা**হারো** দোষ সংশায় करतन, छाहा रहेरल के मर्गिक ना कित सात বেনন গুণই ঐ সংশয়কারীকে ভাছার দিকে আকর্ষণ করিছে পারে নং। পৃথক ধর্মা-বলরী ছই বাজির মধ্যে অনা কোন একারে সন্থাৰ ভিশিলে, ধৰা নহজো যত মত নিভেম काशास्त्र रहेक, काशास्त्र व्यथना न। इंग्रेट পারে, কিন্তু একধন্মী বলিয়া যাঁচার সহিত হাদাের সম্পূর্ণ করিছে অএমর হই, তাঁচার পক্ষ ক্টাতে সেই সন্মিলনের কোন বাংঘাত ছটিলে বিদার্থ भरनायाथा छेशविष्ठ इग्न। ध्रेकना धमन সংঘটন হয় যে, কোন ব্যক্তির সহিত কেবল এক বর্ষাবলয়ন জনাই প্রথম স্থা স্থাপিত ব্য প্রে আহারই সম্পর্কে **আর পাঁচ** সন্তাৰ উৎপন্ন হয়, বিদ্ধ স্হিত সেই সকল বাজির সচিত সমান সভাব থাকে কেবল সেই প্রশ্য পরিচিত ধর্ম-বন্ধুর ধর্ম বিষয়ক মত তেদ নিবন্ধান তাঁহারই अहिड विष्ट्रणेय ल्यांक्नीय विस्ताप कलिएक थाटक।

जामणितंत गर्थात त् अक्षेत्र अकेता पण्टित मा कृता आभा करा गारेरक शास्त्र मा किन्दु जान्न मानुत्यात साङ्कार विकास रम क्षेत्र त्मिन त्मेन, काहा अधियान क्षित्र त्मितिल अकीक हरेरत त्य जामानितन स्टब्स मेठ विद्यान क्षेत्रत्मक, शतम्मद्वत क्षांक करन-स्मेर निवक्षन सोशाद्वा क्षेत्रस्थान कर्मक्ष

क्रविदांत देशेल क्षेत्रिय शांकिएक शांद्र ना ्यद**्ष् गन्य भट्या भटाख**त वा मेंच विद्याध अभितिहार्याः, क्लि तुबिए इहेरद रग, उरम-শত বা বিদেশ হ অপরাপর বন্ধবর্গ থাকিতে करल उडरमन्याती मम-पर्यादलही जाए। मिर्शत महिष्टे मण विरत्नांव स्ना विवाप छिथि इस (कन ? रेशांट के विवनमान वाकिमिरगंत ममस्मत चनिष्ठेणाई खाँदता প্রতিপদ হইতেছে—উহারা যে এক পরিবার. हेराहे स्रुठिक रहेरक्टए। मन्यानिधात घटशः বিবাদ উপস্থিত হুইবার যত কারণ অ'ছে. এক পরিবারস্থ ঝাক্তিদিগের মধ্যেই তাহার অধিকাং**শ কারণ বিদামান** থাকে: ব্রাহ্ম ণরিবারের মধ্যেও যে বকল বিবাদ দটিয়া খাকে, তাহাতে উহানা দেই রূপ এক প্রি-यात, देशहे विद्वास्था कहा कईवा ।

कर शिंद्रवादित घर्या वियोग स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान हिंद्रा है। अर्द्रार्लका शिंद्र मृद्धान कर्माण मृद्धान मृद्धान मृद्धान मृद्धान कर्माण मृद्धान क्रिक्त स्थान क्रिक्त क्रिक्

বাদ্ধর্ম চ্টতেই এই শোচনীয় ব্যাপা-ক্রে শাল্কার হৈইবে। যে প্রাক্থর্ম জাত্ ভাবের অধান উপাদেশ প্রধান করিয়াছেন, ক্রেডাক্রম্ম এফবিবরক সেয়েশিক্ষা প্রদান ক্রিডাক্রম্ম এফবিবরক সেয়েশিক্ষা প্রদান বার সংগঠন করিতেছেন, তিনি জ পতি-বারকে সকল প্রকার গ্রানি ক্ইতে মুক্ত করিবেন।

মনুযোর পরস্পরকৈ মের করিবার ও পরস্পরের সহিত সন্মিলির বর্ণর একটি বাভাবিক প্রান্ত আছে। কিন্তু জ্রান ও বর্মের ক্রটিডেই প্রকলবের মধ্যে বিরোধাননল প্রজালি হর্তীয় গ্রেছ। আক্রমর্ম সকল বিষয়ের গ্রাহার হার বিশ্বান ভিনার দার মনুযোর সম্পান্ত তর্ম মানাংসিত হুইবে, সমুদায় জালাভি বিদ্বিত হুইবে, সমুদায় বিরোধ শেব হুইবে এবং যাহার মাহা অধি-

थर्म वियतक अस्ता छत।

প্রশ্না - দ্বারের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর্ত্তব্য কিনাঃ প্রমেশ্বর আমারদিগকে পাপ হইতে মোচন জন্য আমাদের মঙ্গলের

১ ভিন্ন ভিন্ন স্থান হইছে অনেক ব্যক্তি আমাদি।
গাকে গর্মা বিষয়ে প্রাপ্ত জিডারা করিমনী পাঠান।
আমরা সকল সময়ে শুক্তিবির প্রবান উত্তর লিথিয়া পাঠাইডে পারি। না। কেই কেই তত্ত্বোধিনী
প্রিকাতে কেই সকল প্রয়ের উত্তর প্রকাশ করিতে
বলেন। তাহাও নকল সময়ে আমাদের স্ববিধা
হইয়া উঠেনা। সম্রাতি এই ক্রেক্টা প্রশের উত্তর
এই স্থাকে প্রাক্তি

জনা পণ্ড দেন । আহা ছইলে আমর। যদি নেই পাপ ভাগে করি ভাষা ছইলেই পর্যাপ্ত ছইল আর তাঁহার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করা জনাবশাক।

উত্তর ।—পাপ বোধ হইলে ত্রিমিন্ত অবশাই অনুতাপ করিতে হয়। সেই অনু-তাপের এক অনু স্থারের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা। পাপী বাজি মধন অনুতাপানলে দক্ষ প্রায় হইতে থাকে, তথন সেই মন্ত্রণার পরিহারার্থ সে স্থারের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করে। ক্ষমা প্রার্থনা করিলে তাহার পাপ ত্যাগ হয় ও তাহার মনে শালি সঞ্জানিত্র হইতে থাকে।

প্রশ্না । পাপের নিষিত্ত অনুতাপ করিলে পাপের প্রায়ন্চিত্ত হয়। কিন্তু পরে ধর্ম পথে বিচরণ করা, কিয়া কোন উত্তম কর্মা করা ঐ পাপের ক্ষতি পূরণ জনা হয় কি না

উত্তর ৷—পাপচেরণ আমাদের প্রকৃতির विक्रक कामा ও धुनामुक्षीन आभारमह यथार्थ একুতি সম্বত কার্য। যগন আমরা পাপা-চরণ করি তথন, আমরা আমানের প্রকৃতির विक्षक भएष शयन कति, भरत यथन अनू-তাপ করি, যথম পাপ ত্যাগ করি, তথম আম্রা প্রকৃতির পথে নিরিয়া আসিতে থাকি, ঘখন পুণাানুষ্ঠান করি তথন সেই পথে ক্রমাগত সঞ্জব করিতে থাকি। পাপ পুণোর এই ৰূপ ভাব। এই ৰূপে আমরা কোন প্রকৃতি-বিরুদ্ধ করুয়া করিয়া যে পাপা-চরণ করি, পুনরার ুসেই প্রকৃতির পথে দিরিয়া আদিলেই সেই পাপের ক্ষতি পুরণ হয়। কোন বিশেষ পাপের ক্ষতি পুরণ **জ্**য়া त्काम विक्तिय भूगामुकान कतित्व इत्रामा পাপের যে ক্ষতি ভাষা পা প ত্যাস করিলেই পরিপুরিত হয়, যেমন মদা পান ভারা শ্রী दत्र त्य कांच इत्र, काहा मनग शाम लाह कांग कतित्वरे शतिश्विक हरेता यात्र

्राच्या । चर्चा ४० **वस्त्रः, ८००** प्राप्तपत्त द्रारूण कि अभ्योजिकः

क्रिका । - काम्मीतकाः भूते पूर्व भाक कारमं भूषा नाडाटमंत्र वानाक आनुमात-रमत करमनात रचनक विकिश मुख्यम अवारि वाता मकिक करिता वर्ग और नाम अवस्म कतिशाद्यम । এवर (महे कर्ण भाग स्कारतात স্থানকে বিবিধ প্রকারে স্তর্গাময় করিয়া वर्गन करिशास्त्र । अरे समा अ दानमग्र 不知情報 華 學學學 人名西 AND MICKELL REPORTS WITH A SELECT 班的 學行者 重要于知识的 放大的 學行的連接 期間間一 THE MARK OF STREET STREET, STREET CH পাপের দণ্ড স্বৰূপ আত্মহানি ভোগ করে. তথন তাহার দকলই যন্ত্রাময় বোব হয়; यथेन तम भूत्वात कल खन्न । जाजाधनाम উপভোগ করে. যথম জাহান্ত চারি দিকে প্রফুলতার হিলোল প্রবাহিত ছইতে থাকে। मनुरवात এই छूटे अवदा छोड़ांत लटक नतक ও স্বৰ্গ স্থৰূপ।

প্রশান-পরলোক আছে কি মা তারা কোথার ১

उत्तर ।— এই পরলোক সারজে অনেক কথা আনেকে কিন্তানা করিয়া থাকেন মনুষা এই পরলোকের কথা এই কপ চিল কাল কিন্তানা করিয়া আবিতেকে। কিন্তু সে কল প্রশ্নের সমুলার উত্তর বির কম্ম ন যা বলিয়া পারশোকিক বিশ্বরে গে কিন্তু এ পর্যন্ত বির জানা নাম না, জালা ২০০ অবে ইং লৌকিক বিশ্বর সকল বিদ্যা কালা কলে জালা আহি অবং আহ্বো যাহা জাল নিকে ইন্তু করা যায়, ভাষা বিজ্ঞানালোকনা নায় আলা বা অবিক পরিমানে জালা রায় আলা বা অবিক পরিমানে জালা রাইকে পারে, পারলোকিক বিশ্বর ক্রেক্তিক ইন্তু মন্ত জানা যায় না প্রশোক জালা ক্রিয়াক জানা যায় না প্রশোক জালা ক্রিয়াক জানা যায় না প্রশোক জালা श्री वित्र वर अमन वाचा तर शनत्मारक मनन कन्नित्न कर जैना ति जाना नित्र का श्री प्रकार जोग किति का श्री कर काल जिल्ला कर्नित्व काल जिल्ला कर्नित्व काल जिल्ला कर्नित्व काल विवरत आमना कर भर्मान क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक वाच वाच क्रिक क्रिक वाच वाच क्रिक क्रिक वाच क्रिक क्रिक क्रिक वाच वाच क्रिक व्याप वाच क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक वाच क्रिक क्रिक वाच क्रिक वाच क्रिक वाच वाच क्रिक वाच क्रिक वाच क्रिक वाच वाच क्रिक वाच क

প্রকা -- এখানে এক জন প্রভান প্রধান শালী ও অনা এক জন নিচার দলিপ্রদশ শ্বাহীতেতে কেন ১

উত্তর।—ঘটনা বশতং সংসারে কেং
ননী, কেই দরিজ ইয়। তদ্বিল ভারার আর
দান দৈব কারণ নির্নীত ইয় না। যে গনী
সেও আপনার ধন রক্ষা করিকে নী পারিলে দরিজ ইইয়া পড়ে। যে দরিজ, দক্ষচার সহিত কার্য্য করিতে পারিলে এবং
ঘটনা অনুকুল ইইলে, সেও ধন সম্পদ লাতে
সমর্থ ইয়।

প্রমা । এই স্থিবীতে পৌরলিকভার সৃষ্টি কি প্রকারে হইল।

উত্তর ৷— মনুষ্যের আদিন সময়ে অন্তর্গন
ও অসভাবিত্ব লোক সকল অরণা মধ্যে অথি,
বাসু, বের প্রভৃতি যাহার কোন অধিকতর
নাজি দেকিত, তর বিস্তরাদি প্রযুক্ত তৎগন্দারের এক এক অধিকালী দেবতা কম্পনা
করিত। তর্কপারে সর্ব ভৃত্তের এক এক
মধিকালী সেবতা কম্পিত হইয়া পৌতলিচার সার কর্মাছে।

জীব উদ্ভিদাদির স্বত-উৎপত্তি বিষয়ক মত।

नम्य वि कीव ও উদ্ভिদের খত-উৎপত্তি विवरह ः एक अक्षि**ण व्हेतारह, देश्लख अ**कृति हम्मा • का प्रतिक कार्या विकासन आरमानान १६ करता । भाक भएनता लात सम्बं **बरे एर. भृ**षिती क মানল কাম ৰ ক্ষাৰে ভা মান্ত্ৰিমত্ব নিৰ্দিত জ্বাচিত্ৰ প্রদাবের রংসারানিক সংযোগ ধর্পে ৬২০র रवेग्राम व स्थेटाङ, मुस्त्रीः शहरास्य मनास्त्र असीत एम न कार्या एक्टा यात्र न रेश्ना छत्र भागक नामार्थावसाविद अस्टि धरे अमानगङ गाङ्य अकला हो इंडेशालन । ভাঁহার। রাষাধনিক পর্নক: গার। প্রত্যক করিতেছেন যে,বিশেব বিশেষ দ্রব্যের ক্রাগকে সর্ব প্রকার জীব ও উদ্দি-বীজ খুনা করিয়া भगद्भ तका कतिरल अमिक्सीय काल मस्या তাহাতে নানা প্রকার সদীব পদার্থ উৎপন্ন व्हेडा ६ अयुवीकरनत मर्भनीत इत, मूहद्राह र्नाशास्त्र मण्ड अक जन सकीत कड़ेंग र নিরভুষে কে.ন মতে সহস্থ হয় না। ডাক্তর ব্যাস্টন্ বলেন থে, ছিনি লাখনিক ভ্রব্যাদির দ্রবকে তাপে হারণ দর্গ প্রকণ্ড बीविड-शनार्थ-तीम श्रम कहि। इकलिया সুর্থিত ভাবে নির্বাত স্বংম বাথিয় मिर्वात शत, ১० वरेटण १० मिनटमत घटरा ठाशांट मामा काजीय कीव छ यह्न द्र डेब्शन स्ट्रेंट पिशिएहर । ৰূপ নানাবিধ ঝাপার পর্যাবেক্ষণ করিয়া ডাক্তর ব্যাস্টান্ প্রভৃতি অনেক ব্যক্তি ঈশ-রের অন্তিত্ব অধীকার পূর্বক জড়ানু ও জড় শক্তি চইতেই मह्रमासित आणिय मृष्टि अनू-मान कतिशाहिन। छोटाहाई य दक्तन कह ज्ञानक न मार्ड अनुभागी इडेश माहिकडाड আত্রর লইরাছে,ব এমত নহে, যাঁহারা তাঁহা-निगरक পश्चिक बनिया आका करतन, छाहा-

রাও তাহাদিথের দৃষ্টান্তের **গণে প্র**ভাট হইতেহেন।

এই মত খণ্ডৰ পকে প্ৰমানা যুক্তি অপেকা স্যায়ুরেলসম্ প্রভৃতি পণ্ডিতদিগের ঐৰপ রাসায়নিক পরীক্ষাই অধিক কার্য্য-কর বোধ হয়। জে**মস্** সামূরেলসন্ অভি সংগানা পরীকা দারা এই মত খণ্ডন করিয়া-ছেন। তিনি স্বপক্ত ও প্রতিপক্তের পরীকা-ধলির সমালোচনা করিয়া স্পর্য এতিপন করিয়াছেন যে, ভৌতিক শক্তি ও জীবনী শক্তি এক নহে, তাহারা পরস্পত বিভিন্ন : ভাজর বাস্টন্ প্রদর্গ করে বিশ্বস্থ जीव ଓ डेडिनाए । ሉ 😘 डेक्श्र अर्गाद শুল কতিপয় ভৌগ্ৰাস প্ৰস্তেইর প্রাস্থানিক मर्दगादशांभ्यत । १०० व्या करत्व, सिन প্রমাণ করিয়াজেল ১০ ছ গা বাস্থবিক ঈশ্বর कर्जुक मृक्षे हरे। वश्यु आर्ट्ड नाना भनार्थ বিকিও রহিলাছে । তিনি বলেন, ভাকের বাাস্টন্ যে লাবণিক ত্ৰবে সঞ্চীৰ প্ৰাণী ও ইন্তিৰ প্রত্যক্ষ করিয়াছিলেন, তালা নির্বাত क्षान इहेटच बाहित कतिया आमिता अरमककन् এই বাজ বায়ুর সংস্পদের্শ স্থির করিয়া রাখি-श्रुष्टितान, शर्द उत्हाद्य क्षेत्रे अकार स्नीव লা ইছিন দেখিতে পান : ইহাতে সহজেই मिकाष कहा धारोट शास्त्र (ग, ७)क खब প্লাৰ্থ মত দিন নিৰ্বাত তানে বন্ধাবভায় রফিড **হইয়াছিল, তত দিন তালতে কোন** প্রকার জীবের এউইপত্তি হয় নাই, কয়েক ঘণ্ট। পৰ্যান্ত বাহ্ বীযুৱ সংস্থান্ধ থাকাতেই वाश् हहेटल बारमक भीत ଓ উछिणानू शिला के अमार्थ मत्था क्षरंत्र कड़ियां इल ।

ভাক্তর ব্যাস্টনের আর একটি পরীক্ষার সমালোচন করিরা তিনি উক্ত সিকাডের নাথার্থা আরো পেউ করিয়া দেখাইয়াছেন তিনি বলেন যে ভাক্তর ব্যাস্টন এক সম্বাহ্য কুই প্রকার, স্বিনিক পদার্থ মিনিক করিয়া well be were were, This does क्रिक्टम अवर्षि शादक भावक स्वास्त्र के जिस প্রাস্ত নির্বাচ ছাবে রাখিরার পর বের্থন त्य, काहाट बारिक्ट काकांत स्थान करवक व्यक्त उक्ति का बाह्य है. कि के जारबा जांत कित्रमर्भ भना लेकि शास्त्र स्मर्थ करण ve विन भगांच त्रांचित्रा दमस्यन त्यः बाहारङ कान अकात जीव या छेडिनरे जदम नारे; ভাহার পর আযার ঐ ৰূপ দ্রবের ক্রিব্রুখ ৩৮ দিন পর্যান্ত বায়ু সংস্পর্শে রাবিরা শিয় দেখেন যে, তাহাতে এক প্রকার সজীব अमार्थित देवभक्ति क्रेग्राटक। देश काताः স্পাষ্টীই প্রতার্যান কইতেছে যে, বায়ুতে যে मकन कीव ७ উश्विमान नित्रस्त जामगान রহিয়াছে, তাহারই মধ্যে কতকগুলি সুযোগ পদার্থের রাসায়নিক যোগোৎপন্ন বলিয়া প্রতীত হইয়াছিল।

ত কপ তব পদার্থে বায়ুর সংযোগ

চইলে যে সেই বায়ু হইতে ভাপক্ষণ মধ্যে

চীবানু সকল আসিয়া ত বস্তুতে প্রকাশদান

হয়, স্যায়ুয়েল্সন ভাহা সয়ং পরীক্ষা ক্রিয়া

দেখিয়াছেন। তিনি কাচ পাতে পরিপ্রাহ

অর্থাৎ চোয়ান জল ' অনাইত ভাবে মর্থাহ

বায়ু সংস্পর্শে রাখিয়া দিয়া ছই দিবত পরে

দেখিয়াছেন যে, তাচাতে যে বালুকা কণা

সকল আসিয়া পতিত হইয়াছিল, ভাহার

যধ্যে নানা প্রভার জীবিত পদার্থ বিচরণ

ইরিহেছে। তিনি অনা এক লগতে কিঞিৎ

বালুকা কর্মী কাচেয় নতে বালিকা ক্রিছা

করিয়ালয়েন গেরে ত গলিক বাল্কার করিছা

করিয়ালয়েন। পরে ত গলিক বাল্কার করিছ

[্] ইহা অধিৰ উত্তাপ সংবোচন আন্তৰ্কীত । স্তলং ইহাতে আৰু কোন গ্ৰেলাৰ জীবিত সম। কাকিতে পাৰে সংগ্ৰ

পার্ক্তার করা বিশিষ্ট করাত তালা প্রার্থার কিন্তু নাম্পাত্ত করা করা করা করা নামিয়া হিলেন গাঁথে পিবল এই কপ করিলেন, সেই দিন বৈকালে উৎকৃষ্ট অনুবীক্ষণ হারা ঐ নলাহিত এবাটি পরীকা করিয়া দেখেন যে, অন্যান্য পাতিত্যাণ নামা দ্রুব পদার্থা করেক দিন পর্যান্ত রাখাতে ভালতে যে কাপ সজীব পদার্থ সকল প্রকাশমান হইগাছিল, ইল্ডেও ক্রিক সেইক্স কইয়াছে।

সাহিকেদন এবিষধ নানা প্রকার প্রীক্ষা ছারা প্রতিপন করিয়াছেন যে, রানাদ্নিক সংযোগ নিবন্ধন কথনই জীবন উৎপন হইতে পারে না, এবং নির্মাত স্থানস্থিত ও সমন্দ্র রেকিত দ্রবাদির মধ্যে যে জীবিত। স্বরু সম্ভায় লক্ষিত হয়, হাছবে৷ বাহা প্রভৃতি চইতে আগত তিল আয় ভিক্কই নতে

भाषेट**ा है, भार**ीत, ऋतुम्, ऋति, पारमहे **७**तर ७ ब्राहेमान ७ कृष्टि खारता खत्नक পশ্তিত নানাবিধ সুস্পাই পরীক্ষা স্বারা উজ **শ্বত-উৎপত্তি বিষয়ক মতের** খাওন করিয়া-ছেন। তাঁহারা সজ্জেদে এই রূপ বলিয়াছেন त्य,-त्लाटक खब खगानि घीर्घकाल शर्वान বন্ধ করিয়া রাখিবার পর পরীক্ষা করিলেও याहा (मथिट शान, करसक एकी माज রাখিয়া অনুবীকাণ ছারা পরীকা করিলেও ঠিক ভাষাই দেখিতে পাইবেন; স্বাভাবিক ৰিন্নমে যে সকল রাসায়নিক কার্য্য নিজা-निङ **रम, काहा कान गांट्यक**, त्यथादन कटसक वर्णे मस्या त्कान कीय-चूना मूत्रकिछ शनाएश कीर मकात मुख् इस, त्मशादन রাদায়নিক কার্যোত্র ঘরোগযুক্ত অবকাশ (कार्यात्) क्रुडाः तामाग्रनिक कार्याटक कीर ত্তির মান বিশিষ কোন কাপেই প্রতিপদ

আকনা গ্রামে ব্রক্ষোপাসনা কালীন বস্তুতা।

প্রকাশ রাম্প্র নগরে নগরে, গ্রামে প্রামে প্রচারিত হইতেছে। সর্বজই ইহার আন্দোলন দেখিতে পাওয়া ষাইতেছে। অনেকেই একণে রাম্পর্যা অবলয়নের জনা বাগ্য হইতেছেন, এবং অনেকেই ইহার মূল মভা সকল জানিবার জনা উৎমুক হইতেছেন। একণে বঙ্গ দেখের শুভ ক'ল উপত্রিত। প্রথমে এই বঙ্গ দেখের শুভ ক'ল উপত্রিত। প্রথমে এই বঙ্গ দেখের দেখের জেণ্ডি বিজীব চইতেছে। মভাপ্রমা দেখের যে বহান জ্লানে সলেন করে, হয়ত রঙ্গ নেশেই ভাষা প্রথমে প্রশান করে, হয়ত রঙ্গ দেখের যে বহান জ্লানে সলেন করে, হয়ত রঙ্গ দেখের যে বহান জ্লানে সলেন করে, হয়ত রঙ্গ সেন্দায় অন্তহিক হউষ্টা স্থান ক্রা ভাষার প্রতিষ্ঠিত হউরে। এই স্থান করা লাখিয়ের বিদ্যাপন

उ. किंशामीत अथम मका वहे कि, श्रासमंद कर मार्क यदिनीय। छै। श्रीश क्रिया नहरें, छै। श्री क्रिया नहरें, छै। श्री क्रिया नहरें, छै। श्री क्रिया नहरें केंद्र कर के हैं। छिनि कर्मना क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्

ব্রাহ্মধর্মের দ্বিতীয় সক্তা-- ইম্পার্ক পিতৃত্ব।

क १७ ३० छाद्र तविरात ज्ञान आम निर्मी प्राणिति ज्ञान जान-पर्या प्राणी विद्यार श्री मुक्त वात् नवीनक्षण भानिए रहा प्राणी विद्यार श्री मुक्त वात् नवीनक्षण भानिए रहा प्राणी कर्मा अस्ति स्वाणी हिला हिला-रमा एउ जानारी महानव असे राक्ष्णा स्वाणी अस्ति। अ प्राणित जानामाण महणानिक स्वेरात स्वमा हहे-एउटि।

नेपत काशानित्वक शिक्षाः छिनि कामावित्रत मृत्रम क्रियाद्यस ; किनि चामानिगरक देखिन निशाद्यन, कान निशाद्यन, व्याग निशाद्यन, धनर नर्स ध्वकारत स्थामामिनास त्रमा कतिरहाइन। পিতা যেমন মডের সহিত সন্তান্দিগকে পালন करतन, भिष्ठे क्रिय जैस्त्र आंगोनिशस्क शानम क ब्रिटक्ट छन्। পিতা বেশন সম্ভানকে আহার लांगर्गम मिया भागन करतन अवर जाहारक विमा। शिका, कान शिका ७ हिड शिका आमान क्रत्य, स्मर्थ क्रम् क्रमह आमामिश्यत्र महीत मन আত্মাকে পোষণ করিয়া ও আমাদিগকে জোন , खमान कवियां व्यामादमञ्ज शत्रय कथान माधन कतिर्ভिष्ट्रम । विश्वते जामारमञ्जू त्रकाशास्त्रकाथ कति-एक्टम : छिनि अ.गारमत **अन्त**रत य এक निरतक निशाह्मन, याश लेकात्र माकाद व्यक्तिमान सक्रम, क्षण्डित कार्य व्याप्त भूगा अ मलत व्यागतात्व अस िर्मिटक भारती: आश्रेनामिनटक बच्चा कविटक भावित्कि । भगम जाग्दा अथ-सके इहेगा विभए প্ৰতিক হই,তথ্য ডিনি আৰোয় আমাদিগকে কুণা করিবা ভাষা ইইছে উদ্ধার করেন। যেমন ঈশর সকল মন্ত্রের পিডো, ভেঘনি সন্দায় মনুষা পর-श्लादात को छ। यक्तथ । मकल प्रमुख्य **बक** दाकान ত্মাত্মা, এক প্রকার ভার, এক প্রকার প্রবৃত্তি। সকল নমুদাই বস্তুতঃ সেই এছ ঈশবের উপ্নিনা করে এরং দেই এক পিছার পুত্র হরপ। -

রাশ্বধর্ণের তৃতীর সভা লখনের নিকটন্ত। জুনা
পর্য্যে নরুখারে লখনের নিকট উপ্থিত ছাইবার নিক
নিত কোন মগাবভাঁ পুরুগের সভারতি ব প্রেলেশ্য কংশনা করে, ত্রাজ্যার্থা বলেন লখন সভ্যাের আখার ভাভারে বর্জিনান—কিখন মনুযাের এত নিকট যে সে আপনি আপনার ভত নিকট নছে। কেবল পাপ্যালনভা প্রকাশন করিলেই আ্আভে সেই সভা-স্বরপের প্রকাশ হয়।

বাক্ষগর্ণের চতুর্থ ক্লড়ী—মনুবোর ইছার বাধীনভা। প্রদেশর মুম্বাকৈ খালীরভা প্রদান করিয়াছেন: হয় সে পুর্ণের পূর্ণে, নগা পাপের প্রবে গমন করিতে পারে। তিনি ভারাদিশকে ব্যক্তর নাথে চালনা করিভেছেন না ভারাদ্যান ভারে থে আমরা যাধীন ভাবে উছার কিল্পি निवि । धरे तानीन्छ। निरंक्त कामका शाना ब्रांध्य निवित्त गांगे। देशास्त्रहे कामात्मह मधुनाच, देशा-एकरे धामात्मक मजन। कामका होते कामकात्म रकरनारे शानाह नत्थ हानवा काहरक नाहि, कामा रहेतन धामात्मह कामक सुन मान हह

जासपट्यात लाक्य कठा-केशद्वत् अपि প্রীতি ও ভাষার শিল্প করি। নাগন সর্বাপেক। তিয়ে। ভীহার তুন্য বিয় পদার্ক আর किछूरे नारे। छारादक खीकि कहित्स आमात्रविद्रशत অীতিরতি চরিতার্থ হয়। ভাগরা পুরুদ্ধে প্রীদ্ধি করি, বন্ধুকে জীতি করি, কিন্তু ভাষা চিরদিন এক ভাবে স্থির না থাকিছে পারে। হরত আমা-मिगदक शूटजंत कूषाहत्रम वाश्विक हरेटक रह, व्यवता হয়ত বকুর কোন দেখিদেখিয়া ভগ্নন। ২ইতে হয়; क्कि त्रहे स्व कित प्रकर, दौरात महित बीलिश अ ह कंपन विस्कृत दश मा। उँशिद्ध श्रीकि कतित्व मत्न त्वः भोषि बास रहा, खाहात्र कथन राष्ट्रिकम रहा ना । जैयाद्वत क्षांच क्षींचि स्ट्रेस्ट्रे ভাঁহার প্রিয় কার্যা সাধন আইলে। আমরা বাঁহা-কে জ্রীতি করি, তাঁহার বাহা জির কার্যা, জ্বা क्तिएक कार्यातमञ्ज्ञ चक्रांबकः देखा द्या कामदा यमि मेश्रत्रक शीं कि कति, छाहा हहेरल छाहात खित्र कार्या ना कतिया जामता शक्टिक शाहिना।

वाषाधार्यात वर्ष मला-मेंबद्र-श्रम् प्र भूद-कारत विकास । नगात्रवान् केंच्य भागीतः मध छ প্রথানের পুরস্কার আদান করেন। পালের রও আআলা নি, এবং পুরোদ্ধ পুরক্ষার আত্মপ্রসাম। वह काणशानिक महक, वके कालकाशह करे। उपमार्थम कान वर्ष क नहरनह आहर कल्पना कारत ना। आकार में बदकन त्य, यथन दकान वाकि भाभाग्य कतिया जनक् आधारितक हक्षांत्र हत्। मिहे जारात महरू, जात वसह क्षाप्रकृति सहिता व्याचा विमादम वाम् व विद्यास स्वयं व्यास्त कार्य STEIR af , All Good With Michael CUIT TACT PRESENTED TO MEN TIME. भाव रि निक्षे शास काच्यान काच en, cat Giala an gert i bren minife ab शादनक विशिष्ठ त्व मेरा त्वस् । कार्रा THE BUT OF THE PARTY

धन कड़िया गाउन, कड़ांग जिनि आवाहिनाटक शहिलाति केंद्रव मा।

ব্রাশ্বর্ধের গন্তম সত্য-পরকালের অন্তিছে
বিশাস। এই মর্তালোকে কিছুভেই আনাদিগকে
তৃত্যি নান করিছে পারে না। এখানে অনেকে
পাগ করিয়াও শান্তি ভোগ করিছেচে না, অনেকে পুণা করিয়াও কট জোগ করিছেচে না, অনেকে পুণা করিয়াও কট জোগ করিছেচে না অনিকে পুণা করিয়াও কট জোগ করিছেচে। এই
বৈপরীতা ভাবের নামক্রমা অন্য এবং আনাদের
কুপ্তির জনা আমরা আমাদের জীবনের পরে আর
এক গোকের অপেকা করিছেচি, যে নোকে পাপীর
অবশিক্ত দণ্ড ও পুণার অবশিক্ত পুরুকার হই ব
এবং আরার তৃত্তি লাভ হইবে। বেদন আমাদের
কুপার নিম্ম অন আছে ও তৃকার বিদ্যা জল
আছে, ভেদনি আনাদের তৃত্তি লাভের আশার
স্থান পর লোক আছে।

ব্রাহ্মধর্নের অইম শত্য-আরার অনন্ত উপ্রতি। আরা অমর। সেইচ লেকে বে জান থর্ম উপাক্ষন করিতেন্দে অনন্ত কাল ভাহার আরো উন্নতি হইতে থাকিবে। আয়া লোক হইতে লোকান্তরে উপিত হইবে এবং সেই সেই লোকে ভাহার আয়ার রতি সকল সমশঃ ক্ষুর্ব ও প্রয়ন্ত হইতে থাকিবে। ভাহার জ্ঞান আরো উন্ধৃত্য হইবে, ভাব আরো প্রশস্ত ও প্রতৃত্য হইবে; সে ক্ষান্ত্রকে আরো উন্ধলতর রূপে দর্শন করিবে ও ভাহার নিক্টতর হইতে থাকিবে।

बालधरमंद्र नवन ७ गरून मरणका ध्यथान मणा करे तर बाधारण्ये जारात छेलाम कहित्य। जारात क्षेत्र क्षेत्र स्थान क्षेत्र क्षेत्र स्थान क्षेत्र क्षेत्र स्थान क्षेत्र क्षेत्र स्थान क्षेत्र क्ष

अहे सर्थ अकरण रमरण रमरण नशस्त्र नगरत्र अञ्चित्र इहेरफर : नाना पारन हेशत्र आरणा-जन छनिएक शाख्या गात्र। हेश कारणाहे सुक् िक मरणाह कि ! अहे जाक्यपर्य विश्वकनीन धर्या। मक्त काणित मक्त लारक्त हेशरफ अधिकात आरफ। अहे जाक्यपर्य पात्रा मक्त लाक शित्रकाल लाख कतिस्त। अहे जाक्यपर्य पात्रा शृथिरी छ धना। छ खीमण्यमा हहेरद।

আমাদের হিন্দু শান্তকারেরা ভাষেক শান্ত निभिग्नं निग्नाटकम् ७ जात्मक् भीटन्नग् जाटनाकम। করিয়া পিয়াছেন। সকলের ফল সমূপ উছোৱা धरे रिलया नियादहर, वा " मामाद अङ्ग निमादङ প্ররনায় " এই প্রনাতারি উপাদনা ভির মন্যার मुख्कि वाटच्य चात्र कान छेलाग्र न:है। आगः दम्य व्याणीन पुरुष्यदां य मकल भौजायलप्रन करिया **ठलिटलन, काहारक नाना ध्यकांद्र धमाक्यां।** bateg वाबका चार्क, किन्छं म मकल भारत्र देशाउ স্পাটাক্ষরে বাক্ত আছে বে, এ সকল কেবল চিত্ত-শুক্তির নিশিত এডদ্যারা মনুষা কখনই মুক্তি লাভে ममर्ष २६८४ मा। मूल्डिय উপाय (करल अव মাত্র পরমান্থার উপাদনা, ভদ্তিগ ভাহার আর অনা উপায় নাই। কি বেদ, কি পুরাণ, কি ভক্ত, मरूरमहे उरकार एवं कीर्डन करद जबर मकलाहे अक बाका रहेशा जे उत्कालामनात्कहे मुक्ति अक माज উপाয় दिलसः निर्दर्भ करत्। तम भक्त भारश्रद अक खेलरम् अहे स ममल धर्म कर्ग कविया छाहात कन उत्पारक वर्णन कड़ा। इसिर ठाइक वर्राह এক মাত্র উপাদ্য বস্তু। তিনি আম্চের দনাভন আরাধাদেবতা। এই ওক্ষের নাম ভারতবর্ষের চারি দিকে বভ ধানিত হউবে, ভতই ভাহাতে মলল প্ৰবাহ প্ৰবাহিত হইয়া সক্ষ্যান প্লাৰিভ হই-व । वहे जाकावर्य ভाরতবর্ষের मधुमान कुती छ छ কুসংস্কার উন্মূলিত করিবে। সানাজিক ও পারি-বারিক সমুদার **অনজ্ল নিরাকৃত করি**ব। **রাক্ষ**-ঘর্মা ভারভবানিমিমিগকে জানা ধর্মো সমুজ্জন ক-विद्युत जो निभाग आमारम **भाग कृ**षि शूण कृषि रहेरत, हेर्इट्ड कान्स अवाह अवहिड रहेट्ड थाकित्व ॥

अर्था जना धरे उपस्क मका मधनीत निकर

ৰিনীত ভাবে আর্থনা করিভেচি,—আপনারা বেন वह जाकारपीटक जवदरणां ना कदतन । जाकारपीह त्तरभव मक्रन-त्वादकत मज्ञन-क्रशस्त्र मक्रन । এ ব্রাক্ষণর্যোর প্রতি যেন আপনাদের চকু নিনী-निख मा शास्त्र । योशमाता बहे जानापर्य अध्य करुण, जार्शनारमत जाणा कुछार्थ हरेरव व्यव कालमाना वागटलंड मध्य भाषाम नमर्थ छ्टेप्सन । व्यामानिटाइ व्यक्ति कारलत क्षितिरात छेल्टम् এই যে মোকার্ণী হুইয়া শেই পরব্রন্ধের উপাসনা क'इदर । डिहादा स्य दणीखिलकखान भिका निश्च-क्रिम, खोड्। बार्क्सार्वरे रहत मरह। स्थारम कान भगी नाहे, क्याहन स्थीतिक श्रका जाई-গাও অনেত তাংশে গোওঁ। কিন্তু গ্রিদিরের। আগেষ এই ভিল, বে পৌত্তলিকতা ত্রনা লাভের গোপান সরূপ হটবে ৷ এক প্রকারে উচ্চেবে সে আখা मिन्न बा बरेबाएक, कार दका महिल्ड शास्त्र बा আৰু যে ভারতবংগ্র এক সংখ্যক লোক ব্রহ্ম-क्षान नारज्य अधिकादी उउँग्राइ, त्ले प्रतिकत्त এত দিন ইতারট দোপান স্কুণ কার্যা ক্রিয়াছিল किन धारुक गार्थ (श्रीतिकक) द्वभावन्यात्वद শোপান ধরপ হও: চাই, অর্থাং এই গোপান ইংকে উশিত হইয়া ব্ৰহ্ণান লাভ করা চাই। যদি চিরকালই দেশ্পানে রহিয়া গেলে, ভাষা তেইলে কি চুইন ও আজ্ঞান সকলে সকলু হও। সহজু হউমা ব্রহার। লাভের নিমিক্ত চেটা কর।

পদ্ধীয়াম ব্রাল্যণোগনার প্রাপন্ত থান, ইক্

ক্রেণ্ড বিজ্ঞানর ক্রেজ্ঞান প্রান্তের বিশেষ
উপবোধী। নগরের ক্রুজ্ঞান গুলের ক্রিক্রয় দুর্শন
মনকে নিপীড়ন করে, পদ্ধীপ্রাদের এই হরিব বর্ণ
শ্বান ক্রেন্ড, মুর্নাভিল রক্ষজ্ঞায়, মুনির্দান সমীরণ
সকরই মনোরম। নগর মুনুবোর নিশ্বিভ, গ্রাম
দেব বারা। এখানে স্ক্রিগ্রের স্বর্ধ কই মুক্তান্ত
সাক্ষাবেলার লাভ হয়। গ্রমন রুখন স্থানে ব্রেল্ডর
উপাসনা ক্রেলের মনন, ব্রুজ্জির ধন বিভাগিতা
সাধক। গ্রামন ব্রুজ্জির মনে নিজা ক্রমন্ত
নিজা প্রক্রিলা বির্জ্জিমান থাকে। প্রন্ত ক্রেল্ডর
ব্রিজ্ঞি হিনি ক্ষন স্থানে ব্রক্ষ্যক্রান্ত্র ক্রিল্ডা ক্রিল্ডরন।

WINTS HER OF MINISTER OF AR MA नामु पुना व विद्या जातात हारकात छाउनका अन्त कतिरानन, छीराही गरमीह करे छै देव के के प्रश्न नथ करनप्रमक्तिया धना क कुछ भूग क्येटनम् । जायात मरम क्रम अधूक सूर्वत क्रम्य हत, वनक कावि बर्दन कति त्य, कहे चाटन कहे तकल बाधु बाक्कितन कन-ত্রিত হইয়া প্রতিদিন পরত্রব্যৈর উপাদনা করিবের — এই গ্রাম দিনে নিশীখে ব্রহ্মগুণারুকীর্ত্তন ছারা ধ্বনিত হইবে। কে বলিতে পারে,হয়ত এই সমাগত नका मखनीत मरना अमन धर्मा भाराधन दौर पुक्र चाट्डन, सिन करें उत्माधमी अहल कतिया देशत कता नक्छ करे मध कितान :-- इष्ट स्ति, अहे लविज भरमीव तका । उ जाति भारक विकीन कवित्य व এবং ইহার মধুর গল্পীর ভাব দেশে দেশে একল रण्टात मिक्टे शहार कहिट्या: प्रेश्व क्रूब, মেট দিন ছরায় আগেমন করুক, যে বিনে সেই मर्गाम ज्ञास्त्र प्रभा करे श्रेतीयांनी स्वाक शर्मत प्रस् पद पाश्निम की चित्र हहेटल शांकरवा

নূতন পুস্তক।

The Colcutta Journal of Medicine.

শ্রিয়ুক্ত ভাক্তর মহেন্দ্র লাল সরকার লক্ষ্ প্রকাশিত। এই মাসিক পারকার হিতীয় ও জৃতী-য় পও সমুদায় এবং চতুর্থ থণ্ডের প্রথম সংখ্যা আমরা একবারে প্রাপ্ত হইয়াছি। ভাক্তর মহেন্দ্র লাল সরকার বিখ্যাত নামা; ভাষার এই মাসিক পারকাও কৃত্যবিদ্য সমালে বংগলৈ আছিল বাজ করিয়াছে। ইহা আমাদের গেলেন্দ্র উম্বভির বিশেষ পরিচয় করপা।

२। शमार्थ मर्जन.

श्री एक भरत्म नाथ करी। शर्म क त्र क कर्म क क्रिका क्यानित ही उपन शाहिना हरेरन वित्रो भरति भिकार्थी गर्म क्या श्री हर्म कर्मक क्यानिर शाहिरदन।

७। उन्न महीके, शहर का

की बारकता तुमात बात रहीमती क्योप्स । वेशारक धनविभावे अस्त नवसीम् कास्त अस्त নতন অভিনিত্ন লাভা রাম মোহন রাজের বংগীত বছনার বীজানুসারে সংরচিত। সংগীত তলি উত্তর হইবাছে।

৪। গীত কার কাগদীশ কাব্য, প্রথম সর্গ, '
ক্রীমদনমোহন মিক কর্ত্ত প্রনীত। সংস্তে করদেব কুড গীতগোবিন্দ ঘেকপ গীতময় কাব্য, বজ
ভাষায় সেই কপ গীতময় কাব্য প্রচার মানসে রচথিতা এই ' গীত কয় কপনীপ কার্য ' প্রণয়ন
করিয়াছেন। পুত্তক খানি কিরণে লিখিছ হইথাছে, ভাহা জ্ঞাপন জন্য আগ্রা ভাষার প্রথম
ছইটী কবিভার (বা সংগীতের) প্রথম পাদ গুলি
উক্ত করিছেছি।

রাণিনী সিকু কাকি — লাল কাওয়ালি।

ক্ষম জগদীশ কলুব বিং হর ছে,

শাক সুংগ তত্ত তালি ব তব্ত কর সার জর জর জর জর কর হে। (ব্য়া)
কাবন কল বিত পাপে, তথা মন বিষয় তাপে,
বিষ্যাভয়ে হাদ কাঁপে, থার পর ধর পর ধর বার জাবাই:

গ্রাপিশী ইমন কল্যাণ-- ভাল কাওয়ালি।

ক্রণ কগদীশ মধ্ব গীভ-রগে হর্ষ-মদে-জগল

ন্যাভিল মাভিল রে।

কোকিল-পুল-কাকলি কলিভ কলকল-রবে গান
ভান মান ভানিল রে।

ইশবেদেশে একপ গংগীত রচনা আহার।
আনেক কাল গুলি নাই। পূর্বে কোন কোন
করি আ আ ক প্রশ্রুতি চৌতিশবর্ণের মধাক্রমে
এক একটা বর্ণ প্রথমে রাখিয়া প্রার্থনা মালা রচনা
করিতের। কোন কোন থাক্তি আপানার নামের এক
একটি আজর প্রথমে রাখিয়া এক একটা প্রার্থনাপদ রচনা করিয়া প্রকাশ করিছেন। কোন কোন
বাইক অভারমক নধানমকাদি বিশিন্ট ইশর বন্দ্রশা
রহনা করিয়া প্রাত্তি বর্ণের নিকট প্রভিত্তি। লাভ
করিছেনা এখনো ইশর বিষয়ে সেই কপ কৃত্রিমভারমনী রহনা রোধিতে ছইবে, আমাদের এমন
নিলাণ ক্রিম লা। প্রাত্তাবিত কাব্যের রচিত্তা
ক্রিমেনা প্রথমিক লা। প্রাত্তিক কাব্যের রচিত্তা
ক্রিমেনা প্রথমিক লা। প্রাত্তিক কাব্যের রচিত্তা
ক্রিমেনা ক্রমেনা ক্রিমেনা ক্রিমেনা ক্রিমেনা ক্রমেনা
আমরা বুঝিতে পারি না। কাষা খানির অধি-কাংশ শান্তি-রস-অধান প্রকৃতি বর্ণনায় পূরিত, কিন্তু ঐ শান্তি রসের গহিত আদি রসেরও বিল-কণ মিপ্রণ দেখা যায়।

LETTERS FROM AND TO THE VEDA SAMAJAM, MADRAS.

VEDASAMAJ OFFICE
Madras

10th August (1871) B. E. 42.

Fion*

K. SREEDHARULU.

Secretary to the Veda Samoj, Madras

To

Sreemath

Maharhsi Devendranadha Swami Pradhana Adharya of the Brahma Samai.

Most beloved and Venerable

Sir

I have the honor to forward to you herewith a copy of the Proceedings of one of the Meetings of the Samaj. Therein you will find a Set of Draft Rules under consideration. By your kindly communicating your views on the same within a week from the date of the receipt of this communication the Samaj will feel highly obliged.

I am Your most Observat Servani,

K. Shelouarcle. Secretary.

10th August 42, Madras.

Most beloved and Venerable father.

The writer of this letter is the Madrasec who was at Calcutta chiefly under your patronage some time back, studied Brahma Dhurna under your auspices and formally admitted into the Samaj.

I am yours. K. Sreedharulu.

S. Page ...

From No 1086
JOTEERINDRANATH TAGORE

Secrey to the Adi Brahmo Somaj. *Caloutta.

To

K. SREF HARULU. Eson.
Secretary to the Veda Somajam
Madras.

Dear Sir.

I have received your letter dated the 16th Instant addressed to our Vonerable Pradhan Acharya who is now in the Punjab. As I have been empowered by him to open all letters to his address in his absence, I have taken the liberty to do the same with respect to your kind communication under acknowledgment. We highly appreciate the measures which you have lately taken for placing the Veda Somajam on a more efficient footing, and expect tha through the blessing of Providence it will prove to be the great source of Spiritual good to Southern India. We pray to God that he will give you strongth in the prosecution of the noble work you have undertaken and erown your efforts with species. " छ। भागित्यत अक्षेत्र कुना क्षत्र व समूद्र कुला कार्ता । " Our task is as weighty as a mountain and our with is as unst with Ocean." Great plastry, goal per-everance, great enthusiasm, and above all great moral sourage are required to overcome the obstacles which lie in our way and we must bombly depend upon our Almighty Father for help to surmount We hope that the those obstables. measure you have undertaken for the improvement of your Somaj are well adapted to the present spiritual requirements of your, country-men, upon whose sympathy and co-operation alone materially depends your success. We wish that the condition of the membership of the Sonial were a little more liberal than it is now. It would be

better if you make a rule that a simple declaration of belief in the Brahmo Dharma Vijam would be sufficient to enable a man to become a member of the Somaj, instead of signing the Brahmic covenent. You will find many men willing to join your Somaj, and in evry respect worthy Brahmos, but who would be unwilling to sign any coven-The Brahmic Covenant is intended for such men only as think it a help to them to fortify their weak resolutions. There is also another thing which we want to recommend, and that is that you should maintain the in-"ce of your Somaj in every pos-I send you berewith sible respect. copies of the following pamphlets puls og a member of our Somaj on the subject of Brahmoism, and recommend them to your attentive perusal

Adi Brahma Samaj | Calcutta 26th August 1871.

I remain, sir,
Your most obedient servant.
Joteerindranath Taccer.
Secretary

1. Defence of Provide cases the Brahmo Somaj.

2. Brahmic Questions of the day,

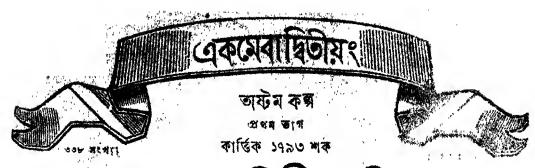
3. Brahmic advice, caution and help.

4 Adi Brahmo Somaj, its views and principles.

নূতন বিজেয়ে পুস্তক । ব্ৰহ্মজ্ঞান-স্থত, তাৎপুৰ্যা সহিত।

প্রকালন নামক যে ৩০কখানি পুন্তক আদি ব্যাহ্ম সমাজের পুন্তকালয়ে বিকল কইডেচে, কালা-তে যে কতক তলি ব্রহ্মজান বিবর্গক ক্ষা আহে, প্রকাশে ভাষার ভাৎপথ্য ব্যাধ্যা করিবা উল্ল লাবে, প্রকাশি পুন্তক প্রকাশিত ইইরাছে। স্থায় ১০

ভূতিখানিনী প্রিকা ক্ষিকাভা আছি ব্রাক্তসমাজ গাইছে প্রতি মানেস প্রকাশিত কয়। মুদ্য মুখ্য ম্লাকাণ অভিন নাত্রিক মুদ্য তিন টাকা। ভাতনাত্রত মানিক বাড আনা সম্ভন ১৯২৮। ক্ষিপাড়াই কর্মনাঃ ম্লাকিল সাধিনাড়া



ज्ञादाशिनी व्यक्ति

अभवार्कमिसमंक्षक्षामीज्ञासाद किकामानीज्ञतिषर मर्कामणुक्तद । उत्पाद निकार क्षणान्य सम्भाद । १००० १००० विकास क्षणान्य स्थापन । १००० विकास क्षणान्य स्थापन क्षणान्य स्थापन क्षणान्य स्थापन क्षणान्य स्थापन क्षणान्य स्थापन क्षणान्य स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन
are and a second of the second

भारतिकरमहिकक अञ्चलका । जन्मिन् औ जिल्ह मा किएका घ

. धूनकाक्षेत्रकार्यस्य गायात्

সহজ ভাব।

জ্ঞান চকু লেল্টির এইবার পুর্বেই भन्या १२७ साउव वनक्ष क्षेत्र क्षेत्र 存收率 到海道 不合。 建制 **नेत्रादेश** प्रमुख कारम राज्य कार्क के कार क **ব্ৰহ্মজন উত্তেহি**ত সহিত্য কৰা 🖝 😘 অচিন্তা, অদুশা ও বলিন্দেশ চন্দ্ৰীও मनुषा (व कें.इ.ए कार्निक कार्य कार्र, **ভাবই ভাহা**র সংগ্রেশ। মন । ভাব যথন खिशमान शास्त्रः हर्णने अक्कान विचास ভাৰি পঞ্জি ২খনেও তাঁহার আবিভাব खाय भूषा पुष्ट ना। **क्व गग**रत्र रिनि স্পারতে হতামলভবং উপলাক করিয়া यानमाळा दिनक्ष न कदतन, जिनि भादात षात এक मभटश डांबाटक ना भारेश काबा-कांद्र कड़िए शास्त्रम ; शूर्द् ७ जाहात्र य जनकान हिल, जर्मन जारा विमासान माहरू; करत जैन्दरतत छेशनकि विषदर काकृषा वाकिक्स घटि दक्त ? अनुभक्षान बाटकरे अजीतमान स्रेट्ट त्य, छारात कान शूर्वतर वाकित्तव छात्वत्र वाण्यिम १७-शारक जैमेरतानरकारन विश्व छेरनस रहे-अदि। जार गर्कन गर्कीय शांदर, उठ-

ক্ষণ স্থারকে উন্ভোগ করা গায়: তালা নির্ম্পার : লাগ গলের স্থারকে পারাইকে

কুড়ার প্রভার זיל ליד ्रिक्ष करम यांनिया THE STATE OF THE STATE OF निकिमी स्य. भहक अप्त कामा भागीत्राज्य मुल (एएस निक्रांशन ५ दक् । दरसम नहक জ্ঞান সমুদায় বুদ্ধি বৃত্তির পশ্তন ভূমি, সেই कार महक छोर वशुमात हमा इति । कुला-राह्र। अध्या छाउँ भूत ना, सीम ८६० ক্ষেত্ৰ প্ৰভাৱি কাৰ্যা কুৰি কাৰণ কাৰ্যা লক্ষ্য **ও অনুবর্ত্তী। ভঞ্জি হার**িল রাজি সালে পাত্র ভেলে এবাধিক ৮৯ সংগ্রহ বর্তির ন **ल्या महीद मक्ष**पा १ ५ । ५४५ (१८७८) The manner of the state of the क्रकारण १८८० विभाकता **प्रतिकार परा** क्टीराकाल कार केर सार्वा**स शक्त कृष्टका ४३**० *ार्थ ५.र वे खें खें हु ८६६ (त्र*ह बका १ क्षेत्रकाकात महाया भारतातुन बहला करियो स्त्रेया कार्यः। सिप्तकाव क्षाप्तकाव अस्तर्भा कारवर्त घरमान हैशा नामात्रन कटल व्यनुसार থাকে। কোন পণ্ডিত সেই সহজ ভাবকে সামান্যতঃ প্রেম শক্তে নির্দেশ করিয়া বিষয় তেদে তক্তি প্রীতি বেহাদয়া বলেশার্কার ও লোক চিত্রবলা প্রভৃতিকে উহারই তির তির আকার বলিয়া গিয়াছেন । পার তেকে তক্তি দয়া প্রভৃতি বে সমস্ত হাদয় রুত্তি উদ্রক্ত হয়, সহজ তাব যে তাহার উক্লেশে বর্তমান থাকে. ঈশারের ভাব পর্যালোচনা করিলেই তাহা সুন্দর বঙ্গে হুদয়লম হইবে। পরবেশবরে আমাদের নামর ম্যুতি কুপানা যুক্তি তর্ক প্রভৃতি বুদ্ধি হৃতি ইকলেনা থাকেলও তিনি জ্ঞান স্বর্জা গাহাক সন্দেহনাই, এবং সেই জ্ঞান কিকলে গাহাক সন্দেহনাই, এবং সেই জ্ঞান কিকলা গাহাক সন্দেহনাই জ্ঞান ক্ষানিতে পাতি ক্ষান সন্দেহনাই সন্দিহনাই সন্দেহনাই সন্দিহনাই সন্দেহনাই সন

मशोत नाम क्षित है। ब नवन कर र भाग गाई। अपि और:इक आश्राद्वार নার কাহারও পূল। করিছে যাব্য করেনা, ८७म नैद्दा**टक क**ा**टपत** साल कार्यात**७** अनि মুশ্ব করিতে গারে না, বেহ ভাঁছাকে আগ্-क्त नाम नश्मात्त सिक्ष कतिए शादि मा. मता डीहारक आगारमञ्जू महार ড়ুংখে আঘাত দিছে (রে না - কি**স্ত** ইহাতে কিছু যাত্ৰ সংশ্ৰু নাই ে ভাৰ খুন্য কেবল জ্ঞান মাত্ৰ বা শক্তি মাত্ৰ পদাৰ্থ নহেন, প্ৰস্তুত তিনি ভাব স্বৰূপ: গেই তাব **ামাদের ভক্তি দয়! প্রভৃতির** नाम नव काछ. किन्द्र उपराधका जनस खाल কোমল ও পৰিঅ 🕈 ছুলি সুন্দর কপে না लानित्व भारतित्व यांगातमतं अवसं कृत्मत **এএবণ স্বৰূপ সহজ ভাবে ভাহার আকার** দুষ্ট হইতে পারিবে।

ने परता तारे. पना केंद्र किया भारतभूनं करेता चाटकः क्षेत्र कावटनरे क्नानि छोरी सून हरेशे भटक ना धवर ভূতন করিয়াও উদ্দীপন করিতে হয় নাত। মনুরোর ভাব পরিমিত, এই জনা তাহার मदक्ष महा छक्कि अकृष्टि वाकिविद्नवशामी ভাব সকল নিয়ে জিত হইয়াছে। যেমন टीकांक ठक् नारे, छशानि किनि मर्मन कदतन, (यमन कीकात युक्ति, जिन्हा नाहे, ৬ল'লি ডিনি সমুদায়ই জানেন, যেখন জাগাও কালা কুলিকৈ, তগাপি তিনি কৰ্ম-भीता रमधे कः गाहार्ट आयोग्मत नाव क्षा है है कि मकत नाहें, डिगानि डिनि देवपिल ... िक्स अवस्^रि यनि डीहाव **ভाব ना** ধাকিত, তিনি কেবল ভূপজান ও পূর্ণ भिक्किक हैराजन, छोटा हहेरल खामेंडा जिल्हा अ जाता दीकांत वनीकृत क्देशम मानक मारे. কিন্তু, ভাঁহাকে ভাব স্বন্ধ, দেখিলেই আন্ত্ৰ श्रम् कार्या छेशामनात्व नियुक्त हरे-িনি সকলের গৃঢ় বুস্তান্ত পর্যান্ত জানিতে-েন, খ্,অগুতিহত শ্লনে সকলকে শাসন केरिएकाइम, देश प्रियेश्व निर्वेद्य ध्वर আশার সভিত্র জীহার শরণাপন হই। তাঁহাকে दक् उलिया निर्देश कति । शिका विलियारे मालवत पिरे, व्यवस्थानाना बलिताई जाकिएन यारे : अ महनात्र आशारमत क्रूजल तमनाटड তাঁগার সেই অতল স্পর্শ তাব সরুমের জ্ঞা রিক্ট পরিচয় মাত্র বা

আছাদের সদক্ষ কাবেই বাং ভাবমানের রগক্ষার ক্ষাক্ষালত হয় যদিও ভিনি মধ্যক ও বিশাসের কার পার্মিত, ভবাপি নেক্ষম তথ্য ক্ষা শিশির বিশ্বতেও সম্পূর্ণ চক্রা ও ফার্ডিফিছয়, সেই কপ আমা-

See Theodore Parker's Sermon on "Love and Affaction"

২ ব্রামধর্মে ইপরের বিশেষণীভূত 'ভাষানঃ'' শব্দের তাঙ্গাদ্য ক্ষেম

प्रम नाध्ना नर्राना क्रमान् दमा अव क्रमाध्ना क्नीतान्। आ ३१७। ३

⁶ सरमा देव भार । स्रोति । इंपे

शाह कांक निक्ट करें तिहें " ध्यम मनीत " श्रीकार्ति अवज्ञानिक स्टेट्ट शेटक ामरे **अटि**वत दक्षिटकरे भाषा नर्मा क्रिका क्ट्रेंट पुरु क्ट्रेसा ७ मेंडका करेंट केरिक हरेता विश्वच थाख रहे अवः अव सारवत वाडींड भारत प्रमाण जैपदात मन्त्रीन स्थेरड থাকে। দেই ভাবের বৃদ্ধিতেই ক্ররগ্রাস্থ **ছिन्न** इत्र, **मधुमरा देवताद**शांत छपग्न इत्र खटश व्या शक्य शक्य कटलंद्र नाम मृश्मादत मध्य-রণ করিয়াও অন্তরে নিলিও হুটাঙে গাঞে 🔭 ভংগার কারণ এই যে, ভগন ঈশবের ভাব ক স্তে সংক্রেছিত হয় ৷ জন্মর সংসারী अवह निर्मिश्च, यसर्गात १८०० আপাততঃ যতই জিনত ব ভট্টক, কিন্তু সাধনা দ্বারা ঘট্ট ৯৪° ১৯৯১ সন্মিতিত হইতে থাকিবে, তত্ট মুক্তি লাভ ক্রিব। পরিশেষে মাবক লম্বর প্রমানে निकाम इटेग्रा शूर्वकार स्वेतः। उथन क्रेस-अंत कामनाई फीशत कामना एडेंदर, जेन-রের আনন্দই টাহার ভে.গা টেবে ও ঈশ-(तत कार्याहे जीहात कर्जवा इहरवे । •

ধ্রের উন্নতি সাধন।

ক্ষারের আরাধনা, মাতা পিতার সেবা.
পরিবারগণের রক্ষণাবেক্ষণ, আনীয় বক্ষনের প্রতিপালন, ছ-খীর ছ-খ মোচন,
বিপরের বিপছ্দার, শোকার্ত্তের অঞ্জ মোচন ও ছর্বলের সহায়তা, ইত্যাদি যে
সমস্ত ধর্ম-কর্ম পুণা লাভের হেতু, পার্ত্তিক
ও প্রিক্ষ মন্দের নিমান এবং মোক্ষ পথে

व्यानत हरेवात माधन, काशात व्यनूकारनरे मनुषा शामिक, माधु ७ विश्वत-श्रदाश्य इस । আপনাকে সাধু কয়া ও অনাক্তে সাধুতা উপা-करिन महात्रका रूकः, क्षेत्र बहुत्वाह कर्डवा কর্ম। ভব্তি (२० म) । পথত, পরিত্র চিন্তা, नाम् इका, अपृष्टि । १६ स च च वर्षात्र कर्तन इहेरक मर् वर्षात्र मधी अवश्व श्राहर का का अमास-**(布蒙·城(城区)** (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4) (4) दल कहिंबादन के भएन । १ १ % अंतुर দেই পরিমাণে বর্ষ রুজ 医原性性 医 र्याहासा (कदन भी छि-भागा का अब अग्राह्म याका बिसंग व्यक्ति ११६० वर्ग विकास াটিক জিলাক কাৰ্যাৰ ক্ষাদি মান্ত্ৰজ काला .का १३ व भारतः, किस पीकातः क्रियंत क कार शब्दिए छान, केरबार्ट्स छकुत नगरक छेटात भविषान इक्तित मीमा नाहे। कैंग्राप्ट वर्ग अन्य विवृत्ति सहस्रम, कटरे ८म्टबन हेंगः ५ 🕾 प्रेष्टक रूउरा व्याद-भाकाः प्रकृष् देखान्यः सिकर्षे धर्म-कर्म मकल मीर्पारक भीता पारितक शांदा सा। पाकि डीम्ल ए ४ वर्ष वस केन्द्र निका केन्द्र-लन, कालि उन्दर्भ 🕆 🦠 🗥 🖟 🕸 स्ट्रिट्स **ठान : जा**डि याः 5 E W भारता कविटलस, कालिए । पार्का के के क করিবার নিমিত্ত 🗫 🤭 🛷 টুকু পরোপকায় 🕬 ান 🔊 🤧 কেবল **अर्ट्युट्य ह**िला है कांत्र आदाम आ। —ছিবি মাতি আপনার চরিত্রে বছটুরু शिविज्ञा मिथिएन, काल क्षेत्रवाक रूक-পেক্ষা মারও পরিত্র করিতে ব্যাকুল হন: কারণ, ঈশার-শরায়ণ লোকদিয়ের পক্তে एक जनानिक शहरमयह यह जाननं, दर्गाम श्रिविक क्षेत्र धर्म जानमें नटह। তাঁচারা অনম্ভ ওণের আকর ঈশরকে দেখি-रूरहर और करा किहुराइ भागनात भर्यात छेशन गढ्छ दरेटक भारतन ना । विनि

क विदेश नाजिक्नर करवामिकारस म ह मर्थ-व्यूटा जा २ (८) ७।

ও সেহিব তে সর্বাদ্ কাথার সহ একণা বিপ-শিতা। তা গাঙ্গাহ। শিবজনা পরমত সামা-হবৈছিল কা ১৯০০।

ক্ষমনের পরিপূর্ণ মনল ভার উপলাকি। করিনি তেছেন, তিনি কি কথন আপনার পরিমিত নাধুতাতে পরিতৃপ্ত হুইছে পারেন। তিনি সভারতঃ আপনাতে অতৃপ্ত হুইয়া অধিকতর ধর্ম লাভের জনা চেন্টা করিতে থাকেন। এক একটি ধর্ম-কর্মের অনুষ্ঠানে তিনি প্রচুর আত্মপ্রসাদ লাভ করেন বটে, কিন্তু সেই সকল আত্মপ্রদান লাভ করেন বটে না. একুলে ক্ষাপ্রদার অনিক্রাপ্র রাখে না. একুলে ক্ষাপ্রদার অনিক্রাপ্র রাখিক হুই লাভ্যাক্ষিণ করিল ক্ষাপ্রদার স্থাকিব হুই লাভ্যাক্ষিণ করেন করিল ক্ষাপ্রদার ক্ষাপ্রদার বিভাগের বিভাগে

े। बाख रिपर अगडिश (ध्यम हिन हिन ष्यतिक्टन १८० ६। धानगम 🖋 दिशा निष्टाइ. আগনার শতুগাতে আগত্তি সেইকস অধিকাধিক সাধৃতাতে উপ্লাভ করে। মনুষ্ জাতি প্ৰাণে বনা অবস্থাতে এবস্থান করিছ: किन्न गाँप (मर्डे व्यवदारकी नक्की हरेशा थातिह, छाहा इटेस्ट एं अग्रहि श्रियोग यूथ ≛ें मिन मिन भूभक्ष रह 'हिहा **फु**लिट्ट्इ, গ্রার কি আর সভাবনা হইত;——সেই ं भ अक मध्यत नद्भाग प्रमुख हे नुभागान कड़ পणार्थदक शूर्व जला त्यारम जाताधना করিক; মৃদি মেই ভাষ স্চেধ্ দকলে তৃপ্ত क्षेत्रा, थाकिट, अ:स्व क्रिस এই विश्ववााणी মহান্ আত্মাকে কেহ ি উপলক্ষি করিছে पाइँछ। এक नगरस अप चा-नगरिक दिना-হের নিয়ম ছিল না: এম পশু শর্মা, এক্ষণে ष्ट्रबाहातिका दलिय मधनीय स्ट्रेशा बादक, তখন তাহাই সাধারণের অনুষ্ঠেষ ছিল ; যদি দেই অবস্থাতেই লোকে চিরকাল সম্ভন্ট ু হইয়া থাকিত, তাহা হইলে পবিত্র **দা**শিতা 👇 ধর্মের আবির্জাব পৃথিধী কি দেখিতে পাইত।

धर्करन् स्रोतात्मन् दल्दन दन् कार्यक উন্নতির শভাবে যে বস্ত বিবাস কর यनिया पटसदक्त नः कात्र नाहि, नाम क्य श्र नशावान महाकानिद्शत मेंद्र बाहा किरिया शिरल केवक भूकर शहारे छेरा. शृहकारनेक মহাপাপ ভবক ব্যতিচার ও পাঞ্চাল কুমা-तीत शक्ष शामी अंस्ट्रवं स्थात[्]रिकाक्षमक वााशांत्र विनश शंश स्टेट्ड थांक्टिश। ৰূপ কৰিয়াই মনুষা কাতিয়া উন্নতি হটগা कारिया के अपने महत्व कर्यों अने न THE STATE OF A TOWN THE STATE OF THE STATE O 通訊機 শক্ষাৰ পাৰ্য্য থাৰ भाषात्व स्माम । १ वट्ड भाषिक्ष भाषात्र । राहा अरम्ब सुरक्षात्रा वृद्धि स्त्रती गारक. একটি আধ্যাত্মিক উন্নতি লাভ করিলেই আ-ীও উলতির সোপান অনুভূত হইতে থাকে।

আপনার অন্তর ও আচনণ অনুসন্ধান कतिया प्रियोज के छाटक दुविएक भारित्वन. তিনি কি পরিমাণে ধর্ম-প্রায়ণ ইইয়াছেন ! যদি আপনা-আপনি এই ৰূপ এনা ক্রা যার ক্রিয়ের জেনি ভাষতে ভক্তি কি भिन मिन इकि आश्व रहे (क्ष्प्रे প্রতিপ্রেম ও দয়াকি প্রত্তাক দিন অধিক হইতেছে : অন্যের ধন সম্পত্তি, মান মর্য্যাদ: ও জনানা যাব হীয় বিষয়ে আমি কি নিল্ল-শুর নাায়যুক্ত বাবহার করিতেছি ৷ পরো-পকার কি আমার দিন দিন অধিকছর প্রিয় हरेशा डिटिटरहर नियादश क्षान है अहि व्रविद्यादक, ज्यान कि निर्माह करेगा कही লাভ করিছে ভেটা ক হল গাকি. না পুর্ব-लक उन्नक्ति भूनः भूकः भारतार्थना कतिना অহকারের শারিতে তাহাও দক্ষ করিয়া: किलिटिक । हिंदा स्टेल गांधुणात शतियांग व्यवगारे बुक्तिक भाता যাইবে। আপনার উপাদিত সাধুতীতে অপরিত্প হইয়া অধিক সাধু কুইবার জন্য

यक किया हरेत, कहरे निरंकत कुठार्थहा लाख उक्रम मगारकत कलानि हरेल थाकित्य। याँगांत्री शर्मात आर्थी हरेला धर्म माधम कित-रक्षाहम, जाँगांता स्मम धालमात माधूकां यर्थिये क्षाम कित्रा लिति कुछ मा थारकम। काश हरेला धर्म दक्षित निभिन्न घाँगा जात-माक, माधू हेव्हात महकाती श्रतस्थत काश महत्याक्रम कित्रा जित्रम।

<a>
<!-- কণ্ডবামিতি বৃহ কর্ম নাতিয়া-- নাৎ সমাচরে । " যাহা ধর্ম, ভালা সাভি-भाग हिटल कडिट्यक ना. এই अनुभागन অনুসারে যেমন বিনীত হইয়া ধর্মানুষ্ঠান করিবেক, সেই ৰূপ কদাপি কুত্রাপি লোক চকুতে ধলাপর্য প্রীকার স্থান ন। করিয়া " यह अनाक श्रीकृष एउट वट हालक विद्या-करत्रे याङ अर्थाः अर्थभागः, काहारण भाषनादक निर्माण ग्रेडिट के अपर शिक् কর্ম কুর্বজোদ্য দ্যাৎ পরিভেশেষ্ট্রেল্মনঃ তৎ প্রবছেন কুর্বীত বিপরীতম্ব বজারেছ।" দে কর্ম করিলে অন্তরাত্মার **সভো**ষ হয়, অধিক ঘরপূর্বক ছালা করিবেকণ ভিৰিপ-होठ.कर्प প्रतिकाभ कतिरवक। स्ट्रिकिश्वः দাধুহাতে পরিতৃপ্ত হইনা থাকিলেই তাহার সঙ্গে সঙ্গে অভিমান আদিয়া যেম্ন ধর্মো-নতি সাধনে প্রতিকূলতা করে, লোক-চকুকে ধর্মের পরীকা স্থান করিলেও সেইরূপ नाम भरम रिश्व छेश्भव रहा। आरकाक धर्मा-ৰীর বনে ইহা নির্ভুর জাগকক থাক। উচিত एकः भागात उन्निक्टिक नशक्त मूर्गी इन अ शामात पूर्विटल रक्कार क्छ त्याध करतन, **একপ ধর্ম বস্কু ও উপদেন্ট।** থাকিতে পারেন बट्डे. क्या जगानि भागात शान भूतगत अ अने अरबह साम्य नाही (करहें नाहे, त ক্ষেত্ৰ সাপৰিও গৈ **যাকি** লোক-চফ্কে विश्व मा करिका, जानमात्र जल्डमारी, शाश-रिकार नीकी के बनदात निमन्त के भरता

উপর বির্ভির করিয়া চলে, সেই বাজিই অধিলয়ে ঈশরের প্রদাদ ৰূপ শান্তি প্রাপ্ত হইয়া থাকে। অতএম ঈশরে অন্থরে যে সকল আদেশ ও উপ্রদেশ প্রেরণ করেন, তাহা পাঠ করিতে ও হালার উপর নির্ভির করিতে অত্যাস করিবেক এবং কেবল ভালারই নিকট করিলে পুনোর দও পুরস্কার প্রতীকা। করিয়া থাহিবেক।

বৰ্ষান বাহা অবভাৱে এতিকুল ভাবিয়া ধর্ম রন্ধির নিমিত অবস্থা নিশেষকে প্রতীকা করিয়া থাকা ধ্যোদ্তি সাধনের ष्यात अकृति हिङ्का शक्षेत्रका वर्षे मानग्यद সময় নয়, সংসারে প্রবেশ কবিয়া ধর্ম माधन कतितः, योजन काटन धन्य माधन हरेदव ना, वार्क्टका धर्म माधन कतिव. विवा क्ट्रामेत अभव धर्म माधन इस नः व्यवस्त কালে ধর্ম সাধন করিব: এরপ সংকাপ 😗 আশা প্রায়ই বিফল হইয়া থাকে। **এই क्ष मीर्यम्**जि**ठ। कति**या धर्म आंधरन বর্ত্তথান কালকে উপেক্ষা করেন, তাঁগারা দিন দিন পশ্চান্তাপের কারণ সকলই দঞ্চয় করিতে থাকেন। ৰিনি হন্তগত বৰ্ত্তমান स्ट्रेडिक अन्तिन करतन. ভবিব্যাৎ কাল निष्ठूत इहेशा छाहाटक क्के मान करता। ভাঁচাদের সংকশ্পিত খ্যাত্বা হরত কোন কালেই উপস্থিত হয় না; অথবা উপস্থিত इंहेटल अर्थे वृर्वेव देश अन्दर्भका । अर्ले अया इत विश्व मकल अपर्मन कतिए थाएक। धड़े ৰপ একটি উপাথ্যান আছে—নদীর স্প্রোতঃ भकल जन्मागंड এक पिटक ठलियां याहेटटट्ड দেখিয়া কোন পথিক বিবেচন। করিল যে, পার হইবার নিমিত্ত কট ক'পেনা করি-वाद अरहाकन नारे, धरे करण मञ्जूषा ভোতঃ চলিয়া গেলে নদী অবশ্যই গুক हरेगा गा**रेटन, उथन जनातारम अम्बद्ध** গমন করা যাইবে; কিন্তু ক্রোতেরভ শেব

হইল মা, প্রতীক। করিতে করিতে পরিকে-द्रहे कीवम् त्यव इहेता। अञ्जब अर्त्याम्ब मायदन नीर्थस्तिका ना कतिया, " খঃ কাষ্ঠ্য-यमा कर्डवार शृजीहरू ठाशक्रीक्रिकर । असरि প্রতীক্ষতে মৃত্যুঃ ক্রতম্য। নরা ক্রতং । কল্যকার কার্যা অদ্য করিয়া লও ও অপ্রা-ক্লের কার্যা পূর্বাক্সেই সম্পাদন দের ; ভূমি কি করিয়াছ আর কিনা করিয়াছ, মৃত্যু তাগার জন্য বিলয় করিবে না, ইহা সারণ कतियः। पिन पिन श्रृणा मक्षय कतिरकः। বালক অবণি রুদ্ধ পর্যান্ত সকলকেই জিড়্ছাসা कत्र, नकरलरे कहिरत, जीवरनत ध्यम अवधी অবস্থাও নাই যে, তথন কোন বিম্নের সহিত मः शाम कतिए इहेरव ना। কীড়া শক্তি, যৌবনে ভোগ লাল্যা ও वार्ष्ट्रात्म वियाग द्वरुक ङ्गान्छ्या ध्यांक्रांक সাধনের অত্যন্ত অভ্নার। वसुकः विस्मृत সহিত সংপ্রাণেই ধর্মোন্নতির এধান কারণ। আজি একটা নীচ কামনায় আসিয়া ক্লান্তক মলিন করিখেছে, তাহাকে জার কর, ধর্ম-প্রে কিয়ন্ত্র **অগ্রস**র চইরে।

বাষ্-আড়ম রর न्दियान দাধুতার পরিমাণ না কলিয়া, মারু ≢ইবার জনা অকপট কেকাতেই দাধুতার হৃদ্ধি হয়, है। मत्म शांकितः धनकः दिश्रंग यात्र धर्म भाषान्त व्यक्षताय विनयः छय इहेरव ना। ঈশর পরিশ্রমের পরিমাণ অনুসারে পুরস্কৃত করেন। ধনবাহ্র ও দরিত, রাজা ও একা। প্রভূ ও ভূতা, পিতা ও পুত্র, স্কুলের পক্ষেই প্রেল্ডি সাধন আবশ্যক এবং সকলের भरकरे छाहा माथा। बाह्य अवसा स्वेत्राहे হউক, যে সকল ভান্তরিক মহৎগুণ্পৰি চিন্তা, সাধু ইচ্ছা, ভক্তি, প্রেম, ন্যায় কর म्हेटल मर् चक्ल वर्ष जन शहन करते, होसाई অনুসরৎ পূর্বক ধর্মপথে অগ্রসর হওয়া বি শট্টালিকায়, কি পর্ণ কুটারে, কি বিদ্যালয়ে

कि कर्ष क्रिटंड सर्वेड विश्व बहेटन यागत माधु रहेगात साम्ब्रिक हेन्स जारे, जारात्क विवासीय क्षेत्र मासा काम किन्द्र मित्लंख, एम्बन महाजावर्षत्र क्रम क्रमी वनवानी रहेशाध रहित्य माधार है से सहस कर्णानाम कडिया किलात, त्यके कमारम বাজিও ধর্মের পরিবর্তে পাপের সেরা করি-য়াই পবিত্র তীর্থ মন্দিরকেও কলভিত করিয়া शास्त्र। जिनात यथम त्य व्यवसात त्रिहेदन, क्यन त्महे अवदारक्षे माथू शाविवात निमिष्ठ ও শাধুতা রৃদ্ধির নিমিত্ত যত্র করিতে হইছে: धर्म मण्यदम्त अविज्ञा मण्याम्य कदत् पर्म বিপদের ভার লয়ু করিয়া দেয় 🖟 **নুকল** অবস্থাতেই ধর্ম দেবনীয় ও সাধনীয় হইয়া থাকে। যিনি শুদ্ধ ঈশরের দৃষ্টিতে ধ্যুদ্দিক थ कियात कना अक्शेंट क्यें। क्रियन ভাগর চেকা কথনই ফলগ্না হইবে না। देशात वाक अनुकान यक्ति विकल क्हेग्रा যার, তথাপি তাঁহার আহরিক পৰিত্র কামনা ইশরের চক্ষুতে ক্থনই অপরিগণিত থাকিবে ना। "स्ट्रिं कार्याः यक्तः भक्ता त्नोत्हर প্রাপ্নোতি মানবং। প্রাপ্নো ভাতি ছব্পুণ্য-गळ (म नास्टि मश्मवर ।"

হিন্দু-শান্ত্ৰ ও হিন্দু-জাতি।

আনরা নিংসংগরে জরসা করিতে গারি।
যদি হিছুকাতি পুনরায় পূর্ব কালের নাগে
নর্দায় বিজ্ঞান্তের সকলে আলোচনা
করেন, তাল ভারের নংগাল করি এনা
করেন করেন করেন লগে না, মুন্তুর
লারের কংগা বেলন লগে না, মুন্তুর
লারের করেন করেন করেন করেন করেন করেন
লারের উল্লেখ্য বেলান করেন করেন করেন করেন
লারের উল্লেখ্য কত সূর্বান করেন করেন করেন
লারের উল্লেখ্য কত সূর্বান করেন করেন করেন

कारात निकटि त्यदे अविशास क्षेत्रांग निकाय रागारिकान रहेशा किर्फ । संश्राह्मा त्वम गाहि পুরাণ তন্ত্র ঘাঁহাদিদের পৈতৃক সুপত্তি. उंशिष्ट्र शटक अख्यान कहिवात मर्थि नामधी विजामान चाटक, ठाकात किंकू माज मत्मर नारे; किन्नु यनि रेश कानिए भाता যায় যে, সেই সমৃত শা স্তার অধ্যরন অব্যা-পনার কথা দুরে থাকুক, ভাহার অধিকাং নের নাম পর্যান্ত বিলুপ্ত চইয়া গিয়াছে, তথন সেই অভিযান বিজ্যনা বাতীত আর কি বলা যাইতে পারে ! কোন গলীআমে কতকগুলি অ্শিকিত সামানা লোক অব-স্থান করিত, ভদ্র লোকের মধ্যে সেই आर्य छोहारमञ्ज भूरताहिक याज हिस्सन, শাস্ত্র বিষয়ে তাঁহারও কোন জ্ঞান ছিল না। ভিনি যেন তেন প্রকারেণ আম বাসীদিগের যালা ক্রিয়া করিয়া **জীবিকা নির্দা**হ করিছেন। কিন্তু শান্ত বিষয়ে অনুরাগ থাকাতে ভিনি পুত্রকে নবন্ধীণে স্মৃতি শাস্ত্র অধায়ন করিছে পাঠাইরা দেন। পুল প্রায় দশ বৎসর নব-খীপে থাকিয়া মৃতি শাল্লে সুপঞ্চিত হইয়া গুহে প্রভাগমন করিলেই ভাঁহার পিভার পরলোক প্রাপ্তি হইল। সুতরাং পরিবার পালন ও যজগান রক্ষার ভার-কাহার উপ-त्रहे পड़िल। क्थार्लि किनि नर्जगृहे नाज চিন্তার কাল যাপন করিছেন। যজমানের। ওাঁহার পিতার সমরে যে ৰূপ করিভ,তদনুসারে প্রতিদিন ক্ষেত্রের কর্মাদি সমাপ্র করিয়া সায়ংকালে তাঁহার নিকটে আসিয়া বসিত। কিন্তু তিনি সন্ধ্যা বন্ধনাদি ও শাক্ত চিন্তার অনুরোধে ভাহাদিগের সহিত অধিক আলাপ कतिएक शानिएकन ना। अहे मिशियारे यक-मान निरुशंत मान कांबात दिना वृद्धि विषद्य বংশর জালে বিশেষে এক দিন কোন प्रज्ञान जारतीय क्रिक् क्राव्य निम माण्याह विविक समाग्र सिक्के वार्तिश

किछाता करता। किनि यथा द्वीकि निन दित कतिवात निमित्र देवान् मारमत दकान् তিথিতে তাদার পিছার মৃত্যু হইয়াছিল, **जारा किकांग। करतन । जारात धार्य स**निवा माजरे, (मश्रास एक लाक हिल, मकटलरे **छेनदाम पूर्वक दाया का**द्रिका केरिय, कवर डीवात भिष्ठा क्य उदम् । केवाब समा पुरा বায় করিয়াছেন বলিয়া আক্ষেপ করিছে করিতে এখান করিল। ক্রেম সমুদায় মঞ্চ-ধান বিষ্টিত হটবার উপক্রম হইল। ভাতার कीविका निर्वाष्ट्र कात करेता केरिल পিতা কি ৰূপ করিয়া আলেকিচ ব্যবস্থ **এদান করিতেন, তালা টাছার গভ** খাটি कानिएक। ठिनि भुजरक धरे छेशरम्य করিলেন-ভুমি সন্ধ্যাত্নিক ও শাস্ত্র চিন্তা সংক্ষেপ করিয়া ক্লবি কর্মানির কথা লইরা তাহাদের সহিত আলাপ করিবে এবং त्कर आएक्त मिन क्रिडामा कतित्त, त्य मिन हां विनिद्द, काहांत शतमिदन आदक्त দিন হির করিয়া দিবে। ভৌমার পিতা এই ৰূপ করিতেন: পুত্র হতবুদ্ধি হইয়া ष्मर्गठा। (महे शथ ष्यवलयम क्रितिमः। एक-गात्नता महा मकुके इहेशा शूनचीत बानुशकः कतिए लाशिल। आशादमत हिन्ह मशाक अकर्प (मरे क्ष यक्ष मादन भूर्व इहेगा छिट-রাছে। শাস্ত্রের আলোচনা আর কে প্রত্যাশা করিতে পারে।

যাঁহাদিগের উপর আমাদের শাস্ত্র রকার তার সমর্পিত আছে, ত্রালারা বছ-মানের পাত্র তাহার সন্দেহ নাই : কিন্তু ছংখের সহিত কহিছেছি, হিছুদিগের শাস্ত্র-সিকু বস্ততঃই সম্মুখে "অস্পুত্ত ইইয়া প্রান্ত্র আছে, " তাহারা "কেবল তীর্গ্রিভ উপল খণ্ড সংকলম করিয়া" আপনাদিগকে শাস্ত্রী বলিয়া অতিমান করিতেহেন। শাস্ত্র সক-লের তালিকা করিতে হইলেও কপ কঞ্জু थेश फेब्रुदर्शिमी शकिका व्यक्तिक देशी কিন্তু ভারতবর্ষের, বিশেষতঃ মদ দেশের শাল্রীদিগের পাঠের পরিমাণ করণ করিলে মুগপৎ ছুংখ ও লক্ষায় অভিভূত হইতে হয়। সংশ্ভি ও ত্রাক্ষণের সহিত যে প্রকাণ্ড বেদ চতুষ্টর সমুদার হিন্দুশান্তের মূল বলিগা সন্মানিত হয়, একণে তাহার পাঠ ও পাঠনা কি ৰূপ প্ৰচলিত আছে, তাহা অনুসন্ধান করিলে আর কোন্ ব্যক্তি ইহাদিগকে শান্তী বলিয়া স্বীকার করিছে পারে । আর্যাব-র্তের মধ্যে কাশী ও দাফিণাতোর মংল कळके हिं स्टिन व्यक्ति अक्षासन ७ अधारिनः पृष्ठे दत्त व**रहे** ; कि**ष्ठ जानाक** हे ग्रंकिशिक खन्य यांक शांठ कतिशांने कांग्र इस करेंद योशाता शांक्र करतम, भेगारमत मरव। व्यनि-কাংশই ভাগার অর্থ জানেন না। ব্লচেশে সেই আদি গ্ৰন্থ বেদের কি ৰূপ পাঠও शार्रिमा इत, कामत शतिहम आंश्व व्हेटल এবং তাহার মঙ্কে সঙ্গে শাস্তাভিমানের কথা অরণ করিলে হাসা সংবরণ **জ্ছার হই**য়া हैर्छ। दोनाकारन छेलनग्रदन शत मचार নামক যে কএকটি মগ্ন অভ্যাস করিছে 📆, बाजात (क.न् मञ्जिष त्कान् (तम व्वेटक छेन्न) व হইয়াছে তহো এক জনও জানেন না, এক শত অন্যাপকের খলে এক বাজি গুণবিষ বা কালেশী শুভৃতি অংগ যোন **টাকাকারের** ধারামা জইয়াও মাহার অর্গ করি**তে পারিলে** মধা গণিত বলিয়া গ্রিগণিত হন। সেই নহ্মণাট্রকু মাত্র রহমেনের কেল পাঠের নীমা। ভদ্নি, বিবাহাদি গৃহ কমি ও ব্ৰহ্মতিতাসির কু শতিকানুষ্ঠান কালে যে কএকটি বেদমন্ত্ৰ পঠিত হয়, অর্থ বোধের কথা দূরে থাকুক, ভালর উচ্চারণ-দরিজ্ঞা দর্শন করিলে অত্যন্ত ক্ষোভের উদয় হয়। স্মৃতিশান্ত-বিশ-त्रक ज्ञान देश परभक्ता जूमिक्द्र नदर । भाभनाशम अपृष्टि महर्षिनेन व्यटनत विश्वीन

वीका वार्व वीक्षिपन के मुश्रक्त वार्गात वावरात्र मकल व्यवन कतिया (व सम्बद्ध (वा) छ, গৃষ্ঠ পু পাণৱাচারিক হব আছিত করিয়া शिशोर्यन, योशांत्र छारश्या मस्कलम शूर्वक মানবীয় ধর্ম-শক্তি এছতি স্মৃতি সংহিতা मकल शत्रक हरेबाट्स, चार्खवाशी निम्हान महिल बालाश कतिरलहे मुक्के हहेरत, जीहाता তাহার তিলীয়ায়ও পদার্পণ করেন নাই। মনু-সংহিতা অতিসংহিতা ৫ ভৃতি মূল স্মৃতি সমু-দায়ের পাঠ ও পাঠনাও কোন চতুম্পাঠীতে नुके इहेरव ना। नवधील निवानी तथुनमन ভট্টাচাৰ্য্য অটাবিংশতি তত্ত্ব নামে যে দামান্য সংগ্রহ মাজ করিয়া গিয়াছেন, যিনি তাঁচার ভালে।পাত পাঠ করিয়াছেন, তিনি একণে প্রধান আওঁ বলির। পরিগণিত হন। পুরাণ ও উপপুরাণ সমুদান একতা করিলে রাশীকৃত ছইয়া উঠে। তাহা পাঠ করিলে কেবল যে পুরাতন আচার ব্যবহার মাত্র অবগত হওয়া যায় তাহা নহে, ধর্মতত্ত্ব নিরূপণ ও ঘর্মা-ৰুষ্ঠান বিষয়ে অভান্ত সাহায়া লাভ হইতে পারে। খাঁহারা কেবল পাঠকতা ও কথকতা বাবসায় করিয়া থাকেন, পুরাণের যাহা কিছু मामामा छड् कियल दीशामिश्वर निकछ প্রাপ্ত হওয়া যায়। তক্ত্র শাত্রের সংখ্যাও নিতান্ত অস্প নহে। কিন্তু যাহাতে গুরু-দিগের শিষা রক্ষা ৰূপ বাণিক্যা মাত্র চলিতে च्छ्रभरगाभी कतिया हुन्यानम् य मर्बर कतिशां एन, छारात्र कितेपरण गाव পাঠ করিলেই তব্ৰ শান্তত বুলিয়া প্রতিপদ इंडरा यात्र।" सन्। ना नार्यात्र नार्य भूम **७.अ.७ श्राप्त निर्मू न वर्षेत्रा উ**टिटिट । याहा-निरंगंत भूष-माञ्च गरुन धरे क्रश भ्रवणिक হইয়া আছে: ভাহাদিগের শালাভিয়ান বিভাৰৰ বাতীত আর কি হুইতে পারে। বে জাতি কথায় কথায় লাজেয় লোভাই विशे करनेन, भारत्रत गरिक विशिविद्यत

এই কপ পরিচর। কিলাপে সংশাস বিশ্বে মুর্বের এক লেখা কিলাপি সংগাদ সময় শাস্ত্রেলিকে সংশাস কর্ত্তিক সঞ্জাসর।

্যদি কোন অনুধানশীল ধীর হিচ্ছশাস্ত্র-

ৰূপ সমুদ্ৰে অবগাহন করেন, তিনি ত্রিভিড

রত্নবাজী নিরীক্ষণে চমংকৃত হন। বিশ্ব হিম্পাতি ভচুপভোগে ব্যিত इ.केश् আছেন। একণে বাহা হিস্ত্ধম বলিয়া প্রচলিত আছে, তাহার কিয়দংশ শাস্ত इहेर्ड हेर्पन, किंग्रम्श्य हाडात हालप्रस् किञ्चन्द्रभा ग्रुमलयाम्बिट्याः मध्य वस काल बर्गकी महत्वदब वास, किंगबर व विकिशीय ান্ত্ৰীত আভি-বৃদ্ধিৰ পৰিত্ৰীয় এবং নল কিল্পী ও জীক সভাব का लाउ। कहे HOME THERE KNOW HE TO THE LOSS OF LEAST 2008年5日 **建**代 \$\$1955年 William House you 我有我们 女事 1951 1950 2 'effen Ebn' where the second section with more sec news account and a something PROFES PROPERTY. train 250 विश्वकारित उन् अस रहेश निवादक । त्य कांन वाद्धि विश्व भगाइका वर्षणा थाडाह वावनात तीकि मौति ७ भवानुष्टांन अनानी चिनिद्वम शूर्वक चात्नाहना कतित्वन. कांगादकरे चारकम क्षिट्य महेदव खबर ग्राम মনেও অন্ততঃ তাহার কিল্লনংগের পরিবর্তন कतित्व नश्यक्त अविद्य । विका द्वाक मारबारे रेश चीकांत्र कहिरवम रा, अर्थारे नन्द्वात बेरिक ७ शाव्याक डेबाल्य पृता। त्व कावित्र माना त्वरे भारत भूकतीत धर्म कोल अस्त्रीत नरहे स्थानना निर्माहरे (मार्च)

माध्य पांत क क्रवक्वा हहेटव भारत > बिना धर्म जात ममुनाम छेवछिरे क्य छ्य শরীরে খলমার পরিধানের নাায় কেবল ক্লেশ ইন্ডির কারণ হইয়া উঠে। ভিন্তু শেষর श्रवसाय नामा कार्य चाट्य, जमस्या वर्य-শাজানুশীলনের অভাবই প্রধান বলিয়া প্রতীয়বান হয়। যে প্রকার ধর্মাণাস্ত্রের चनुर्योतन व्हेट्टह, छेट्टा ता क्रम छेति-विक व्हेपाइक, कम्मूनारत हावा शास्त्रात তপুলকে দুৰ প্রাম্ছ করিল ভুষ লইনা : মত্তা এলশ্মি ভাতীয় ছার ছিতুই মতে: তুৰ ভক্ষৰ কৰিলা মনুবোৰ শৰীৰ আৰু কচ দিন হিন্তিতে পালে গে দক্ষ উপ্কল্প এমৰ প্ৰাণ পুষ্ট কাতে করে, শাস্ত, দক্ত ष्टांटा मधाक्षाह्तन राहिष्ट विरु १०४८ जारक अवर उद्भारत अभाग दना क इंड्राट. বাঞ্জাকশ্পতরু প্রমেশ্বরের হন ভাগার জন্য धक रहेगा चारह : छात्रध्यतीय मत महित क्षम्य मन्द्रित भवदक स्थान भाग कतिए। क हिन करणा किय है। दिख्य है। दि अ माहाई यालमान गाम कुठावायाक कति ह কে জীয়ে উদ্ধার করিতে পারিবে ! যাথা কি भारती मण्यम्, राष्ट्रा अन्य आगार सण्यः ५,७०, काल कोवम अवस्तार अन्य अवस्ता राज्य Fre wife bir frug e ert in 1994 WITH PURE BUTTON AND मा उद्योगंत परेटक्ट्या उत्तर संच रिक् कांक्ति देवक्ता रह—सीम भाज स्टेटर अभाव হন্তু ও ধর্মনীতি সকল আহর্ম করিয়া ভারত-বৰ্ণকে শুনক্ষীৰ কৰিতে চেকা পান, ভাছা वरेता अवस्थ कार्यास्त्र कविषात अथ सक 養養性 计对象子

गावात-छेणानकिंगत अश्व।

সাকাব উপাসক হিল্মদিগের মধ্যে यरनरक धरे क्षेत्र फिड्डाना करतन "আগরা মনের সহিত বিখাস করি থে, क्रमत भद्रौदी, ५वर এই दियाम अनुमाद्र লাহার উপাসতা করি। যদি ঈশর শরীরী का दस, डाइ। इडेटल कि धरे छेशांत्रका, बि-पाल ध्रांत, अथता हेश इरेट अला कल ্উৎপন্ন চইবে : ঈশর অন্তর্যামী, তিনি আমাণের মনের ভাব সমুদায়ই কামিনা ट्रन, आयारमहा १ ५८ ६ व আমরা সের্বার বার বার্থানির প্রার্থন থাকি থালিল। এম-মুলক লগ্তারে কি हेरा भाष कथा दांगिया भग बहेरा। " मामाग घटना शाला कारते अने कश्र विकासिक बहेसा থাকি ৷ অত্তর একবার পরিকাতে এই অ-শ্বের আনোচনা হরা আবশাক হইতেতে।

श्यभक्ष- यति ७ खम इंट्रेंट सामाविश भारभत देवलिय कोर्टाइ, उशांनि सम ए পাপ এক প্রার্থ বলিয়া পর হইতে পারে মা ৷ প্রামাত্র চাক্তিক **নিয়মের নাা**য় অপ্রিবর্তনীয় ও সনাত্র ধর্ম নিয়েম সক্সাও ৫ হিছিত করিলা রাখিয়াছেন। জ্ঞান পূর্বক हरें ए. १४ (त्र काळान शूर्चक इंडेक (महे **मयख** वना विश्वासत् ।दर्भागी लख्यम कहिलाको । नाम ত্রা তবে শক্তানকর পাপ অপেকা ভ্রাম-রুত পাণ যে শুরুত্র, তাই। সহজ বুহিল তই প্রতীয়মান হ'হবে। স্বশুরুকে শাকার বৃথিয়া বিখান করা একটি হাছিল পাপ নছে: 🐠 ভাতির স্থিত ধর্মনীভি কি পরিমাণে লাজিত ও কি পরিমানে প্রাছিলালিত হয়, ভাষা লই-য়াই পাপ পুণ্ডের বিভার উরিতে হয়। স্থূল বুদ্দি লোকে লাবাকে কড় বলিখা **দেখিতেছে** ; ट्रियान् लाटक छोहाटक उद्यक्त नात्र मा जाविशा मनुस्थाह

नगात्र भतीती विनित्त कार्विटक्ट , व्यक्तरक তদপেকা উন্নত হইয়া তাঁহাকে অশ্রীর विलाता वृतियादहन ; किंख किं। या मानत धर्म मकल छाहाटक चारताल कतिरक्टम : অনেকে আরও উন্নত হইয়া ক্রোধাদি প্র ভাব হইতে বিমুক্ত বলিয়া ভাবিকেছেন वटि. किछ পরিমিত আত্মার দরা মারা প্রভৃতি ভাঁহাতে ছারোপ করিয়া ধ্যান করি रक्षक्र १ १ वर्ष क्**रम्यकः उनके वर्षमा**न CHARLES BY MURRE MITTERS सम्बद्धाः । करणान्यः करणार्वेशाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः . ा दिन म क्रिडिट्स — क्रे बार्श ৰব্ৰ হ'ছ বে।পানে সভোৱ সমিছিত হইতেই হইতে পরিশেযে এক্সত সহ্যালাভ করিতে-ছেন: ইহার কোন দোগানে আরোহণই পাগ বলিরা গণ্য হইতে পারে না। দতে।র অবলয়নে যে ফল উৎপন্ন হয়, ভাঙি হইতে কথনই সে ফল প্রত্যাশা করা मन्या आधनात छान उ खन्माद्र यास किंद्र सलिएक्स, फाए। **मंद्री** ्टेट छं । भारत, भिष्या । इस्ट्रेस १ १८३ / পরিমাণে তাতা সভা হইবে, সেই পরিমাণে ত। হাইতে পর্যালাভ হইবে। কেন্ত যদি বিধাকৈ সভা বলিয়া বিশাস थारकन, विश्वारमञ् छर्ग स्मरेभिथा कमानि महा इहेश छेठिटिं मा जादः मट्डात माप्र ফলও উৎপদ্ম করিতে পারিবে না। পূৰ্বক মিথ্যাবলয়ন ও সাক্ষান পূৰ্বক ভিখ্যা-दलाम अक टानीएक मेनिक रह मा बटके কিন্তু অভ্যানক্রড মিখ্যাও কদাপি সভ্যের कामत्न डेभर्दर्भन कतिए मम्ब नरह। 'ৰুকপটে আপনার জ্ঞান ও বিশ্বাস অনু-भारत हिना यकि जासिक शिक्ष होरे हत, छोड़। हरेल म खांचि क्रांश कर्या नाम मधनीय नय दलिया तम सना करनी माति भूतकात्र त्याना हरेट्द छाहा अतह ।

विभवाशी बनाजा गतीत बन कर पाव-त्रता आह्छ नदश्न। अप शक्ष गृको তিনি मृचित्र भूटर्ब ३ राउँमान हिटनेस शहत जिनि त कड़ मृद्धि कतितमन, तमेर कड़ পদার্থে নির্মিত শতীরে বাস করেন বলিলে दमट्याबाचार इहेगा छेटि । खड धव स्मा-ब्रदक गतीती विनिहा त्य छहान इस, छोटा मुद्धा मत्र। याहाता भंतीती अभवत्रक शाईनाव **कना (ठके**। कतिरङ्क्न, डांश्स्वत (ठके। कर्यमहे मकल इंट्रेट्स मा. क्लमा मिक्स नेवात নাই। ভাঁহারা এখানে নিরাকার ঈশ্বরে শ্রহা করিতে অভ্যাস ফরেন না, **সুত**রাং कैशिएक लांच कतिवात शरफा कैशिएमत स्य ব্যাঘাত ঘটিতেছে, ইলা অপেকা অধিক कुडीशा चात कि इंडेटड शास्त : विनि श्रमास বাস করিতেছেন, তাঁহাকে দুরত্ত ভাবিয়া वाहित वाित वृथा समन हरेएएए, रेहा অপেকা কটোর বিষয় খার কি হইতে পারে? গৃহে ধন থালিটোও সলি দরিজ্ঞতার কর্মে भाराकात कतिएक हर १८५ ऐश व्यालका ्माठमीय मना चाल कि इट्रेंट भारत ?

বিভারত'—অনেকে মনে করেন বটে যে, ওাঁহারা নিজের জ্ঞান ও নিজের বিশাস অনুসারে চলিতেছেন : কিন্ত ইহার মূলেই ভূল হইরা পড়িতেছে। ওাঁহারা নিজের জ্ঞান ও নিজের বিশাসানুসারে চলিতেছেন. কি মন্যের জ্ঞান ও অন্যের বিশাস অনু-যারে চলিতেছেন, তাছা অনুসন্ধান করিয়া দেখেন মা। নিজে যাহা হাত্যক করিলায়, নিজে খাহা অনুসন্ধান ও পরীক্ষা করিয়া লানিলাম এবং নিজে যাহা বুঝিতে পারি-লাম, তাহাই নিজের জ্ঞান ও নিজের বিশাস হইল। কিছু ঘাহারা লিখাকে সাহার বলিয়া বিশান করিছেছেন, সে জ্ঞান ও সে বিশাস কি জাছাল নিজের ক্ষান ও নিজের বি-নাম ক্ষান্ত নিজের ক্ষান ও নিজের বি-

भक्तवाल कतियां का निशास्त्र ? ना करनात বাৰ্কা ও লেকার উপর নির্ভর করিয়া কেবল মনে করিয়া লইতেছেন ? ঈশ্বর ঐতি-ব্যক্তি-কেই নিজের জন্য দারী করিয়াছেন, প্রতি-বাজিকেই ভাল মন্দ বিচার করিবার শক্তি দিয়াচ্ছন এবং প্রতি-ব্যক্তিরই অন্তর্গামী হইয়া " বুকি হৃত্তি সকল প্রেরণ করিতৈছেন" "पिरबारमानः १८५% महार । " याहाता हेहात छेशव एकि ना बाविशः कानाव वादका अ লেখায় বিশান করিয়া ভাড়িতে গতিত হন, छै। हो दिन्त तम संस्थित निर्देश के से विश्वाम षमुमादत हलांटर हेर्यन हम साथे। शक्राह নিজের জ্ঞান ও নিজের বিশাস প্রুমারে मा ठलाउँ छाङ्। देश्या इहेमाटङ। एव वाक्ति जाशनि विष्ठांत कतिया (मर्ट्स, क्रेश-রের যে শরীর আছে, ইহা সে কংনই বিশাদ করিতে পারে না। শরীর পঞ্চভূতের সং-যোগে উইপন্ন হয় - সুতরাং তাহার এক জন নিৰ্মাতা চাই। পূৰ্বে কোন ভৌতিক পদাৰ্থও निष्टतत भंतीदतत कमा (क ভৌতিক পদার্থ সকল সৃষ্টি করিল এবং কে তাহা সংযোগ করিয়া ঈশ্বেরের শরীর নির্মাণ করিয়াছেন। যদি কেই বলেন, তিনি আপ-মিই আপনার শরীর নির্দাণ করিয়াছেন, তবে তাঁহাকে অবশা স্বীকার করিতে হইবে ए. तरे भंडीत निर्माण किंत्रवात शुर्व केंग्रें व्यवित्री हिल्लन। यिनि भूद्र व्यवित्री किटनम, छिमि अपन अनतीती हरेगा नारे ইহা কে জানিল ৷ বস্তুতঃ আপ্রনা আপনি विष्ठांत कतिया एमिएलाई व्याव इहेंदव (य चन्छ. एएटवर महीत थाकिटछ পांदर ना। আপনার চকু মুদ্রিত করিয়া রাখিলে যে দশা হয়, আপনার জ্ঞান চকু উন্মালিত क्तिर्छ हिची ना क्तिर्ल (महे मना च्यारिक, णशिंद्य मत्मर कि।

क्केप्रकः—कान **अ निकान** त्व कल्हे

क्षेत्र क्षेत्रपृष्ठी कार्य पावन वर्षे स्व পারে না , প্রত্যুত্ত ভাষা বে পারিবাবে তর্ন প্রতিষ্ঠিত সনাতন মর্থনীতির বিক্ল , एरेटर সেই পরিমাণে ভাহা হইতে পঞ্জৰ কৰা উৎ भग रहेरत। *(कर व्यक्तिक वर्ष विभिन्*ति বিশাস করেন বলিয়া কদাপি তালা বৰী हरेश छेठित ना। कान त्नताह दनादक नतविल अमान धर्म विलश विचान करते, कान मन्त्रमात्र बना धर्मावलको मिर्मा बान সংহার করাও ধর্ম বলিয়া বিশাস করে, কোম কোন শাব্দে শদাপান ও বাভিচারও ধর্ম-विधि विलिशा निर्द्धन करत्र : क्विक विश्वी-त्मत्र क्षार्ण यमि करे मञ्चलाश धर्मा विलया गेना र्य, এবং ধর্মানুষ্ঠানে যে দকল ফল উৎপন্ন ি হ্ইয়া থাকে, ইছা হইতেও যদি ভাষা উৎপন इब्र, अवः के नकल अनुकादन उपि मनुद्वाह আত্মা পাপ রোগে আক্রান্ত না হয়, তাহা इहेटल धर्म भिकातंत्र अद्याजन गाहे, अर्थ विवदत क्यांत्मावित ७ धारताकन मारे धारः ধর্মাধর্ম পৃথক্ করিবারও এরোজন নাই; िर्देशना त्व यादा धर्म काम कतित्व, राहार्ट्स ভাষার পরিত্রাণ হইবে। অন্যকে দয়া করিরা य कल छेर शत्र इस. अनारक रुखा क्रिया क्वल विभारमत छटन महे क्ल छेरभन **হইবে : পতিত্রতা যে পুরকার প্রাপ্ত হইবেন,** াভিচারিণীও কেবল বিশাসের গুলে বেই কল প্রাপ্ত হইবে : কুলপাবন সৎপুত্র সাজা পিতার সেবা করিয়া যে ফল লাভ করিবেন, যাহারা বৃদ্ধ মাতা পিডাকক হতা। করিয়া **ट्याक्रम** करत्र, काराती अस्कर्म विकारमञ् **७८**न तमरे यम भारेटर ३ देश त्मन गणि किन जिन हरेटर ना । वेशकाटनरे पृथ्वे **नत्र, का**न कुछ भारभव सन्त अन्तानाहना दरेता शास-अल्लानक्रण शारशह अमार् अस्ट्राप्टना रहेशा चाटक । कान्कर भाग क नाकानक नारश भवभारे थटना नाहारे, कि

CONTRACTOR STREET, CO. The expression of the second CIEBLESCH, CITTAGESCHIES ARTICO ATTAINS FOR THE PROPERTY. रालिया **केमरिक्ड** रहेशारक अरश तकरल **नूर्य**-कारल नहें, अर्थन अ मगरह नमर्ट्य है शहर मान-केरिनन मरेवान थाल इक्ता बाब । दक्त दकान সাধন তে মদাপার ও বাভিচারও ধর্ম-নাম্-त्नत्र जन रिनशा जनूष्टिक इरेशा बादक हैश चरनरकरे जनगढ चारहन, शूर्व वाचलात गर्धा काम कानी पृष्टित निकटि वह मुना-मन मगरत् कर्यन कर्यन खंखाटार महत्रान প্রদান হইয়াছে শুনিতে পাওয়া যায়। ইহা অপেকা ধর্মনীতি বিরুদ্ধ কার্যা আর কি र्डेट शास्त्र । माधात्रवंड व स्टब्स् मार्गत् উপাসনার প্রভাততে ধর্মনীতি বিরুদ্ধ বিধি मकल विहिन्न इस नाई यटके अवर नारकान कमा नमा ध्यम नाम अङ्ख्ति अनुष्टान विषया राथके छेश्राहम अनल इहेशार वरते, क्षि चाकि कालि भूक क्लन । देनदिका षान शक्रि बनुष्ठान नकलई अधान विलिश शना हरेता बाटक। नात्रश्रदेश थाका, नजा কথা কওয়া, ভিতেমির হওয়া ও পরোপ-কার করা ভদপেকা গুরুতর অনুষ্ঠান বলিয়া दिस्विष्ठ रत्र मा। जेन्द्रक नाकात स्था उभागमा कतिरमं पर्य-मीकि विस्क नीम-কৰ্ম পৰিকাশে কৰিয়া অকাৰান কৰি-मन्त्रम, मधावादी, क्रिकेटिंग है निरंतान-काडी बरेडा अवस्ति क्या शरीके गाउर ! त्य जनमा मानाव-छन्तानक छन्छ असारत गवित प्रमानीकि नक्स शिविशासन स्वित्रक्सं, कारा अवस्थान । उत्पानानहान्सान्य পরৰ পুরুষার্থ লাভে বঞ্চিত হইটোও বাধু-कार मात्र महनात कर कर कांच हरियम, श्रापति नेरामने तारे । दिन्यः न्यूबर्वा विक-

चारत वार्तित चनुर्वे कतिया त्य कल कार्थ हिंदी, चनि जानि चलाठमादत त्नव शव कुर्जारगात विषय नरह।

পরিশেষে ইহাও উল্লেখ করা আবশ্যক रहेरब्दर त्य. त्नात्क त्य मकल भाजात्क অমাণ করিয়া ঈশরকে সাকার বলিয়া অব-ধারণ করিতেছে, সেই সকল শান্তেই ভূয়ো-ভূরঃ কবিত হইয়াছে যে, পরমেশ্র চিমার অদিতীর নিরাকার ও নির্বিকার: কেবল व्याप वृक्षि लाकिपिरशत बना काँडात इन्ड পদাদি কম্পিত হইয়াছে; ব্ৰহ্মজান হইলে क नकल निष्णु दशकन इस्।

প্রথম সৃষ্ট মন্তুষ্যের প্রথম দৈহিক-গতি, প্রথম ইন্দ্রি-বোধ ও প্রথম বুদ্ধি-ক্রিয়া সম্বন্ধে আত্ম-বৃত্তান্ত।

त्महे अथग ग्रुष्ट - यश्काटन आगात अहे আশ্চর্যা অন্তির সর্ব প্রথমে আমি অনুভব कड़िलाम--- भारते मुहुई कि आनम ও वियान-পূর্ণ তাহা এফংণও আমার স্মরণ হয়। আমি জানিতাম না আমি কি, কোথায় আছি বা কোথা হইতে আসিয়াছি। আমি নেত্র উত্থীলন করিলাম, আর কতকত বিচিত্র वञ्ज आभात रेक्तिरात शावत रहेल । कांढि स्थाटनाक, नौलावत गर्भन मखन, হরিম্বর্থ ধরাতল, মর্পণ-সদৃশ স্বস্কু জলরাশি, স্কলই আমাকে অধিকার করিল-উত্তে-निक कतिन ७ जागात मन এक क्षकात चनिर्वामेत्र चामक तरा शादिक हरेल। धरे नटना-कांच विचानके बाबाद बटन रक्षमूल ररेट ना वररेट जानि जावियंत स्र्या-मक्रमात्र विद्या कृषि निद्याल कविलाग,

रुउत्रा यात्र, छाराटक बक्तिक रुउत्राज मीमाना', निगीलिक कतिलाम ও এक श्रकांत क्रिये কফের ভাব মনোমধ্যে অনুভূত হইতে লাগিল। এই প্রকার অন্ধকারে আছ্র হইয়া আমার মনে ইইতে লাগিল, যেন আমার সমস্ত অস্তিত্বকে আমি হারাইয়া কেলিরাছি। প্রপীড়িত ও চমৎকৃত হইয়া আমার এই আশ্চর্যা পরিবর্ত্তন মনোমধ্যে চিন্তা করি-তেছি; এনত সময়ে বিচম্পাণের কল কল ধনি ও বারুর স্বন স্বন শক্তে একটা मर्गाङ्य मजीड-लह्दी छिथिछ इडेल. তালতে আমার অন্তরের গভীর 'এনেশ পর্যান্ত বিচলিত হইয়া উঠিল; আমি তংহা অনেকফণ শ্রবণ করিলাম ও শীঘ্রই আমার थर्कीक इरेल (यन आमिर के मधुत मही ।

এই নূতন প্রকার অন্তিত্বের চিন্তার আমার মন একপ অধিকৃত হইল যে, আমি णात्नाकरक शर्याय विमुख इहेलाम: আলোক ইতি পূর্বে আমার অন্তিত্বের অপ-রাংশ বলিয়া আমার প্রতীতি হইয়াছিল। কিয়ৎ কালপরে আমি পুনর্বার চকু উগী-लन कतिलाम, के ममल उन्हल शकार्थ भूनः প্রাপ্ত হইরা আমার কি অপার আনন্দ হইল ! প্রথমে যে আনন্দ হইরাছিল, ভাষা হইতে এই আনন্দ শত গুণ অধিক হইল : ও কিছু কালের নিমিত্ত শব্দের মোহিনী শক্তি মন २३८७ विमाग्न लड्ल।

শত শত বিচিত্র পদার্থ আমার এক্ষণে নয়ন পৰে পতিত হইল, ও শীঘ্ৰই জানিতে পারিলাম যে এ সকল পদার্থ আমি ইচ্ছা করিলে হারাইতে পারি ও ইচ্ছা করিলে প্রাপ্ত হইতে পারি—আযার সুন্দর অংশকে **गारे जामि निराम कन्निएक भा**ति । गारे প্রকাশ করিতে পারি। ইদিও ঐ সম্ভ शनार्थ जामात्र निकृष्टि आचि तृहद् । जामान वित्रा त्यं क्रेज़िक्त, क्यांत्रि कार्यात এটা বিশ্বাস হইয়াছিল যে ঐ সমস্ত পদার্থ আমার অন্তিজের অংশ মাত্র।

এই ক্রপে নিরুদ্বিম চিত্তে আমি বিবিধ বপ্ত দৃতি করিতেছি ও নানা প্রকার মনোহর স্থর প্রাবণ করিতেছি, এমন সময়ে মনদ মনদ ুুুুুুুুুগদ্ধ স্থীরণ আনার গাত্ত স্পর্শ-কর্ত আখার শরীর রোমাঞ্চিত ও পুলকিত করিল ও বার অক্তিরের এতি আপনা হইতেই এক একরে প্রীতি জন্মিন। এই সকল বিচিত্র ভাব দ্বারা উত্তেজিত ও আমার এই मुन्नद ७ भरू कल्डिद्या विविध सुर्थ स्क **१हेशा जापि जक्यां ए म जात्रां म १हेलांग. 3** বেন এক প্রকার অদৃশ্য শক্তি আমার শরী-ব্যকে ঢালিত করিল :- আমি এক পদ মান অগ্রসর হইলাম। আগেল এই রুতন স্বস্থা মনোমধো অনুভিধ জান্তি এরপ বিশ্বিষ্ট ও ছভবুদ্ধি চঠাল্য যে আৰু অ**এমর চইডে** मधर्भ करेलाम का अध्यात भरत प्रदेश रचन আমার অভিন্য আমা হাতে পলায়ন করি-তেছে: জামার শরীরের গতি নিবন্ধন বকন প্রদার্থের মধ্যে এক প্রকার আবেদালন केल विष्ट वरेशातिल । जामात महम इहेशाहिल লেন সকল্ট ভানচাত ও বিচলিত **গইতেছে।** অ'ষার মন্তকে হাত দিলাম, আমার ললাট-দেশ ৬ মেজঘর ল'ব খানো অ<mark>নুভব করিলাম</mark> -- সমস্থ শরীর স্পর্শ করিয়া দেখিলাম <u>.</u> ৩ৎকালে আমার সম্ভ অন্তিত্তের মধ্যে रखरे महाराजका धारान एक दलिया (१)४ ^{হর}ল। শ**দ ও আলোক খা**া পূর্বে দেরপ মুখ গড়ভব করিয়াছিলাম চালার জুলনায় এই অঙ্গটার যে ৰূপ স্পষ্টতা ও স্পূর্ণতা অংশর অনুভব হইল, তালতে আমার অন্তি-েয় এই সার অংশটার প্রতি আমার অংশ ক্ষারত অধিক আলজি **হ**ইল ও এক**ং**ণ অংশার মনের ভাব সকল ও পূর্বাপেকা যেন অবিক সারত্ব ও গভীরত। লাভ করিল।

আমার শরীরের যে কোন অংশ স্পর্শ করিছে লাগিলাম—সেই অংশটা ও হন্ত— এই উভয়ের মধ্যে যেন স্পর্শ বোধের বিনি-ময় হইকে লাগিল ও প্রতিবার স্পর্শ ক-রিবা মাত্র আমার আত্মাতে যেন একটা যুগল ভাবের অনুভব হইতে লাগিল।

অনতিবিলয়েই জানিতে পারিলাম, যে এই স্পর্শ বাধে আমার অন্তিত্ত্বে সমস্ত অংশেই ব্যাপ্ত রহিয়াছে, এবং আমার মে অগুরু পূর্বে বিন্ত,তিতে অসীম বলিয়া বোধ হুইয়াছিল ভাষার সামা এক্ষণে নিরূপণ করিতে সমর্থ হুইলাম।

এই ৰূপ অনেক্ষণ প্রীক্ষা করিয়া
দেবিশান ভাতীর আহ্লাদের দহিত আপ্নাদের অপিন নিরীক্ষণ করিছে লাগিলাম।
আমার হস্ত চমু হইতে যত দুরে লইয়া
যাইতে লাগিলাম, ততই আমার মনোমধ্যে
অধ্ত ভাবের উদর হইতে লাগিল; এই
নপ হস্তের গতি নিবন্ধন বোধ হইল যেন
এক প্রকার ভূতন অভিন্ন যোগ হইতে পলাখন করিতেছে— যেন ক্তকগুলি সমান
পদার্থ একাদিজানে প্রকাশ পাইতেছে।
তৎপরে আমার হস্তকে চক্র নিকটে আনরন করিলাম, তথন বোধ হইল যেন হস্ত
আমার সমন্দ শ্রীর অপেক্ষা বৃহত্ত ওত্তের
বাবধানে অসংখ্য পদার্থ আমার দৃষ্টি হইতে
ভিরোহিত হইয়া গেল।

আমার একণে সন্দেহ উপস্থিত হইল তে, এট সকল ভাব ঘাহা আমি চকুর দ্বারা অর্জন করিতেছি, ভাহা বোধ হল অমাত্মক। আমি পুর্বে স্পর্য দেখিয়াছিলাম যে, হস্ত আমার শরীরের একটা কুল অংশ মাত্র কিন্তু কি রূপে হস্ত একণে এরূপ বৃহৎ বলিয়া বোধ হইল, ভাহা আমি বুঝিতে পারিলাম না। একণে আমার এই প্রতিজ্ঞা হইল যে, স্পর্শেক্তিয় বাতীত আরু কোন ইতিয়েক বিশাস করিব না, যে হেতু স্পর্কেলিয় ছারা এ পর্যান্ত একবারও প্রবৃত্তিত বহু নাই ।

कहे बल नावधानणात कल नी छहे किला। आकारणात पिर्क मछक छेन्नछ कित्रा ज्ञानि हालाङ लाशिलाम— कके। छाल-तृ-रक्षत छेलात शिन्ना शिक्लाम। केष आहण्ड इरेवा माळ ज्ञान्न हरेता, के अलितिहिक लगार्थ-हिर्क स्नार्भ कित्रा। पिश्लाम, अलितिहिक विलाना आमात करे छना द्याव इरेल या के ब्राम्म क्षा आमात करे छना द्याव इरेल या के ब्राम्म द्यार्थत मक्शात मा इरेस। क्विल आमात इर्ड्डिक्ट स्नार्भ अनुजूठ इरेल। लत्रक्ष पश्कारल आलम शतीत व्याप्त कित्राहिलाम, हथम स्मृष्ठ-अश्म क्षत्र इन्छ छेल्डाइ व्याप्त ए छूछ इरेसाहिल, आमि छीछ इरेसा श्माह । वित्रा। माङ्गारेलाम ७ करे वात अथम कानि-ल म या, आमात वाहित्य अलार्थ आहर ।

এই মূতন আনিশ্জিরাটী মনে মনে অতন্তে আন্দোলন করিতে লাগিলাম, কিন্তু কিশ্চর হইল না, তৎপরে এই ঘটনাটার বিষয়ে অনেককণ চিন্তা, করিয়া এই সিদ্ধান্তে উপনীত হইলাম যে, যে প্রকারে আনের শরীরের ভিন্ন অংশ সমুদার পরীকা করিয়া দেখিয়াছিলাম, বাহিরের বস্তুও সেই রূপ করিয়া পরীকা করা উচিত। স্পর্দান করিলে কোন অন্তিত্বই নিশ্চিত রূপে জানা যাইবে না।

একণে আমার এই চেফা হইল যে, যাহা
কিছু দেখিব তাহাই স্পর্শ করিব ; স্থাকে
স্পর্শ করিতে আমার ইছা হইল, আমি হস্ত
প্রশারণ পূর্বক স্থাকে ধরিতে গেলাম—
কিন্তু আমার সে চেফা খুনা মাত্রেই পর্যাববিত্ত হইল। এই বংগে বতই পরীকা করিয়া
দেখি গুড়ই জান চর্যা হইতে আকর্যো উপনীত হই। সকল প্রশাবই তথন আমার
নিকটবর্ষী বলিয়া জনুত্রব ইইল। হস্তকে

যরার্থ পথে চালনা করিবার নিমিত চকুকে কেন্দ্র বিদ্যাস করিতে হয়, তাহা আনক পরীকার পর শিক্ষা করিলাম।

দর্শনেক্সির ছারা এক একার ও স্পর্শেক্সির ছারা আর এক প্রকার ভাব গ্রহণ করিভাম—এই ডভরগত ভাবের মধ্যে সামঞ্জন্য নাহওয়া প্রযুক্ত, আমি দুরাদুর বি-ঘরে যথার্থ বিচার করিতে সমর্থ হইভাম না।

চকু স্বারা যে বস্তুই দেখিতাম তাহাই আমার নিকটবর্তী বলিয়া মনে হইত— ও হস্ত বার। তাহা স্পার্শ করিছে গিরাই নিরাশ হইতাম, আমার সমত্ত অভিত্রই তথন শৃখ্যলা রহিত বলিয়া আমার নিকট প্রতীয়নান হইত!

णामि कि भागी वहें भजीत जिसात मंत्र इहेतां अ भूई भतीकिक भतम्भत वितामी यहेना मकल मात्रा किता आमि मीन जाता-भन्न इहेलाम। यजहें आमि किसा किता जजहें जामात मत्माह छेशिङ्ग इहेत्स लागि-ल। वहें कथ, नाना मत्माह छ हिसात क्रांस इहेना आमात कानूष्य धांथना इहेत्स्हरें खनक इहेल-भतीत विद्यारमन खन्द्रा श्रीक्ष इहेल।

এই ৰূপ অবস্থার একটা সুন্দর বৃজ্যের তলায় আসীন আছি—দেখিলাম একটা কলের গুড় শাখা হইতে অবনত হইরা রহিন্যাছে—আমি তাহা হস্ত দ্বারা স্পর্শ করিন। মাত্র পরু কলের ন্যায় সহজেই শাখা হইতে বিচ্যুত হইল। ঐ গুদ্ধ হইতে আমি একটা কল গ্রহণ করিলাম; আমার বোধ হইল যেন আমি একটা মহা জয় সাধন করিলাম ও এ রূপ একটা সমগ্র অন্তিত্বকে কর পুটে ধারন করিয়া রাখিবার আমার ক্ষমতা আছে এই মনে করিয়া আমি অত্যন্ত গর্ভিত হইলাম। ঐ ফলটার গুরুত্ব বিদ্যুত পতি অংশ ছিল; তথাপি আমার মনে হইতে লাগিল

গেন আমার হস্ত অত্যস্ত বাধা প্রাপ্ত হইতেছে এবং এই বাধা জয় করিবার ক্রি নাশাস खरान आपान कवितः के कल**ी**त निक्रि - গারা, ভাহার গঠন ওবর্ণ পুরা-नू भू श्र^{द्भित} नितीकन कतिए लागिलार। তখপরে এক প্রকার সুগন্ধ পাইরা আরও তাহার নিকটবর্তী হইলাম; আমার ওঠবয় ভাছাতে আয় সংলগ্ন হইল: আমি দীর্ঘ ৰূপে নিংখান টানিয়া তালার মুগন্ধ নয়োগ করিতে লাগিলাম; এই রূপে নিংশাস গ্রহণ ঘারা. আমার অভান্তর পর্যান্ত যেন সুগদ্ধে পরিপূর্ণ হইল। এই সুগন্ধ যাহা আমার অভান্তরে অনুভব করিভেছিলাম, তাল পূ 👣 मुशंक व्यापका উৎकृष्ठ विलया (वाद स्टेन — ज्वरमदय के कलांगे आधि आश्वानन रहिः লাম। কি মুখ্দে। কি অপূর্ব তেগে। এপর্যান্ত আমি কতকগুলি সুপের আভাস মাত্র অনুভব করিয়।ছিলাম ; কিন্তু আন্তাদনে এবার ভুপ্তিরূপ সুখের চরম পর্যাপ্তির পরিচয় গাইলাম। ৬ই রূপ বাহিরের বস্ত भर्तीतमाद क्यांटि पामात स्ट्रेस निश्**ष्ट मेजु** व्यादित फेरक ध्रेल। जागात धरे मन হইল যে, এ কলটীর সার পশ এফারে আমার ধ্রাছে। থকীর শ_{িলা} অহ্রারে স্কীত उ लाग मूट्य फेटडिक महेता थापि कक्रि ছুইটা করিয়া ফল ছিচিতে লাগিলাম ও পাণার আস্বাদনকৈ ভূপি করিবার নিমিত্ত धूनः भूनः इस मक्षान्यम् इदल्या स्टेलामः কর কিংহকাল গরেই এক গ্রুকার সু**ংজ**-नक्ष्रियानमा आमिहा अधीत हे स्मित्रभाव অপ্রে অধিকার করিল: **আমার** অঙ্গ প্রত্যঙ্গ সমুধায়কে ভার-গ্রস্ত ও আমার আমার কার্যাদে শুদ্রিত করিল**। আমার** িছা অপরিকাট হইয়া আ**দিল। ইন্দির** গণের নিত্তেজ্ঞ: নিবন্ধন সকল পদার্থই हायांवर अजीयमान इरेटक लागिल; अरे

সময়ে নে ব্ৰহ্ম কাৰ্যা হীন হইয়া গিয়া ি নীলিভ হইয়া ভিল। মাংসপেশীর শিথিলভা নিবন্ধন মন্তক আর সরল ভাবে ন্যা
থাকিতে পারিয়া, ভূতলে লুঠিত হইল।
একণে সকলই তিরোহিত—সকলই অন্তর্হিত
হইয়া গেল। আমার চিন্তার পথ রুদ্ধ হইল:
আমার অন্তিবের ভাব মন হইতে অপহত
হইল—আমি গভীর নিদ্রায় মগ্ন হইলাম;
কতকক্ষণ আমি এই রূপ নিদ্রিত হিলাম
ভাহা বলিতে পারি না—যেহেতু তথন
আমার সময়ভ্যান অভিঅপ হিলাও আমি
সময়কে পরিয়াণ করিতে পারিতাম না।

জাগ্রত হইয়া মনে হইল যে, ইতি পূর্বে আফার অন্তিম্ব বুঝি চলিয়া গিয়াছিল— এফারে বুঝি আমি দিতীয় বার জন্ম গ্রহণ করিল মা এই আন্ত বিনাশ পরীক্ষায় আগত হইয়া, মনে ভয়ের সঞ্চার হইল ও আমি এই প্রথম অনুভব করিলাম যে, আমার অন্তিম্ব চিরকালের নতে।

যামার একান আর একটা দদেহ উপস্থিত হইল। আমার মনে হইতে লাগিল, পাছে নিদ্রাবস্থার আমার আক্তিবের কিয়দংশ হারাইয়া থাকি। আমার ইন্দ্রিয়াদিগতে প্রীক্ষা করিতে লাগিলাম আপনাকে সাপনি চিনিবার নিমিত্র সচেটিত হইলাম। এই মূহুর্জে দিবাকর অস্তাচলশারী হইয়া বসুপাকে অন্ধবারে আহ্ত করিলেন—আমার দুটি আবার আছেম হইল; ভয়ে ভয়ে কহিলাম পাছে আবার আমি আমার অন্তিব্ধকে হারাইয়া কেলি।

বিজ্ঞাপন।

আগামী ৩০ ক'র্ডিক বুধবার বেছালা ত্রান্ধ সমাজের অফাদশ সাধুৎস্তিত্ত উৎ্যুক্তে অপরাহ তিল্টার পরে ত্রান্ধর্মের পরায়ণ হহবে কু স্ক্রান্থ গুলাত ব্রুলির সময় ত্রন্ধোপাসনা ছইবে।

मच्ये ३३२७ । कलिश्रणाय ४३६२ । ३ भार्कि मणनवात्र ।

কাশীষ্ক ও নবদ্বীপ, কলিকাতা এবং ত্রিবেণী প্রভৃতি সমাজস্থ প্রধান প্রধান পণ্ডিতগণের নিকট হটতে আদি রাজনমাজ কর্ত্ত কামীত বঢ়েছ। পত্র। সাধারণের বোধের জন্য বাজনা অর্থ সহিত প্রকাশ করা হইল।

প্র**া**ঃ।

- ১ –বহ্নিস্থাপনং বৈবাহিকছোমঞ্চাক্রনা বিহিত্তবাক্যোজারণপূর্স্কক্ষকন্যাদানাত্তরং বিহিত্তনস্ত্রেণ পাণি গ্রহণসগুপদীগমনাদেশ ক্লতে বিবাহঃ সিদ্ধো ভবিষাতি নবা।
- ২ উক্তপ্রকারেণ কন্যায়া দানে গ্রহণে চক্ষতে তান্দ্রামিনি বর্ত্তনানে তাং পুনরনাবৈদ্য সংপ্রাদানঃ কর্ত্ত সকতে নবাঃ অথবা তান্দিন স্থানিনি মৃতে সা বিগবা ভবিষ্তি নবা।
- ত উক্তরীতা বিশ্বিতা পত্নী তদা আদিনং দকাশাং গাণাক্চাদন প্রাপ্ত মধিকাবিণী তবিষাতি নব।।
 - ৪- में क्रतीजा विवाधि व्यक्ति वाक्षिक क्षिण हो। शिक्षा क्षिण में विवासिक करिया कि वर्गा व

राञ्चला अर्थ।

- ু বহ্নি স্থাপন ও নিবাস নিহিত হোম লা করিয়া বিহ্নিত বাক্যোস্কারণ গুর্কার কন্য লক্ষেত্র পর বিহ্নিত নতু ভাষা পানি এসন ও মণ্ডপদী গমনাদি করিলে মে বিহাস সিদ্ধ হয় কিলা।
- ্ উক্ত প্রভাবে কন্যার দান ও গ্রহণ হউলে গেই স্থানী বর্ত্তনামে সেই কন্যকে অন্যূপাতে ও ^{তিতি} ত
- ও -উজ্জিপ্রত কে বিশহিত পাই। সেই স্থামির নিকট হইতে আসাক্ষাদন পাইবার অধিকারিনী হয় কিনা।
 - উত্ত গ্রাকে বিবাহিত জৌ পুঞ্চাের প্রেরা পিতা মাতার ধনাদিতে অধিকারী হটবে কি না।

এ তল্পি এপি বিষয় । পুলিবাধ শিক্ষাতোৰ প্রদানদা স্বানাকারণতেরন তার্গাল্পেস্পাদক গ্রহণ্টদার বিষা-করেন চ প্রতিসাদন এব এবা নিজন্ম প্রতিটেবিতি স্মান্ত্রীং তাং ক্নাগিং প্রারন্ত্রীয় দাতুং নৈব শাক্ষত-ইতি সন্দেবিধ্যান্তির গ্রেমান্ত্রিদা স্বক্তিভব্নিতি চাবিহ্লাই প্রায়শণ।

राष्ट्रवा अर्थ।

এই লিখন মুসাবী এতাদৃশ বিবাহ সিদ্ধাই হয় যে হেচু দান স্বামিন্ত্রের কারণ এবং ভার্যান্ত্র সম্পাদক জ্ঞানপূর্বাক এহণ বিবাহ বলে প্রতিপাদিত হইয়াছে, আর ইতর কর্ম সকল অল্প রূপে প্রতিপাদিত হইয়াছে, শুভরাং সেই কনাকে পুনর্বার জনা পাত্রে দান করিতে কেছ সমর্থ হয় না, এই উত্তর দ্বারা ক্ষিম প্রেম সকলও স্বীয় হস্তগত হইল, ইহা পণ্ডিতদিশের মত।

অত্র প্রমাণং।

- : নদলার্থং অন্তাসনং যজন্তাসাং প্রজাপতে:। প্রযুজ্ঞাতে বিবাহেয়ু প্রদানং স্বামাকারণমিতি
 মন্ত্রনং।
- ২—অতঃ পরং সমায়তঃ কুর্যাৎ দারপরি এহমিতি সম্ব্রচনাৎ ভাগাং বিন্দেত সদৃশীমিতাাদি বিষ্যাদিবচনাজ ভার্যাাস্থ্যশাদকং এহণং বিবাহইতি স্মার্ভলিখনং।
- ৩—প্রধানস্যাক্রিয়া যত সাদং তৎ ক্রিয়তে গ্নঃ। তদক্ষ্যাক্রিয়ায় নার্তিন্চ তৎক্রিয়েতি
 ছন্দোগপরিশিষ্টবচনং।

৪- সকুদংশোনিপততি সকুৎ ক্ল্যা প্রদীয়তে। সকুদাছ দুদানীতি ত্রীণোডানি সকুৎসকুদিতি মন্ত্রদঞ্চ।

वाक्रमः वर्ष।

- ১—প্রজ্ঞাপতির ধক্ত (হোম) তাহারদিগের মঙ্গলার্থ অস্তায়ন রূপে বিবাহে প্রয়োগ হয় কিন্তু প্রদানই স্থামিত্বের কারণ ইহা মন্ত্র বচন।
- ২ ইছার পর সমারত হইয়া (এক্ষচর্য্য সমাপন করিয়া) দার গ্রহণ করিবে এই সবর্ত্ত বচন হেতু এবং সদৃশী ভার্যা গ্রহণ করিবে ইত্যাদি বিফ প্রভৃতির বচন প্রযুক্ত ভার্যাত্ত সম্পাদক জ্ঞান পুর্বক গ্রহণই বিবাহ ইছা শার্ক্ত রতুনক্ষনের লিখন।
- ত হে স্থালে প্রধান কর্মা অকৃত হয়, সে স্থালে অন্ধের মহিত তাহা পুনর্মার করিবে, আর প্রধান কর্মা করিয়া যদি অন্ধ কর্মা অকৃত হয়, তাহা হটলে অন্ধের সহিত তাহা আর পুনর্মার করিবে না, ইহা ছন্দোগ-প্রতিশিক্ষের বচন।
- ह আংশ এক বার হয়, ক্লাদান এক বার হয়, দান বাকা এক বার মাতৃ হয়, এই তিনই এক এক বার মাত্র, ইফা মন্তর বচন।

কাশীস্থ

ক্তা প্রান্ধান্ত ক্ষান্থ শর্মাণ্ড ভকপঞ্চাননোপনামকানাং ২ প্রাক্তরনারায়ণ শর্মাণ্ড ভক্তিবণোপাধিক ৩ জীরাহা মোহন সর্মাণ্ড চ্যান্থা,পাধিক জারাজ্বস্তা দেব শর্মাণ্ড ভক্তিরাগাধিক প্রান্ধান্ত দেব শর্মাণ্ড দিবেন পণ্ডিত ১ বস্তারায় শর্মাণ্ড

শীবোমগুপোরিক

৭ জীবৈলাস চন্দ্র শর্মণং
৮ পণ্ডিত গেচনরাম শর্মণঃ
১ পণ্ডিত চন্দ্রবেশপর শর্মণঃ
১০ পণ্ডিত বামসানারথ শর্মণঃ
১২ পণ্ডিত বামসোরিন্দ শর্মণঃ
১২ পণ্ডিত কানীনাপ শর্মণঃ
১২ পণ্ডিত কানীনাপ শর্মণঃ
১৪ পণ্ডিত বটুকী শর্মণঃ
১৪ পণ্ডিত বটুকী শর্মণঃ
১৪ জীমথুরানাপ দেব শর্মণাং
১৬ জীমথুরানাপ দেব শর্মণাং

:৮ জাকালী কুমার শর্মাণাহ

১৯ জারামত্বলাল দেব শর্মাণাহ

২০ জাবেচারাম দেব শর্মাণাহ

২০ জারামধন দেব শর্মাণাহ

২২ জারতিটারন দেব শর্মাণাহ

২৪ জারামমাথ দেব শর্মাণাহ

২৪ জারামমাথ দেব শর্মাণাহ

২৬ জারামমাথ দেব শর্মাণাহ

২৬ জারামমাথ দেব শর্মাণাহ

২৭ জারামমাথ দেব শর্মাণাহ

২৭ জারাম্যান্তজ্ঞানের শর্মাণাহ

২৭ জারাম্যান্তজ্ঞানের শর্মাণাহ

২৬ জারাম্যান্তজ্ঞানের শর্মাণাহ

২৬ জারাম্যান্তজ্ঞানের শর্মাণাহ

১৬ জারাম্যান্তজ্ঞানের শর্মাণাহ

১৬ জারাম্যান্তজ্ঞানের শর্মাণাহ

১৮ জার্মান্তজ্ঞানের শর্মাণাহ

নগরীণ প্রভৃতি সনাজস্ব

भ जिल्हा अंत्रल मर्गाविह

১৭ জিভগৰভীচৰণ শৰ্মাণাঃ

- ১ জীরসুমধি শর্মধাং ২, জিতরমোহন শর্মধাং ৩ জীটাকুরদাস দেব শর্মধাং ৪ জীমাবরচন্দ্র দেব শর্মধাং
- ৪ জীমাধরচন্দ্র দেব শর্মাধার ৫ জীকাশীনাথ নের শর্মাধার ৬ জীরামরুমার শর্মাধার
- १ जीतामत्वातातात सर्वागर
- ৮ बाउकक्रमाद नर्थानार
- শ্রীশ্রামাপদ দেব শর্মাণাহ
 শ্রীপীতাহর শর্মাণঃ
 শ্রীজকুমার শর্মাণ
 শ্রীভূবননোগ্রন শর্মাণাহ
 শ্রীরামপ্রার্থ শর্মাণাহ
- ১৫ জীহরিনারায়ণ দেব শর্মণাং ১৬ জীমর্চনে শর্মণাং
- ১৭ জীরাম চাঁদ দেব শর্মানাং
 ১৮ জীনচ্ছশচন্ত দেব শর্মানাং
 ১৯ জীরাধানাথ দেব শর্মানাং
 ২০ জীজীনাথ দেব শর্মানাং
 ২০ জীজীনাও দেব শর্মানাং
 ২০ জীজীনাও দেব শর্মানাং
 ২০ জীলুনিংছ শর্মানাং
 ২৪ জীরামনাথ শর্মানাং
 ২৫ জীহরসুক্ষর শর্মানাং

কলিকাতা হাতির বাগান হইতে আদি রোশসমাজ কর্তি কৃহীত ব্যবস্থা পতা। ইহার প্রথা বকল প্রথমে দেওয়া হইমাছে, তক্ষন্য পুনর্কার এখানে আর দেওয়া হইল না।

करमाखित्र।

্ত্ৰিল পিন সালের উজ্ঞাববাজি নায়ানিবাজ: নিজাতোধ তদিবাছিতায়াঃ পুনকদাহোতবিতৃং নাহ'তি তদিবাছিতাজাত- পাত্রঃ শিভ্যনাধিকারী ভবতি পতেনি জীবতি সা ভর্ত্তঃ সকাশাৎ গ্রাসাচ্ছাদনাদিকং প্রাপ্ত্রুমহ'তি পতেনি মুহ'ত তু সা নিবনা ভবতোধেতি বিছ্যাপার্ম্যনি

বাজলা জর্ম :

১—এই লিপি অনুসাতে উক্ত বিশ্বিতি স্থান বিবাহ সিদ্ধী ছাল, এই কথা বিশ্বিতি ক্রী শ্লক্ষার বিশা-হের অহ'নতে, এই রূপ বিবাহিতার গর্ভজাত পত্র পিতৃধনাধিকগৌ হয়, পতি বর্ত্তনালে সেই স্ত্রী পজিব নিকট আসাক্ষাদম পাইবাব বোগা হয় এবং পতি মরিলে ধে বিধবা হয়, ইহা পণ্ডিত্দিগের এডিমত।

अब भाषांग्रंग

মঞ্চলার্থ অন্তারনং যজ্জালাং গুজাপতে। গুরুজাতে বিবাহের প্রদানং স্বামাকারণমিতি মন্নব-চনং। ভার্যান্ত্রমন্ধানক গছণং বিবাহ ইতি আর্জিক্সনং। বিবাহন্ত সালি-মছণাৎ পূর্বাং রতএবেচি ভ্রম্পনং। উদ্যান্ত পুনক্ষাণ্ড ইভ্যানিভাপ্রাণ্ড্যন্ত। এবমনাৎপ্রমাণং সর্বজনবিনিভামিতি ন লিখিতং।

২-- এই প্রসাধ সকলের বান্দাল। অর্থ প্রায় সকলই উপরে লিখিত হইরাছে এজনা পুনর্কার দেওয়া হইল না।

-) <u>ज</u>ीख्यमहत्रमर्गार्गर
- २ जीतरमणहस्मणम् गार
- ৩ জীগোৰদানতক্রনুস্য
- ৪ জীমছেলনাথশার্থাঃ
- व जीवानमध्यानार
- ७ जीगांधनहत्त्रभागीवार
- १ की काली द्वाराज्यां भी देश
- ৮ औ ভবদেবশর্মাগাঃ
- वे वा यनमानिमार्भागम

কাশীস্থ হরিশ্চন্ত বাব্র বাদীর ১১আ**শিম দিবসীয় সভাস্থ পণ্ডিতদিগৈর নিকট হইতে আধু**নিজ *বান্ধামাজ* কর্ত্ত্বিক গৃহীত বাবস্থা পত্তের অবিকল প্রতি লিপি হইতে উদ্ধৃত। শাধারণের বোধের জ্ল্যা বাঞ্জা কর্ত্ত্বিক প্রতি প্রকাশ কারা হইল।

এই ব্যবস্থা পত্তে কোন প্রশ্ন লিখিত হয় নাই কেবল উত্তর মাত্র।

- ১ ব্রাক্ষাখ্যাধুনিকসমাজীয়ানাং বিবাহতকারঃ কথমপি বৈলিকোন ভবতি।
- २ माम्मोद्धारिक्षकृट्ड विवादशश्यमा इतिक्षणां मृड्याधि भाषा । भाषा । विवादश्यमा विवादश्यमा विवादश्यमा विवाद । भाषा - ও নলৌলাজিনারতঃ ককাজক্রণেলারিকজডিলার শিক্তিলার সর্বেধানের কর্মণাং বিবাহে আরশ্য কতি ছিলানাং। শালাগাল অমারক্ষা প্রকাশকালের লাগিলা।

 - ১ ব্রাক্ষার আধ্যান সমাক্ষণত 💎 🖖 🦠 🕏
- ্ মন্দিশিক মান্দালন্ত্ৰ কৰিবিক লক্ষ্য কৰিবিক লক্ষ্য আৰু কৰিবিক লক্ষ্য লক্ষ্য কৰিবিক লক্ষ্য কৰিবিক লক্ষ্য কৰিবিক লক্ষ্য কৰিবিক লক্ষ্য লক্ষ্য কৰিবিক লিবিক লক্ষ্য কৰিবিক লক্ষ্য কৰিবিক লিবিক লিবিক লিবিক লিবিক লিবিক
 - प्राक्तिकार्यक्षा त्रकार कि १ कार्य हृद्धाई निविद्धा, कास्त्र कामान विवाह किल सूर्य निविद्धाः असे १ दर्भ कार्य होट्या अपराध्य किलुदे किम माटि :
- 5 衛河與西部門(股內門門門)與本資·內部(中西灣)各門有衛州州衛村(1
- 'डर बें 'थें। इस मेथा दोन भेगी प्रः
- ৩ ডাটোপনাম্ব অন্তব্যাম কর্মব
- ৪ পর্যাধিকারি ক্লান শর্মার
- ে ধর্মানিকারি তুল ভিরাজ শর্মাঃ
- ५ (बार्ग) शाक्ष श्रामवत्राम मन्द्रान
- १ नाककामः भाक्तिशः
- দ রাজারাম শাস্ত্রিণ

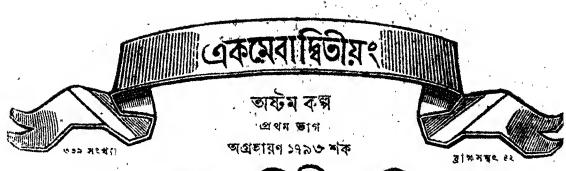
- a शक्तापत नगस्तितः क्रिकेटदाश्वाक्त्याः
- se গুলুমার গোলা ভ্রম গাঁকি ভ্রমা
- ८८ वासन्यक्ति।
- ১২ খাল জ প্রা
- ১০ विविधि ए मसंभिषेः मः भन्छ राज्य । अ
- . । हा द्वाराताल अ**र्था** १३
- ार शन्धिक **हस्रारमध्यसम्ब**र्धाः
- १ विद्रम स्मर्रमान्यभाषाः

केनुश्चितासः मन्त्राह्मा सं स्वाट रहि । केनुन्त दिवास केनुन्त्राह्मा सर साजाः

- च्या अञ्चलकोम तकत्वानं मणाङ् वानकाः
- ः श्री शाशास्त्राचन न र्यानाः मण्डितवादर्य
- त क्र करा क्षेत्रमान मार्चेस
- ৺ জা ভাষ্টের শর্মান স্মতিঃ
- ৭ প্রতিষ্ঠ বেচনরাম শ্রমণঃ সম্মতিঃ
- · 智信· 西印度州西村山田東13
- ্ প্রতিত বিজ্ঞানার **সাক্ষ্য**
- ৮ পতিত বস্তু প্রাম্ন শর্মানঃ
- ৯ পণ্ডিত গল্পালন্ত শর্মণং
- ২০ পণ্ডিত শালিআম শর্মণঃ

- ১১ পতিত দোভারাম শর্মণঃ
- :২ পতিত কুঞ্জাল শর্মণঃ
- ১৩ পণ্ডিত মাহিকা শর্মাণঃ
- :৪ পণ্ডিত ইক্সদত্ত শৰ্মণঃ
- ১৷ পতিত সামকৃষ্ণ শৰ্ক
- ३५ भातकी ""
- - e was stated

 - 1000 (1000) (表示解答 1100) (如實情的說:



তভারোধিনীপ্রতিকা

विक्रविक्रिमिनस्वैक्षामीक्षामादः कियमामीद्विनिदः সর্প্রমঞ্জন। তদের নিত্য জ্ঞাননগত শিন্ত সংস্থানির্ব্যব্যাঞ্চ নেবাভিতীয়ণ দ্বের্যাপি সপ্রনিগজ্ঞ দ্বাগের শর্জবিশ দ্বেশিক্তিমদ্পুর্ব পুর্যাক্রভিন্মিতি। একস্য ত্রুদ্ধেন্য শ্রে পার্জিকমৈহিকক শুভক্তবি। তদ্মিন্ জীতিজ্ঞসংশিক্ষকের্যাগ্রাধনক ভেলুক্সিন্দ্র।

छेशदमना।

জীযুক্ত আনন্দচন্দ্র বেদান্তবাগীশ কর্তৃক । বিহুত।

১০ কাজিক বুধসার ১৭৯২ শাক।
ক্রেনে, অন্তর্ভাই শাক্রানোটোটার।(ধিরনন্তকঃ।
কর্মভূতে(জঙ্গ ধাধনসাধ্নিদিমঃ আ্রুঃ।
ক্রোন্তর্জাই ২০ হ০ অধ্যার।

ক্রোধ অতি তুর্জয় শক্ত এবং লোভ অনপ্ত বাাবি। যিনি সর্ব জীবের হিতৈধী তিনি সাধু, আর যে নির্দ্ধা সেই অসাধু বলিয়া উক্ত হইয়াছে।

ক্রোধ অতি প্রবল শক্র,—ক্রোধের সমান অনিষ্টকারী শক্র আর কিছুই নহে, ক্রোধের সময় হিতাহিত জ্ঞান গুনা হইতে হয়, অতএব তদ্ধারা না হইতে পারে এমন অনি-উই অপ্রসিদ্ধ। ক্রোধে অস্ক হইলে কোন সংকর্ম করিতে সামর্থ্য থাকে না, সুতরাং ক্রোধান্ধ বাজ্ঞি ঈশার হইতে দূরে নিক্মিপ্ত হয়। তথকালে ক্রোধকে জয় করা অতি ভংসাধা হইয়া উঠে, এনিমিন্ত উক্ত হইয়াছে, "ক্রোধান্তবতি সম্মোহং স্ক্রেবি-গ্রমং। স্বৃতিজংশাদ্ধিনাধ্যে বুলিনাশাং

প্রবশ্যতি।" কোবেতে মুখ্য হইলে লোকের স্মৃতিশক্তি বিনষ্ট হয়, এবং স্মৃতি নাশের পর বুন্ধি বিনাশ পূর্বক স্বয়ং বিনাশ প্রাপ কিন্তু ইহাকে জন্ন করিবার একটি भाज डे॰क्रके डेशाश बारह, डागृहे आकारत्य উক্ত इक्षेत्रा**रक. यथा, " व्यादकारधन कार**मुख ক্রোপং বয়ং অজোধ হইয়া ক্রোধকে জয় করিবেক। ক্রোধের বশীভূত হইবেক না কিন্তু বিবিধ উপায়ে তাহাকে আয়ন্ত করিয়া যাহাতে ভাহার বেগ হ্রাস হয়—্যাহাতে তাহা বাহিরে কার্যো পরিণত হইতে না পারে, এমত উপার সকল অবলম্বন করিবেক, তাহাতেই ক্রোধ বৃশীভূত হইবেক। ৰূপে ক্রোধকে দমন করিতে না পারিলে মনুষ্য আপনিই যে ৰূপ আপনার অনিষ্ট করে, তাহা হইতে শত গুণ অধিক অন্যের অনিষ্ট করিয়া লোকের নিকট সে অপরাধী হয় এবং আত্মপ্লানি ভোগ করিয়া আপনা-আপনি লজ্জিত হইতে থাকে। আপনার ও অন্যের অনিষ্ট নিবারণার্ধ বিবিধ উপায় দারা দর্বদা ক্রোধকে দমন করা সকলেরই কর্ত্তব্য।

লোভ অতি যত্ত্ৰণাদায়ক ব্যাধি,—

যেমন শারীরিক ব্যাধি দারা শরীর ক্ষয় হয়, তজপ লোভ ঘারা অস্তংকরণের বল ক্ষীণ হইতে থাকে। এই নিশিত্তে লোভ বাাধি বলিয়া উক্ত হইয়াছে। লোভী ব্যক্তি যে কেবল পরের অর্থ বিনাশ করিতে প্রবৃত্ত হয় এমত নহে, লোভী আপনারও সর্বস্থান্ত করিয়া থাকে। লোভ হইতেই নিঠুরতা উৎপন্ন হর এবং নি চুরতাই মনুধ্যকে সাধুতা হইতে পরিভ্রম্ভ করে। হত্যা ও চৌর্য্য এখৃতি পাপ কর্ম সকল এক মাত্র লোভ হইতেই অনুষ্ঠিত হইয়া থাকে। লোভী ব্যক্তি তথন সে সকল পাপকে আর পাপই বোধ করে না। "এতে ন পশান্তি লোভোপকতচেতসং।" লোতে হতচিত্ত হইয়া ইলার। আর খীন কুত পাপ কল্ম দেখিলাও দেখিতে পার নুমভাহাতে ক্রমে লোভই <u>হিন্দি গাইছে থাকে।</u> লোভ যত রুদ্রি পার, ক্রমে ৩৩ই অভাব বোধ লয়। যিনি লোভকে চরিতার্থ করিভে প্রকৃত্ত হয়েন, তিনি চিরকাল যন্ত্রণা ভোগ करतमः; कात्रभ गथम विवय आध इडेग्रा লোভ চরিতার্থ হয়, তথন তছিয়ায়ে জার मूत्र व्यत्कृत ना हरेया व्यतूतमाहनात्क व्यत्रः-কবন দক্ষ চইতে থাকে। ভাতএব যিনি লোভকে পরিভাগে করিতে পারেন, ভিনিই যধার্গ সুখী, তিনিই মৃক্তি লাভ করেন।

যিনি কারমনো থাক্যে সর্ব ভূতের হিতানুতানে প্রকৃত্ত পাকেন, তিনিই সাধু,—
সাপ্ থাজি আপনার জুলনার অন্যের সহিত
সঞ্চাবশার করেন। তিনি আপনাকে অন্যের
নীতিভাজন দেখিলে যেমন সুখা হয়েন,
সেই কপ অনাকে প্রীতি করিয়া ভাষাকে
সুখা করেন। তিনি যেমন আপনি অন্যের
বিষেধে কর্য বোধ করেন, সেই কপ কাহাকেও বিষেধ করিয়া ক্য প্রদান করেন না,
তিনি আপনার প্রক্রে সুখ হুংখ যে ক্রপ
জানেন, অন্যের প্রক্রেও সেই ক্রপ বোধ

করেন। তিনি ঈশরকে ভক্তি করেন,
মুতরাং তিনি তাঁহার প্রিয় পুত্র মনুষাগণকে
প্রীতি করেন। তিনি কৃখনও মনুষাদিগার
প্রতি অপবাদ দিয়া আনন্দিত হয়েন না
বরং কাহারও দোষ দেখিলে ফ্রুখিত হয়েন
এবং দাধু ভাবে ভাহার সংশোধনের চেতী।
করেন। এই রূপ সাধু আচরণই কলাাণ
লাভের উপায়।

य राक्ति निर्मत्र—मकत्नत क्षिष्ठ तिरे,त ব্যবহার করে. সেই অসাধু বলিও উঞ্জ হয়,— তাহার ঈশরে বিশাস নাই সুতরাং লে:কের এতি ভাহার মনে প্রীতির সঞ্চার হয় না। সে অনোর দোষ **দেখি**য়া বা অনোর দোষ व्यापना कतिया मुशी हरा। . **जत्मात महत्त**त প্রতি যাহার বিছেব হয়, ভাহার আবারাম কোপায় : তাহার সুখ শান্তি কোবার : যে কোন প্রকার উন্নত লোককে দেখিলে ভাগার শক্ত তুলা বোধ হয়, কাহারও সুখ্যাতি প্রবণ করিলে ভালার মুখ ও চকু মান হটয়: थाएक । तम इंस्कृति द। शतकातन कथनड নুগ লাভ করিতে সমর্থ হয় না। অভত্তর অসাধু ভাব পরিত্যাগ পূর্বক কায়মনো-নাকে। পরি**শুদ্ধ থাকিয়া সকলে**র প্রতি সন্তাব প্রকাশ করিবেক, তাহা হইলে পবিত্র-স্বৰূপ ঈশরকে লাভ করিতে সমর্থ হইবেক।

হে সর্বদাকী বিশ্বপতি প্রনেশ।
তুমি আমাদের আত্মাতে বিদামান াকিয়া
আত্মাকে ধর্মবলে বলীরান্ কর, তোমার
সভা মলল স্বরূপ আমারদের নিকট প্রকান
শিত কর, মোহ তিমির হইতে আমারদের
আত্মাকে উদ্ধার কর। হে সর্ব্যাপী পরমাক্ষন্ । তুমি সকল স্থানেই, বিদামান
আছ এবং কলাণিকর নিয়ম সকল নির্দারিত
করিয়া আমারদিগের প্রার্থনার পূর্বে প্রয়োকরীর সমুদার বন্ধ আহোজন করিয়া রাখিন
রাছ, তথাপি তোমার নিক্ট প্রার্থনা না

করিলে আমারদিগের মনে তৃপ্তি লাভ হয় ।

না। অচএব কায়মনোবাকো ভোমার ।

নিকট নিয়ত প্রার্থনা করিতেছি, তুমি
আমারদিগকে সাধু পথ প্রদর্শন কর এবং
পাপতাপ হইতে মুক্ত করিয়া আমারদিগকে মুক্তির অধিকারী কর।

७ वक्रावाधि हो ग्रे।

शत (लारकत मञ्जल।

"পূর্বাং বয়সি তৎ ক্যাঁথে যেন হৃদ্ধঃ স্তথং বসেও। যাবজীবেন তৎ কুর্যাও যেনায়ত্র স্তথং বসেও॥"

আমরা কেবল পৃথিবীর জীব নই— जागात्मत कीवन जनत, जागात्मत পत-যায়ঃ অবিনশার। শারীর কিছু দিন উন্নতি প্রাপ্ত হটয়া পুনর্বার অপ্পে অপে কীণ रहेट बाटक, हे क्लिय़ ग्रंग निरस्क हहेया याय, এবং ক্রমে নিজীব **২ট্যা পড়ে—তথন আর** বল উদাম ও ক্ষুত্তি কিছুই দুর্ফীগোচর হয় ন: কিন্তু আত্মার বিনাশ নাই। মনুষ্য কোম সুগর কলে। সমুদায় উপভোগ্য অংশ গ্রহণ পূর্বক বীজ্যাত শেব রাখিয়া বৃণার সহিত সুদূরে নিফিপ্ত করে, কিন্তু ঈশ্বর তাল বিনষ্ট হইতে দেন না—তাঁহার কৌশলে সেই নীরস অকিঞ্চনবৎ প্রতীয়মান বীজ কালক্রমে অঙ্কুরিত ও পরিবর্দ্ধিত হইয়া প্রকাশু বুক্ষের ৰূপ ধারণ করে এবং নৃতন শাখা নৃতন পল্লব নৃত**ন পুষ্প** ও ভূতন ফল প্রসব করিয়া ভূতন শোভা বিস্তার ক্রিতে থাকে—আমাদের শ্রীর্কণ আব-ज्ञान मर्था अर्केष्ठ दीक आचा व्यवस्था করিতেছে। মৃত্যু তাহার আবরণ ভল করিয়া क्लिटन तम् रीज मूचन क्लिख निकिश्व ररेया स्डन भाषायं यक्ति रहेटड शाक्टव। আমরা কানি কা যে, কোন কোন লোকে कि कि अवस्था कि अवाद्य अरे अविनयत श्रमाह् रकाश कतिरक हरेरद, किंड हेरा निक्य कानि य, महे मक्लमत পिতा महे जिएमी माजात जानी दीएम जामता हितजीवी हहेताहि। ज्याळ वे क्वल जमा कात जाना हिन्छ। कृतिया काल थाका यात्र नाः जामानिशक कलाकात जना हिन्छ। कृतिया जामानिशक कलाकात जना हिन्छ। कृतिया यात्र नाः जामानिशक कलाकात जना हिन्छ। कृतिया हिन्छ। हिनछ। हिन्छ। ह

পৃথিবী ও সমুদায় পার্থিব বস্তুর সহিত आभारमत मश्का धानिका हेश श्राक्त निनहे লক্ষিত হইতেছে। এখানকার পরিবর্ত্তন সকল পুনঃ পুনঃ আমাদিগকে সেই অনি-তাতা সারণ করাইয়া দিতেছে, এবং দেখি-তেছি যে, মৃত্যুর করম্পর্শে এখানকার ममूनाश मधक किन इंदेश याहेटकटक । जाना ष्यानत्मत कोलांश्ल, कला शाशकातः, मनुषा षमा धन मणारम कीठ हरेशा छेटितन, कला ছুৰ্ঘটনাক্ৰমে পৰের ভিক্ষুক হইয়া প্ৰজিলেন: অদ্য সুখ্যাতির সমীরণ প্রবাহিত হইতেছে, क्ला अथां जित कोलाश्ल मध्यि इहेल, जमा वक्क्षा, कला भक्का; जमा मन्नाम्. क्ला विशेष्; धहे बाश शतिवर्खानत गरधा मनुषा मालाशमान श्रदेखहरू. किहूरकरे अरे সমস্ত বিষয়কে আপনার হস্তায়ত্ত করিতে ममर्थ स्टेरण्टर सा। देशात खेलात आवात হত্যুর আক্রমণ আছে। পুত্র মাতাপিবুর षाबारत निर्विष क्षिणानिक श्रेर^{क्}न. मृजू। डांशानिमदक शृथिवीटक थाई टिकानन मा ; य भूज इस समक जमहि अक मान

অবলয়ন হইবে, মৃত্যু মাতার ক্রোড় হইতে ক্রাছাকে অপ্ররণ করিল; যে দৃষ্ণভী কত আশার সহিত পরস্পরের প্রেম উপভোগ ক্রিতেছিল, মৃত্যু তাহাতে বিষম বিষ উপস্থিত করিয়া দিল; যে বন্ধুর দর্শনে, আলিপনে ও আলাপে মন শীতল হইত, মৃত্যু ভাঁহাকে কোথায় লইয়া গেল। পার্থিব সম্বন্ধ এই ৰূপ অচিরস্থারী। ইহা চিন্তা कतित्नरे भन रेवतारिंग পतिपूर्व रहा। आह मकल मनुषाई नमस्य नमस्य এই বৈরাগোর অবহা প্রাপ্ত হন এবং অচিরসম্বন্ধ সংপারে থাকিয়া কি কণে পর লোকের সমল আহরণ করিব, এই ভাবিয়া ট্রিগ ২ই.ড বাংকেন। क लेंद्रभाव बुक्क करेर करें रव लाभगामय जूला উৎপন্ন হয়, সুকোমন পুলেগ্র মধ্যেই যে मुक्त वीक निर्िक हरेश थाएक, पर्छा ब्लाटकत মধোই যে অমৃত লাভের উপায় সংঘটিত হইতেছে, ইছা অনেকে অনুভব করিতে পারেন না। সুতরাং পর লোকের সম্বল দক্ষয় কড়িতে গিয়া হয়তো **অস্বাভাবিক প**ৰে উপ্ৰীত হন।

যেমন গর্ভারছার সহিত ভূমিন্ঠাবস্থার,

যেমন শৈশবের সহিত যৌবনের, যেমন

যোধনের সহিত বার্দ্ধকোর সম্বন্ধ, ইহকালের সহিত পরকালের সেই রূপ যোগ।

যেমপ করিয়া গর্ভারত্বা প্রতিপালন করিতে
হয়, তাহা সুসম্পন্ন হইলেই শিশু সুত্ব

শতীরে ভূমিন্ঠ হয়; শিশুকে যেরূপ পালন
ও শিক্ষাদান অধিশ্যক, তাহা সম্পন্ন হইলেই তাহার শরীর ও মন যথাযোগ্য প্রস্কুটিত হইরা যৌবনসীমায় উপনীত হয়; সেই
ক্প ইহলোকের কর্ত্তবা সকল সুন্দর রূপ

সাল করিছে পারিলেই স্বাভাবিক নিয়ামে

আল্পারলোকের জন্য প্রতাকের কান্ত্র প্রত্তাক্তর

ইইতে হইনে কি রূপ করিয়া প্রলোকের

সমল আহরণ করিতে হইবে, তাহার সংক্রিপ্ত ও সহজ উত্তর এই। কিন্তু ইহাতেই সকল কথা বাক্ত হইল না; আরও কিছু বিশেষ করিয়া আলোচনা করিতে হইবে।

আমাদের এক অংশ শরীর আর. এক অংশ আত্ম।। শরীরের **সমুদায় অংশ** এই পৃথিবীর পদার্থে নির্মিত হইয়াছে। মৃত্তিকা জল প্রভৃতি নিজীব জড় পদার্থ বিধাতার আশ্রুষ্য কৌশলে তব্ন লতা প্রভৃতি উদ্ভিদের ৰূপ ধারণ করিয়। জীবন প্রাপ্ত হইয়াছে ; নির্জীব জড়ের ভাব ও ইন্টিদের প্রাণ একত্র বরিয়া দেই প্রম শিশ্দী প্রমেশ্বর পশু পক্ষী প্রভৃতি এক মনোচর রাজ্য বিস্তার করিরাছেন! মনুন্যের শরীরে ঐ তিনটি ভাবই একত্রিত হইয়াছে——আমাদের শরীরে জড়ের জড়ত্ব, রুক্ষ লতার প্রাণ ও পশু পকীর মন একতা অবস্থান করিতেছে; মনুষ্যের শরীরে জড়ের সমুদায় গুণ, উদ্ভি-দের ন্যায় জীবন ও ইতর জন্তুর ন্যায় কত-কগুলি এরুত্তি বিদামান আছে 🕛 🤲 সমূ-দায়ই পার্গিব পদার্থ। যেমন গভকোহ গর্ভন্থ শিশুকে রক্ষা করে, সেই ৰূপ এই অন্মর প্রাণমর ও মনোমর কোষ আমাদের শিশু আত্মাকে পোষণ করিতেছে তিনের কিছুই চিরস্থায়ী নহে—আমান এই কুধা তৃষ্ণা কাম কোধ প্রভৃতি পশু ভাব সকল শরীরের সকেই ভশ্মসাৎ হটবে । यथेन मृज्युत कताल वषन विखातिक स्रेटक थाकित्व, उथन इन्ह और वनाफ़ इरेगा পড়িবে, ইক্সিয় সকল নিজেজ হইয়া পড়িবে, मत्नायज मिक निम्मन हरेशा পড़ित, লড় শরীর প্রস্থালিত অনলে দগ্ধ হইতে থাকিবে অথবা হাত্তিকার সহিত একীভুত হ্ইবে, কিছুই আত্মায় সলে গমন করিতে शाहित्व ना; अना शाधिव मण्यात्मत्र छो आत कशाहे नाहे। कि अवनिकं शाकितः । क्वल आगारमत आजा।

षाचा कि भनार्थ करहरे कार्तन ना, कानिवात अरहाकन् अ नाहे; हेहा निकत জানি যে, আত্মার বিনাশ নাই এবং সমস্ত পার্থির সম্পদ্ কিছুই আত্মার সঙ্গে যাইবে সেই মঙ্গলময় পিতাকে ধন্যবাদ দিতেছি যে, তিনি এই সমন্ত অনিতা সম্প-म्दक आभारमञ्ज मर्त्वय कतिया एमन नाहे। তিনি আতাকে কতকগুলি দিবা সম্পদ্ প্রদান করিয়া সৃষ্টি করিয়াছেন। যে সমস্ত আধ্যাত্মিক রুত্তিতে বিভূষিত হইয়া আত্মা জন্ম গ্রহণ করিয়াছে, তাহাই আত্মার অনন্ত छिक, नाग, हिटेछ-Hable 1 ঘণা রুদ্ধি ও ইচ্ছা—কর্ম করিবার শক্তি আত্মার অনন্ত জীবনের সমল; এই সমু-দার আবাজিক রুতি, আন্থার চিরস্থায়ী সম্পৃদ্ : ইহার উপর মৃত্যুরও অধিকার নাই। এই সমন্ত আল্সম্পদ্ যাহাতে পরি-ৰদ্ধিত হয়, তাহাতে যত্ন করাই পুর লোকের জন্য প্রস্তুত হওয়া—সেই সমস্ত সম্পদ্ পরি-वर्षिक कदाहे शहरलाटकत मञ्चल पाइत्र कता। देशांतरे जना धरे मश्मादत अवसान, -- हेहाइहे कना विमानात व्यथायन ; हेहा-तरे जना कर्यटकारक मध्यत्र ; **এव**ং रेहात्रहे जना बाक्षमगारकं आशमन। कान चारन ভাবের প্রশন্ততা হইতেছে; কোন স্থানে জান লাভ হইতেছে; কোন স্থানে ইচ্ছার वल इक्ति व्याख इरेएउइ। পরলোকে আমাদের উপভোগের জন্য অমৃত্ধারা প্রচুরবাপে বিভারত হইতেছে, তাহা ধারণ করিবার জন্য হাষয়পাত্র প্রশন্ত করিতে रहेरन , कड मडा नरहिनकात माति हर्सिक र्देश तरियादम, कारादक अदनम कतिवात जना खानदक छीला कात्राक करेंद्र ; পর-लाटक निक्या रहेशा अवस्थित कतिए रहेटव The state of the s

না, যদিও সে কর্মের আকার অনাবিধ, ভথাপি ভাহা মহৎ ও প্রশ্নত, ভাহার অনুষ্ঠা-নের জনা ইচ্ছার বল বর্দ্ধিত করিতে

भाग गथल, ध्वर धर ममस आञ्चमणन् भेतिलारकत अक्षांन मणम्। देशहे अनस् कीवरन्त कीविका; रेहाहे मण मुम्बत मक्ष्म भूकरात महिक धार्ग मिक्कित अस्तम माधना। धरे ममस मणम् दिक्क कित्रवात निर्मिष्ठ मेश्वरत्त भंतिभाश्व हर्छ। देशिरक कान ध्वर केशिरक कानिवात निर्मिष्ठ देशिरक कानिवात निर्मिष्ठ देशिरक कानिवात निर्मिष्ठ देशिरक कार्या मकल बालांकना कत्न; ममुनात क्ष्मत देशिरक मार्थन कित्रा ताथ ध्वर देशिरक मार्थन कित्रा ताथ ध्वर देशिरक मार्थन कित्रा निर्मिष्ठ छोश्वर मार्थन कित्रा निर्मिष्ठ छोश्वर कित्रक थाक; ध्वर देशिरा भिष्ठ छोश्वर कित्रक थाक; ध्वर देशिरा भिष्ठ छोश्वर ध्वर धान्य भवन स्थानभर स्थिति स्थित स्थानभर स्था

হিশুজাতি ও বান্ধর্মান

হিন্দু জাতি বিচারে একেশ্রবাদী কিন্তু কার্য্যভঃ বছ দেবের উপাসক। মনুষ্য-সমাজের রীতিই এই যে, কোন সত্য প্রথমে ाठका ७ आलारभ वक शारक; शर्त्रागर**व** আর আর উপকরণ সকল একত হইলে যথা-मगरत छमनुयात्री कार्रगात चनुष्ठान हरेरछ षात्र इया याँहाता धनुधावन भूईक আমাদের পুরাতন ইতিহাস অনুসন্ধান, করিবেন, ভাঁহারা দেখিতে পাইবেন যে, যাহাতে কড়োপাসনা ও বহু দেবের উপা-সনা রহিত হইয়া একেশবের উপাসনা সর্বত প্রচারিত হয়, ভাষার চেকা পর্যান্ত আরক হইয়াছিল, অভি পুরাতন বেদের মধ্যে हेरात नामा किंद्र पृथ्वि त्याकत रहेरण्टर। धारः हेरां पृष्ठे रहा त्य, तारे चारलाठनात ত্রোতঃ অপ্পে অর এক দিকে পরি-বর্তিত হইয়া হোল। কিন্তু যত দুর জালো-

চনা হইয়াছিল, তাহা নিকল হয় নাই; তাগতেই সমস্ত হিন্দুজাতিকে অনেক দুর অগ্রদর করিয়া রাখে: হিল্ডজাতি কার্যাতঃ বহু দেবের উপাদক হুইলেও বিচারে একে-श्ववामी इटेशा आट्ड। अनाना वियदश চিন্মুজাতির অবস্থা যতই হীন হইরা থাকুক, ্বারতর পৌত্বলিকতা সত্ত্বেও এই বিষয়ে ইহাদিগকে পৃথিবীর আর কোন জাতি अद्भाका शैन वला गांध ना। य वृक्तिय-বর্মাবলয়ী ইউরোপ সভাতার আলোকে উত্তা**ৰিত** ^হইয়া আছে, দেই দেশও অদ্যাপি क्तवल वि**नारत अक्तर्य**तवामी किन्छ कार्यान বন্ধ দেবের উপাদক হইয়া আছে: এই যাত বিশেষ গে, ছিল্ফাটি এক ঈশহকে হৈতিব[ু]কানি ভাগে শস্তত হৈতিৰ ভাগে) বিভক্ত করেন, গৃত্তীবন্দ্রাগণ ভাঁগাকে তিন ভাগে বিভাক ক্রিয়া থাকেন। সুভরাং ক, ঠাকা ব্রু দেবের উপাসক কিন্তু বিচারে একেম্বর দী হিক্জাতিকে এবিষয়ে আমরা বিছুতেই নিরুষ্ট বলিতে পারি না। কিন্ত ত হ। বলিয়া, হিন্তু সমাজের এট বহু দেৱের লা, চরকাল প্রচলিত থাকুক, ইং। প্রাথনীয় নহে: এ.ত্যুত সেই বিচারণক এংবিশ্বরণে যত শীঘু কার্যাতঃ অবলমিত চ্য ততই মধল।

এক ণণ্ড সাধারণতঃ হিন্তু সমাজের যে
কণ্ড ভারতা দেখিতে পাওয়া যায়, ভারতে
ভিন্তু জাতিকে কার্যাতঃ একেশ্বরের উপাসক
করিতে অবশাই কলি রিলম সহা করিছে,
হটবে। কিন্তু কালবিলম মতই ছউক,
ভাশার পথ ক্রমশংই পরিষ্কৃত হইয়া আবিতেছে। ব্রাহ্মগণ যদি ক্রিপ্রকারিতার প্রদান
ভবেন মুখ্য হইয়া আপনাদিগকে দার্হপ্রী ও
সেনপত্তী প্রভৃতির নাায় একটি মুক্ত সভাল
ভারে আবদ্ধ করিয়া না কেলেন, ভারা
হলৈ নিশ্যাই কালকমে এই ব্রাহ্মার্ম ভাতি-

त्राधात्रद्वात अभकीया स्ट्रेटव ; किख यनि धीत-কারিতা পরিত্যাগ করিয়া আপনাদিগকে জাতিসাধারণ হইতে পৃথকু করিয়া কেলেন, **छाहा हरेल ভবিষাৎ देखिहात्म बाक्सनमारक** ভারতবর্ষীয় নানা সম্পুদায়ের সলে একটি অধিক বলিয়া গণ্য হইতে হইবে এবং সৃথি-वी अ (य जनाना मन्त्रामाय जात्रका जिधक এৰপও বোধ হয় না: সমাদর করিবে হিন্দুসমাজের মধ্যে শিক্ষিক 🗥 👵 🧸 . 西班班班 有 門 大 日 日本日 年日 日本日 日日日 किल्ह्याहित ११६ ११४१६ मान्यूषा असिक इंश्टिश्ट । काटल विष्युगमाट**क उत्तिवर्ध्य**त প্রবেশ অবারিত হইবে। এফণকার শিকা প্রাপ্ত লোক্দিগের উপর সচরাচর যে সকল লোবের আরোপ করা হয়, ভাল নিতান্ত অত্যুক্তি। অনাানা শ্রেণীর মধ্যে, এমন কি, ত্রাক্ষদিশের মধ্যেও যেমন সাধু অসাধু উভয়বিধ লোকই আছে, শিক্তিগণের মধ্যেও সেই ৰূপ A 23. সংশর্গে হিল্ফুজাতি যে সাধারণতঃ ভল্লতি লাভ করিতেছে, ইহা অস্বীকার করিলে প্রত ঞের অপলাপ করা হয়। অতএব তাঁচাদের मरका दक्षित मटक मटक एए खाक्रावर्ष विस्तात বাহিবে, তাহার সন্দেহ কি? অনেক সুশিক্ষিত বাক্তি যে ত্রাক্ষমাঞ্চে প্রবেশ ক্রিতে অনিচ্ছু, এমন কি, কেং 🐲 নিভাষ নিষ্ঠুবতা সহকারে উপলাশ কৰিছে ব कृष्टिक इस मा, काशत माना काल आहि. —কিন্ত পরিষাণে তাঁখালের ক্ষিত্র দোষ, চিন্তাপ্রণালীর অস্বাভাগিক পরিব-र्वनः । अ अविमातनत अधिका हेणानि नासंबिध कांत्रण फोटक, छाठात मत्नक नारे; क्षि जाक्रममाक्ष अविवास किस् श्रिकारन দোৰী, উন্নত-শিকা-শাপ্ত লোকদিগকৈ व्यक्तिं ७ धात्र कतित्व शादा, व्यक्षिकाश्य जायमगाम व्यवानि

প্রস্তুত হইয়া উঠে নাই। তথাপি মুক্তকণ্ঠে বলিভেছি যে তাঁহারা আপাততঃ নাক্ষাৎ সম্বন্ধে আমাদের সহকারিতা করিতে কুঠিত হস্ত হইলেও তাঁহাদের সংখ্যা বৃদ্ধিতেই দিন্দুসমাজের অভ্যন্তরে ত্রাহ্মধর্মের প্রবেশ-পথ সহজ হইয়া আসিতেছে।

चात এकि विवरत जानागंगरक विलक्त দৃষ্টি রাখিয়া চলিতে হইবে—ব্রাক্ষধর্ম এরপ উন্নত ও সামঞ্জস্যবিধায়ক যে, ইহা দারা সকল শ্রেণীর লোকেরই জ্ঞান ও হৃদয তৃপ্ত इहेटक পाরিবে; किन्छ हेश य आकारत लाकमभरक উপनीज इहेल महे भरनात्र्यं পরিপুর্ণ হইবে, ভাহার নির্মাণ ত্রাহ্মগণের নিজের উপরে বছল পরিমাণে নির্ভর করি-তেছে! বাহ্ আকারের উপর ধর্মাধর্ম নিভর করে না বটে কিন্তু সাধারণতঃ ব্রাক্ষ-সমাজের বল অনেক অংশে তাহার অধীন হইয়া আছে। অ'কারের গুণে ধর্ম্মের मोम्मर्गा वर्फिंग्य इग्न ७ व्यक्तित्व एमार्य काहा लुख इरेशा गाय। जाकायमा जगन আকার ধারণ করিতে পারে যে ভাহাতে কেবল বালক ব্যহীত আর কাহারও প্রীতি লাভের সম্ভাবনা থাকিবে না, অথবা এমন আকার ধারণ করিতে পারে যে, উন্নত লোকের মনে শ্রহ্বার পরিকর্ত্তে ঘূণার উদয় হইবে। অনেকে বলিতে পারেন যে, যাহা-দের আধ্যাত্মিক ভাব প্রবল আছে, বাছ श्वाकादत्रत्र रेवलकाना उंशिकिशस्य वाथा मिट्ड পারে না। কিছ আমরা কাহতেছি যে, বাঁহাদিগের আধাাত্মিক ভাব প্রবল আছে, वांशन्तिक विक्छे क्षाद्यालय श्रद्यालय হয় না ; খাঁহাদিগের আখ্যাত্মিক উন্নতি क्तिए इन्द्रिक्षिश्वाहर्भिद्रशत कना हे अधिक क्रिका सावसान । सङ्ग्रह सूर्या **ज्**या निवाद्यपत्र गरकः गरकः समुरगत्र स्राह्ण शति-कुष स्टेरक होता, देख सिम्ब देखता केहिक

নয়। ত্রাকাধর্মের মত ও ভাব পরিশুদ্ধ रहेरले हेरात वाष्ट्र यांकारत यनि हिन्द्रका-जित अक्रिक जात्व, खाहा हरेटल हिन्छ्मगारक हेशत ञ्चान कृष्णु । सहित्रा थाक्टिय । ব্রাকাণর্ম হিল্ছদিগের ধর্ম—ব্রাকাধর্ম হিন্দুদিগের ধর্ম এ কথাটিতে এখনও অনেক ষাপত্তি আছে, কিন্তু দে আপত্তিতে কর্ণ-পাত করিবার প্রয়োজন নাই। রুক্ষকে বর্দ্ধিত করিতে হুটলে কেবল মৃত্তি-কার রস পর্যাপ্ত হয় না, আগদ্বক বায়ু ও - ^{প্রা}শ্যকের যথেষ্ঠ সহকারিত। আধৃশ্যক ^{হয়; ত}াপি রুফটি পৃথিবীরই সন্থান থাকে িছার সন্দেহ নাই- ব্রাক্ষণেকে পুষ্ট করিবার নিমিত্ত আরব ও পারদ্যের বায়ু ইউরোপ ও আমেরিকার আলোক অনেক সাহায্য করিয়াছে, কিন্তু হিল্ছ মৃত্তিকা रुरेट वरे हेरात छेटछम रुरेग्नाटकः वेश वज्रुवन्त्रे হিন্দুধর্ম——একে ত্রাহ্মধর্ম হিন্দুদিগের ধর্ম, হিন্ফুজাতিও বিচারে একেশ্বরবাদী হইয়া অনেক দূর অগ্রসর হইয়াছে, তাহাতে শिक्षिक लोकपिरगंत नमार्गरम हेइ। तहे नहात्र

হইতেছে, ত্রাক্ষণণ য়দি ইহাকে উপ-যুক্ত আকারে বিভূষিত করিয়া রাখিতে পারেন, তাহা হইলে ভারতবর্ষ ইহাকে আএ-হের সহিত রক্ষা করিতে থাকিবে।

উপরে উলিখিত হইয়াছে যে, হিছজাতির বিচারগত একেশ্বরাদ কার্য্যে পারণত
করিতে কাল বিলম্ব দহ্য করিতে হইবে; কিন্তু
কেবল কাল বিলম্ব নহে, অনেক আয়াস ও
ত্যাগ স্বীকারও সহ্য করা আবশ্যক হইবে।
ইহা মনে করিয়া রাখিতে হইবে মে, আপনাদের সুবিধা অনুসন্ধান ও জাতি সাধারণ
উন্নতির চেন্টা এক পদার্থ নহে। ব্রাক্ষধর্মকে,
ক্তে হউক বা বৃহৎই হউক, একটি সম্প্রদান
রের ধর্ম করিতে হইলে তাহার অনেক সহজ্ঞ
পথ লাছে; কিন্তু ভাহা ব্রাক্ষসমাজের উল্লেখ্য

ব্ৰাহ্মধৰ্মকে জাতি সাধারণ ধৰ্ম नदहः করিতে হইবে এবং তজ্জন্য তাহার বিরুদ্ধ দমুদার ভাব আপাততঃ কার্য্যকর হইলেও তাহ। পরিত্যাগ করা আবশাক। উৎসাহের অগ্নি যখন হৃদ্য়কেতে প্রজ্বলিত হয়, তথন তাহার ধূমজালে মনুণ্যের চকু প্রায়ই জন্ধ इरेशा পढ़ ; ४ महीन উৎসাहानल अडीव ছুর্লভ, ইহা বিশ্বত হইতে নাহয়। বৈর্য্য ও সহিষ্কুতা অত্যন্ত আবশ্যক। ব্রাহ্মধর্মের কেবল বিস্তার নয়, গাডীযাঁ হৃদ্ধির নিমিত্ত ও দল বিশেষে বন্ধ করিবার নিমিভ্^{, হৈ}, জাতিসাধারণ করিবার নিমিত্ত যে ^{উদার} লক্ষোর সেবা করা হইতেছে, তাহাতে সী मात्र क्षमत्र ममर्थन कविता तांशिट ध्हेटव : कां आत्माला । यन छो छात्र अनाथा ना ₹स ।

. ঈশ্বরের সহিত আমাদিণের সাক্ষাৎ সম্বন্ধ।

ইনলোকে অবস্থিতি ও উন্নতির নিমিত্ত মনুষ্যের যে কন্ত প্রকার পদার্থের প্রয়োজন ভাষার সংখ্যা করা কাছার সাধ্য। মাতৃ-গভে সঞ্চার অব্ধি জাদ্য পর্যান্ত আমরা যে সকল পদার্থের সাহাত্য লইয়া জীবিত রহি-রাছি ও শরীর মনের উন্নতি সাধন করি-ভেছি, তাহা আমরা সকলেই ভোগ **ছা**রা कानि वरहे, किछ खान चाता थांश किहूरे জানি না বলিলে অত্যুক্তিৰের না। আমরা যে সকল পদার্থ উপভোগ করিতেছি, তাহা-দিগের মধ্যে অধিকাংশের অন্তিত্ব পর্যাস্কর অদ্যাপি আমরা উপলব্ধি করিতে সমর্থ হই নাই। যে কতিপয়ের সহিত আমাদিগের পরিচয় ইইয়াছে, তাহাদিপের কিছুমান বিশেষ তত্ত্বই আমরা জ্ঞাত নহি-৷ বিশেষ **उटखुत मर्ट्या अहे यांक मृष्ट करल क्रांनि** रहे.

যাহা আম, দিগের শরীর মনের নিভান্ত व्यद्यां जनीय, जयाचा क्छिभन्न ज्याहिक बदभ ও আর কভিপয় যাচিত ৰূপে প্রাপ্ত হই-তেছি এবং তৎসমুদায় উপকোগ করিয়া উন্নতির পথে ও আনন্দের পথে অগ্রসর হইতেছি। এই বিষয়টি বিস্তৃত ৰূপে আলো-চনা করিতে করিতে যখন আমরা স্পষ্টরূপে দেখিতে পাই যে, আমাদিগের শারীরিক ও মানসিক অভাব পূরক দ্রবাদির মধ্যে কিছুই আমরা স্বয়ং উৎপাদন—প্রকৃতার্থে উৎপাদন করিতে পারিতেছি না, অথচ সেই সমুদায় ্ত্ৰবাই সম্পূৰ্ণ ৰূপে প্ৰস্তুত হইয়া, অভাবের গুরুত্ব অনুসারে কখন যাচ্ঞার পূর্বে ও কখন যাচঞার গরে, আসিয়া আমাদিগের অভাব সকল বিদুরিত করিতেছে, তখন আমরা সম্মুখে এক মহান্ জ্ঞান ও শক্তির সমষ্টি ভিন্ন আর কিছুই দেখিতে পাই না। তাহাকেই তথন আমরা সমুদায়ের শ্রহী নিয়ন্তা ও দাতা বলিয়া সম্বোধন করি। আমরা কি ৰূপ দ্রব্য সামগ্রীতে পরি-পোণিত হইয়া মৃত্য করিয়া বেড়াইতেছি छाहा आमता किहूरे कानि ना वटि, किन्द তৎসমুদায়ের যে একজনও জ্ঞাতা নাই এসভ नटर, त्रहे महान् श्रुक्रवरे छ श्रम्भूमारव्रत এक মাত্র জ্ঞাতা; নির্মাতা ও চালয়িতা ভিন কেংই কোন বিষয়ের সমাক্তভ্ত অবগত हरेए भारतन ना।

त्मरे जिन्दिनीय श्रुक्त त्य जिन काल जामानिशतक जवांत जानंत्रन कतियारे निज्ञच जिल्लाहरून, जवर मंजीत उ क्रम्ट्य कण्मित्र जांचा मध्या श्रुवंक छर श्रुत्ता-भ्रत्यांभी विविध जांच्या श्रमार्थंत मृद्धि किन्न गारे नीजव जिल्लाहरून, जम्म नत्म, जिन्न निज्ञच व्यविधान श्र्वंक जामानिरशत जांचा नकल निजीकन कतिर्छत्म जवर जवसा विविधना कतिया जाना स्थादक ज्ञास

भूतन कतिरण्डिम। य द्यनाली अवलक्ष्म পূৰ্বক তিনি মেই কাৰ্য্য সম্পাদন করিতে-ছেন, তारा अत्वक मग्रदत এकर श्रकांत्र पृष्ठी হর বলিয়া অনেকেই জগতের কার্যো তাঁহার माकार याश नाहे विलया महन करतेन। छी-ছারা বলেন যে যেমন ঘটিকা-যন্তের নির্মাতা তাহাতে শক্তি প্রয়োগ পূর্বক চালাইয়া नित्लहे छाहा बाता यथा निश्रम चन्छा,मिनिछे, সপ্তাহ, মাস প্রভৃতি প্রকাশিত হইতে থাকে. দেই ৰূপ জ্ঞান ও শক্তি স্বৰূপ[®] ঈশ্বর এই জগৎ যন্ত্র প্রস্তুত করিয়া ইহাতে ভাঁহার 'যে শক্তি প্রয়োগ করিয়াছেন, তাহাই ইহাকে চির্দিন এক ৰূপ নিয়মে পরিচালিত করি-তেছে। কি প্রমাদ! যে শক্তিবিক্ত জান-यक्षभ ঈশदের महिङ অসংযুক্ত इहेग्रा कार्या করিতেছে, তাহাই কি এইক্ষণ স্মাদাদেগের छान हकूत निक्र भोलिक अधी ७ नियुष्ठा বলিয়া প্রতিভাত হইতেছে? না, কখনই এৰপ বিশাদ হয় না। যাঁহারা এই ৰূপ কহেন, ভাঁহারাও বোধ হয় কিঞ্জিৎ চিম্বা कतित्न प्यामात्मत नाग्नाहे विनया हेठित्वन । ঘটিকা যন্ত্রের নির্মাতা উহা নির্মাণ করিবার সময় কি কি উপাদান প্রাপ্ত হইয়াছিল দেখা ঘাউক। সে কঠিনতা ও মস্ণতা গুণ সমান্বত কিঞ্চিৎ পিত্তল ও লৌহ এবং স্থিতি স্থাপকতা গুণ বিশিষ্ট কিঞ্চিং ইম্পাৎ এবং সমকালভোগী একটি দোলক প্রাপ্ত হইয়া-ছিল বলিষাই তাহাদিগের সহাযতা কবে অভিলবিত ৰূপে একটি কালমান যন্ত্ৰ প্ৰস্তুত ক্রিতে পারিল এবং তাহাদিগের আপনার বলাংশ গচ্ছিত রাখিয়া ভদ্মারা নার। প্রকার কার্য্য সম্পাদন করিতে লাগিল। শাপন ব্লাংশ এই ৰূপে গাড়িত রাখিবার উপযুক্তকোন পরকৃত পাত্রনা পাইলে কি সে में पंज अक्षण कतिएक शातिक ? कथन है ना ! रेश कित हरेना, इटन अस्करन क विलट

পারেন যে, পর্যাদা এই বিশ্ব সৃজন করি-বার পর ইহাতে আপনার শক্তির কিয়দংশ প্রদান করিয়াই ইহার সহিত নিঃসভার্ক হইয়া-ছেন; ওদিকে বিশ্বযন্ত্ৰ সেই শক্তাংশ গচ্ছিত ताथार्ट्स उद्धाता हेग यथा नियरम हालिङ হইতেছে? আধার ভিন্ন শক্তির অবস্থান সম্ভবিতে পারে না। তাহা যদি না পারিল তবে স্টিকালে কোন্পদার্থ পূর্স্তিত উপযুক্ত গুণশালী হইয়া তাঁহার শক্তি ধারণ পূর্বক এই বিশ্ব ৰূপে পরিণত হইল ৷ এই বিশ্ব मृचित शूर्त वयन धना कान भनार्थरे हिल না, তথন কোন পদার্থই দেকপ হয় নাই। ঈশর আপনার ইচ্ছা, জ্ঞান, থেম, শক্তি रहेरा अहे विश्व उँ अशामन कतियार इस, সুতরাং তাহাই এই বিমের উপাদান কারণ ও নিমিত্ত কারণ। যখন সেই ইচ্ছা জ্ঞান এভৃতি হইতে ঈশার বিজিল্ল নহেন তথন বিশের সহিত ঘটিক। যন্ত্রের তুলন। করিয়া, ইহা হইতে ইহার শ্রেষ্ঠা ও নিয়ন্তাকে পৃথক্ করিয়া জানাকে ঠিকু জানা বলা যাইতে পারে না।

অপরস্তু, কেছ কেছ বলেন যে ঈশ্ব প্রথমতঃ জগৎকে শক্তি ধারণের উপযুক্ত পাত্র করিয়া নির্মাণ করিলেন, পরে তাহাতে ঘটিকা নির্মাতার ন্যায় শক্তি প্রয়োগ পূর্বক চিন্ধা করিলেই এই ৰূপ বাকোর নির্থকতা क्षमग्रमभ कता शहेटक शादत । ঘটিকা-যন্ত্ৰ প্রভৃতিতে প্রয়োজিত শক্তি, চক্র দণ্ডাদিকে চালিত করিতে থাকে বটে কিন্তু (ক্রেম **बारक है** अञ्चि) कान निकल अवलस्त्र উপর ভর না ৰিলে তাহা কাহাকেও চালা-**इेट्ड शांद्र ना।** পर्यादबक्कन ও পরोका দারা থিনি এই গৃঢ় সভাটি উপলব্ধি করি-য়াছেন, ভিনি অবশাই এই জগৎকে ঘটিকা যত্তের সহিত তুলন। করিতে লক্ষিত হই-

বেন। কারণ যদি বলা যায় যে, প্রয়োজিত শক্তাংশ এই জগৎকে চালিত করিতেছে তবে তাহার অবলয়ন কোথায়? এইকাণে অনুসন্ধান করিয়া দেখুন, দেখিবেন স্বয়ং ঈশরুত দেই জগজ্জননী শক্তির নিত্যাব-

প্রমেশ্র নির্ন্তর আমাদিগের সহিত ওতপ্রোত ভাবে অবস্থান করিয়া শুদ্ধ যে আম:দিলের শরীর মনে কতিপয় অভাবের সঞ্রি করিচেছেন এবং তাহা পূরণ করিবার নিনিত্ত কখন অঘাচিতকপে এবং কখন যাচিতৰপে নানা প্ৰকার দ্ৰবা সামগ্ৰী প্রদান করিতেছেন, এমন নছে, যাহাতে সেই সকল সমিগ্রী আমাদিগের ব্যবহারোপযোগী ধাকে, তাহার নিমিত্তও সতত অবিভাচেম যত্ন করিতেছেন। যে সকল সাম্ঞী অমে:-मिर्गत डेश्टलोकिक अग्रिएया भएक अकार প্রয়েজনীয় এবং সংহার অভাবে আমাদি-গের কোন অকার উন্নতিই সম্ভবিতে পারে না, তিনি সেই সকল সামগ্রী অধিকতর ন্ত্রে সহিত রক্ষা করিতেছেন এবং যথা भगर्व १८ साङ्ग जानिया. उरमपूर्णाय विधान শ্রীর ও মন যে সকল শক্তি কবিং, হড়েন ও ভাষার ছারা পরিপোধিত না হইলে ইল লেকে আমের: কিছুই করিতে পারিতাম गा, यनि उदम्यमास खामानिशस्क आर्थना কলিয়া লাভ করিতে হইতে, ভাস হইলে এত দেন আমাদিগের যে কি ভয়ানক বিনা-শের অবসঃ উপস্থিত হইত, তালা আমরা ক^{েন}: সারাও ছির কু**রিছে পারি না।** ভিনি অগোদিগের সেই ভাবী অবস্থা সমাক্ হ্যান্ত্র করিয়াই, সেই সকল অত্যাবশাক সমগ্রী অধাচিতকপে ও পর্যাপ্ত পরি-মাণে বিতরণ করিছেছেন এবং **তন্মধ্যে যে** গুলি আমাদিগের ও অন্যের ব্যবহার ছারা द्वित इहेगा याहेटहरू, छाहा यदेवत नहिन

সংস্কার করিয়া দিতেছেন। তিনি শরীরের নিমিত্ত জল বায়ু, তাপ, পৃথিবী, উদ্ভিদ, মাংস, পরিপাক শক্তি, রক্ত সংস্থার শক্তি, নিদ্রা, চৈতন্য ও রোগি আরাম করিবার শক্তি এবং আন্নার নিমিত্ত ব্যুতি, বুদ্ধি, হর্ব, বিষাদ, ইচ্ছা ও ই टिम्स बाता वहिर्वेख स्त्रान লাভ করিবার শক্তি প্রভৃতি কত শত অপূর্ব সাংগ্ৰী যে প্ৰতিনিয়ত অ্যাচিত ভাবে প্ৰদান করিতেছেন এবং দুদিত বা অকর্মণা দেখিলে সংস্কার করিয়া দিতেছেন, ভাষা গণনা করা কাছার সাধা! যে সকল উপায়ে তিনি ঐ সমুদায় বিভর্ণ করিতেছেন ও দোব সংস্কার করিয়া তালদিগকে আমাদিগের ব্যবহারোপযুক্ত করেন, তাহা পর্যাবেক্ষণ ক্রিলে কেহই ভাঁহাকে সময়ে মাতা সময়ে পিতা রূপে দর্শন করিতে অক্ষম হয়েন না। অতএব, আমরা অদা উপরোক্ত সামগ্রী গুলির মধ্য ছইতে তুই একটির অজত্র দান ও সংস্কার তত্ত্বা কিঞ্ছিৎ আলোচনা করিতে করিতে এক বার ভাঁচার জনক জননী রূপ দর্শন করিয়া কুতার্থ হই।

জীব দেহের পক্ষে জল একটি অতীব
প্রয়োজনীয় সামগ্রী। ইহার অতাব হইলে
সকলেরই অন্তিত্ব অসম্ভব হইয়া উঠিত,
সুতরাং পৃথিবীর সর্বৃত্তই ইহা অপর্যাপ্ত
পরিমানে বিভারিত হইয়া রহিয়াছে। আশু
সামানা দৃষ্টিতে দেখিতে পাওয়া যায় বটে
যে সমুদ্র, নদী কুল, প্রত্তবন প
ভিন্ন আর কোন স্থানেই জল নাই: কিছ
বাস্তবিক ভাহা নহে। কি বায়ু, কি ভুগর্জ,
কি মরুভূমি সকল স্থানেই ব্যাহিক পরিন্
মানে জল আছে। ভুগর্জ খনন করিলে
যে সর্বৃত্তই জল পাওয়া যায় ভাহা অনেকেই
দেখিগাছেন সূত্রাং ভবিষয়ে আর কিছুই
বলিবার প্রয়োজন নাই। বায়ুও মরুদেশে
যে কিরপে জল অবস্থিত রহিয়াছে ভাহার

সমুদ্ধে কিঞ্চিৎ বলা অভীৰ ভাবিশ্যক। वाश्रुएक कलीय वास्त्र ७ जल कना नकल रय নিরম্ভর ভাস দান রহিয়াছে তাহার সুলত ও উৎকৃষ্ট প্রমাণ এই যে, পৃথিবীর উপরিতা-গের ন্যায় বায়ুতেও নানা জাতীয় কীটানু বাস করিতেছে: এবং এই খানে থাকিয়াই ভাহারা আহার বিহার ও সন্তানোৎপাদন করিতেছে। সেই সকল জীবের শরীরে যে রস রক্ত প্রভৃতি তরল পদার্থ আছে তাহা ঐ ভাসমান জল কণা সকল হইতেই প্রত্যুৎপন্ন ছইয়া থাকে। অপরস্ত রাত্রিতে যে শিশির-বিল্ফু সকল পতিত হইয়া পৃথিবীকে শ্লিঞ্চ করে তাহাও ঐ সকল ভাসমান জল কণা হইতে উৎপন্ন হয়। মরুভূমিতে জলের অস্তিত্ব কিরপে সম্ভবে তৎসম্বন্ধে একটি বিশেষ প্রমাণ আছে। মরুদেশস্থ উত্তপ্ত বালুকা রাশি উত্তীর্ণ হইবার সময় শুদ্ধতালু পথিক-গণ স্থানে স্থানে বাল্কার কিঞ্চিৎ নিয়ে ঈশরের বিশেষ প্রশাদ রূপে তরমুক্ত প্রভূ-ভির নাায় এক প্রকার কল প্রাপ্ত হইয়া তাহারা ঐ ফলের অভান্তরে শীতন জল প্রাপ্ত হইয়া পিপাসা শান্তি করেন। এছছিন্ন মরুভূমির মধ্যে স্থানে স্থানে রক্ষের ছায়া ও শীতল পানীয় পূর্ণ জলাশয়াদিও প্রাপ্ত হওয়া যায়, সেই সকল জ্লাশয় ও বৃক্ষ সতত চতুর্দ্দিকস্থ তাপ ও বালুকার পীড়িত হইরাও শুক্ক হইরা অতএব জীবের প্রাণ রক্ষার षांष्ठ ना। নিমিত্ত অন্তঃসলিল ও বহিংসলিল উভয়ই যে সেই ভীষণতর মরুদেশেও বর্ত্তমান আছে তাহা স্পর্যট দেখিতে পাওয়া ঘাইতেছে। **क्ष्मिंग्हें** त्वांथ हन्न नकरलई निःमत्नर দেখিতে পাইতেহেন যে, ঈশর, এই জগতে कत्नत त्य क्रम श्रद्धांकम मृष्टि कतियारहन, তাহার বিভরণ বিষয়েও সেই ৰূপ যুক্ত হস্ত **र्रेशार्य**

महान् मक्लचक्ष शत्राभव य कननीत नारं नभूनाय कीर्यंत्र नम्पूर्थ शानीय शति-বেশন করিয়াই ক্ষান্ত রহিয়াছেন এমত নচে. সেই পানীয় যাহাতে দুযিত হইয়া ভাহাদি-গের হানি জনক হইতে না পারে ভাহার নিমিত্তও অবার পিতার ন্যায় বিবিধ উপায়ে নিরন্তর যত্ন করিভেছেন। জীব ও উদ্ভিদের নানা প্রকার শুভোদ্দেশ্য সাধন করিবার জন্য জলকে ভিনি যে তারল্য ও দ্রবকারিক এড়তি গুণে মণ্ডিত করিয়াছেন, कना ठाहारक गर्तकाई भट्य मध्य पूर्विक পদার্থের সহিত মিশ্রিত হইয়া কলুবিত হইতে स्टेट अवर अहे मधूनात माम स्टेट তাহাকে মুক্ত করিকার নিমিত্ত তিনি যে কত প্রকার উপায় অবলয়ন করিতেছেন তাহা কে বলিতে পারে ! আমরা তাঁহার কীট সম সন্তান হইয়া কি প্রকারে তাঁহার সমুদায় উপায়ের জ্ঞাতা হইব। আমরা যাহা কিছু জানিতে পারি, তাহা প্রকাশ করিলে যদিও ভাঁচার মাহাত্মোর কিছুই হ্রাস রদ্ধি হইবে না, তথাচ আপনাদিগের ভৃঞ্জির জন্য একবার তাহা না করিয়া ক্ষান্ত থাকিতে পারিলাম না।

জলের সহিত ছই প্রকারে অস্বাস্থ্যকর দ্রবাদির যোগ হয়. যথা সামান্য যোগ ও রাসায়ণিক যোগ। যে গুলি সামান্য যোগে মিপ্রিক তাহা ছাঁকিয়া লুইলেই পূথক্ হইতে পারে. আর যে গুলি রাসায়ণিক গোগে মিপ্রিত তাহা রাসায়ণিক প্রক্রিয়া ভারা বিয়োজিত না হইলে কোন মতেই পূথক্ হয় না। যে সকল উপায় ভারা আমা-দিগের জ্ঞান স্বৰূপ পিতা সংস্কার কার্যা সাধন করিতেছেন তাহা ছারা উভয় বিধ মলই দুরীকৃত হইয়া যাইতেছে

১। তাপ ছারা বাস্পোৎপাদন—জনে ভাপ প্রয়োগ করিলে তাহা হইতে যে বাস্প উদ্যাত হইতে থাকে তাহা কাহারো অবিদিক্ত নাই ৰটে কিন্তু ইছাই দেই মহানু কাৰ্য্যের এক প্রধান উপায়। তিনি স্থাকিরণের তাপ দ্বারা কলুবিত জল রাশি হইতে নিরন্তর মে বাজা উৎসারণ করিতেছেন, ভা**হাকে** আকাশে লইয়া শৈতা প্রয়োগ দারা পরি-ষ্কৃত জল ৰূপে পরিণত করিতেছেন। ৰূপ পারিপাটোর সহিত এই উপায়টি কার্যা-কারী হইতেছে তাহা একবার পর্য্যালোচন: করা যাউক। জলে একদা অধিক পরিমাণে তাপ সংযোগ করিলে তাহা হইতে যে 🤏 🕏 জলীয় বাষ্পই উদ্ধাত হয়, এমত নহে, জল মধাস্থ অনাানা পদার্থও দেই তাপ প্রভাবে বাষ্পীভূত হইয়া ভাষার সহিত উঠিতে থাকে। অণিচ, জলে অপে পরিমাণ তাপ ক্রমাণত প্রয়োগ ক্রিতে থাকিলে, শুদ্দ জল কণা मक्लरे वाष्ट्राकात थांत्र कतिया डेकिएड ধাকে, তাহার সহিত প্রায় অন্য কোন দ্রবাই উঠিতে পারে না। ঈশ্বর যে সূর্যা তাপ হারা বাজ্যোৎসারণ করেন, তাহা অতি মৃত্ সুতরাং বাজের দহিত বিজাতীয় পদার্থের উচ্চামন मग्रादना थि छ अप्ता तमात्रविकारिक প্থিতগণও মৃত্সভাপ ধারা দুবিত জল इ**টতে বাজ্যোদ্যেয় করান এবং শৈতা ছারা** সেই সকল বাজা ঘনীভূত করিয়া পরিস্কৃত জল প্রস্তুত করেন বটে, কিন্তু যন্তের উৎকর্ব বিষয়ে উভারা এই সন্ধানের উদ্ভাবকের भानशृलित निकार ७ अधामत इटेट भारतन না। পাহারা যে অগ্নিরু সন্তাপ বাবহার করেন ফুর্না ফিরণের তাপ অপেকা তাহা অধিকাংশে উগ্র_ং সুতরাং তাঁহাদিগের বাজ্পের সহিত অনেক বিজাতীয় পদার্থও উপিত হইয়া পড়ে। ঈশবের ভাপ প্রয়োগ প্রণালীতে আরও পারি**পাট্য আছে**। একটি কারণও আছে —উক্ত পণ্ডিছগণ যে পাত্রে জল রাখিয়া সম্ভাপ প্রয়োগ করেন, ভাহার নিম দেশে অগ্নিরক্ষিত হইয়া থাকে,

हेंहारक के शास्त्रज्ञ कलांदिक कल छेज्छ হইয়া বেগে উদ্বিগামী এবং উপরি ভাগক শীতল লল অপেকাক্তৰ গুৰু হইয়া সেই ৰূপ বেগে নিম্নগামী হইরা পড়িতে থাকে। অন-वतक धरे कथ উद्वीध विशेषात्र जल चाटना-লিত হইতে থাকে বলিয়া জ্লীয় বাজোর সহিত অন্যান্য দ্রব্যের বাষ্পত না উঠিয়া থাকিতে পারে না। ঈশ্বরের তাপ প্রয়োগ প্রণালী অন্য ৰূপ। তিনি স্থ্য কিরণ দার। জলের শুদ্ধ উপরিভাগ মাত্র সম্বপ্ত করিয়াই वाक्य উৎসারণ করেন সুতরাং জলের মধ্যে কোন প্রকার আন্দোলন উপস্থিত হইয়া নিকাতীয় বাস্পের উদ্যামন পক্ষে কিছু মাত্র সহায়তা করে না। এই ৰূপে জলের উপ-রিভাগ সম্ভপ্ত করিয়া ভিনি আর একটি महान् छेटकमा माधन कतिरहरहन। यपि जे পণ্ডিতদিগের ন্যায় তিনি জলস্থানের নিয়-ভাগে তাপ প্রয়োগ করিতেন ভাছা হইলে मयूनाय़ कल একেবারে উত্তপ্ত হইয়া ভন্মধাস্থ প্রাণী মাত্রের সুলোচ্ছেদ করিত। মানবগণ এই প্রণালীর উৎকর্ষ. ऋषत्रम्य করিলেও, এ্তদনুসারে কার্য্য করিতে পারেন না; কারণ উহোরা জল চোয়াইবার জনা যে ৰূপ পাত্র ব্যবহার করিয়া থাকেন ও করিতে পারেন, তাহার আয়তন স্মৃতি সামান্য, সুতরাং জলের উপরিভাগে তাপ প্রয়োগ করিলে তাল হইছে অণ্প সময়ের মধ্যে অধিক বাষ্প উঠিতে পারে না,সুতরাং কার্মাও শীঘ্র সমাধা হইতে পারে না। কি**ন্ত ঈশরকে পাত্রের অ**শপায়তন বিষয়ে কিছু মাত্র চিস্তা করিতে হয় না। দমন্ত পৃথিবীই ভাঁহার জলাধার ইহার প্ৰত্যেক স্থান হইতে প্ৰতিক্ষণে যে ৰাষ্ণ উপিত হইতেছে ভাহার সমন্তি অতীব রহুৎ। ্২। **শৈ**ত্য **ধারা উপ্তিত বাষ্পাকে জল ও ভূষার** করণ—যেমন তাপ প্রয়োগ ভারা জলকে বাষ্প ৰূপে পরিণত করিলে, ছত্মধ্যস্থ বিবিধ

অপরিষ্ভ দ্রবা পৃথব্ হইয়া পড়ে, ভক্রপ শৈতা প্রয়োগ ছারা বাষ্পর্কে জলবংপ পরিণত করিলেও ভাগার মধ্য হইতে নানা প্রকার বিজাতীয় পদার্থ বিযুক্ত হয়। ইহাই তাহার জল সংস্কারের দিতীয় উপায়। मयुक्त, नमी, दुम, मृखिका ও উদ্ভিদ হইতে मर्ज कन या वाष्ण्यामि উष्पिठ, इटेर्डिह, তাহার সহিত যে সকল মল মিপ্রিত থাকে ভাছাই এই উপায়ে পরিষ্কৃত হইতেছে। উপিত বাষ্প রাশি জলাকারে পরিণত হটয়া কিয়দংশ রাত্রিকালে শিশিররূপে ও বর্ষা ঋতুতে বৃত্তিৰূপে পতিত হয় এবং কিয়-দংশ ঘনতর রূপ ধারণ করিয়া উচ্চ গিরি-শিগরাদির উপর তুষারক্রপে অবস্থান করে। একমাত্র বাষ্পকে এই ৰূপ তিন আকারে পরিবর্ণিত করাতে জগতের কত প্রকার উপকার সাধিত হইতেছে তাহা গণনা করিয়া শেষ করা যায় না : রুফি ও শিশিরের জল ভাতীৰ পরিস্ত কিন্ত কথন কথন বায়ু-ক্তিবুলি প্রভৃতির সচিত মিজিত হইরা কিঞ্চিৎ অপরিষ্কৃত হইয়া পড়ে। হউক প্রথম বৃষ্টির জলই প্রায় অপরিস্কৃত क्टेंग़। थात्क, किन्नु किंकू काल वृष्टि इटेटक আরম্ভ করিলে আর সে দোষটি থাকিতে পার না। এই ঘটনা নিবন্ধন বায়ুর সংস্কার कार्या अभिक इंडेट्ड । গিরিশুদে ·বরক স্থাপন করিবার একটি বিশেষ উদ্দেশ্য দেখিতে পাওয়া যায়। . বর্ধাকালে রুটির करल এবং শীভकारल শিশিরের জলে नদী শ্রভৃতির পোষণ এবং মৃত্তিকাদির আদ্রতা সম্পাদিত হইয়া থাকে কিন্তু গ্রীম্মকালে তাহা হইতে পারে না। ঐ কালে গিরিশ্ল-স্থিত শীতকালদঞ্চিত তুষাররাশি সূর্য্যতাপে গালত হইরা জলাকারে পরিণত হয় এবং সেই জল নিয় ভূমিতে অবতরণ করিয়া সকল रिनंद अनक्षे निवादश करते। यमि भीक

কালে এই ৰূপ উচ্চ শৃঙ্গে বরক সঞ্চিত না হইত, তাহা হইলে প্রীক্ষকালে জীব মাত্রের অন্তিত্ব সংশার হইয়া উঠিত সন্দেহ নাই।

৩। বায়ু সংস্পর্শ ছারা **জলে**র রূপান্তর कत्र - ज्ञेषेत कलाक वातु मायरगत माजि প্রদান করিয়া তাহার সংস্কার সাধন করি-তেছেন। জলের উপরিভাগে সভর্ত যে বায়ু রাশি অবস্থান করিতেছে, তাহা ছুই প্রকার ভৌতিক পদার্থে নির্দ্মিত: যথা, অমুজান ও यवकात कान । ७३ ५३ अकात भनार्शत প্রকার যোগে একতিত হইয়। বায়ু প্রস্তুত করিয়াছে ভাল রাসায়ণিক সংযোগ নহে, সুতরাং অপোয়াসেই ভাহাদিগকে করা যাইতে পারে। জল মখনই ভদুপরিস্থ বায়ুর অংশ সকল শোষণ করিয়া উদরুস্থ করিতেছে, তথনই তাহা হইতে অমুজান পদার্থ জলাঞ্জিত বিবিধ মলাদির সহিত মিপ্রিত হইয়া তাহাদিগকে অণ্প হউক আর অধিক হউক ৰূপান্তর করিয়। ফেলিতেছে। এই বণে ৰপান্তরিত পদার্থবাহের মধ্যে কোনটি জীব দেহের হিতকারী হইয়া উঠি-তেছে এবং কোনটি গুরুত্ব প্রাপ্ত হইয়া অধংস্থ হইয়া পড়িতেছে । নদী প্রভৃতিতে স্রোতঃ থাকাতে এই রূপ সংস্কার অধিকতর পারিপাট্টের সহিত সম্পাদিত হইতেছে। স্রোত নিবন্ধন সমুদায় জলই পর্য্যায়ক্রমে উপরিস্থ বায়ুর সহিত সংস্পৃষ্ট হইজে পারে **সুত**রাং সমুদারের সহিতই বায়ু অনায়াসে মিঞ্লিত হইতে পারে। পুক্ষরিণী প্রভৃতির লল অপেকা স্রোভস্বতীর লল যে উৎকৃষ্টতর তাহার একটি প্রধান কারণ এই। বায়ু হইতে অমুজান পদার্থ বিযুক্ত হইয়া যে সকল রাসায়ণিক সংযোগ সাধন করে; বর্ণনা করিতে গেলে প্রস্তাবটি কিঞ্চিৎ ছুৰোধ ও দীৰ্ষ হইয়া পড়ে, সুভারাং তাহাতে নির্ভ হওয়া গেল। যাহা হউক জলের

শহিত বায়ু সংযুক্ত হইবার আর একটি প্রধান
উদ্দেশ্য আছে তাহাও এছলে উল্লেখ না
করিয়া থাকিতে পারিলাম না। জলের
মধ্যে যে সমস্ত জীব বিচরণ করিতেছে, তাহাদের নিশাস প্রশাসের নিমিত্ত প্রতিনিয়ত
যে বায়ু রাশির প্রয়োজন, তাহা ঐ শোবিত
বায়ুর কিয়দংশ দ্বারাই সাধিত হইয়া থাকে।
অত এব জলের বায়ু শোবণ করিবার শক্তি
না থাকিলে যেমন তাহার সংস্কারের ব্যাঘাত
হইত, তেমনি তন্মধাস্থ জীব সকলও প্রাণ
ধারণ করিতে পারিত না।

৪। জীবগণ দ্বারা জলের ৰূপান্তর করণ---জল যে কত লক্ষ লক্ষ জীব জন্তুর আবাস তাহা তাহাদিগের ভ্রম্থী ভিন্ন আরু কাহারই গণনা করিবার সাধ্য নাই। সেই সকল জীবের मस्या श्रात भकतरे जालन जरलका इर्दलरक এবং জল মিপ্রিড মলাদি ভক্ষণ করিয়া জীবন ধারণ করে। যে প্রকার মল আমরা অগুৰীকণ হারাও দেখিতে পাই না,ভাহাও অনেক জীব অৱেখণ পূ**র্বক আহার** করিয়া শরীরের পুষ্টি সাধন করে। এই ৰূপ অনেক প্রকার মল জীবান্তরের শ্রীরের রাকু মাংস ৰূপে পরিণ্ড ইও্য়ায় **জল অনেকাংশে** সংস্ত হইয়া পড়ে। ঈশ্বর এক জীবের অগ্রাহ্য সামগ্রী আর এক জীবের গ্রাহ্য ও লোভনীয় করিয়া দিয়া কি আক্রিয়া কৌশ-ल्हे श्रकाभ कविरहरहर ।

ে উদ্ভিদ্ দারা জলের শোষণ—বেধি
হয় অনেকেই দেখিয়াছুছ যে, যথন নদী বা
পুদ্ধবিণী প্রভৃতির জল কোন বিশেষ কারণ
বশতঃ দূষিত ও বিবর্ণ হইয়া পড়ে, তথন
হাহার উপরিভাগে ও নিম্ন দেশে নানা
জাতীয় শৈবাল জিয়াতে থাকে। ঈশর
একটি মহান্ উদ্দেশ্য দাধন করিবার জনাই
ঐ সকল শৈবাল সৃষ্টি করিয়া থাকেন। ঐ
শৈবাল সমুদায় প্রতি-নিয়ত জল হইতে

नाना क्रांडीय मल लायन शूर्वक विक्रिक इरेट थाटंक ! कटलत्र घटधा तात्रात्रिक যোগাঞিত হইয়া যে মকল দুষিত পদাৰ্থ থাকে, প্রায় তাহাই শোষণ করিয়াই শৈবাল রুন্দ বর্দ্ধিত হয়। তাহারা য়ে আছে দুবিত পদার্থ শোষণ করিয়াই ক্ষান্ত হয় এমত নচে। দাক্ষাৎ সহজে, জলে সূর্যোর কিরণ পডিত হইলে জলীয় বাস্পের সহিত অন্যান্য দূষিত বায়ু উঠিয়া জন সমাজের অনিষ্ঠ করিতে না পারে ইহার জন্য এক প্রকার ক্রু শৈবাল জলের উপরিভাগে আবরক স্বৰূপে অব-স্থিতি করে। ঈশ্বরের এই উপায়ের যথা্য উদ্দেশ্য বুঝিতে না পারিয়া অনেক বাস্তি ্কান প্রকার প্রতিবিধান না করিয়াই পুঞ্চ-রিণী এভৃতি হইতে শৈবাল উঠাইয়া কেলেন এবং ভাহার কলে দুখিত জল পান করিয়া এবং দূবিত বায়ুর আত্রাণ লইয়া নানা প্রকার স্থানিবার রোগ-প্রস্ত হইয়া পড়েন।

ए करशक्षि छेलारतत छेटल भाज করিলাম, ভণ্ডিম আরো যে কভ উপায় আছে তাহা,কে বলিতে পারে। ঈশর স্বয়ং উপস্থিত থাকিয়া যথন শোধন কাৰ্য্য সমাধা क्तिएड हम, उर्थम हेश अरशका चारता (य অনেক উৎক্রমতর উপায় অদ্যাপি আমা-দিগের চর্ম-চকুর অগোচর ভাহাতে আর কিছু মাত্র সন্দেহ নাই। সভা-দেশীয় লোকদিগকৈ অধুনা নানা উপায়ে -্তলে সংস্কার করিয়া ব্যবহার করিতে দেখিয়া ভানেকে মনে করিতে পারেম যে ঈশ্বর कलदक कि नश्कात कतिरण्डिन । अण्य-वृक्ति लाक धक्म विलाख भारतन वरहे, কিন্তু যাহা বলেন ভালা কোন মতেই আছ इरेट शाद ना। मन्या, शक्त, शकी, कींहैं, প্তৰ উদ্ভিদ ও মৃত্তিকা সকলে একত হই^{নুনী} আপন আপন বাবদার দারা জলকে যে ৰূপ অপরুষ্ট করিয়া তুলিভেছে ভাষা

कतिएक शिरल अकान स्टेटक स्त्र। जिन्दितत হস্ত সেই সমুদায় পরিষ্কার করিবার জন্য वास ना थाकित्म अमा धरे शृथिवीत स कि ছুদ্দা উপস্থিত হুইত তাহা আমরা ক'পনা করিতেও পারি না। সমুদ্র, জল সংকারের প্রধান স্থান, সুতরাং ডাহার ও ডাহার নিকটবর্জী নদী প্রভৃতির জল সর্বাপেকা অধিকতর মল পূর্ণ হইবারই কথা। যথন এৰপ স্থানে আবাস স্থাপন করেন যে, উক্ত জল ভিন্ন তাঁহার অন্য উপায়ই থাকে না, তথনই তাঁহার জল সংস্কারের প্রয়োজন উপস্থিত হয়। তদ্তিম অন্য কোন স্থানেই সে क्ष इश ना। तोध इश क्रेश्वतत এই विधा-নের মর্ম অবগত হইয়াই প্রাচীন কালের বুদ্ধিমান ৰাক্তিরা বলিয়া গিয়াছেন এবং এখনও অনেকে বলিয়া থাকেন যে সমুদ্রের নিকটবন্তী লবণ দেশে আবাস স্থাপন করা প্রাজ্ঞদিগের উচিত নহে। অতএব মনুষ্য কিঞ্চিৎ বিবেচনার সহিত আবাস স্থাপন क्तिलारे जल मः कात्त्रत रुख रुरेख निक्रु ि পাইতে পারেন। পরমান্ধন্! তুমি যে আমাদিগের মদলের নিমিত্ত কথন মাতার ন্যায় কখন পিতার ন্যায় কার্য্য করিতেছ আমরা এইক্ষণে তাহার বিলক্ষণ পরিচয় পাইতেছি ৷ আমরা যে তোমার শ্লেহময় ক্রোড়ে অবস্থিত রহিয়াছি তাহাও আমরা এইক্ষণে স্পষ্ট ৰূপে অনুভব করিতেছি। এইকণে একমাত্র প্রার্থনা এই যে, যথনই ভোমার যে দান উপভোগ করিয়া বর্দ্ধিত হই, তথনই যেন আমরা ভোমার প্রেমমুধ দর্শন করিয়া কুতার্থ হইতে পারি। আমরা याहाटक व्यक्तकस्य स्टेशा टकामात्र मान छेश-ভোগ না করি, ভাহার নিমিত্ত তুমি উপায় विधान करा

পৌত্তলিকতা ব্রহ্মজ্ঞানের সোপান।

कि व्यनानीरा महत्राहत मनूरगत धरमा-মতি সংসাধন হইয়া থাকে তাহা পৰ্যা-লোচনা করিলে প্রতীত হইবে যে, সে একে वात्तरे निर्मान बन्नखात्न उपनी छ रहा न।। স্থভাবের সকল কার্যা ক্রনশঃ সম্পাদিত হয়: ধর্মোন্নতি সংসাধন ও ক্রমশঃ উল্ল-তির নিরমের বহিষ্ঠৃত নছে। প্রথমে লোকৈ জড়োপাসনাতে প্রবৃত্ত হয়; প্রস্তর ও উদ্ভি-দাদি জড় পদার্থের কণ্পিত প্রাণকে দেবতা মনে করিয়া তাহাকে উপাসনা করে। পরে জ্ঞানের উন্নতি ফ্টলে দেবোপাসনাতে প্র-বুত্ত হয়। তাহারা প্রত্যেক নৈস্পিকি পদা-র্থের একএকটি নরাক্ষতি অধিষ্ঠাত্রী দেবত। কম্পনা করিয়া তাহার উপাসনা করে। পরে জগতের সকল বজুর মধ্যে প্রম্পুর শয়ন্ধ উপলব্ধি করিতে পারিলে তাহাদিগের হাদয়ে এক মাত্র অন্বিতীয় ঈশবের ভাব সঞ্চারিত হয়। তথনও তাহারা নিরাকার ঈশ্রের জ্ঞান যে প্রাপ্ত হয় তাহাও নহে। আদিম ইছদিরা এক মাত্র ঈশবের বিশ্বাস করিয়াও তাঁহাকে আকার বিশিষ্ট বলিয়া বিশাস করিত। এক যাত্র অদিতীয় ঈশরে विश्वाम कतिरलेख कांशत मध्यकीय मनूरवात **সংস্কার প্রথমে অসংস্কৃত ও অপরিমার্ক্তিত** অবস্থাতে থাকে, পরে ভাহা ক্রমশঃ মার্ক্তিত इरेग्रा निताकात अनम्ड मर्चवाानी अन्धत জ্ঞানে তাহাকে উপনীত করায়। এই কপে पिशे यहिटाइ य मनुषा कर्जाशामना **इरेट एक्टाशामनाय, एक्टाशामना इरेट** এক যাত্র সাকার ঈশরোপাসনায় এবং এক মাত্র **সাকার ঈশরোপাসনা হইতে নিরাকা**র मर्द्यां भी : अनम् अचट्रां भागनाः कटम আরোহণ করে; অতএব প্রতীত হইতেছে যে

পৌন্তলিকতা নির্মল ব্রশ্বজ্ঞানের সোপান। পৌত্তলিকতা ব্রহ্মজ্ঞানের সোপান যদি না বলা হয় তবে বস্তুত যাহা পৃথিবীতে ঘট-তেছে তাহার অর্থাৎ সত্যের অপহ্লব করা अयः यनि कान अन्तरामी अरे नाम छेप-দেশ দেন যে. পৌত্তলিক্তা ব্রহ্মজ্ঞানের নোপান তাহা হইলে তিনি অসঁতা উপদেশ দেন না, সভাই উপদেশ দেন। তিনি যদি এৰপ উপদেশ দেন তাহা হইলে তিনি কখ-নই পৌত্তলিকভার পোষকতা করেন না, বরং তাহার বিপরীত করেন অর্থাৎ পৌত্তলিক-তার হীনতা প্রদর্শন করেন এবং তদপেকা উচ্চতর ধর্মে আরোহণ করিবার কণ্ডবাতা শিক্ষা দেন, যেহেছু পৌতলিকত। কেবল সোপান মাত্র, সোপানে চিরকাল থাকা কথ-নই কৰ্ত্তব্য নহে, ছাদে অৰ্থাৎ নিৰ্মাল ত্ৰহ্ণ-ক্লানে আরোঃণ করা উচিত। এই রূপ উপদেশ পৌত্তলিকদিগের পক্ষে উপকারী डाहात जात मत्म माहै। কেবল যে পৌত্রলিকদিগের পক্ষে উপকারী এমত নহে ঘাঁহার। নিরাকার ঈশতে বিশাস করিয়া, विश्वाम करत्न (य, मध्य मनुषा अभरत्न অবতার, তাঁহাদিগেরও পক্ষে ভাহা উপ-কারী যেহেতু তাঁহারাও অদ্যাপি সোপানে রহিয়াছেন, ছাদে এখনও আরোহণ করিতে সমর্থ হল নাই।

JUST PULLISHED.

A Reply to the Query. "What is Paalanoism?" Price 4 annas.

বিজ্ঞাপন।

আগামী 6 অগ্রহারণ রবিবার প্রাতে ৭ ঘটিকার সময়ে মাসিক ব্রাহ্মসমাজ হইবেক।

• आयु वाद्य ।

्रशायन ७ छोड़ बैदर फाक्सि : १२७०० का कानि ब्राक्समांक ।

জায়	444	३०७१ ५५/३०
পূৰ্বকার স্থিত	. , .	800 126
সম ঠি	**********	2892 de
ৰায়	•••	V 20 11 G
₹ 5 ···	quantitativ ir	
189	***	4 4 0 HV 0
	অ†য়	
उ।धमगाज्	•••	20011 70
ভত্ৰোধিনী পত্ৰিকা	***	०० व भूग ०
श्चकामग्र	•	\$ 2 1 c
য্প্রালয়	***	8 5 4 110 0
গ চ্ছিত		৯ ৫ ॥ ৽
সমষ্টি :		20094410
ব : য়		
उपभगाङ	***	22911/20
ভৰবোধিনী পত্ৰিকা	•••	2.9 6 11 de
श्रुकानम्	•••	9 30 1/0
यञ्जानग्र		3 4 9 11 72
গৃহিত	***	₩91/20
मम् थिं		F 24 KG
भाग साहित ।		
खेशूक (मरवस्त्रमाथ ठाकुत 8 व		
" রমণা মোছন র		
" 'छरनसमाध ठा		3 @
" ভৈরবচন্দ্র বন্দে	•	
" দ্বারকানাথ রায়	ī	2 1/4
" রাজনারায়ণ ব	13	২
" কামাইলাল পা		ર
"নীলমণি চক্রবর্তী" ২		
" नीलम्बि इटक्कोशाशाश २		
" তারকনাথ দত্ত		,,, 2 ,
" नाटकता निवा		:
" नदीनकुमः दम्	***	¥
" আশুতোষ ধর		> ·
" याभ्यक्त शांश	•••	3
" গোপাসচক্র ম	調本	3
" गङ्गुष्ट भिज		2
" সম্ভূচনা মিত্র " রসিকলাল পা	E F	
·		>> N/ c
আৰুটানিক দান ৷		
अवृक्त वीत्रसमाथ		• •
" जातकमाथ जन		·· 8
	काणीन मा	
कियुक्त बीनक्यन प्राचीभाषा ১०		
मामाधादत की	જ	٠٠٠ ١٠٠ ١٠٠ ١٠٠
अवर्षि		

সম্ব ১৯২৮। কলিপড়ান ১৯৭২ চিকারছায়ণ সুক্লাডিবার।



ত্তারোধিনীপ্রতিকা

প্রজনাএকনিদমপ্রজাসীল্লান্ত কিঞ্নাসীন্তদিদং সর্ক্ষমস্জ্ব। তানের নিত্যং জ্ঞানমন্ত্রং শিবং পতক্ষির্বয়বমেক-মেবাদি চীয়ং সর্ক্ষরাপি সর্ক্ষনিগ্রভূ সর্কাশ্য সর্ক্ষনিভানদ্ প্রদং পূর্বমঞ্জিমনিত। একমা তাসাবোপাসন্থা পার্ত্তিক মৈহিকক শুভল্কবৃত্তি। তক্ষিন্ প্রীভিত্তম্য খিমকার্য্যাধনক তামুপাসনমের।

বিজ্ঞাপন

দ্বাচত্বারিংশ সাংবৎসরিক। ব্রাক্ষসনাজ।

তাগামী ১১ মাঘ মঙ্গলবার ভাচত্বারিংশ সাংবৎসরিক ব্রাক্র সমাজ ইইবৈ।

১ নাঘ অবধি ১০ নাঘ পর্যান্ত প্রতিদিবদ দন্ধ্য। ৭ ঘন্টার দনয়ে নিম লিখিত ব্যক্তিগণ যথাক্রমে আদি ব্রাক্ষদনাজ-গৃহে ব্রাক্ষ-ধর্মের ব্যাখ্যা করিবেন।

১১ মাঘ মঙ্গলবার প্রাতঃকালে ৮মকীর সময়ে আদি ব্রাহ্মসনাজ-গুতুহ এবং সায়ংকালে ৭ ঘন্টার সময়ে শ্রীযুক্ত প্রধান আচার্যা মহাশয়ের ভবনে ব্রন্ধোপাসনা হইবে।

> শ্রীযুক্ত রাজনারায়ণ বসু ১ মাঘ শনিবার

পাতুরেঘাটা নিবাসী শ্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর ২ মাঘ রবিবার

শ্রীযুক্ত জ্যোতিরিক্রনাথ ঠাকুর ৩ মাঘ সোমবার

শীযুক্ত তৈরবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় ৪ মাঘ মঙ্গলবার

> **এবৃক্ত শন্তু**নাথ গড়গড়ী ৫ মাঘ বুধবার

শ্রীযুক্ত ঈশানচন্দ্র মুখোপাধ্যায় ৬ মাঘ বৃহস্পতিবার

> প্রীযুক্ত ঈশানচন্দ্র বসু ৭ মাঘ শুক্রবার

শ্রীযুক্ত নীলমণি চটোপাধার ৮ মাঘ শনিবার

শ্রীযুক্ত চন্দ্রশেখর গঙ্গোপাধ্যার
. ৯ মাঘ রবিবার

শ্রীযুক্ত ছিজেন্দ্রনাথ ঠাকুর ১০ মাঘ দোমবার

> জ্রীজ্যোভিরিজনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

জগতে ঈশ্বর দশন।

াস ভগৰা কৰিন্ন প্ৰতিষ্ঠিত ইতি বে ইচিনু।

ঈশার ভাঁচার প্রত্যেক মহিমায় প্রকাশ-মান আছেন। চেতন অচেতন সমুদায় পদাৰ্থই তাঁহার মহিমা। দেই মহিমা আমা-रमत नभ मिरक विषाभान त्रश्तिहार । खि বায়ু জল, তরু লহা গুলা, পর্বত নদী সয়দ্র. এই সমুদায় ভাঁহারই हर्स स्था नक्त. মহিমা। আমাদের চকু কর্ণ এভৃতি ইন্দ্রি-युग्न शहा किছू शहन कतिरहरू, ७९-সমুদায়ই ভাঁহার মহিমা এবং চকু কর্ণ अपृष्ठि **इंक्टि**त भकत ३ विदाय महिमा। আমরা ইত্রিয়গণ দারা আমাদের দশ দিকে ভাতার যে সকল মহিমা প্রভাক্ষ করিতেছি. হাহারট সংখ্যা করা যায় না। लणार्थ-विणात यह उन्निक इनेटक्ट, उठने বাঁহার নব নব মহিমা দুর্বন করিয়া আশ্চ-র্যাযুক্ত হইতেছি। শুদ্ধ চকুতে যে স্থানে কিছুই নাই বোধ হইতেছে, অণুবীক্ষণ সহ-কারে দর্শন কর, সেই স্থান ভাঁছার অসংখ্য জীব ৰূপ মহিমাতে পরিপূর্ণ রহিয়া**ছে। ওদ** চকুতে আকাশে দুটিপাত করিলেই তাঁছার কোটি কে:টি যহিমা দর্শন করিয়া **অবাক** ভাষার দূরবীকণ হুইতে হয় !

দর্শন কর, সেই কোটি কোটি মহিমার সংক্ষারও কোটি কোটি দৃষ্ট হইছে থাকিবে সেই মহামহিম মহান্ পুরুষ তাঁহার এই সমস্ত মহিমাতে প্রতিষ্ঠিত আছেন। চক্ষ্ উন্মালন কর, এই সমস্ত মহিমার মধ্যে তাঁহাকে দেখিতে পাইবে। যতই অভিনিবিট চিত্তে তাঁহার মহিমার আলোচনা করিবে, দেখিতে চাহিলে ততই তাঁহাকে দেখিতে পাইবে। তিনি তাঁহার মহিমাতে প্রতিষ্ঠিত আছেন।

স্পারের মহিমার মধ্যে কেবল যে তাঁহার প্রতিষ্ঠা মাত্র উপলব্ধি হয় তাহা নহে তাঁহার সন্ধীব হা, নিগস্থু, জ্ঞান ও মঙ্গল অভিপ্রায় দেদীপমোন দেখিতে পাওয়া যায়। সমস্ত পৃথি তাঁহা হইতেই প্রকাশিত হইয়াছে, এবং প্রকাশিত হইয়াছে, এবং প্রকাশিত হইয়া তাঁহাকেই প্রকাশ করিতেছে। এই বিদামান জগৎ তাঁহাকে প্রাণ স্বরূপ বলিয়া পরিচয় দিতেছে: এই ক্রিয়ালশীল জগৎ তাঁহাকে নিয়ন্তা বলিয়া কীর্ত্রন করিতেছে; এই শৃংখলাযুক্ত জগৎ তাঁহাকে জ্ঞান স্বরূপ বলিয়া বাক্ত করিতেছে; এবং ইহার কলাগিকর নিয়ম সকল তাঁহার মঙ্গল ইচ্ছা প্রচার করিতেছে;—এই জগৎ জগাণ করিতেছে।

জগতের মধাে কেবল যে জগদীশবের
তান শক্তি প্রভৃতি গুণই উপলক্ষ হয়, তাহ।
নহে: সেই শুণবান্ পুরুষকেও প্রভাক্ষ
করা যায়। তিনি জগতের প্রাণ, তিনি
প্রত্যেক পদার্থের অন্তরাক্ষা। এক মনুযা
যখন আর এক মনুযোর শরীরে দৃর্জিপাত
করেন, এগন তিনি ভাঁহার শরীরের দর্জিপাত
করেন, এগন তিনি ভাঁহার শরীরের দর্জেপাত
থাকেন; সেই কপ অভিনিবিষ্ট মনুষা যখন
কগতের প্রতি দৃতিপাত করেন, তখন তিনি
কগতের আআকেও উপলক্ষি করেন।
আলাই বস্তুতঃ সকর্মক, কুড় নিযুক্তিয়;

আমাদের আত্মার ক্রিয়াই চকু মুখ হস্ত পদ প্রভৃতিতে আবিভূত হওয়াতে শরীরকে

ন্যায় সমস্ত জড় জগৎই নিষ্ক্রিয়; সেই
প্রাণ স্বরূপ, সেই অন্তরাছার অলৌকিক
ক্রিয়া জড় জগতের উপর সংক্রামিত হইতেছে। জগতের সমস্ত ক্রিয়াই সেই সর্বভূতান্তরাছা ঈশরের মহান আত্মাকে আমাদের দর্শন পথে প্রদর্শন করিতেছে। যেমন
মনুষ্যের শরীরে মনুষ্যের আত্মাকে উপলব্বি
করা যায়, সেই রূপ সর্বভূতে সেই সর্বভূতের
অন্তরাছাকে দর্শন করা যায়।

দিদৃকু নেত্র যে দিকে পতিত হয়, সেই দিকেই তাঁহাকে দেখিতে পাওয়া যায়।

"অভ্র ভেদী অচল শিথর

ঘন নীল সাগরবর

মথা যাই তুমি তথা।

রবি কিরণে তব শুভ্র কিরণ

শশাকে তোফারই জ্যোতি

তব কান্তি মেঘে।

সজন নগর বিজন গহন

, যথা যাই তুমি তথা।"

এই প্রকারে তাঁহার মহিমাতে তাঁহাকে
দর্শন করার একপ অর্থ নয় যে, জগৎকে
ঈশর বােধ করিয়া তাঁহার পুরুষ ভাব বিলুপ্ত
করা হইছেছে। সেই অনাদামন্ত মহান্ পুরুষ
ব্রন্ধাণ্ডের আয়া। এই জগৎ সেই আয়া
হইতে বিচ্ছিন্ন নছে। যেমন শরীরের মধ্যে
মনুষ্যের আয়াতে দর্শন করা যায়, সেই কপ
জড় জগভের মধ্যেও জগদীশ্বরের দর্শন
পাওয়া যায়। এই ছুল জগৎও সেই জলন্ত
অনলকে প্রছন করিয়া রাখিতে সমর্থ নহে।
তাঁহার এমন জােতিঃ যে কোন আবরণেই
ভাহা আহত থাকিতে পারেনা। মনুষ্যের
আয়াতে তিনি জা কাচপার্যন্ত নিপার
নাাক উজ্লা-দৃশা হইবেনই এই ছুলাবরণ

জড় জগৎও ভাঁচার জোভি ধারণ করিয়া রাখিতে সমর্থ হইতেছে না।

ধর্মোনতি।

ইহা অতি সার ও গূঢ় সভা যে কোন
মনুষাই নিষ্পাপ নহে এবং কোন মনুষাই
ধর্ম-বিবজ্জিত নহে। ধর্ম সকলেরই হৃদয়ে
বিদানান রহিয়াছে। যে বাক্তি যোরতর
হ্রাচার অথবা যাহার কোন বিষয়েরই উল্লিভি
দৃষ্ট হয় না, তাহারও হৃদয় ধর্ম-শ্না নহে।
এরপ অবস্থায় ধর্মের উল্লিভি কি প্রকারে
হয়—ভাহার বিশেষ লক্ষণ কি, তাহা সুস্পয়্ট
রপে জানা আবশাক।

বাল্যকালাবধি বিবিধ প্রকারে শিক্ষা লাভ করিয়া লোকে মাভা পিতা ভ্রাতা বকু এবং অপর সাধারণের প্রতি যে কর্ত্তব্য কর্ম্ম সম্পাদন করিতে সমর্থ হয়, ভাহা এক প্রকার ধর্ম। ইহা সাধারণ ধর্ম শব্দে উল্লেখ করা যাইতে পারে। কিন্তু এ প্রকার ধর্মে উল্লেখ করা বিশেষ লক্ষণ লক্ষিত হয় না; এবং এ ধর্ম্ম যে সর্বহৃদয়াধিষ্ঠিত তাহাও বলা যায় না, কারণ সংসার-সম্পর্ক-মূন্য অত্যাপ্রমী তপস্থিদিগের ও দেশলুঠনকারী ভ্রমণশীল নিষ্ঠুর বন্য লোকদিগের মধ্যে এ প্রকার ধর্ম দৃষ্ট হয় না।

কিন্তু বস্তুতঃ ধর্ম সঁকলের অন্তরে মুদ্রিত রহিয়াছে এবং তাহার উন্নতিও হইতেছে। মনুষ্যের ধর্ম্মোন্নতি এক দিনের নিমিত্তও বন্ধ নাই। সেঁপর্ম কি: সে ধর্ম উপরোক্ত সাধারণ ধর্ম হইতে ভিন্ন নহে, পরস্ক উহারই মূল স্বৰূপ। সে ধর্ম মনুষ্যের আন্ধা-নিহিত ধর্ম তৃষ্ণা দ্বারা পরিবাক্ত হয়

এই ধর্ম তৃষ্ণা সকলেরই হৃদয়ে বর্ত্তমান রহিয়াছে এবং ইহা বর্দ্ধনশীল। কিন্ত ইহার গতি বা কার্য্য এক ৰূপ নহে, এজুনা

ইহার ফল ব্রুপ যে ধর্ম তাহাও আমরা भईना हिनिया छेठिए भारत ना। स्कान অসভ্য লেকি বা কোন অস্প বয়ক বালক অথবা কোন পাপাচারী মনুদা,--অরণোর ন্যায় যাহার মন এখনো অসংকৃত ও দেঘি-যুক্ত রহিয়াছে.—তাহাদিগেরও মনে স্বতঃ-প্রস্তুত আরণ্য পুষ্পের ন্যায় ধর্ম-পুষ্প প্রস্কু-টিত হইয়া থাকে। আমরা দেই সকল অনুনত অথবা দোষাগ্রিত ব্যক্তির ভক্তি. প্রতি, নিষ্ঠা, সাহস, তেজ, বল এবং দৃঢ়ভা, অধ্যবসায়, নৈপুণা প্রভৃতি যে সকল গুণ কিয়া ঐ সকল গুণের বীজভূত আর যে সকল গুণ প্রত্যক্ষ করি, কলে সম্কারে তাহাদের সেই সকল গুণ আরে৷ উন্নত ও পরিশোধিত হইয়া তালার গর্মেরই পোষণ করে ও তাহাকে সর্বাহ্দশার করিয়া তুলে। এই রূপ আর যে কোন বাক্তির বিষয় लहेश शरीकः कत्र, वित्यय पत्नानित्य পূর্বক দেখিলে তাহারও ক্রিয়া সমূহের নধো ঐ ৰূপ ধর্ম কুমুমের আভাণ প্রাপ্ত ७७३। याइँ त्व । मनूत्यात क्नितः त्य ४ मा পিপাসা নিধিত আছে, তাহার অজেয় বল: ভংগর উত্তেজনায় মনুষ্য দিপ্ দিগতে ধাবিত इयु, नाना कार्रगत अनुष्ठान करत, किख কোগাও ভির থাকিতে পারে না—তাহার অন্তরস্থ ধর্ম-তৃষ্ণা ৰূপ প্রবাহিনী ভাগকে সেই '' শেষ গতির " **দিকে আকর্ষণ করি**-তেছে, দে পরিশেষে তালকে সেই বিভা বামে লইয়া গিলা তাহাকে শাশত সুখ अनान कतिरव, हेहात अना**थी एटेवात मछा-**वना नाहै।

যতক্ষণ মনুষ্য এই ৰূপে আপনার অজ্ঞাতসারে কেবল ধর্ম-তৃক্ষা কর্জুক চালিত হয়, ততক্ষণ তাহার এক ৰূপ উন্নতি হয়। তাহাই ধর্মোন্নতির প্রথম অবস্থা। আন্তর্মিক আবেগ, নানা কার্য্যে অনুয়ক্তি, অকিঞ্চিৎ-

क्त दिवरत्र अनामिक, धरे मक्ल ताई क्षय-মাবস্থার ধর্মোন্নতির লক্ষণ। তাহার পর আত্মার আর এক অবস্থা উপস্থিত হয়; সে অবস্থায় সে বিশেষ অভিনিবেশ পূৰ্বক আত্ম দর্শন ও আত্ম চিন্তায় প্রহৃত হয়। এই व्यवसात्र धरमात यथार्थ উन्नछि हरेएछ থাকে। প্রথমাবস্থায় আন্তরিক আবেগ वभेकः मनूषा य नामा कार्या ७ माना विषदः। হস্ত প্রদারণ করে, তথন সে সুগতি তুর্গতি উভয়েরই मिश्वाष्ट्रांल थारक। भ द्यांन হইতে যে যেমন উন্নতির সোপানে অধিকঢ় হইতে পারে. ভেমনি অধঃপ্তিতও হইতে পারে। তথন তাহার ধর্মজ্ঞান পরিশুদ্ধ হয় না, তাহার ঈশর জ্ঞানও নানা কুসং-কারাদি দারা জড়িত থাকে। তথন সে নতা ভ্ৰমে অসভাকে, পুণা ভ্ৰমে পাপকে, সুখ ভ্ৰমে চুংখকে, শান্তি ভ্ৰমে অশান্তিকে আলি-লন করিতে পারে। ফলতঃ সে পর্যান্ত তাহার ধর্মের কেবল বাল্য দশা থাকে, তখনও ভাষার মনুযাত্ব উদিত হয় না। পরে যখন সে আত্ম চিন্তায়, আত্ম পরীক্ষায় ও পর্যাত্মার অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হয়, তখন তাহার ধর্ম বিশুদ্ধ জ্যোতি ধারণ করে এবং তাল উত্তরোত্তর দৃঢ়তা, গভীরতা ও উন্নতি প্রাপ্ত হইতে থাকে। যে ধর্ম-তৃষ্ণা সহস্র প্রতি-রোধ উল্লেখন করিয়া মনুযাকে নিডান্ত পণ্ড-বৃত্তি হইতে এত দুর পর্যান্ত আনয়ন ক এখন সে প্রশস্ত ও সরল পথ প্রাপ্ত চইরা আরো রেগবভী হয়।

পূর্বে যে সাধারণ অর্থাৎ সাংসারিক ধর্মের কথা বলা ইয়াছে, এই অবস্থার দে ধর্ম আসিয়া মনুব্যের হৃদয়ে আলন প্র গ্রহণ করে, তথন তাহার আর এক অপূর্ব শক্তি প্রকাশ হয়। আজ চিন্তা ও আজা-নুসন্ধান ধারা যেমন মনুষ্য আপনার সহিত জগতের সম্বন্ধ অবগৃত হয়,তেম্নি সে আজ-

নির্ভর ও কার্য্য-নৈপুণা শিক্ষা করে। যেমন এক দিকে আত্ম-নির্ভর ও কার্যা-নৈপুণা শिका करत, उपनि खना मिरक कैय-রের নিকট হইতে ধর্ম-বল প্রাপ্ত হয়। এই ৰূপ উপক্রণসম্পন্ন হইয়া তথন সে অপ-রা**কিত চিত্তে সংসারের সহিত জী**ড়া করিতে প্রবৃত্ত হয়। তখন তালার ভাবের ও কার্যোর এক চমৎকার লক্ষণ লক্ষিত হইতে থাকে। সে তাহার সমুদায় প্রবৃত্তির উপর আপনার কর্ড্ত্র স্থাপন করে এবং আর সমুদায় পরিত্যাগ করিয়া ব্রহ্মকেই প্রার্থনা করে। দে তথন আর সুখ বাসনা করে না, সুসময়ের প্রতীক্ষার থাকে মা, কেবল ক্ষুদ্রি উদাম ও ভাগে স্বীকার সহকারে কার্যা করে। সে ধর্ম জনিত ফলের প্রত্যাশা করে না, কিন্তু ধর্মের নিমিত্তই ধর্মকে পালন করে। সে সভা পালন করিবেই করিবে; কর্ত্তব্য কর্ম সম্পাদন করিবেই করিবে: ভাহাতে সংশয় থাকে না, ভাগর অনাগাও হয় না; ব্রহ্ম লাভও তালার ভজেপ নিঃসংশয় হয়। সমু-দায় প্রতিকুল ঘটনা ভাছার নিকট পরাজিত হয়, সমস্ত সংগার তাখার নিকট পরাজিত হয়; সে সকল ছাড়িয়া পর্মকে রক্ষা করে. সুভরাং ধর্মও ভালাকে রক্ষা করেন।

এই কপে মনুষ্যের আয়ার যে একটু মাত্র ধর্মবীজ, ক্রমে তারা প্রকাশু আকার ধারণ করে—একটু মাত্র যে অগ্নি কণা, তারা সমু-দার পাপ-বন দাহন করে। তথন মনুষ্যের কার্য্য-ক্ষেত্রও আপনার গৃহ হইতে সমস্ত পৃথিবীতে ব্যাপ্ত হয়।

धरे भवतात मनुषा धक शमदी इहेट डेमड्ड शमदीट अधिकए हर तमः धक मर्डा त शंत्र भात धक मद्या मांड करतमः आकि डेम्य-तरक रयमन श्रित मह्म राज्य स्ट्रिम, कालि डाहा भारता श्रित स्ट्रम स्ट्राम स्ट्रम, कालि डाहा भाषि डेहित स्वता समाप्र शास हरतम, कालि তারা অপেক্ষা আরো অধিকতর প্রদাদ উপ-ভোগ করেন।—এই কপে তিনি উত্তরোত্তর নবতর কল্যাণতর অবস্থায় উপনীত হয়েন.— ইগতেই ধর্মের উন্নতি পরিলক্ষিত হয়।

পর্মানত ও ধর্মভাব।

ধর্মমত ও ধর্মভাব এই ছুই পদার্থের পরস্পার নিক্ট সমন্ত্র, কিন্তু ইছাদের মধ্যে প্রকৃতিগত **অনেক প্রভেদ লক্ষিত হ**য়। আমরা দর্শন শাস্ত্র সহকারে ঈশ্বর ও আত্মার সম্বন্ধে যে কতকগুলি সত্য নির্দ্ধারণ করিছে পারি, তাছাই আমাদের ধর্মমত শব্দের বাচ্য হয় এবং **ঈশ্বরকে আপনার গতি** ও বিধাতা জানিয়া তাঁহার সহিত আপনার যে সম্বন্ধ উপলব্দি করি, তাহাই আমাদের ধর্ম-ভাব শব্দে উক্ত হয়। ধর্মমত জন সমাজে প্রচারিত হয়, ধর্মভাব আত্মার মধ্যে প্রতি-ষ্ঠিত হয় : ধর্মমত পরস্পরের সহিত বিচারে সংশোধন হয়, ধর্মতাব ঈশ্বর প্রসাদে আত্মাতে উৎপন্ন ও পরিবর্দ্ধিত হয় এবং ঈশ্বর কর্ত্ক নিয়মিছ হয়। ধর্মমত শ্রীরের সহিত পৃথিবীতে থাকে, ধর্মভাব আত্মার সহিত প্রলোকে গমন করে। ধর্মমত জন দমাজকে আকর্ষণ করে, ধর্মভাব উর্দ্ধুমুখে ঈশরের দিকে ধাবিত হয়।

কোন ছুই ব্যক্তির ধর্ম্মত টিক সমান.
কিন্তু ভাহাদের ধর্মভাব সমান না হইতে
পারে। আমার বালাধর্মে বিশ্বাস, আমার
বন্ধুরও ব্রাহ্মধর্মে বিশ্বাস, এস্থলে আমাদের
উভয়ের মত সমান হইতৈছে, কিন্তু আমার
বন্ধুর যেরপ ধর্মভাব, আমার সেরপ না
হইতে পারে; আমার বন্ধু ধর্মকে যত গভীর
ও প্রশান্ত মনে করেন, তিনি ঈশ্বরের সহিত
ভাহার যেরপ সমন্ধ অনুভব করেন, আমি
হয়ত তত দূর পারি না। অধাচ তিনিও

ব্রাহ্ম আমিও ব্রাহ্ম, তাঁহারও যে মত আমা-রও সেই মত, তাহাতে কিছু প্রতেদ না থাকিতে পারে।

কিন্তু ধর্ম সাধনের নিমিত্ত এই উভয়ই প্রয়োজনীয়। ধর্মমত ধর্মভাবের পরিরক্ষ-নের পকে সুদৃঢ় সেতু স্বৰূপ—ধর্মভাব ৰূপ দুর্গের পরিখা স্বৰূপ। এই ধর্মমতকে অব-নেয়ন করিয়া ধর্মভাব সঞ্চরণ করে। অথচ ভাবার ধর্মভাব সর্বতোভাবে মৃক্ত ও স্থাধীন; ইহা মক্তভাবে মনুখ্যের অনন্ত জাবনকে ভাধিকার করে।

ধর্মসাধনের নিমিত্ত মনুষ্যের এই ধর্মমত ও ধর্মতাব উত্তয়ই আবশাক এবং এই
উত্তয়েরই সংশোধন আবশাক। ইহার কোন
একটির অবিশুদ্ধ হাতে আন একটির বিশু
দ্বতার ন্যাঘাত হয় এবং হাহাতে মনুষ্যের
ধর্মোনহির ব্যাঘাত জ্বামা ইহার মধ্যে ধর্মান
মতের সংশোধনার্থ জামাদের প্রশারতক গরশ্বরের সাংখ্যা করিতে হয়, ধর্মান্তরের
সংশোধন জামাদের নিজের চেষ্টার উপরেই
অধিক নিভর করিতেছে।

সৌভাগ্য ক্রমে ব্রাহ্মধর্ম উদিত হওয়াতে অংশ্চেদ্র ধারমতের নিমিত্ত বাস্বিত্ঞার এক প্রকার শেষ হইরা আদিয়া**ছে। ত্রান্স**বর্ণ্ম (मशाहेश नित्रहास त्य. यथार्थ भ**र्मामङ व्य**ङि অংপ কথা মাত্র <u>— একমাত্র অদিতীয় পূর্ণ</u> প্রমেশ্বর এই বিশ্বের সৃষ্টি করিয়াছেন: িনি আমানের চকুর গোচ্র ক্রচেন, আব-व्यवत (१) हत नद्दन, मृत्नक्ष গোচর নংকে: আমরা যালা কিছু দেখিতে পাই, শুনিতে পাই, বা মনন করিতে পারি, তিনি হত্তাবৎ পদার্থের অতীত: তাঁহার**ই উপাসনা** দারা আমাদের জহিক ও পারতিক মলন इतः यनि आगता প्राप्तित्व कति, मध क्षाश्च ब्हेर, यनि शुनानुष्ठीन कृति, **भूतका**त्र লাভ করিব।—এই প্র্যান্ত আমা**দের ধর্ম-**

मछ। आवांत अण्डि आंक्या करण बाक्यमं প্রচারের প্রথমেই ইহা প্রমাণিত হইরাছে, যে এই মত সকল দেশের সকল জাতির সকল ধর্ম শাস্ত্রেই ব্যক্ত আছে। সুতরাং এক প্রকার বিবেচনা করিতে গোলে আমাদের ধর্মমতের নিমিত্ত বিশেষ বাদানুবাদের প্রয়োজনই দেখা যায় না।

তবে ইছাও যথার্থ কথা বটে যে, যে মহাত্মা ব্রাহ্মধর্মকে প্রথম প্রকাশ করিয়া যান, তিনি প্রায় প্রচলিত সমুদায় ধর্ম সম্প্রদায়ের সহিত যোরতর তর্ক সাগরেই নিমগ্ন হইয়াছিলেন। কিন্তু তাহা ব্রাদাধর্মের মত সংস্থাপনের নিমিত্ত নয়, কিন্তু ত্রাহ্মধর্মের স্হিত যে সকল কুসংস্থার ও উপধর্ম জড়িত হইয়া ইহার বিশুদ্ধ জ্যোতি প্রকাশ করিতে দেয় নাই, ভাষাই বিদূরিত করিবার জন্য। ব্রাহ্মধর্ম মত নিতান্ত সহজ ; ভাষা যুক্তি ও বিচারের ध्यत्भकः, करत् माः, डाझ मर्त्र-श्रमय मगाउ। এই জন্য মহাত্মা রামমোহন রায় ত্রাহ্মধর্মের भक्त कि छांशा वियमकार आएमो लिशिवक করেন নাই, তাহা করিবারও তিনি থায়ো-জন দেখেন নাই। তিনি বিবিধ ধর্ম স্ম্প্র-দারের সহিত বিচারে প্রব্রত হইয়া যে সকল গ্রস্ত লিখিয়া গিয়াছেন, সেই সকল বিচার পুস্তকের পত্তে পতে এই ব্রার্থধর্মের মন্ত পরিফুট রহিয়াছে। বর্ত্তমান যে আন্দ-ধর্ম-বীক প্রচলিত হুইয়াছে, তাহা তাঁহারই লেখনী-নিঃসৃত বাক্য সমূহের এক প্রকার मक्रमम बिलाल बला याहेटल भारत । . धकरव আমরা ব্রাক্ষধর্মের যত কৃত্র কৃত্র মত প্রকাশ করি, ভাষা সেই রীজভূত মত গুলির বির্ত অৰ্থ মাত।

এক্ষণে আমাদের কর্ত্ব্য, সেই বীক্ষতুত মুখ্য মত গুলির বিশুদ্ধতা রক্ষা করা। আমরা তাহার অর্থ অধিক বিরুত করিয়া লোককে বলিতে সক্ষম নাভ হুটতে পারি, व्यश्च अहे ठावि मारम छाहातिष्ठशां विकक्ष कविशा श्वरः दिषयान नारम व्यक्तिक हरतन, ति नकल विषरमत विरम्भ विवत् कता अ अञ्चादवत উरम्भा नरह

বেদকে সন্থাবয়ৰ সম্পন্ন রাখিবার নিমিত্তে ইহার শিক্ষা, ক'পে, ব্যাকরণ, निक्रक, इन्म ७ ज्यां जित, এই इश्री अझ নিণীত হইয়াছে। উদাত্ত, অনুদাত্ত, ও স্বরিৎ এই তিন প্রকার স্বরের ভেদে কি প্রকার উচ্চারণে বেদ অভ্যাস করিতে হয়, ইহার উপদেশ যে পুস্তকে প্রাপ্ত হওয়া যায়, তাহার নাম শিক্ষা। কোন্মন্ত কোন্ কর্মে কি अकारत रक डेका<mark>र्त्रं कतिरत, अहे नकल वि</mark>षय যাহাতে নিৰূপিত হইয়াছে, ভাহাকে কপ্প ন্ত্র কছে। বেদের কোন্ পদটী কোন্ ধাতু হুটতে কি বিভক্তিতে কি প্রকারে নি**পার** হইয়াছে,ব্যাক্রণে ত¦হাই সিদ্ধ হইয়া **থাকে**। বেদের কোন্ শব্দের কি অর্থ নিরুক্ত ভাগাই প্রতিপন্ন করে। কোন্ছন্দে কোন্মস্তী পাঠ করিতে হয়, ছন্দোগ্রন্থে ভাষাই বিরুষ্ঠ स्टेग़ारह। **এবং কোন্***কালে বৈদিক কোন্ কর্ম জারম্ভ করিতে হয় ও কোন্ কালে ভাষার সমাপ্তি করিতে হয়, এই সকল নির্ণয় कतिवात जना क्लां जिय (यटनत जेश्राशी क्रहेश्राटक् ।

देविषक चांठार्रगता दिष्टक चर्लोक्स्स्य करहा । जीहाता दिलान, शुक्रम कर जना गृष्टि, शूता १, जजापि रलोक्स्रिय । चांत दिष क्लाम शूक्रस्य कर नम्, क्रेमरत कर दिला । किन्त विकार चांचा चांचा कर विकार चांचा चांचा कर्मित चांचा चांचा चांचा कर्मित चांचा चां

इहेल। चाठ এव त्क्इ (क्ट् পৌक्रावत्र ও चरशोक्ररवंश भरकत धरे कश वाशि। कण्शना করিয়া থাকেন, যে মহা গ্রলয় কালে. পুরাণ প্রভৃতি সমুদায় শান্ত ও সকল বেদ বিলুপ্ত हरेशा यास, शरत मृष्टिकारल धमकल आवात পুনরুদ্ধ হয়। তথন পুরাণ এভৃতি যে সকল শাস্ত্র উদ্ভ হয়, পূর্বকণেপ তাহার পार्ठ मकल य कथ हिल, भूरूपक्र दिलश পের কপে ঠিক সেই ৰূপ পাঠ না হইয়া কোন কোন স্থানের পাঠ অন্য প্রকার হয়, এই কারণেই পুরাণ গ্রভৃতিতে পাঠাওর লজিত হুইয়া থাকে. অভএব তাহাকে পৌৰু-বেয় বলা যার। এই জনাই পোরাণিক পণ্ডিতেরা পুরাণের পাঠ ভেদকে কম্পতে-**(एवः পाঠ विलया गी**माश्या करदन । किन्छ বেদের পাঠ পূর্ব কলেপ যে ৰূপ ছিল, ঈশ্বর পর কম্পেও ঠিক দেইকপ ক্ত বলিয়া উচ্ারণ বিশিষ্ট পাঠ উদ্ভাহয়, কলিন্ **কালে কোন স্থানে** ভাষার পাঠের ইতর विद्नार इस ना विलया छात्रा घटशोस्त्रत्य भटक वावशदात (याना हम: केंद्र (इ.स. **ভাঁছারা পৌরুষেয় ও অপ্যৌরু**ঘেরের এই লকণ করিয়াছেন যে "স্ক্রান্তীয়ে চারণা-**मरभरका।क्रां**त्रगविषयः (श्रीकृत्ययः । शृर्व কম্পের উচ্চারণকে অপেক্ষানা কবিয়া যে উচ্ছারণ হয়, ভাষার নাম পৌরুদেয়, আর তদ্বিপরীতই অপৌরুষেয়।

বেদের অপৌরুষেয়ত্ব সংস্থাপন করিবার নিমিতে ভাঁহারা যে রূপই ব্যাখ্যা কৌশল আনয়ন করুন, কিন্তু বেদের পাঠের ব্যাহ-ক্রম না হইবার জন্য যে সমস্ত উপার বিদ্য-মান আছে, পুরাণ এভৃতির পাঠের অন্যথা না হইবার জন্য সে রূপ কোন উপায় না ধাকাতেই দেশ তেদের পুরাণ এভৃতি পুত্কে পৃথক্ পৃথক্ পাঠ দেখা যায়। ভাহাতে এই রূপ অনুমান হয় যে লিপিকরপ্রমাদেই ইউক,

হন্ত যাহা বলিব তাহা যেন বিশুদ্ধ হয়। ামাদের অন্যান্য ধর্মণান্ত্রের আলোচ-তেও পরাগ্নুখ হওয়া উচিত নহে, পরস্ত কল শান্ত্র ও সকল মত আলে চনা করা र्खिता । उन्हाता आभारमत ख्लान वृक्ति हहेरव াবং আমাদের মত ও বিশ্বাদের সংশোধন दृशीकत्व इट्टा आभारमत् य धर्ममञ्, হ্ণে কোন অবিশুদ্ধতার গন্ধ মাত নাই, হাতে আমাদের সমুদায় ধর্মতাব পরিতৃপ্ত য়। যদি কেহ আমাদের এই মতের বিপরী-ার্থ প্রকাশ করে অথবা ইহার সহিত পুনরায় কান কুসংস্কার বা উপধর্মের পোষণ করে, াহা আমাদিগকে খণ্ডন করিতে চেষ্টা র্ণরতে হইবে। তাহার প্রতি উপেক্ষা প্রদ-মি করিলে আমাদের কর্ত্তব্য কর্ণ্যের ক্রটি দ্রা হয় এবং তালতে ত্রাক্ষধর্শের প্রেন্ড ানি হইবার স্থাবন:।

কিন্তু সর্বাপেক। আমাদের ধর্মভাবের
থেশোরন ও উন্নতির পকেই আমাদের
বিশেষ যত্ন আবশাক। ইহার জনা আমর।
মাপনারাই দায়ী। ইহার ফটিতে আমাদরই ক্ষতি। ধর্ম মত যদি এক শতাকীতে
কিঞ্চিৎ দোষসূক্ত থাকে, পর শতাকীতে
গালার সংশোধন হইতে পারিবে, কিন্তু
খামরা যাহা লইয়া পরলোকে যাইব, তাহার
ক্ষতি আর কেহই পূরণ ক্রিয়া দিবে না।

ধর্মভাব অবিশুদ্ধ থাকিলে এক প্রকার ক্ষতি হয়, পর্যভাবের চালনার ক্রটি হুইলে অন্য একার ক্ষতি হয়। এই উত্তয় ক্ষতিই ধর্মের উন্নতির রোধ করে, এই উত্তয় ক্ষতিই শোচনীয়। অতএব তাহা পূরণ করিবার চেন্টা করা নিতান্ত কর্ত্বা।

যাঁহারা ধর্ম চান, ধর্ম যাঁহাদের জীবন স্বৰূপ, তাঁহাদের এই গুলি প্র্যালোচনা করিয়া চলিতে হইবে। যাহাতে ধর্মের মথার্থ উন্নতি হয়, তাহাই তাঁহাদের পথ্য এবং তাহাই তাঁহাদের অবলম্বনীয়। এই ধর্মমত ও ধর্ম ভাবের রক্ষণ, সংশোধন ও উন্ধতির নিমিত্ত ঈশ্বর , আমাদের সহায় হউন। তিনিই আমাদের জ্ঞান-দাতা গুরু ও মুক্তি-দাতা বিধাতা।

বৈদান্তিক মত।

উপক্রমণিকা।

বেদান্ত মতের বিবরণ করিতে প্রবৃত্ত হুইয়া প্রথমতঃ বেদান্ত এই পদের অর্থ প্রকাশ করিতেছি। বেদার্ভ পদটীর মধ্যে চুইটা শব্দ আছে, বেল ও অন্ত। বিদ্য গ্ৰাভু ইইতে *विम नक निष्णव क्वेशांद्र । विम श्रा*जूत অর্থ জ্ঞান, ন্যাহ্য হইতে লৌকিক ও পার-মার্থিক ধর্মাধর্ম জ্ঞান প্রাপ্ত হওয়া যায়, ঠাহার নাম বেদ। ''বেদপ্রণিছিতো ধর্ম্মো হাধর্মস্তদ্বিগর্যায়ঃ।" বেদোক্ত বিষয় ধর্ম ও তাহার বিপরীত কর্মাই অধর্ম। পূর্ব পূর্ব ঋষিগণ কর্ত্তক দৃষ্ট লৌকিক ও পার-भार्थिक कर्छवाकि ईवा कर्ष्यंत्र भामन क्रथ ए শাস্ত্র, ভাহাই বেদ শব্দের বাচ্য। পূর্বে যথন অক্ষর সংস্থান বা লিপি কার্য্যের সৃষ্টি হয় নাই, তৎকালে ইহা কেরল গুরু-মুখ হইতে শিষ্যপরম্পরায় শ্রবণ পূর্বক শিক্ষা করিয়া রাখা হইত বলিয়া ইহার আর একটী সাধারণ নাম শ্রুতি। ইহার এক একটা বাকোর । নাম মন্ত্র। এই সকল বেদমক্ত পুর্বে এক রাশি মাত্র ছিল, ভাছা হইতে একটি নির্দ্ধি মন্ত্র নির্বাচন করিয়া লওয়া ভার হইত। পরে ক্লফবৈপায়ন তাহারদি-গের প্রত্যেকের কার্যা বিশেষ, ছন্দোভেদ, প্রয়োগ ও অনুষ্ঠান বিশেষ প্রভৃতি আলোচনা পূৰ্বক পৃথক পৃথক ৰূপে সাম, ঋক্, যজু ও

বা পণ্ডিভদিগের জিগীয়া রু, তি চরিভার্থ করিবার নিমিত্তে কম্পিত পাঠ সংযোজিত হইয়াই হউক, পুরাণ এভৃতিতে অনেক হলে পাঠের অনাথা ঘটিয়াছে. কিন্তু বেদের পাঠ অনাথা না হইবার উপায় সকল বিদ্যানা থাকাতেই কিন্তি কালে কোন দেশের কোন বেদ পুস্তকে পাঠের ইত্র বিশেষ হয় নাই, সকল দেশের সকল পুস্তকেই একই প্রকার পাঠ দেখিতে পাওয়া যায়।

বেদের পাঠ কেচ কথন অন্যথা করিতে না পারে, এই অভিপ্রায়ে পূর্ব পূর্ব আচা-র্য্যেরা তাহার উপায় স্বৰূপ পদ, ক্রম, এভৃতি নামক গ্রন্থ বিশেষ রচনা, করিয়া রাখিয়া গিয়াছেন। বেদ মস্ত্রের কোন্ কোন্ পদের মধ্যে কি কি অক্ষর আছে, এবং কোন্ অক্ষরের পর কোন্ অক্ষর বিন্যন্ত হইরাছে, পদ নামক প্রন্তে তাহাই লিখিত হইয়াছে। ঐবেদ মন্ত্র সকলের কোন্ পদের পর কোন্ পদ উচ্চারিত. इटेरव ও কোন্ মন্তের কোন্ পদ শেষ হইলে কোন্ মন্ত্রের কোন্ পদ তাহার পর উচ্চারণ করিতে ইইবে, ক্রম নামক গ্রন্থে তাহার বিশেষ কৌশল নিৰ-পিত হইয়াছে। সুতরাং বেদের পাঠের অন্যথা হওয়া, দুরে থাকুক, ভাহার একটি পদের—একটি অক্তরেরও বাতিক্রম হইবার সম্ভাবনা নাই।

বৈদিক আচার্যোরা বেদকে নিতা ও
অভ্রান্ত কৰেন। তাঁহারা বলেন, নিতা
অভ্রান্ত পরমেশ্বর হইতে নিঃশাস নির্গমনের
ন্যায় অযত্নে বেদ মন্ত্র সকল আবিভূতি
হইয়াছে, সূত্রাং ইহা নিতা ও অভ্রান্ত।
যে ৰূপ গুণবিশিষ্ঠ কারণ হইতে যে সকল
কার্যা উৎপন্ন হয়, তাহারা সেই সকল গুণই
প্রাপ্ত হইয়া থাকে। নিতা সর্ব্যক্ত গুণাব্রিত
অভ্রান্ত পরমেশ্বর হইতে বেদমন্ত্র সকল
উদিত হওয়া জন্য তাহাও নিতা ও অভ্রান্ত

অবশাই হইবে। তাঁহার দিগের এই সকল
যুক্তি যে কতদুর অখগুনীয়, এছলে তাহা
বিভ্রচনা করিবার আবশাকতা নাই, কিন্তু
বৈদ যে সর্বাপেকা আদি শাস্ত্র এবং তাহার
সকল অংশ না হউক, কোন কোন অংশ
যে মনুষা স্তির অবাবহিত পরকাল অবধি
এপর্যান্ত একই আকারে বিদ্যামান আছে.
তাহার প্রতি কোন সন্দেহ নাই।

বেদ সকল ছুই ছুই কাণ্ডে বিভক্ত। কৰ্মকাণ্ড ও জ্ঞানকাণ্ড। প্রথম,—কর্মকাণ্ড। নিতা, নৈমিত্তিক, দশবিধ সংস্কার, পূর্ত্ত, আরাম, প্রভৃতি চারি.প্রকার আঞ্রমির কর্ত্তবাকর্ত্তর কর্ম সকল এবং যক্ত দান প্রভৃতি অনুষ্ঠের कर्प ममूनाम स्व करिश मण्यन कतिरङ इहेरत, তাহার বিধি নিষেধ শ্রভৃতি কর্মকাণ্ডে বিস্তৃত সাছে। এই কর্মকাণ্ডোক্ত মন্ত্র সকলের পরস্পর বিরোধের মীমাংসার নাম কর্ম गीगांश्मा ७ পূर्व गीगांश्मा; তাহার স্থ্র সকল জৈমিনির রুত; এস্থলেসে সকল বিষয়ের বিবেচনা করিবারও কোন প্রয়োজন নাই। বিভীয়,—জ্ঞানক ও। জ্ঞানকাতে কেবল ঈশবের স্বৰূপ লক্ষণ, তাঁহারই উপা-সনা এবং পরকাল ও মুক্তি প্রভৃতি নিক-পিত হইয়াছে।—উভষ কাণ্ডে বিভক্ত এই বেদ সকল যে নানা শাখা প্রশাখায় বিস্তৃ ও তাহাতে নানা প্রকার অনুষ্ঠেয় কার্যার বিবরণ যে অভি বিস্তারিত ক্রপে বর্ণিত स्रेप्तारह। अञ्चल भिक्त विषयात विवत्रव করাও অনাবশাক।

অতংপর বেদান্ত কি তাহা প্রতিপাদিত হইতেছে। বেদের তিনটা অংশ আছে। প্রথম অংশ সংহিতা, বিতীয় অংশ ত্রাহ্মণ, ও তৃতীয় অংশ উপনিষদ্। তাহার মধ্যে সং-হিতা ও ব্রাহ্মণ অংশ কর্ম কাণ্ডের অন্তর্গত, এবং উপনিষদ্ অংশকেই জ্ঞান কাণ্ড কহে। সংহিতাতে কেবল কর্ম কাণ্ডের মন্ত্র গুলি

গ্রাথিত হইয়াছে ও ব্রাহ্মণেতে কর্ম কাণ্ডের কতক মন্ত্র ও সেই সকল মন্ত্রের মধ্যে কোন্ট কোন্ কৰ্মে কাহাকে কি ৰূপে প্রয়োগ করিতে হয় এবং কোন্ কর্মের কি ৰূপ অনুষ্ঠান ও কাছার কি ফল, এই সকল বিষর লিখিত হইয়াছে। আর উপনিযদে পূর্ন্থাক্ত জ্ঞান কাণ্ডের প্রতিপাদা বিষয় সকল ও ত্রন্ধের স্বৰূপ লক্ষণ, মুক্তির বিবরণ ্ও ব্ৰহ্মজ্ঞানে মুক্তি লাভ, এই সকল বিষয় প্রাপ্ত হওরা যায়। অতএব আচার্যোরা উপনিঘ**দ্ শব্দের** এই ৰূপ ব্যুৎপত্তি করেন যে উপ নি পূর্বক সদ ধাতু হইতে উপনিষদ্ শব্দ নিশ্পন হইরাছে। উপ নি পূর্বক সদ ধাতুর অর্থ প্রাপ্তি, সূত্রাং যে গ্রন্থ বিশেষ ঢারা নিশ্চর গ্রব্রন্ধ প্রাপ্তি হয়, তাহাই **७ शिंगित् अपन्य दाछा। अहे इस क्लास** কোৰ সংগ্ৰহণ হৈছিপাদক কোৰ কোৰ ्राहाधिक उराधनाञ्चल छेलनियम् नारम अचिरिह ब्हेश ४।८क । छेक्क सर्वहादक জ দি ভাগ, ভাষ্ণাকে মধ্যভাগ, এবং উপ-নিবদূকে অন্তর্গাবা **শিরোভাগত** কছে। পতি রাক্ষারে অমুকারে উপনিষ্দু আছে, , খার কোন কোন সংহিতার শেষভাগেও उपलियम् पृथ्वे इहेना थादकः। अहे कट्ट :बटन्ह **चट्छ थाकाट्डि डेशनियरमंद्र नाग** বেদান্ত, সুতরা: পাদান্যতঃ বেদান্ত শব্দের অর্থ সহজেই প্রতিগল্প হইল।

উপনিদ্যের দধা কে সকল মস্তের প্রম্পর বিরোধ আছে; তাছারদিগের বি-রোধ ভঞ্জন পূর্লক একার্থ শতিপাদন করি-বার জন্য বেদবাসি যে সকল সূত্র রচনা করিয়া গিরাছেন, ভাছার নাম ব্রহ্ম সূত্র, শারীরক সূত্র, ও বেদান্ত সূত্র, এবং ভাছা-রই নাম বেদান্ত মীমাংসা, ব্রহ্ম মীমাংসা ও উত্তর মীমাংসা। কিন্তু বেদান্তমীমাংসক শাচার্যা দিগের মতে কেবল উপনিষ্ট্ व्य दिवां है निद्भारत अकिशामा अवक नदर, डीशांता रालन. छेशनियम् अ छेशनियामत উপযোগী ভগৰদ্ধীতা প্ৰভৃতি অধান্ম প্ৰতি-পাদক শাস্ত্র যাত্রই বেদান্ত শব্দের বাচ্য हम्। এই जनारे भूतान, उत्त, रेजिहान প্রভৃতি যে কোন গ্রন্থের যে কোন অংশে অব্যাহ্ম প্রতিপাদন প্রাপ্ত হওয়া যায়, সে সকল শ্লোক গ্রহণ পূর্বক তাহারদিগেরও পরম্পর বিরোধের মীমাংসা করিয়া ঐ সকল স্ত্রের ভাষ্যকারেরা স্বীয় স্বীয় ক্লত বেদান্ত মীগাংসায় সলিবেশিত করিয়াছেন, তাছার-দিলের নামত ত্রকা মীমাংস। ও উত্তর মী-মাংসা। "গামাংসা বেদবিচারঃ, সা চ **कि**मिनिवामद्रायन्थ्रनीका कय-उभार जगाए जिविया । विदेशत विचादत नाम भीमाः मा, ভাষা ছুই প্রকার, জৈমিনি প্রণীত কর্ম মী-মাংসা ও বাদরায়ণ প্রণীত ব্রহ্ম মীমাংসা। অনেকেই এই বেদান্ত স্থত্ত সকলের ভাষ্য করিয়া অনেক প্রকার অর্থে বেদান্ত দর্শন এচারিত করিয়া গিয়াছেন; লাঁহারদিগের মণে অট্রত প্রতিপাদক শঙ্করাচার্য্যকৃত ভাষ্যের অর্থ অনুযায়ী বেদান্তের মত এন্থলে श्रुकाम कहा याहरत।

अखामाधन ।

'সাহা সুথ প্রধান সুখ'—এই সারার্থক বাকাটী চির-প্রনিদ্ধ। ইহার মর্ম না ফানেন, এমন লোক দৃষ্টি গোচর হয় না। মনুযা অন্তর হইতে এই বাকো সায় প্রদান করে, এবং কি স্বাস্থ্যের সময়, কি স্বাস্থা ভালের সময় এই বাকাটী ভাহার মনশ্চকুর সম্মুধ হইতে প্রায়ই অন্তর্হিত হয় না। কিন্তু তথাপি কি মনুষা সর্বদ। সুত্ত অবস্থায় অবস্থিত আছে? এমন প্রার্থনীয় স্বাস্থাও কি মনুষা সর্বদা উপভোগ করিতে সমর্থ হয়? একথা ঘাহাকে জিল্ডাসা করা বাইবে, কাহারও উত্তর বোধ হর সকোষকর হইবে না।
মনুবাের ত,সহস্র বিষয়ে শোক ধনি উপিত
হইতেছে,—স্বাস্থ্য যাহা মনুবাের প্রথম
প্রয়োজনীয় বস্তু, তদ্বিষয়ক অভাব নিবন্ধন
মনুবাকে বরং সর্বাপেক। অধিক শোক
করিতে হয়।

मीर्च कीरन ७ मू नैक्डा वर्धा स्मिन्धां वहें इहेंगित्क चारमात क्षांन क्षांन नक्षां विनाता निर्नेष्ठ करा यात्र। य राक्ति यथार्थ चीमा मूर्ग माजान करा, मिर्च कीरन क्षांश्व म्यां माजान करा, मिर्च कीरन क्षांश्व म्यां व्यांत माजीत यान मर्च क्षांत मूर्य थारक, करंद के माजीत यान मर्च क्षांत मूर्य थारक, करंद के माजीत क्षांत माजीत करा। वेहा व्यांत माजीत याहरक व्यांत करा वहांत माजीत करा याहरक क्षांत करा वाव माज हम न।। व्यंन वहें कुहित विषया वानारमात करा वाहरक वारामान वाहरक वारामान करा वाहरक वारामान वाहरक वारामान करा वाहरक वारामान वाहरक वाहर

প্রথম, দীর্ঘ জীবন।—প্রাচীন কালের भनुषा नकल पीर्घाशुः ছिल्लन, नकल प्रत्यंत লোকেরাই এই কথা বলেন। যত প্রাচীন কালের লোকের কথা আমারা ইতিহাস দ্বারা জানিতে সক্ষম হই, সর্বাপেক্ষা অধিক প্রাচীন কালের লোক প্রায় ছুই শত বৎসর জীবিত থাকিতেন। আর তাঁহাদের সংখ্যাও নিতান্ত অত্প ছিল না। একণে তাঁহাদের কথা কম্পনার ন্যায় বেধি হয়। পরম্ভ একণেও মনুষাকে শত বৎসর পরমায়ু প্রাপ্ত হইতে जेरे नकल मीर्घायुः (मथा याहेटडट । লোকের সংখ্যা পূর্বে অধিক ছিল, ক্রমে ক্রনে বিস্তর হ্রাস হইয়া আসিয়াছে। সকল एक्टम्बे मनूषा कीवटनत धरे कथ अवदा। পরস্ত মনুষ্যের দীর্ঘায়ু যে নিতাশুই প্রার্থ-मीय. চির-প্র**থিত গুরুজ্ন**দিগের আশীর্বাদ वादगाई जाहा উद्धम वास्त्र इत्।

কিন্ত একাণে কভ মনুদ্যের কত বয়সে সূত্য হইতেছে কেহ কেহ ভাহার যে ভালিকা প্রকাশ করেন, তাহাতে আমাদের জীবদশার কি কোভজনক বার্তা প্রকাশ হয়। কোন
কোন বাক্তি অনুসন্ধান দারা নির্ণয় করিয়াছেন যে, যত লোক পৃথিবীতে জন্ম গ্রহণ
করে, সপ্তম বর্ষ অতিক্রম না করিতে করিতে
তাহার চতুর্থাংশ লোক এবং সপ্তদশ বংসর
বয়ংক্রমের মধ্যে তাহার অর্দ্ধেক লোক
পঞ্জন্ম প্রাপ্ত হয়; শতকরা ছয় জন মাত্র
লোক প্রমন্তি বংসর পর্যান্ত জীবিত থাকে:
আর ঘাঁহারা শত বংসর জীবন প্রাপ্ত হয়েন,
তাঁহারা, যত লোক পৃথিবীতে জন্ম গ্রহণ
করেন, তাহার দশ সহস্রাংশের এক অংশ
ঘাত্র। হা! কি শোচনার বিষয়! মন্শোর
জীবনের বার্তা বলিতে গিয়া মৃত্যুরই চিত্র
চিত্রিত করিতে হয়!

কিন্তু পশুদিগের সহিত এবিদরে মনুদার কত তারতমা; পশুদিগের জীবন কালের পরিমাণ নির্ণয় করিলে দেখা দার নে, তাহার প্রায়সম্ভবকাল পর্যান্ত জীবিত থাকে। তাহা; দের মধ্যে অকাল মৃত্যু অতি আপেই সং-ঘটিত হয়। তবে মনুঘোরই এমন অবস্থা কৈন > পশুগণ দখন সম্ভব কাল পর্যান্ত বাঁচে, মনুঘাদিগের মধ্যেও হলন কেহ কেহ শত বৎসর পর্যান্ত জীবন ধারণ করিতেছেন, তথন চেকা করিলে সকল মনুঘা যে সমুব কাল পর্যান্ত জীবিত থালিতে পরিবে, তাহার আশ্রুষা কি ১

দ্বিতীয়, সুক্রীকতা অর্থাৎ সৌন্দর্যা।
এখানে এই শন্দে সৌন্দর্যার যথার্থ লক্ষণ
প্রাণিধান করিয়া বিষেচনা করিতে হইবে।
কেবল বর্ণে অথবা কেবল গানে সৌন্দর্যা
হয় না; তরলমতি লোকেরা চাক্চিকাশালী
আপাতরমণীয় কোন বস্তু দেখিলে তাহাতে
বিমুশ্ধ হয়, কিন্তু তাহাদের যথার্থ সৌন্দর্যা
বোধ থাকিলে তাহাদের ভাব ও বিচার
শক্তি অনা পথে গমন করিতে পারে। যথন

মনুযোর সর্বাবয়বের স্পুর্ণ বল পুর্কী সোর্তব লালিতা ও কান্তি প্রকাশ হয়, তথন তাহার যথার্থ সৌন্দর্যা দীপ্তি পাইতে থাকে।—ইহার নিমিন্ত মনুযোর সম্পূর্ণ স্বাস্থ্যেরই প্রয়োজন। উদ্ভিদ রাজ্যে অথবা অন্যান্য জীবরাজ্যেও এই নিয়ম দেখা ঘায়। যখন কোন উদ্ভিদ বা জীব সর্বাংশে সুস্থ থাকে, তখন ভাহা অপূর্ব শ্রী ধারণ করে। এই জন্য কোন কোন ব্যক্তি এই রূপ সৌন্দর্যাকেই স্থান্থ্যের প্রধান পরিচায়্নক রূপে গণ্য করিয়া গিয়াছেন

किन्छ जाभारमत गरधा हैशत कि विभर्गाहे ना नृष्ठे इत्र! अनन्त्रक्षणी मध्छ कार्लात लाग সকল মনুষোর রক্ত মাণস মজাতে বসতি করিয়া মনুযোর শরীর কি পর্যান্তই না বিক্লত করিয়া জুলিতেছে : পিতার ঔদাসো মাতার অলেসেঃ কছ লোক বাল্যাবস্থাতেই এক প্র-কার জরাগ্রস্ত হইরা যৌব**ন সী**মায় পদার্পণ ক্রিভেছে। কত লোক গর্ভাবস্থাতেই বিক-লাম ও বিক্তাম চইয়া পৃথিবীতে আদিয়া আঁলীয় প্রতিবেশী ও দর্শক দিগের শোক ও বিষয় উদ্দীপন করিছেছে। আবার কত লোক প্রবৃত্তির উত্তেজনার—শোক মোলাদির পীড়নে জজ্জরিত ও ওক্ষ হইয়া কশ্লসার কলেবর বছন করিছেছে। কভ লোক অপরিমিত শারীরিক বা মান্দ্রিক পরিপ্রমে তল্প শর র ও অকর্মণা 💘 রা অর্দ্ধ ব্যস অৰ্থি এক প্ৰব্যাক জীবমূত অবস্থায় কাল যাপন করিতেছে। **এই সকল বিপ-**গাল ঘটনা কোথাও অত্প কোথাও অধিক, কিন্তু পৃথিবীর সকল স্থানেই ব্যাপ্ত রহিয়া**ছে।** আমানের মধ্যে যথার্থ **সূত্ত অতি অ**ত্ত *(लाकरे विमामान जारहन।*

পরস্ক আমাদের অস্বাস্থ্য বর্ণনাই আমা-দের উদ্দেশ্য নহে। তাহা হইলে আমরা আরো কত কথা ব্যক্ত করিতে পারিতাম। कर्ष करें जरून चवमा श्रीहार्ग चम्छ क्रिंग्त कि बर्श चवनान ह्य,—किस चामना श्रक्त हिन्द हहेर्ड शांत—कि श्रकारत यथार्थ चाहा मूथ चामारमत निष्ठा मस्त्राश ह्य, उिष्यस चामारमत मरनानित्वम कर्ता कर्ज्य।

সমুদ্রের জলোক্ষ্বাস যেমন ভিথির অনুক্রমে এক এক দিবস কতক কতক হ্রাস হইয়া
আইসেং আমাদের স্বাস্থ্য সুথ সেই ৰূপ ক্রমে
ক্রমে অনেক দূর হ্রাস হইয়া আসিয়াছে।
এক্ষণে আবার সেই সমুদ্রের জলোক্ষ্যাসের
ইন্ধির নায় ক্রমে ক্রমে আমাদের স্বাস্থ্যের
ইন্ধির নায় ক্রমে ক্রমে আমাদের স্বাস্থার
ইন্ধির সাধন করিতে হইবে। ইহার নিমিত্ত
আমাদের প্রত্যেকের বিশেষ চেইটা আবশাক। আমাদের স্বাস্থ্য সাধন রাজকীয়
বা সামাজিক কোন ব্যবস্থা হারা সম্পাদ্য
নহে। ইয়াতে পরোক্ষ সাধন চলে না
ইহার জন্য প্রত্যেক ব্যক্তির প্রতি ক্রমের
অপ্রতিহত মত্র আবশ্যক।

वांगारनत वाहःत, शान, हिक्टिंग, इ সন্তান প্রতিপালন এবং শিক্ষা বিষয়ে যে नकल गठ ও পদতি আবিষ্কৃত इरेशारह. ভাহার কোনটিই যে এখনো বিশুদ্ধ ও সম্পূর্ণ হয় নাই, তাহার এই এক প্রধান প্রমাণ যে. এখনো তাহা দ্বারা কোঁন শ্রেণীর লেকে যথাৰ্থ স্বাস্থ্য লাভ ক্রিতে সমর্থ কান। আহার, পান, চিকিৎসা ও শিক্ষাদিকে ১মু-माग्न मनुवा मखलीत चाचा वा की क्रिटिट्र। এই मधुषांत्र मनुषा मञ्जा हा की दन ममुमाय मनुरामधनी बातारे तकि छ टरेदन, দ্হজ যুক্তি ছারা এই এক দিয়াত প্রাপ্ত হওয়া যায়। কিন্তু তাহানা হইরা কেবল क्रिक क्रम ठिकिश्मक या भिक्तरकरे य अरे সমুদায় মনুষোর জীবন রক্ষা করিবেন, অথবা করিতে পারিবেন, ইংা কোন মতে मख्य त्यां १ हम ना। म्यू ७ ताः विहे कथारे वित रहेटलट्ट ए नमूनात मनूना पखनीत चाटबात जना मध्नात मन्गाटकर हिला ७ यञ्ज कतिर्ण इरेरव अवर छाहा हरेरम रेहा अ वला गारेट भातिएटर एवं, गावर नमूनाम লোক অথবা অধিকাংশ লোক আপনাদের স্বাস্থ্যোমতির উপযোগী জ্ঞান লাভ না করেন-নাবৎ অধিকাংশ মনুষ্য পৃথিবীর এই অমঙ্গলরাশি বিনাশের নিমিত যুক্তি ও পরামর্শ করিতে প্রবৃত্ত না হয়েন, তাবৎ मन्त्यात चादा माधरनत यथार्थ পथ आवि-क्षृठ हहेरव ना। मनूरगत चाचा रागन মুল্যবান পদার্থ, ইহার উল্লভির যথার্থ উপায় করাও তেমনি কঠিন। সকল অবধারণ এ প্র্যান্ত ঘাঁহারা চিকিৎসা বিদ্যাতে নিপুণ অথবা যে সকল চিকিৎসা শান্ত সর্বোৎকৃষ্ট विलया नर्वेव ' अनिकाः, यनि मिरे नकल চিকিৎসকের বা চিকিৎসা শাক্তের মতেই क्वित्त मगुनाय ठिकिएमा कार्या निर्द्वीह इहेंड, ভাহা হইলে কত রোগ একবারে অচিকিৎসা বলিয়া গণ্য হইয়া থাকিত এবং সেই সকল রোগের যে সকল উভট মহৌষধ অন্যান্য লোক কর্তৃক আবিষ্কৃত হইয়াছে, তহি৷ মনু-যোর দর্শন পথে সমানীত হইত না। ইহাতে यमन अमान हरेटडाइ या, मनुरमात साहा সাধন তত্ত্ব অতি ছুজেরি, তেমনি ইহাও निकास स्टेट्टए एव, देशत जेबिजत जना সমুদায় লোকেরই চিম্বা চেম্বা ও পরীকা আবশাক।

সামবেদি কর্মামুগ্রান-পদ্ধতি। • বংগ্রভাই প্রনীত।

চুড়াকরণ,।

)। कूनावात अनुनादत आथम अथना जुलीय र्व कृषाकत्र कतिरतक।

)। বিবাহ, চ্ডাক্রণ ও উপদর্ল, এই তিন কার বেরপ অব্রাজনীয় হইরা আছে,আর আর ই। চুড়াকরণ দিবলে পিড়া প্রাভঃকালে স্নান ও রজি প্রান্ধ করিয়। সভা নামক অগ্নি সংস্থাপন পূর্বাক বিরপাক জপ পর্যান্ত কুশণ্ডিকা সমাপ্ত ক-রিয়া সাঁড সাভ গাছী কুশ আর এক এক গাছী কুশে বন্ধন পূর্বাক ভিনটি আটি (পিঞ্জলী) প্রস্তুত্ত করিয়া, ভাষা, উক্ষ জল সহিত কাংস্যা পারা, ভাষানির্মাত কুর, ভাষার অভাবে দর্পণ ও লোহকুরছন্ত নাপিতকে অগ্নির দ্বিণ দিকে; রুষ পোমা, ভিল, ভন্ত ও ক্ষেত্ত সম্পান (দল্পণ ও কাংস্কুরছন্ত নাপিতকে এবং মিশ্রিভ ধানা ঘব ও ভিলপ্তর্গ ভিনটি পারা ও মিশ্রিভ জিল ম ম কলায় পূর্ব দিনটি পারা ভাষার পূর্বাবিকে প্রাণান করিবেক।

ও। নাজা শুল্ল বস্তে বুনাবকে কাজাদন পূর্বক,কোডে রাখিল। মগ্রির পশ্চিন দিজে ভারত বান পাংশ উভরা গতুলো প্রয়েখী। স্টবং উপরে শন করিবেক।

৪। অনস্তর পিতা প্রকৃত্ত কর্যারয়ে প্রতেশে প্রমাণ গৃতাত সমিৎ অমন্তরক অগ্নিতে আহতি দিয়া পরে বাত্য সমক্ষ মহাব্যাস্কৃতি কোম করিবেক।

৫। সন্ধর উপিছও পূর্বায়থ ইইয়া কুমারের মাতার পশ্চিনে অবন্ধিত কুরপাণি নাপিতকে দর্শন ও ভাষাকেই ফ্যারণ খ্যান করত ক্রপ করিবেক যথা—

প্রজাপতি ঋষিং স্বিতাদেবতা চুড়া-করণে বিনিয়োগং।

ওঁ আয়মগাৎ সবিতা কুরেণ।

"অংশ সবিতা কুরেণ আ অগাৎ।"
এই সবিতা কুরের সহিত আসিয়াতেন।

৬। অনপ্তর উষ্ণ জল সহিত কাংসাপাত্র দর্শন ও মনে মনে বায়ুকে গানি করত জপ করিবেক স্থা----

প্রজাপতি ঋষি বায়ুদেবতা চুড়াকরণে বিনিয়োগঃ।

७ उरकी वास छेमरकरेनिधि।

গুলি সেরপ নহে। এই জনা বিবাচের পরই এইটি প্রকাশ করা ঘাইতেছে। গর্ডাধান প্রভৃতি ক্রিয়া গুলি অনেক স্থান হইতে উঠিয়া গিয়াছে এবং না ক্রিলেও হিন্দুস্নাক্ত আর সেরপ হানি বোধ করেন না। ে হে বাবে। উচ্ছেণ উদ্ধানন 'এবি' আগত্ত। । হে বায়ু উক্ত জালের সহিত্ আগিমন কর।

৭। অনস্তর দক্ষিণ হক্তে কাংসা পাত্রন্থ উষণ কল লইয়া কুমারের শিখাস্থানের নিম্ন ও দক্ষিণ কর্ণের উর্দ্ধ দেশ (দক্ষিণ কপুষ্টিকা) আফ্র করিবেক।

প্রজাপতি ঋষিং আপোদেবত। চুড়াক-রণে বিনিয়োগং।

ওঁ আপো উন্দস্ত জীবসে।

'ভাগঃ' 'জীবনে' জীবনায 'উন্দল্ভ' ক্লেবস্তু।

জল জীবনের নিমিত্ত আর্জে করুন।

৮। অন্তর ভাত্তক্ষুর ভদভাবে দর্পণ দর্শন
করত জপা করিবেক

প্রজাপতি শ্বি বিষ্ফুর্দেবতা চুড়াকরণে বিনিয়োগং।

> ्र विद्या मंद्रकी मि । पर विद्याः भागीः मागी जामः।

ভূমি বিশ্ব দক্ত।

৯। জনতার পূর্বেক 'ভনটি নর্ছপিঞ্চনীর একটি লইফা ডিগ্ধ মূল কার্যা উভ্জ আর্দ্র স্থানে বাবিবেক।

প্রজাপতি খাটি রোযধিদেবিতা চুড়াকরণে বিনিয়োগং।

> ॐ ७य**(४ जाग़रेश्वनः ।** ८२ '७दा४ ७२ः' द्वाय**न'** २क्सन्न ।

८० ७४(४ हेर्द्रक तका कता

়ে। আনস্তর বাম হ**ন্তে ধৃত কুশপিঞ্জীর** গ^{্রিক} দক্ষিণ কপ্টিকা দেশে দক্ষিণ **হস্ত দ্বার**। ভাষাক্ষর বা দর্শন অর্পন করিবেক।

প্রজাপতি ঋষিং স্বধিতি দেবতা চুড়াক-রংগ বিনিয়োগঃ।

ॐ खिरिष्ठ रेमनः हिश्मीः। भागितापृष्ठः कृतः स्व क्षिरिष्ठः अनः म हिश्मीः। रह लेख्यक्षनिर्धिष्ठ कृतः। ইহাকে हिश्मा कृति।

১)। অনস্তর বাহাতে কেশছেদ না হয়, এই কপ করিয়া সেই স্থানে ভা**ন্তকুর বা দর্পণ** পুর্বাভিমুখ করিয়া চালনা করিবেক।

প্রজাপতি ঋষিঃ পূষা দেবতা চুড়াকরণে বিনিয়োগঃ। ওঁ যেন পুষা বৃহস্পতে বাঁরোরিক্সসা চা-পৰৎ তেন বপামি ব্রহ্মণা জীবাতবে জীবনায় দীর্ঘায়ুফীয় বনায় বর্চনে।

'বেন' বাধতিনা 'পুষা' নাম দেবঃ 'বৃহস্পতেঃ' বাবো-বিশ্বস্থান্ধা 'আবপ্থ' ক্ষামং কৃত্যান্ 'তেন' 'ব্ৰহ্ণণা' ব্ৰহ্ণ-ভূতেন 'বপামি' ভক্ৰং করোনি, 'কীবায়েবে' এতদেব ব্যা-চটে 'কীবনায়' অস্থাঃ 'দীখাযুকীয়া বৰায় বৰ্জসে'।

পূষা দেব যে কুর ছারা ব্রহস্পতি বায়ু ও ইন্দ্রের মঙ্গল করিয়াছিলেন, সেই ব্রহ্ম বরূপ কুর ছারা জীবন, দীর্ঘায়ু, বল ও তেজের জন্য মঞ্চল করিতেছি ।

२२। अनस्त উक्त गूतन्ता पर्भग विनामस्य वात्रष्ट्य ठालमा कतिरवक

১৩। পরে লোই স্কুর দ্বারা সেই স্থানের কথা ভেদন করিয়া কুশাপঞ্জনীর সহিত আচার অনু-সারে কুমারের বালক মিতের হস্ত ধৃত পাত্রস্থ রুষ-গোময়ের উপর নিঃক্ষেপ করিবেক।

১৪। ভৎপরে শিখা স্থানের সম্মুখস্থ নিয় দেশ (কপুষ্টল) ও অনস্তর বান কপুটিকা দেশে পুর্বোক্ত প্রকারে পুর্বোক্ত উফ জল সেক:দি সনুদায় ক্রিয়া করিবেক।

প্রাপ্ত।

আন্থ নিবেদন।

এই বিশ্ব ভূবনের কি অতুল আশ্চণ্য শোন্তা!

যে দিকে নেত্র ইমীলন করি, দকলই মুখ্নম মুখান্

ময় ও আশ্চণ্যময় প্রতীভ হয় কি নভোনওলে

কি দাগরবক্ষে কি গিরিশৃক্ষে কি অর্ণানী মণ্টে,

সর্বত্রই সেই পরম পুরুষের মহিমা উজ্জুল অপরে

অন্ধিত রহিয়াছে—সকল হইতে নিরন্তর অমৃত

করণ হইতেছে। পশু পদ্মী কীট পজ্জ সকলেই

আনন্দে নিমা!—কোন অভাব নাই—কোন

ক্রেশা নাই—উবার সহিত, সন্ধারে সহিত, দিবসের

সহিত, রজনীর সহিত ভাহারা নিয়ত ক্রীড়া করিয়া

১। গুণবিষণু অনুসারে উক্ত মন্ত্রের এই রূপ অর্থ হয়। কিন্তু এরূপ অর্থের প্রতি বিলক্ষণ সন্দেহ। বজুবেনের কোন ছান হইতে এই মন্ত্রটুকু উদ্ধৃত হইয়াছে, তাহা না দেখিলে যদিও ইছার প্রকৃত অর্থ প্রকাশ করা সন্তাবিত নহে, তথাপি বর্ত্তনার অর্থ যে সংলগ্ন হইতেছেনা, তাহা অনারানেই বলা যাইতে পারে।

त्वज़ाहरज्ञ । किन्नु मनूरवाद्र कि बीनावना। शा वर्षः भावात गरधा वाश क्षधान लोका-वर्ष मक् भागार्थित मध्या बाहा महत्त्व — महे दनव जुला উৎকৃষ্ট সৃষ্টি মনুষাক্ষাভি পৃথিবীর মধ্যে কি অসু-খই কাল যাপন করিভেছে ! প্রকৃতির শুল বছ बक्क मनुशा कि कालिया है आशांश क्रिएड है। यनुशा একবারে যে সুথবিহীন বা মহত্বিহীন ভাহাও নহে, কিন্তু ভাহার তদ্বিপরীত ভাব অর্থাৎ অ-मूथ ও भोवना, कृष्टा ও शेनडा এড य, ভাহার মধ্যে ভাহার সুলকণ সকল একবারে অদুখা হইয়া যায়। কবিগণ সাধুগণ ভত্তদশীগণ মনুষা জীবনের শোক ও মলিনভা বর্ণনা করিয়া রাশি অসাণ গ্রন্থ করিয়াছেন। — যাঁহারা সরু-शादक किছू क्याचान या छत्रना नियाद्यत, छाहाता এই বলিতে পারিয়াডেন,—ঈশ্বর আছেন, চিন্তা नाइ, पूथ इः एथ छ। हात्रहे छे शदत निर्छत कतिया চলিয়া যাও। ভাঁহাকে চাও আরাম পাইবে ও कुडार्थ इहेरव।—डेडाई डेलटमण। धरे भाव व्यवसम्म । ममुनाय मनुरयात এই पर्मा ও এই कार्या--- इहाई बलार्थ अर्ग्य--- हेहाई जाकाशमी। यनि এই ব্রাহ্মণর্যকে পাট্যাছি, ভবে আর ভয় কি ! অভাব কি ?--হা! সকলই অভাব! বান্ধ-পৰ্মকেই এখনো যথাৰ্য ক্লপে পাই নাই—ভাহাকে চিনিতে পারি নাই—বাহ্মধর্ম কি উচ্চ, कि গভীর, কি প্রশস্ত ও উদার, ভাহা বুঝিতে পারি নাই। হা ব্ৰাহ্মধৰ্ম! ভূমি কোপায়, দেখা দেও,---প্রকৃত মুর্ভিতে দেখা দেও, আর ভোমাকে কুসং-कात ७ उर्भामा कांत्र किए प्रविद्ध भाति ना। তুমি সমুদায় মনুষোর সম্পত্তি—সকল মনুষোর অবলঘন—সকল লোকের প্রাণ বরূপ! দেই ভাবে ডুমি উদিভ হও ও চির কাল বিদ্যমান থাক। ভোষার উদয়ে মনুযোর সমুদায় অন্ধকার ভিরেত্র हिक इंदेरव-मकन हृश्य विषृत्कि इहरव, अहे আশায় 🐙 বিৰ ধারণ করিভেচি। ভূমি ভোমার रमहे शनिज ଓ मजन मज्ञाभा माधन करा।

চে প্রকৃতি। তুনি ভোনার আবরণ সকল উল্মো-চন কর—ভোনার অভ্যু-নিছিত, নিগুচুরত রাজি মন্ত্র্যাদিগকে বিভরণ কর। মান্তার ন্যায় তুনি জামাদিগকে পোরণ কর। হে ঈশর। আমাদের জান বুজুলা কে
চরিভার্থ করিবে? ধর্ম তৃঞ্চা কে পরিভূপ্ত করিবে?
মুখ লান্তি কে বিধান করিবে? আর কোণায়
বাইব, কাহাকে ডাকিব, কাহার ছারে দাঁড়াইব? ভোষা ভিন্ন আমাদের আর কে আছে!
হে ঈশর! কোন্ ধর্ম স্থের ভূমি আমাদিগকে
অনম্ভ সুখ শান্তি প্রদান করিবে, সেই ধর্ম আমাদিগকে দেখাইয়া দেও; সেই ধর্ম পৃথিবীতে
অবিকৃত ভাবে প্রকাশ ও রক্ষা কর;—আমাদিগকে রক্ষা কর; জগৎকে রক্ষা কর; এই
মাত্র আমার আত্মার নিবেদন।

নূতন পুস্তক। ১। চণ্ডালিনী।

চণ্ডালিনী এক খানি গদ্য কারা। চণ্ডালিনী
নামী একটি কন্যা ইহার নায়িকা। প্রীযুক্ত ক্ষেত্র
নাথ বন্দ্যোপাধ্যায় ইহার প্রণয়ন করিয়াছেন।
গ্রন্থকার যদি বিদ্যালয়ের ছাত্র হন, ভাহা হইলে
আয়রা তাঁহার গ্রন্থ প্রণয়নে উৎসাহ দিভে অনিচ্ছু নই। কিন্তু এরপ গ্রন্থ ছারা বালালীদিগের
মন বা বাললা ভাষার কিছুই উৎকর্ষ লাভের
সম্ভাবনা নাই। এরপ অনেক লোক আছেন যে,
ভাহাদের গানে প্রোভ্রণণ বিরক্তি বোধ করিলেও
ভাহারা নিজে মনে করেন, উত্তম গান করিভেছি;
রচনা বিষয়েও এই রূপ অনিইকর মুগ্ধভা হইয়া
থাকে। আলি কালি অনেক গ্রন্থকারই সেই মুগ্ধভার হল্তে পড়িয়া কোন্ বিষয়ে আপনার প্রকৃত
শক্তি আছে, ভাহা অনুভব করিভে পারেন না।

Wilson's Sanskrit English Dictionary P. II.

শ্রীযুক্ত জগগোহন ভর্কালয়ার ও শ্রীযুক্ত ক্ষেত্র নাথ চটোপাথার কর্ত্ত্ব সংশোধিত শ্রীযুক্ত জানেক্স চল্র রায় চৌধুরি কর্ত্ত্ব প্রচারিত। এই দ্বিতীয় থও সংস্কৃত ইংরাজি অভিগানের ককা-রাদি শক্ষের কতক্ত্বি পর্যান্ত প্রকাশিত হইয়াছে।

. English Legislation for India.

প্রীযুক্ত এ মিরিক ব্রডনী সাবের বরাহনগর সমাকোৎকর বিধান সভাতে ১৮৭০ থৃঃঅকের ১৯ নবেয়র বে বক্তা করিয়াছিলেন, ভাহা এই পুস্তক কোরে প্রকাশিত হর্যাছে। বন্ধা ইহাতে অভিন্তুলা সহকারে প্রদেশন কর্যাছেন যে,ভারজন্মনিক কর্যাছেন যে,ভারজন্মনিক গ্রহণীয় গর্গমেল্ট করিছালের মন্ত্রালিকের মন্ত্রালিকি হালালের নিম্প্র যে সকল রাজনিকি প্রচলিত প্রচলিত করিছালের ভাষালের ভাষালের ভাষালের সম্প্রালিকের ক্রিয়াল কেন্দ্রালিকের মানালার প্রচলিত ক্রিয়ালের প্রচলিত রাজি হালালার প্রচলিত ক্রিয়ালের প্রচলিত ক্রিয়ালের প্রচলিত ক্রালিকের ক্রিয়ালের প্রচলিত ক্রিয়ালের প্রচলিত ক্রিয়ালের প্রচলিত ক্রিয়ালের প্রচলিত ক্রিয়ালের প্রচলিত ক্রিয়ালের প্রচলিত ক্রিয়ালের ক্রেয়ালের ক্রিয়ালের ক্রি

K. The Protector A. alto Aspen or the Foreign for payon Labor

কলে কাজ ন এন লগত হো এই প্ৰান্ত কি ত লি লগা সকল হো হাজুলালনা ক'বল কিন লগা হৈছিল এই জাইছে ল' কিছেল ক'বল কাজৰ নতাত লকটো হিছিল কাজু ন' কথা গতি — 'সেই বাজা ভাৱে কৰা তেওঁ প্ৰান্ত কি লগা হিলা লগত কাজৰ হুইটি কল ল লগা লগত হ'বল কিন্তুল মাজিক শ্ৰিক ক্ষিণা ক্ষিণা হৈছিল লগা লগত ক'বল কাজ কিন্তুল মাজিক শ্ৰেক ক্ষিণা ক্ষিণা হৈছিল

ন্ধান লৈ তি দেবি নাম্টিট্রিকে শ্রীমুক্ত নাম বাংলালে লাল বাংলালে প্রাকৃতি কল্পেল । ইকাজে লাল লালে কলা লালে লালে স্টিলালে । কিল্লে নাজনাম্বানে, লালেকে কলা লালে লালিলে ই জালালা, জ কাংকালে লালেকি লালিলেলি স্টিলেলে লালে (বিশেষটি কি মুক্ত লালেকে কলা লালেলেলিক জীন্দিল প্রান্ধান করিয়ালা টিলালিক যালিলেলেলাক্তি লালিক যালিক যালিকে যালিকে স্টেবে, সভা কলা লালেলিক লালিকেলা ভিলাকার স্টেবার নাজাবালা ক্ষাতি ।

০ : ৪০ শর ন জিলের মি**তের বজ্জা।**

উদ্ধানত গ্ৰহ হয় আ**ন্ধানত থে** সকল বাদ্ধান । বাং বিজেন, ভাষা এক**তে মুদ্ভিভ** বহিন্দ বিজ্ঞান বাংছ বটনা**ডে। ইহাতে ভাষা** নাগ ভাব, ত্রাহ্মধর্মের প্রভি অবিচলিত এজা এবং যথেই পর্মালোচনার চিহ্ন প্রকাশিত আছে। ইহা তাঁহার ধর্মা জীবনের দুটান্ত হরপ কইয়াছে।

१। वद्दविवाह विष्ठात भगोदनाष्ठन।।

নাক্ষণে বহুবিবাই শান্তনিষিদ্ধ কি না, ভাহা লটয়া এ দেশের বিজ্ঞান প্রিভাগন যে বিচাবে ্রত্ব হইলাডেন,ইহা ভৎসম্প্রীয় এক থানি বিচার पुरुक। अन्यनिमनी मन्त्रामक श्रीपुर्क महा-এক স্মেশ্ন ভটাচার্যা ইহা রচন। করিয়াছেন। भामअभी महासर पूछ काल दिलाख ६५ न एवं रह निवास भारिकाधिक महत्र वावर ६६ छान। वाहे Michiga Bu in sprice, Spains in as चित्रिक्त किन्ति रेहर्गामबा छ पदल्याम्य अकार क तिराज्याप्रमा । विभाग सराप्रमा १ मधा के मध्यके मध्यके । स्था (२) ५५ माध्य माणशा स्लबार्थ तक शहिकत ६७। शंद कहातीत करिन । अभावाक मन्दोर्ग कहा काराध कोलया । त्रामान इन्द्रा कि चिन्नामान क ला 📒 रामाञ्च ऐयुरुध इधेता बाहिएखट बाह्य, कि ক্রি । স্বে আম্বর ব্রহ্মারণাপর হটু--ইছ্ট্ কি মহস্পি শৈল্প ব কুৰা প্ৰাছশ্ৰণ অগ্ৰান্তৰ -, eice जिल्लाक छुकेन्छ, मण्डिमीरतय জনক ডকে গভি বলেন মা, ভিছোৱা সল ভ কবিকেই ধন,শালিক মাতির সঞ্জাতি করেন।"

निख्डालन!

আন্ত্রেমী ২ পেন্স গ্রিবার জ্ঞাতে ৭৮০ সচিন কল্লে সময়ে স্থানক ক্রাক্ষেমম্জ এইবে।

আগনি ১১ নাতের দব্যে র।ক্ষণণ অনুএই পূর্বক প্রতিভাতে সামৎস্ত্রিক দন্ে পান্ট্রা ব্যবিভ করিবেন।

ণত আশ্বিন মাধ অবণি পত্তিকার মাশুল অর্জ আনা ক্টয়াছে। বিদেশীয় গ্রাহকরণ হাতী, মণি-অর্ডর বা অর্জা আনার ভাকের টিকিটের থানা পত্তিকার মূল্য পাঠাইবেন। অধিক মুমোব নিকিট পাঠাইলে সমাজকে কভিয়স্ত হইতে ক্টরে।

> ত্রী আনুষ্ণ চক্র বেদায়বাগীশ। সহবারে সম্পাদক।

আগামী ৫ পোষ মঙ্গলনার সন্ধা। ৭ ঘনীর পর বলু হানি ব্রাদাননাজের চতুদ্দশ সাম্বংসরিক উৎসব হউবে।

अश्वर १०२४ । कलियुकार १०१२ । ३ दुर्भीय खद्धाराहर ।



তভারোধিনীপ্রতিকা

त्रभगोधकमिममधास्मानीम् विश्वनानीस्तिमः नर्समण्डकः। उत्तर विठाः स्वानमनसः निरः स्वस्मित्रवयन्त्रमः।
निर्वाविकोयः नर्सवानि मर्सनियस् न सीचम् मर्सविक नर्सनिकमण्डनः भूनेनव्यक्तिसिति। धकना सहैनात्वानामनया
नाविकहेमहिककं असंस्विति। समिन् व्योखिसना व्याविका वियकार्यासनस् उसूनामनत्वनः।

বিজ্ঞাপন

দ্বাচন্বারিংশ সাংবৎসরিক ব্রাহ্মসমাজ।

আগামী ১১ মাঘ মঙ্গলবার দাচ্ছারিংশ সাংবৎসরিক বান্দ্র সমাজ ২ইবে।

১ নাঘ অৰ্থি ১৯ নাক শ্ৰীন্ত প্ৰতিদিবস সন্ধান বিশ্বীন সমূহে আদি ভাষসমাজ-গৃহত ভাষা-ধৰ্মের ব্যাখ্যা ইউবৈ

ेश मारक्षक्रवाहः विश्विकारण ५ मकीय सम्दर्भ कार जीवनगण्डः गुरम् अवर मान्नर कार्याः १ प्रकीतः गुरम् अवर मान्नर कार्याः गरागदेशत अवदन बद्धाणामना १२८व ।

> গ্রীজ্যোতিরিক্সনাথ ঠাকুর। সম্পাণিত ।

9 9 9 1 1 1

লাপ ও বুণোর ভাব লামানের ধর্ম
বিদ্যান নারা ইচা বিলেন বলে পরিজ্ঞান
চালন নারা ইচা বিলেন বলে পরিজ্ঞান
চালন নারা আপনাদির কৈ বাধীন পুরুষ
বিদিয়া আদি, যে কোল নার্যা আমরা
প্রবৃত্ত হই, কিল বে কোলানি নি করিছেছি
নই প্রায়াটি আমানের মনে কর্মাই অবহিতি করি তর্ত্ত ক্রিছে ক্রিছেল
ইতি করি তর্ত্ত ক্রিছেল
ইতি করি হিত্ত ক্রিছেল
ইতি করি হিত্ত ক্রিছেল
ইতি করি হিতা ক্রিছেল
ইতি করি হিত্ত ক্রিছেল
ইতি করি ক্রিছেল
ইতি করি হিত্ত
কাৰ্য্য হইতে যে সমস্ত শুভাগুভ কলোৎ-शत इत अवर य नमस् किनात नः परिन বা স্ত্রপাত হয়, আমরাই ভাষার মূলীভূত হেতু ও কর্তা। আমারের নেই কার্যা বারা বৰি अंज कर्म देशभा है। इन्हें का श्रीत आगरिपत ধন্ম ভাব চরিভার্থ ইয় ও সেই কার্যাকে সদ-নুষ্ঠান ও ৰাহা উচিত ও কৰ্ত্ব্য বুলিয়া আমাদের প্রভার করে; সেই রপ যে नकल क्षे हरेट जावल के व्यक्तिक रिपा हरा, त्र नक्त कार्यादक अनुविष्ठ ও अक्छरा বলৈর। উপ্রাক্ত হয়। বেমন স্বামরা জ্ঞান ও दुकि बीता लीमाटमद नार्गाद कार्या मध्-ट्यू मर्था स्कान् कार्या उँ श्रृक्षे कान् में अश-कृष्ठे, कान् जिल्ला कार् जिल्लामन कान् जी প্রতিকর লেন্ট পঞ্জীতকর, তাহা অবধারণ कति, ्रमहे कारण (महे कार्याणी कर्जुवा कि चकड्वा, উচিত कि चनुष्ठित जाराख विदिक দারা জানিতে পারি; এবং তাহার সঁলে সলে कामता रेराउ कानिट्ड शांत रा, गारा कर्डवा जारा त्रे**वा क्रांब्र क्रांब्र क्रां**ब्र व्याहा व्यक-র্ত্তব্য ভাষা ইন্ধরের অনভিপ্রেভ। এই কর্ত্তব্য क्षात्मत्र विश्वीत्व क्षेत्रतत्र वक्त्यक्षित्र अधिकूटन कामन होशंत कारकार करका कतिया ता नकल होटका श्राहक वर्षे, कहाता आवत केपद्यत निकंड संश्रामी करे। अके अश्राह्मक नाग करा - बाह के देवन कात्मत्र महिक क्षेत्रसम्बद्धाः वर्षन विकास जनुमगर्त उंशित चारिक बातवक्याहे नेना वर्षे करक गम्हरा के " विश्व के प्राची के किए जान य करवजू रक्ति व्यक्तियाः च्युक्त कृत्ये कर्षम् शामासम्बद्धाः मा श्रीमक्ति-क्या व्यवना वर्षका कार्या त्रष्ट इत्रवा **त्रे के** कि वालादात निवनाटक के के निवनाडन ले अधिमादरत्र नाह नेक्सका का चना होते. जीहा CATH PRINT AND S STREET SHEET

অতিত্ব ও তাঁহার মধান্যর পাননে বিশান
বেমন বর্মজানের প্রথম মাধ্রুর, নেই ৰূপ
লাপ প্রান্ধ করেন জান ধর্ম নাধনের
প্রথম নোপাল জানন্যান্তের অতি দৈশবাবস্থা হইতে পাপ ও পুনোর ভাব মনুধ্য
স্থায়ে উদিত হইতে দেখা আয়। যদিও কার্য্য
বিশেষের কলাকল জ্ঞানের ভারতম্যানুসারে
তৎসংক্রান্ধ পাপ পুণোর ভাব তিল ভিল্ল
জন স্থাকে বিভিন্ন প্রকার দৃষ্ট হয়, কিন্তু যে
স্থলে কোন কার্য্যে উপরোক্ত লক্ষণ গুলি
স্পান্ট বাপে লোক দেখিতে পার, সে স্থলে
ড০কার্যোর পাপ বা পুণাজনকতা সমন্ধে
ক্রাপি মত ভেদ হইতে দেখা যায় না।

১। **যে কার্য্য জনিত আমরা পাপের** বা পুণোর ভাগী হইব, তাহা আমাদের স্থামী-নতা সহকারে বেচ্ছাক্ত হওয়া আবশ্যক। य कोर्या चामता चत्रः कत्रि नारे, जलदा वाहाट जागांत्रक किंदू मांव महकातिण থাকে না, তাহার দায়ী আমরা কি প্রকারে হইব ৷ এজন্য কোন কোন ধর্ম শাল্রে এই মৃত যে নিখিও আছে যে পিতার পাপভার अवानरक वर्ग कतिरु श्रेट्र ७ भाभी रम পাপাচরণ করে তাহার পুত্র পৌতাদিকেও তাই। ফল ভাগী হইতে হইছে একবা কেবল शाशानीक निराम परिवास उक ररे-वारम्भागिक्षां कारा क्रमा नदर। यामि अ वार्षिता क्षेत्र संबद्धिक समझ स्टार्थ (स.स्टान कान चढ़ा शिकान शांका करन मछानटक ट्यान निहरू के किस्टार गर्मन छेगारहरू चार्बात्र । वेशक्ति स्वकृत्य दनरे महान जाराह পিতার বন্ধানে স্পৃতির উত্তরাধিকার THE SHE STATE OF THE COLUMN सार्वेद्धारिक त क्यान साहनात्क वर्षार्थः त्नरे नात्भ, भानी द्वारा अनुख्य ৰাজ পারে বা।\ পাপাচয়ণর প্রকিয়া नगरक भारकारण हत्त आहेत कार्ड দেখিতেছি যে, আমাদের কুপ্রবৃত্তি সকল এ প্রকার প্রবল হইয়া উঠে ও আ্লা এমন বলচান হইয়া যায় যে সেই সকল প্রস্থ-ত্তিকে কোন ক্রমে প্রতিরোধ করিছে পারা যায় না। সুতরাং আমরা ছুটাত भाक्ताकान पूर्वत श्रा भारकत नगात প্রাল রিপু কর্তৃক পরাজিত ইংয়া তাহারই भरव नीम्यान इहै। अपन ऋत्ल हैं से कमां भि বল: গাইতে পারে না যে এই প্রকারে আমরা যে সকল ছুদ্ধনে প্রবৃত্ত হই, তাহার কলের ভাগী আমরা নহি; এবং এরপাও কখন অংমরা মনে করিতে পারি না যে আমাদের <u>এর স্বারুত—পাপের শান্তি আমরা ব্যতীত</u> অপর কেহ ভোগ করিবে। কারণ আমরা ইং৷ নিশ্চয় জানি যে, যে কুপ্রবৃত্তি আমা-ার উপর এফারে এত উৎপীড়ন করি-্তাৰ ভাছাকে আম্বা প্ৰপ্ৰায় না দিলে াস কলাড এত প্রবল হইতে পারিত না। অস্ত্রতার কোন হাঞ্জি আপন গুলে বিবধর দৰ্শকে পোষণ করিয়া যদি চৎকর্তৃক দংশিত হয়। গবে দে ভাগনাকে ভিন্ন আর কাইাকে মপরাধী করিবে।

া কার্যের প্রকৃত দোল গুণ ও ফলাকল না জানিলে অনেক স্থলে তাহার কর্ত্তলাকর্ত্তবার যথার্থ জ্ঞান উদয় হয় না। এজনা
দেখা যায় যে অসভা ও অক্তানাবস্থায় লোকে
যে দকল কার্যাকে পুণাজনক ও পুরুবার্থসাধক বলিয়া নির্দেশ করিয়া খাকে, তাহা
সুসভা দেশে উন্নতিশীল জনসমাজে অতি
গুরুতর পাপ ও নিতান্ত গহিত কার্যা কপে
পরিগণিত হয়। পূর্বতন কালের নরবলি
প্রভৃতি উপরোক্ত বাকোর দৃষ্টান্ত জল।
লোকে নিতান্ত অক্তান ও ভ্রম বশতঃ এই
দকল ভয়ন্কর অনিষ্ঠ জনক কার্যাকে যে
পর্যান্ত সংকর্ম বলিয়া নিশ্বর জানিয়া ভাহার
অনুষ্ঠান করিতে থাকে, সে প্রান্ত তাহার।

তজ্জনা পাপাচরণ করিতেছে বলা যায় না: তদবস্থায় সে তাহার অজ্ঞান ও কুসংস্থারে-রই কল ভোগ করিবে; কিন্তু জ্ঞানের ও বিবেকের উদ্রেক হইয়া যথন ঐ সকল কার্যাকে মনুখোর স্বভাব-বিরুদ্ধ ও অধর্ম-জনক বলিয়া উপলব্ধি হয়, তথন তাহার অনুষ্ঠান করিলে সম্পূর্ণ পাপগ্রস্ত ইটতে **इय्र। এই तर्द्र व्यामारनेत ख्वारनेत खेन**ि সহকারে কর্ত্তর ক্ষেত্র যেমন চারি দিকে व्यिषिक्डत अम।तिष्ठ इन्टेंट शास्त्र ट्यानि व्यागातन्त्र भाभ भूत्यात् अ मध्याः द्रिक्त । मा এই নিমিত্ত কেছ কেঃ বলিয়া থাকেন যে জ্ঞান ও সভাতার হৃদ্ধি সহকারে একণে পুরি-বীতে পাণেরও রুদ্ধি হইতেছে। একথ যদিও নিভান্ত অমূলক নহে কিন্তু ভদ্যারা প্রকৃত সভ্যের ব্যাখ্যা হয় না ও ওড়ারা অনেকের ভ্রম জমিবার সন্তাবনা। অসভা ও অজ্ঞানাবস্থার মনুযোর কর্ত্তব্য কর্মের সংখ্য অতি অতা থাকে, সুভরাং দেই কর্ত্তবা অবহেলন জনিত পাণের সংখ্যাও অবশ্য অণ্প; কিন্তু জ্ঞানালোকের পরিষি त्व পরিমাণে বিজ্ঞান हहेटए शास्क, भाहे পরি-মাণে কর্ত্তবা কার্য্যের সংখ্যা অধিকতর রক্ষি হয়, মুতরাং সেই কর্ত্তব্য পালনের অংখবা ভাহার বিপরীতাচরণের বন্ধল স্ববকাশ প্রাপ্ত হওয়া যায়। এই জনা সমাজের শৈশবাৰস্থায় যেমন পাপের পরিমাণ অ-প তেমনি পুণোর পরিমাণও সংকীণ ছিল; একৰে সভা জন পদে যেমন অশেষবিধ পাপাচরণের দৃষ্টান্ত দেখা যায় তেমনি আবার অসংখ্য পুণা কর্মের অনুষ্ঠানও দৃষ্টি গোচর হয়। অপরস্ক কার্যোর শুভা-খাত কল দৃষ্টে যে আমরা কর্ত্তব্যতা অব- ধারণ করি. একথা যদিও সামান্যতঃ সতা, किछ करक्छिनि कार्या मध्यक आयारमङ মনে স্বভাৰতই কর্তব্যের ভাব উদয় হয়,

ভাষতে আমরা ফলাফল নির্ণয় করিবার আপেফা করি না। সর্বদা সত্যবাদ। হওয়া পরবিত্তাপহরণে বিরত হওয়া ইত্যাদি কার্য্য সমক্ষে কত্তবাতার ভাব ধালাকাল হইতেই আমানের মনে স্থভাবতঃ উদয় হয়। ভাষার কলাফানের প্রতি আমরা দুফ্টি করি না।

ে। যাঃ কর্ত্তব্য তাফা না করিলে যে ঈশ্বরের নিয়ম লঞ্জন করা হয় ও তজ্জনা আময়া ঈশ্বনের নিকট অপরাধী হই, এভাব জনস ন। হইলে মনুষ্য আপ্রনাকে পাপগ্রস্ত বলিল। জানিতে পারে না। অনেকে কর্ত্তবা-হাকে জনস্থাজের মধ্যেই সংনিবন্ধ রাখিতে চাহে। ভাষাদের মকে কর্ত্তবার বিপরীতা-চরণ করিলে কেবল সামাজিক অপ্তার মাত হয়: ভারতে রাজনারে দক্তির আহে: . জনসমাজে অপ্যানিত কিণ্ডান্ধ ব্যক্তাবর निक्ति व्यक्तिक स्टेटक स्ट - ७ ५ कि विक्त (महें अन्य ने दाक्ति स्म करणेशस्त्रहा निकति भेष्ठाः । १ भेष् छाङ्गारमञ्जूषाम् **स्था** সেই ৰূপ আবাৰ কন্তব্য ক্ষমকল্মাপন করিনে সাংখারিক মুখ্ জনসমাজে প্রতিষ্ঠান এব উড়ারান্তর অধিকতর মর্য্যাদ্য ও ধন সম্পত্তি লাভ, এই ভিন্ন খার তাহার কোন ফল ওছার হৈথিতে পরেন। এজনা যাহার। गाँउक वा अभारतत भागरम योगारमत वि-শাস নাই, পাপে যে কি হারতের বিষয় এবং পুল গোকি মুখনত পদাণ, তাহা ভাষার, ^{ইব লাড়া} করিছে পারে না।

গলে পানালের জনতে কি কলে প্রবেশ গতে এই বংগ এস্থলে কিজানা হইতে পারে। কেই কেই কহিলা পাকেন যে মনুধা জাতি নতকল হইছে ঘডাবদ্রই হইলা পাপানক্ত ইয়াছে, এজনা অতি শৈশবাবস্থাতেই কাকে পালের প্রতি অনুরাগ ও পাপাচরণে প্রতি জন্মে। কিল গাঁহার। মানব প্রকৃতিকে বিশেষ কণে আলোচনা করিয়া দেখিয়া-

ছেন, তাঁহারা এ প্রকার সামান্য লোক-वारम कमाशि विश्वाम कदिए शास्त्रम ना । আমাদের বর্ত্তমান অসম্পূর্ণ অবস্থাই পাপ সঞ্চারের একটি মূল কারণ বলিতে হইবেক। আমরা ভৌতিক জগৎকে সুশুম্বলাবদ্ধ নিয়মাধীন দেখিতে পাই, সেই ৰূপ জগ-দীশর আমাদের আত্মার উন্নতি সমুস্কেও নির্ম স্থাপিত করিয়া দিয়াছেন : নিয়ত আ-য়াস ও অভ্যাস সহকারে সেই নিয়মানুসায়ে আমাদের চির জীবন চলিতে হইবে: |কন্তু षायादनत छान ७ धयाद्वित कोईला ७७ व्यानक ऋता व्यापना तारे निरामि है। लिक করিতে গারি না - এজন্য নানা প্রকার ভ্রমে १९ इन इन्हेंग्रा विश्वधंतांभी इन्। ध्ववस्त्रः বিশেষে আমাদের প্রকৃতি সকল প্রলোভান धाक्रमें करेमा विद्यायत छेल्एक वाकः অবহেলন পূৰ্বক সেই নিয়ম উল্লেখ করিয়া **আমাদিগকে সদ**ৎ কার্বো লই২: যায়। **শিশুগণ প্রথমে** প্রদারণ পরি "ন শিক্ষা কালে কত বার প্রতিত হল কিজ প্রতি প্রনের সচিত ভাষার সাহস ও হার আধিকভয় বৃদ্ধি হইতে থাকে এবং যে পৰ্য নু ক পদ্ধারণে কম্পূর্ণ পারকতা লাভ 🗻 करत रम शर्याच्य रम रमञ् रहरी। ७ भरतत उन्न দেয়না। এই অতি সহজ দুষ্টাত হইংক আমর। আত্মার সহস্রে একটি গুরুতর উপ দেশ প্রাপ্ত হই। এই সংসার ক্ষেত্রে ধর্মের कृत थात जुला हर्शम शरश, अतिहित চিত্তে, অঞ্চিহত পদে সাবধানে এত নিয়ত পদার্পণ করিয়া কি কাণে উত্থরের **मिटक क्रमण अधनत हरेटर 🕾 व. क्रिंग्टि** আমাদের চির জীবনের শিক্ষা া া শিকার প্রথমবেস্থার অজ্ঞান, অনভাসেও আমূরিক मिवला वर्षकः आभारमह ए। क्थन क्थन পদস্থলন হইবেক, কদাপি বা আগ্রা পথ-जांख रहेगा विभवशामी गहेव, देश किहू আশ্চর্যের ব্যাপার নহে, কিন্তু আমাদের
পর্য উদ্দেশ্য যেন আমরা এক নিমেবের
নিমিন্তও হৃদয় হইতে অন্তরিত না করি,
শিশুর নাায় যেন আমরা সরল ভাবে অকুভোতয় চিতের সর্বাস্তঃকরণে আপনার নির্দিষ্ট
পথে পদচারণ শিক্ষায় যত্মশীল ও অধ্যবসায়যুক্ত হই, তাহা হইলে সহস্র বার
স্থানিতপদ ও পথভাই হইলেও পরিশেষে
স্মামাদের ইষ্ট সিদ্ধি অবশাই হুইরে।

যদিও পাপাসক্তি মনুষোর বভাবসিদ্ধ ন*ে*, কিন্তু সংসার অতি ভয়ানক স্থান, সং-সংবের ভীবণ প্রবল তরক মধ্যে পতিত হুট্য়া দুর্বল মনুষ্য অনেক সমরে **আতাবিশ্যত** জ্বীরা যার । সংসারের প্রলোভন **হইতেই** প্রশাস্তির প্রথম উদ্রেক হয়। সংসারের विषय अकल 'आशारमत हातिमिटक मर्समाहे বিরক্তি করিতেছে এবং তদ্ধারা আমাদের निक्रमें शदृष्टि मक्त अधिकरन सेरहिकर ২টতেছে। এই দকল এরুত্তি ক্রমশং অপে बद्राल अवल इहेशा विविध विलाम माधन বিষ্ণার প্রতি আমাদের মনকে অলফিত ভাবে আরুষ্ট করিতে থাকে। এই নপে প্রথমে क्रीदंब गांव शांश वांगांदम्ब क्रम्टत अत्यम क्रिया প्रतिस्थित धर्म ७ मनुषाच कथ আমাদের সর্বস্থ ধন অপহরণ করত আমা-দিগকে নিতান্ত দীনাবস্থায় আনিয়া উপস্থিত करत । এक पिरक माश्मातिक विषय मूरथेका रायन मनरक जाक्रुछ करत, रूपनि जना দিকে আত্মার উন্নত ভাব সকলের চরিতা-র্থতা লাভের উপযুক্ত বিষয় সকল দূরগত ও ক্রমশঃ অলক্ষিত ও ছ্রবগ্রাহ্ন হইতে থাকে। मुख्तार जाजा क्यमः शैनवल ७ विनीर्ग रुहेशा यात्र। निकरेष्ट्र रा मकल विषय বাপিরে আমরা সর্বদাই পরিবেটিত থাকি ভাহাতেই আমাদের সকল চেই। ও আয়াস পর্যাবসিত হয়; দুরুছ কোন উৎকৃষ্ট

কল লাভাকাজ্কায় নিকটতর আশু সুগপ্রদ বিষয়কে পরিতাগে করিতে কই ও অনিজ্ঞা হয়;—এইটি আন্ধার মোহাবন্থা,এই অবস্থায় আমাদের জ্ঞান ও উৎক্রই রুদ্ধি সকল ক্রমণা অন্তমিত ও নিশ্চেই হইয়া যায় এবং মনুবা স্বীয় লক্ষা স্থলকে ও উচ্চতর উদ্দেশ্যকে প্রায় একেবারে বিস্মৃত হইয়া নিক্রই কীব-গণের নায় এই ক্ষুদ্র পৃথিবীতেই আক্রই থাকে। প্রলোভন হইতে আন্ধার বিকারা-বস্থা আরম্ভ হয়; কুপ্ররুদ্ধি সকলের চরি-ভার্যতায় সেই বিকার ক্রমণ বর্দ্ধিত হইতে থাকে; তথন আন্ধা স্বীয় স্থাণীনতা ভ্রই হইয়া প্রস্তি সকলের দাসত্ব স্থীকার করে। এই প্রকার জ্রবস্থায় বিবেকের জ্র্বল স্থর আর মনুবা শুনিতে পায় না।

इंश विदमंब बर्प विषिठ स्टेरव ए পাপাসক্তির এক কারণ পাপের আপাত মনোহারিতা। পাপ সময়ে সময়ে একপ মোহনী বেশে আসিয়া উপস্থিত হয় যে সাধু वाक्तिभाग उम्बादा विस्माहिक हहेता काहात কুহকে পতিত হয়। অনেকে বহুবিধ অবস্থায় পাপকে সন্মুখ সংগ্রামে পরাজয় করিয়া পরে তাহার ছলনায় পতিত হইয়া স্বয়ং অবশেষে পরাজিত হ্ইয়া পড়িয়াছেন। ছশ্মবেশী পাপ সর্বাপেকা ভ্যানক। তাহা প্রথমে দূশ্যত সাধু ভাবের সহিত আমাদের নিকট আগমন করে; পরে নানা ছলে আমা-দের মনকে আরুষ্ট করে; ডৎপ্রতি প্রথমে মমভাউদয় হয়; পরিশেবে দে আমাদের হৃদ-য়কে একেবারে অধিকার করিয়া বসে। **এম**ন সকল স্থলে পাপের আপাতরমণীয়তাই ডৎ-প্রতি আসক্তি হইবার প্রধান কারণ। যুবকগণ পাপের দেই মোহিনী মূর্ণ্ডি দেখিরা বিমো-হিত চিত্তে আপন বিবেক ও জ্ঞানের নিষেধ বাক্য অবহেলা করিয়া লোক ভয়কে একে-বারে জলাঞ্জলি দিয়া পাপানুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হয়।

পাপ চিন্তা পাপাসক্তির আর একটি প্রবল কারণ। অনেকে লোকের নিকট সাধু ব্যক্তি বলিয়া পরিচিত এবং আচরণেও সাধু কিন্তু শালাদেরঅন্তরে পাপ চিন্তা আসিয়া উপস্থিত হইলে সে চিস্তাকে দমন করেন না। এই চিন্তা কম্পনার সহযোগে পাপের কুৎ-পিত ভাবকে পরিবর্ত্তিত করিয়া **ক্রমে ক্রমে** খামাদের চিত্তে তাহার রম্ণীয়তা সম্পাদন क्रा । এই श्रकात हिन्छा व्यत्नक निक्रलक माधू ব্যক্তির ভরঙ্কর পতনের কারণ স্ইয়াছে। ভৌতিক জগতে ইহা সচরাচর দৃষ্ট হয় যে পাযাণময় অলজ্বনীয় সেতু বন্ধন বারা কোন नमीत जलतानिएक आवक्ष कतिरल यमि (अर्थ নেজুর এক দেশে একটা মাত ছিদ্র হর, তাহা হইলে অবিলয়ে সময় সেতু জলবেগে ভয় ও দুরে নিশিদ্র ঘট্যা ১কেবারে **নিমূল** হইয়। যায়। আধাদের আত্মার **সয়ত্রে** ্ষই কণ্ড জান। কর্ত্তব্য যে আমরা **নির**ন্তর কঠোর ত্রতানুস্থানে এবং নিয়ত ধর্ম পথাব-্ষ: ন খদিও পাপ হ**ইতে আত্মাকে রক্ষা** কবির: খাকি, কিন্তু অলক্ষিত ভাবে পাপ দিন। যদি অন্তংকরণে উদয় হয় এবং **ভাহাকে** দমন করিবার কোন চেষ্টা না করি, তবে নিশ্চয়ই হৃদয়ে অস্পে অস্পে বিকার সঞ্চার ^{কুইস্ম} পাপের ভরুজ এক সময়ে প্রবলাঘাতে প্রদেশ করিয়া আত্মাকে প্লাবিত করিবে।

যথন সংসার মধ্যে চতুর্দিকে পাপের

ত প্র'ড়ভার দেখিতে পাওয়া যায়—

যথন নানাবিধ প্রলোভন আদিয়া আমা
দের প্রকৃতি সকলকে নিরন্তর উত্তেজিত

করিতেতে ন্থান বিষয় লালসায় অভিভূত

হইয়া লোক সকল ব্যস্ত সমস্ত হইয়া তৎপ্রতি

বাবিত হইতেছে— যথন ধন মান ও কুল
আড়ম্বর এবং ইন্দ্রিয় সুথের কোলাহল

সর্বদাই প্রবণ বিবরে প্রতিধনিত হইতেছে,

হখন এই সকল ব্যাপারের মধ্যে থাকিয়া

অবিচলিত, মনে ঐকান্তিক চিত্তে শান্ত সমাহিত ভাবে ধর্মপথে নির্বিম্নে অঞ্চর হওয়া সামান্য ধর্ম-বলের কার্য নহে। তাহার ফলও তদ্রপ। भूगमील माध्रान যেমন এক দিকে সংসারের আঘাত সহ্য করেন, তেমনি তাঁলার মনে ধর্মের জ্যোতিং ও বল উত্তরোত্তর হৃদ্ধি হইয়া লাঁচাদিগকে উচ্চতর মহন্তর শক্তিও অধিকার প্রদান করে ও তদনুরূপ নির্মল সুখ শান্তি ও অমৃ তমর ফল লাভ হয়। পুণোর বিমল সুখ— ঈশর প্রসাদ ঘিনি উপজোগ করেন, তিনিই ভাষার যথাথ সন্ম জানেন। তাহার এক কণা ঘাত্র সুথ যিনি অনুভব করিয়াছেন, তিনি সংসারিক **সুখকে তুচ্ছ** করেন। ভাহার विनिभए। जांद्र जकलहे (मञ्ज्ञा याः । मिडे সুপ অনন্ত সুপ, তাহা প্রকৃত মঙ্গলদায়ক? গাঁহার৷ দেই সুখ-র্যাস্বাদন করিছেছেন. ভাঁহারা ধন্য তাঁহাদেরই জীবন সার্থক:

देवमांखिक गठ।

विषाद्यत डेक्स्या।

বেদান্ত মীমাংশা শাস্ত্র চারিটা অধ্যায়ে
বিভক্ত। তাহার মধ্যে প্রথম অধ্যায়ে
সমুদার প্রুতি বাক্যের তাৎপর্য্য ব্রক্ষেতে
সমন্বিত হইয়াছে বলিয়া তাহার নাম সমব্য়াধ্যায়। অন্বিতীয় অধ্যায়ে প্রতিহার করা
সকলের সম্ভাবিত বিরোধ পরিহার করা
হওয়াতে তাহার নাম অবিরোধাধ্যায়।
তৃতীয় অধ্যায়ে ব্রক্ষবিদ্যার সাধন নিরূপিত
থাকাতে তাহার নাম সাধনাধ্যায়। এবং
চতুর্থ অধ্যায়ে ব্রক্ষবিদ্যার কল মুক্তি
নির্নীত হওয়াতে তাহার নাম ফলাধ্যায়।

ইহার এক একটা অধ্যায় আবার চারি চারিটা পরিচ্ছেদে বিভক্ত হইয়াছে। ভাহার মধ্যে প্রথম সমন্বয়াধ্যায়ের প্রথম পরিচ্ছেদে শাকীকরে ব্রহ্মবোধক ক্রান্ত রাক্য সকল ব্রহ্মতে সমন্বিত হইয়াছে। দিতীয় পরি-ভেলে অম্পন্ত ব্রহ্মজ্ঞাপক ক্রান্তি বাক্য উপাসনায় বিহিত কপে ব্রহ্মতে সম-বিত হইয়াছে। তৃতীর পরিছেদে অম্পন্ত ব্রহ্মপ্রভিপাদক ক্রান্ত বাক্য সকল ব্রহ্ম-জ্ঞানের উপযোগীকপে ব্রহ্মতে সমন্বিত হইরাছে। এবং চতুর্থ পরিছেদে সন্দিশ্ধ ক্রান্তি বাক্য সকলের অন্বয় ব্রহ্মতে নির্নীত

বিতার অবিরোগধারের প্রথম পরিছেনে নার, সাস্থা, পাতঞ্জল প্রভৃতি মতের
সহিত বেদান্ত মতের সম্ভাবিত বিরোধ পরিহার করা হইরাছে। দিহীয় পরিছেদে নায়
সান্ধা পাতঞ্জলাদি মতের নানা দোষ প্রদর্শন
করা হইরাছে। ভৃতীর পরিছেদে মহাভূতপ্রতিপাদক ও জীবপ্রতিপাদক প্রতিবাকা
সকলের বিরোধের পরিহার বিরুত হইয়াছে।
এবং চতুর্থ পরিছেদে লিঙ্গনারীর নির্ণায়ক
ক্রতি বাকা সম্দায়ের পরস্পর বিরোধের
পরিহার বর্ণিত হইয়াছে।

তৃতীয় সাধনাধান্যের প্রথম পরিছেদে জীবের পরলোক গমনাগমনের বিষয় বিচার পূর্লক বৈরাগা বর্ণিত হইয়াছে। দ্বিতীয় পরিছেদে ক্রান্তি, যুক্তি ও প্রমাণ দ্বারা জীব ব্রন্দের ঐক্য প্রতিপাদিত হইয়াছে। তৃতীয় পরিছেদে ব্রন্ধবিদার সপ্তণত্ব নি-গুণত্ব ভেদে গুণ ও পুনরুক্ত বাক্য সকল বিচারিত হইয়াছে। এবং চতুর্থ পরিছেদে নিগুণ ব্রন্ধক্তানের বহিরদ সাধন আশ্রম বজ্ঞাদি ও অন্তর্গ সাধন শ্রবণ মননাদি নিরূপিত হইয়াছে।

চতুর্থ কলাধ্যায়ের প্রথম পরিছেদে প্রবণ মননাদির অনুষ্ঠান সহকারে উপাসনা দারা ব্রহ্ম সাক্ষাৎকার পূর্বক জীবন্মুক্তি কবিত হইয়াছে। দিতীয় পরিচ্ছেদে বিশেষ বিশেষ প্রকার মুমূর্যু দিগের প্রাণ বিয়োগের পর বিশেষ বিশেষ গতি নিরূপিত হইরাছে। তৃতীয় পরিচ্ছেদে সগুণ ব্রক্ষোপাসকদিগের প্রাণ বিয়োগের পর উত্তর মার্গে গমন বর্ণিত হইরাছে। এবং চতুর্থ পরিচ্ছেদে নিগুণ ব্রক্ষোপাসকদিগের প্রাণবিয়োগের পর নির্বাণ মুক্তি, ও সগুণ ব্রক্ষোপাসকদিগের ব্রন্ধালোকে ভ্রম্ভিতি নিরূপিত হইন্য়াছে।

জীবচৈতনা ও ব্রন্ধাটেতনোর এক হ সংস্থাপন করাই এই বেদান্ত মীমাংসা শাত্রের বিষয়,—ইহাতে যে কিছু মীমাংসা করা হই-য়াছে, জীবব্রন্ধের ঐক্য প্রতিপাদনই ভাহার উদ্দেশ্য। নিত্য সিদ্ধ ব্রন্ধাটিতনা বিষয়ক অজ্ঞান নির্ত্তি পূর্বক ব্রন্ধানন্দ প্রাপ্তিই ইহার মুখ্য প্রয়োজন।

विमास्त्रत अधिकाती।

ककरन करे दिमान्छ भारत्र उत्मान विवास कान् वाङ्गि अधिकाती, जाश निकशिठ रहेर्ट्छ। विहिठ विशास दिमस्मामानि अधारन बाता मामानाङ जाशत अधीवर्ताध शूर्वक हेर करण वा शूर्व शूर्व कणास्वत अधीन मूथ आश्वित माधन कामा कर्म मकल अनतकानि इश्ये आश्वित कारन निविक्ष कर्म मकरलत अनुष्ठीन शतिज्ञांश कित्रश निज्ञ, निधिकिक, आश्वित शाश मला अका-लिङ रुआर निज्ञां विश्वक अञ्चल्दन, कर्मात्र अनुष्ठीस अधिन शाश मला अका-लिङ रुआर निज्ञां विश्वक अञ्चल्दन, कर्मात्र अनुष्ठीस अधिन भाग मारत्वत अखि-शामा उक्षारेष्ठ कान महकारत श्रमानम अश्वित अधिकाती हरतन।

উলিখিত সাধন চারি প্রকার। নিত্যা-নিত্য বস্তু বিবেক, ইহায়ুত্রার্থ কল ভোগ বিরাগ, শমদমাদি সাধন সম্পত্তি এবং মুমুকুত্ব। ব্ৰহ্মই নিভা বস্তু, ভদ্তিম সকলই অনিকা এই প্রকার বিবেচনাকে নিভানিভা বস্থ বিবেক কছে। যেমন ঐতিক ধন রত্ন এপর্বাদি পুরুষের যত্ন সাধ্য প্রযুক্ত ভাষার দিগের ভোগ অস্থায়ী, দেই ৰূপ " স্বৰ্গকা-মেড়েকেড " স্বৰ্গ কামনায় যজ্ঞ করিবেক, ইত্যাদি বিধি বাকা প্রাপ্ত পারলৌকিক स्तानि क्लिन सक्ले शूक्सानुर्छम यखानि কর্ম সাধ্য দেতু অচিরস্থারী, "তদ্রহর্থক কণ্মচিতে৷ লোকঃ ক্ষীয়তে, এবমেব অ-**ब्ह भूगािंटिश लोकः को**ग्रट ।" धरे ৰূপ বিবেচনায় ততুলয় ভোগের অভিলায इहेर्ड निरुष्ठ इष्टात नाम हेर्निजार्थ कल ভোগ বিরাগ। শম, দম, উপর্ভি, ভিতিকা मयावान, এदा छाहा, এहे छपिएक सर দম্পেদ সাধন কথা কার ৷ ব্রার ভিন্ন অপর विषयु करोहक भगर का आध्यातिक कार्याता गाम भागः; बन्द रिक्स लासा रदयग् महरू ह हन्द्रहानि है स्थि-য়গ্রহত প্রভাবর্তন করার নাম দম: অপ-্ৰাপর বিষয় চইতে প্রত্যাবর্ত্তিত চক্রাদি रेक्टियभारतत शहा इवेट दिवल इल्झांत লম উপরতি, ভলগের ইচ্ছা ও সহিচ্ছুতাকে প্রিকা করে। প্র**ত্রে**কাত মনের সমাধান পুর্রক ওঁটের ধক্প চিন্তা করার নাম সমাধি: পুক্র বাকে। ও বেদান্ত বাকো বিশ্বাসই জন্ধা শাসের বাচা ় এবং মোকের ইচ্ছাকে মুমু-¥3.

सेख अभावि कृते श्राहारित विख्ल हरू ।

शिवकण्ण सभावि । तिर्विकण्ण सभावि ।

समाधि कांद्रल कर्न्छा, क्यां, जिसा, धरे जिविध
वाद्यत महज्जुल, मृष्याय मिश्ह ख्वास कांद्रल
प्रक्रिका ख्वाद्रसत्त साग्न, वा श्राह्यसम्म स्था
छ्वास समहास श्राह्यत छ्वाद्रसत्त साग्न, स्थावा
स्थायत ध्वलकांत ख्वास कांद्रस स्थायत ख्वाद्रसत्त साग्न, ध्विकीस ख्वाद्रसत्त वाद्रस्त स्थायत ध्विकीस ख्वाद्रस्त स्थायत स्थाय स्थायत स्थायत स्थायत स्

কিয়া, এই ছুইটা প্রকার বোধ না পাকিয়া, লবণ মিশ্রিত জলে কেবল জল মাত্র জ্ঞানের ন্যায়, নির্বাত নিক্ষম্পদীপ শিখা সদৃশ হইয়া অন্তিীয় ব্রন্ধের সহিত একীভাবে মনের যে অবস্থান, তাহাকে নির্বিকশ্প সমাধি বলে।

এই নির্বিকণ্প সমাধির আট প্রকার माधन ; यथा यम, नियम, जामन, প্রাণায় म, প্রত্যাহার, ধারণা, ধানি, ও সবিকপ্প সমাধি: षिंश्या, मडा, षठीया, जन्नवर्या, ७ षश-রিপ্রহ, ইহার নাম যম। শৌচ, সন্থে।:. তপদা, অধ্যয়ন, ঈশ্বরেতে প্রাণিধান 💤 র নাম নিয়গ। কর চরণাদির সংস্থান বিশে-যের নাম আসন। প্রাণ প্রভৃতি শরীরস্থ বার্গণকে আয়ত্ত করার নাম প্রাণায়াম। অন্তরি**ক্রি**য় ও বহিরি**ক্রি**য়গণকে শ্ব শ্ব বিষয় ^{ভইতে} প্রভার্ত্ত করার নাম প্রভাহার। পরব্রক্ষেতে অন্তরিক্রিনের ধারণ করার ন'ম ধারণা। প্র**ত্তমেতে অন্তরিন্দ্রে**র রুচি প্রবাহের নাম থান। এবং উক্ত প্রকার मदिक भाषिहै अञ्चल मगावि मद्दिन বাচ্য হয়।

উজ নির্কিপ সমাধির অনুষ্ঠান কালে,
লয়, বিকেপ, ক্যায়, ও রসাম্বাদ নামে
চারিটী বিশ্ব সম্ভব হয়। সত্য জ্ঞান অনন্ত
ম্বৰূপ সর্ব্ববাপী নির্নিশেষ ব্রহ্ম চৈতনোর
ম্বৰূপ গ্রহণে অসমর্থ হইয়া অন্তঃকরণে ফে
নিদ্রা উপস্থিত হয়, তাহার নাম লয়। ব্রহ্ম
চৈতনা ভ্রমে অন্তঃকরণের যে অন্যাবলয়ন,
তাহার নাম বিকেপ; বস্তু বিশেষের প্রতি
অনুরাগ বশত ব্রহ্ম স্বৰূপ প্রহণ করিতে না
পারিয়া অন্তঃকরণের নিন্তক ভাবের নাম
ক্যায়; অন্বিতীয় ব্রহ্ম রস ভ্রমে বিষয় রস
আমাদন করার নাম রসাম্বাদ। এই সকল
বিশ্ব উপস্থিত হইলে তাহা নিবারণ করিতে
হইবে। "লয়ে সমোধ্যেচিত্তং বিক্ষিপ্তং
শম্মেৎ পুনং। সক্ষায়ং বিজ্ঞানীয়াৎ সম্

व्याखः न চालरार ।" नमाधिकारल উक्त लग्न ৰূপ নিদ্ৰ। উপস্থিত হুইলে অন্তঃকরণকে উদ্বোধিত করিবেক, অন্তঃকরণ বিক্ষিপ্ত হইলে তাহার সমতা করিবেক,নিস্তব্দ হইলে তদ্বিষয়ে সভক হইবেক এবং বিষয় রসাম্বাদ অনুভূত হইলে তাহা পরিত্যাগ করিবেক, অন্তঃকরণ একাথ্য হইলে ভাহাকে ভার কোন দিকে ठालना कतिरवक ना। अहे मकल विश्व ३३ एड বিরহিত, উক্ত সাধন গুণ বিশিষ্ট ব্যক্তিরই ব্রন্দ জিজ্ঞাসায় প্রবৃত্তি হয়, সুতরাং তিনিই বেদান্ত শান্তের উদ্দেশ্য ব্রাহ্মটাকত্ব জ্ঞান माधन भूर्वक बन्तानम श्रीखित व्यक्तिती হয়েন। এই প্রকার গুণবিশিষ্ট অধিকারী নিয়াকে ব্রন্থনিষ্ঠ গুরু অধ্যারোপ ও অপ-বাদ ন্যায় বিবরণ পূর্বক ত্রন্ধবিদ্যার উপ-(क्य क्टिवन । "खनाविष्ठायानुगठाয় ४विन। अरमग्रह्म विकास सम्बद्धाः । " श्रीविक অনুগত মুমুফু শিষাকে গুরু বন্ধবিদ্যা প্রদান कहिर्दन ।

স্ফির অন্তর্গত নিয়স।

জগতের তত্ত্বালোচনা করিতে গিয়া
আমরা সচরাচর দেখিতে পাই যে এক জাতীয় কার্যা এক ৰূপ নিয়মেই সম্পাদিত
ইয়া থাকে। কিন্তু তাহার আবার ব্যত্যয়
বা ব্যতিচার স্থলও দৃষ্ট হয়। সেই সকল
স্থলে কোন্ নিয়ম অনুসারে কার্য্য হইতেছে,
তাহা বিজ্ঞানবেস্তাগণ এপর্যান্ত নিশ্চয় ৰূপে
নির্ণয় করিতে পারেন নাই; পরস্তু তাহাতে
সম্বরের মন্সল ইচ্ছা জাজ্বলাতর প্রকাশ
হইতেছে। নিয়ে তাহার কএকটা উদাহরণ
প্রদর্শিত হইতেছে।

>। গ্রহাদির গতি:—পদার্থ বিজ্ঞানে গতি সমজে এই একটা সাধারণ নিয়ম সংস্থাপিত হইয়াছে যে, যদি কোন গতিতে

ক্রমশঃ অধিকতর শক্তি এপ্রবোজিত হইতে থাকে, ভাচা হইলে ভাচার বেগ বা ক্রততা ক্রমশং বর্দ্ধিত হইয়া যায়। ইহার দৃষ্টান্ত এই यে, यिंग काम छेक्र भर्तक मृष्ट स्टेट ভূতলাভিমুখে একটি বস্তু নিক্ষেপ কর। যায়, তাহা ইইলে ক্রমশং তাহার বেগ হৃদ্ধি পাইয়া অবশেষে ভূতল স্পর্শ করে। দুর্বিত স্থান অপেক। নিকটস্থ স্থানে পৃথি-বীর আকর্মণের বল ক্রমশং অধিক, সেই रिजूरे के बझत (बर्गत कम दृक्ति इरेश) থাকে। বিশ্ব রাজ্যের অন্য যে স্থানে দৃষ্টি-পাত কর, দেখিতে পাইবে, এই নিয়ম অবি-তথ ৰূপে কাৰ্য্যকারী হইতেছে। কিন্তু সৌর মগুলের গতি বিষয়ে ইহার বিধান অন্য ৰূপ দেখা যায়। **সুর্য্যের চতুম্পাথে গ্রহ**গণ এবং গ্রছগণের চতুম্পামে উপগ্রহণণ যে নিয়ত ঘূৰ্ণমান হইতেছে, তাহা বোধ হয় অধুনা-তন শিক্ষিতদিগের মধ্যে কাহারও অবিদিত নাই। দেই ঘূর্ণনক্রিয়ার কারণ অনুসন্ধান করিয়া পশুতগণ এক বাক্যে স্থির করিয়া-ছেন যে, গ্রহণণ, মধ্যন্থিত বিশালতম স্থ্যা 🗯 कर्ज्क जाक्रके स्टेट्ट्ह विलया, जमन्त्रिय ভালাদিগের যে বেগ হইতেছে,ভালা এবং সৃষ্টি কালে ঈশার তাহাদিগকে যে সম্মুখ গামনের বেগ প্রদান করিয়াছেন. তাহা, এই উভয় বেগের যোগে তাহার! নিয়ত স্থর্যোর চতু-**র্দ্দিকে চক্রাকার পথে ভ্রমণ করিতেছে—** কোন মতে অন্য কোন দিকে যাইতে পারি-তেছে না। একটি ঘোটককে এক গাছি রজ্জু দারা শিথিল ভাবে একটি রুক্ষের সহিত বান্ধিয়া কথাযাত করিলে, সে যে নিয়মে সেই বৃক্ষের চতুর্দ্ধিকে চক্রাকার পথে দৌড়িতে থাকে গ্রহগণও প্রায় সেই ৰূপ নিয়মে সূর্যোর চতুষ্প:শে পরিভ্রমণ করিতেছে। যেমন ঘে।টকের বেগ প্রতিনিয়ত খাব্দু অর্থাৎ সরল রেখা ক্রমে থাকিয়াও হক্ষের আকর্ষণ নিব-

দান ভাষা বক্ত ফ্র্যা যায়, সেই ৰূপ প্রহাদির গতি ঋদু চইয়াও সূর্যোর আকর্ষণে
বক্ত চইয়া যাইতেছে। ঐ ছুই প্রকার বেগের
চলে গ্রহাদির বেগ ক্রমশং বদ্ধিত হওয়া।
উচিত। কিন্ত ভাষা না চইয়া উহা চির দিনই
সমান বহিয়াছে।

শ্দি কেং বলেন তাংশিদেরে বেগ কুম্শঃ বৃদ্ধিত হওয়া উচিত কেন? ভবে ভাষার নিমিন্ত কয়েকটি কথা বলা আব-শাক। দুইটি বেগ একদ। একটি বস্তুকে, পরস্পর বিগরীত দিক্ ভিন্ন, অপর কোন দিকে চালাইতে চেষ্টা করিলে, ভাষার বেগ य के हुई विरात कर्न वा छिलनी ह तिथी ক্রনে হইবে, ইহা পদার্থ বিজ্ঞানের একটি প্রধান সিদ্ধান্ত ৷ পরস্কু, মথন ফেজংক্টের নিয়ণানুসারে সেই কর্ণ রেখা উক্ত ছুইটি বল-রেখার ও জোক অপেকা রুগ্রন্তর, তথ্ন स्पश्चेहे अञ्चापान इहेटहरू ए. धे दखुत দেই কণ রেখানুক্রমিক বেগ উক্ত ছুইটি বেগের শ্রতোক অপেক্ষা অনশ্যই অধিকতর esca: विकारमत करें निकास यनि हित् ৰণ, তাৰে প্ৰচাদির বেগও ক্ৰমশং অধিক 🖣 ज महिश् शांकित्व शात्व मः कादन **स्**र्यात মার্বাানর্মণ-জনিত বেগ ও তাহাদিগের সন্মু-গ:লিনুগ বেগ-এ দুয়ের প্রভাবে ভাহাদিগকে উগ্রিপার কর্ণরেখা ক্রমে চলিতে হই-ছেছে। সেই কণ রেখা যথন ঐ দুই বেগ-রেখার প্রচোক অ**পেকা,ুরুহত্তর, তথ্ম** গ্রহাদির বেগও যে ঐ গুই বেগের প্রত্যেক শ্পেক: অবিকতর ভাহাতে **আর সন্দে**হ মার্চ - অপরস্থা, গ্রহ্ণদি ঐ অধিকতর বেগ-ৰণায়ত হইয়া স্থান পরিবর্ত্তন করিতে না করিতে সুর্যোর মাধ্যাকর্ষণ এক দিকে এবং এ অধিকতর বেগ অপর দিকে কার্যাকারী এইয়া ভাছাদিগকে আবার **নুতন কর্ণ রেথা** ক্রমে পরিচালিত ক্রিতে**ছে। সেই দ্বিতীয়**

কার্নিক বেগ যে প্রথম কার্নিক বেগাপেকা অধিকতর, তাঁচা এক্ষণে অবশ্যই স্বীকার করিতে হইবে; কারণ, প্রথম কর্ণ যে ছুই বেগ রেখা হইতে উৎপন্ন হইয়াছিল, দ্বিতীয় কর্ণ সে রূপ হইয়া, প্রথম কর্ণ ও সূর্যোর মাধ্যা-কর্ষণ হইতে উৎপন্ন হইল।

এফণে বিবেচনা কর, গ্রহাদির সৃষ্টি কাল চইতে প্রহ্যেক মুচূর্ত্তে এই নিয়মে বেগ রৃদ্ধি পাইলে অদ্য তাহাদিগের বেগের পরি-মাণ কত দূর হুইতঃ বোধ হয় তাহা হুইলে অদ্য গ্রহাদির বেগের নিকট কি অংলোক. কৈ ছড়িৎ, কি মন, সমুদায় বেগবান পদাৰ্গই পরাশু চইত। * শুদ্ধ যে তাহাদিগের বেগ वृद्धि इन्हेंगारे काल इहें है, ध्रमन नटह, ए९-প্রযুক্ত এত দিন মহাপ্রলয় উপস্থিত হইত। কুম্বকারের চক্র যথন সবেগে ঘূরিতে থাকে, তখন যেমন ভাঙার গাত্রস্থ সৃত্তিকা পণ্ড সকল বেগে প্রক্ষিপ্ত হুইতে আরম্ভ করে, সেই ৰূপ গ্ৰহাদি বৰ্ত্তমান বেগ অপেকা অধি-কতর বেগে সূর্যাকে প্রদক্ষিণ করিতে আরম্ভ করিলে, তত্তাবতের উপরিভাগে জীব জস্ক বৃক্ত প্রস্তর জল কিছুই তিষ্ঠিতে না পারিয়া हेरकिल इडेड। এडिएस स्ट्रॉडेंड मर्या ষড় খাত্র পরিবর্ত্তন শেষ হইয়া বৎসর পূর্ণ চইত এবং এই ৰূপ কত সহস্ৰ সহস্ৰ অনি-খ্টাপাত হইয়া সৃষ্ঠির বিনাশ দশা উপস্থিত হুইত। সেই সমস্ত মহাপ্রলয় নিবারণ করি-বার অভিপ্রায়ে সকল নিয়মের বিধাতা গতির সাধারণ নিয়মের ব্যতায় করিয়া অনা প্রকার নিয়মে গ্রহাদির বেগের সমতা রকা করিতেছেন। তাহাদিগের

* পণ্ডিতেরা পরীক্ষা দ্বারা স্থির করিয়াছেন যে, প্রতি সেকেণ্ডে আলোক প্রায় ১,৯২,০০০ মাইল, ডড়িৎ ২,৮৯,০০০ মাইল গমন করিডে পারে। ইছাদিগের আরও অধিক বেগ ছইতে পারে কি না তংহা তাঁহারা অদ্যাণি স্থির করিতে পারেন নাই বিষয়ে উক্ত সাধারণ নিয়ম যত দুর প্রয়োগ করিলে মঙ্গলের সন্তাবনা, তত দুরই প্রয়োগ করিতেছেন, কিন্তু যত দুর করিলে জীবজন্তর বিনাশ সন্তাবনা, তত দুর সে নিয়মকে কার্য্য করিতে দেন নাই। এই রূপে সমতা রক্ষিত হইতেছে বলিয়াই পণ্ডিতেরা কোন্বংসর কোন্সনয়ে স্কর্যাবা চক্রে প্রহণ হুইবে, কোন্মাসের কোন্সনয়ে কোন্সামের কোন্সময়ে কোন্র উদয় ও অন্ত হুইবে, তাহা অনেক বছনর পুরেই নিশ্চিত করিয়া লিখিয়া রাখিতে পারেন।

২। শৈত্য নিবন্ধন জলের ঘনীভূতাবস্থা
প্রাপ্তি।—তরল পদার্থ মাত্রকেই যে শৈত্য
দারা ঘনীভূত করিয়া কঠিনাবস্থায় পরিণত
করা যাইতে পারে, ইহা পদার্থ বিজ্ঞানের
একটি প্রধান নিয়য়। বন্ধ দর্শন দ্বারা
চাপকে প্রসারিকা-শক্তি-বিশিষ্ট এবং শৈতাকে আকুলিকা-শক্তি-বিশিষ্ট বলিয়া
উক্ত বিজ্ঞানে নির্ণাত হইয়াছে। বস্তুতঃ
পরীক্ষা করিলে সকলেই দেখিতে পাইবেন
ব্যু জল, তৈল, ঘূত প্রভৃতি যে কোন তরল
পদার্থ ইউক না কেন, শৈত্য প্ররোগ করিলে

শুলু প্রিল্ড ইরা ঘনীভূত ইইবে এবং
শেই ঘনীভূত পদার্থে তাপ প্রয়োগ করিলে
তাহা পাবার প্রসারিত ইরা তরলাবস্থা
প্রাপ্ত ইইবে এবং অধিক তাপ দিলে তাহা
ক্রমে বাষ্পীভূত ইইরা ঘাইবে। এইটি জড়
পদার্থের সাধারণ নিয়ম। কিন্তু জলের
সমকে ইহার একটি আশ্চর্মা বিপর্যায় দেথিতে পাওয়া যায়। জলে শৈত্য প্রয়োগ
করিলে তাহা ঘনীভূত হয় বটে, কিন্তু
ভার পর্যন্ত শীতল ইইলে, তাহা
আর আকুঞ্চিত না ইইয়া বরং বিস্তৃত
ইইতে আরম্ভ হয়। তাপের ন্যায় শৈত্য এই
স্থলে প্রসারক ইইয়া ভূবারশিলাকে সামান্য
কল অপেক্ষা লম্ম করিয়া কেলে। ঈশ্বর

এই ৰূপে সাধারণ নিয়মের বিশর্যার করিয়া জলের যে ভারলা রক্ষা করিভেছেন, ভাগতে ভাঁহার কি মঙ্গল অভিপ্রার প্রকাশ হয়।

শীত-প্ৰধান দেশস্থ নূদী হুদ ও সমুদ্ৰ প্রভৃতির উপরিভাগস্থ জল বহিঃস্থ শীতল वागुत मः स्मार्ट्य धावम्ब । जातृक्षिक हरेता ঘনীভূত হয়; কিন্তু যখন ৩৮.৮ ডিগ্ৰি পর্যান্ত শীহল হইল, তথন তারা আর আকুঞ্িত না হইয়া বিস্তায়তন হইছে এই ৰূপ বিস্তায়তন হইতে আরম্ভ করে বলিয়া ঐ ঘর্নাভূত জল অর্থাৎ বরফ নিমুস্থ জল অপেক্ষা লগু-ভার হইয়া তাগার উপর ভাষিতে থাকে। ভাসমান বরফের শৈতা নিবন্ধন নিম্নন্ত জল কথনই ঘনীভূত হইতে পারে না; কারণ, জল তাপের অতি অধম পরিচালক, এজন্য নিম্নস্থ জলের স্বাভাবিক তাপাংশ উপরিস্ত বরফের শৈত্য স্বারা বিনষ্ট হইতে পারে না। যদি উপরিস্থ বরফ সাধারণ নিরম অনু-সারে বিস্তৃতায়তন না হইয়া অপরাপর পদার্থের নাায় সংকীণায়তন হইত, তাহা হইলে তাগ জলাপেকা গুরু হওয়ার নিয়-গামী হইত এবং সংস্পর্ম দারা পথিম্ধান্ত সমন্ত জলের স্বাভাবিক তাপের কিরদংশ হরণ পূর্বক ভলায় উপস্থিত হটত। এই ৰূপ হইলে অস্প সময়ের মধ্যেই সমুদায় জল ঘনীভূত হইয়া বরফাকার ধারণ করিত এবং সেই বরক আর কথনই সূর্য্য-ভাপে গলিয়া জল হইতে পারিত না। এই রূপ ঘটনা উপস্থিত হ**ইলে** যাবতীয় জলজন্তই এক দিনে পঞ্জ প্রাপ্ত হইত, তাহাতে আর किছুমাত मत्मह नारे। भीज-अक्षाब (परभंत জলরাশির উপরি তাগ হইতে নিমতম ভাগ প্রান্ত বরক হইয়া গেলে তৎসংস্পর্ফে জ-यमः **धीत्र-अक्षान म्हरणंत न**मी ७ मसूजानित কলও তাপ-হীন হইয়। জমিয়া যাইত, সন্দের নাই। এরপ হইলে পৃথিবীস্থ সমুদায় জল-জন্তুর সম্বন্ধে একটা প্রলয় ঘটনা উপস্থিত চইত; আর অপরাপর জন্তুদিগেরও জলা-ভাবে যে কি দশা হইত তাহা বলা যায় না।

৩। বিশেষ বিশেষ জীবের আগার ব্যবস্থা। —পৃথিবীর যে স্থানে দৃষ্টিপাত কর ্দলিতে পাইবে, জীব মাত্রেরই নিভা ভুক্ত দ্রবাদি अर्गाकन । আহারের জঠরে উপস্থিত হইলে. পাচক রসাদির যোগে ভাষা জীর্ণ ছইয়া যায় এবং কথন সাক্ষাৎ সমুদ্ধে, কথন পরস্পর! সমুদ্ধে শরী-রের পুটি-সাধন করে। জঠর খ্না গভ চইলেই কুণা বা আহারেজার উচ্চেক হয়, তথন আহার না করিলে শুদ্ধ যে কেশানু-ভব হইতে খাকে এমত নহে, শ্রীরাভান্ত-রস্ত ব্সা প্রভৃতি কোন কোন পদার্গ তথায় या है त: १ । एक इटम और इडेश मतीतटक मीन করিতে গাকে: দেই শীর্ণাবস্থার পরিণামে মুকু। উপস্থিত হয়। কঠর, পাচক রদ ও দেহ নম্বক্ষে এই যে সাধারণ নিয়ম, ভালা ्रांव न्य प्रश्नी त्लाक माटकरे (यानानिभटक সমশে সমরে অনালারে কাল **যাপন ক**রি**তে** हत) श्रीकाद कहिटवन। **श्रुक मनुषा नटक**, अलतालत की दङ ध्य अहे नियस्यत अधीन. ভালা, যে কোন কন্ধ হউক ভালাকে কিছু काल अनाशास आवस्तावसाय वाशिस्तरे, পেষ্ট প্রতীয়নার হইতে পারে। কিন্তু এই नभरक विरमय दिरमय दुष्ट्रक विरमय नियम গার। ঈশ্ব জাবদিগকে রক্ষা করিতেছেন, चाहात मुखीच वितल महा।

অন্যান্য জন্তর নারে দর্প, সজারু, কুন্তীর প্রভৃতি করেকটি জন্তরও জঠর ও পাচক বদ আছে; তাহারা কুবার অনুভব করিয়া আহারও করিয়া থাকে; কিন্তু যে সময় আহার অন্তেবণ করিবার নিমিত্ত বাহির হুইলে তাহাদিগের জীবন সংশয় হুইয়া উঠে, তথন তাহারা কিছু মাত্র আহার না করিয়াও দীর্ঘ কাল নিরুবেগে অবস্থিতি করিয়া থাকে। ভাচারা গ্রীমাদি উষ্ণ ঋতুতে ইতস্ততঃ ভ্রমণ করিয়া আপন আপন আহার সামগ্রী আহরণ করিতে কিছু মাত্র ক্লেশা-নুভব করে না, এই জন্য তাহাদিগের ঐ সকল ঋতুতে ক্ষ্বা ও পুষ্টি লাভের আৰ-শাকতা উপস্থিত হয়; কিন্তু শীত কালে বাহিরে বিচরণ করিলে তাহাদিগকে মৃত্যু আদে পতিত হইতে হয়, এ জন্য ঐ ঋতুতে তাহারা কিছু মাত্র আহার না করিয়া এবং ভন্নিবন্ধান শারীরিক কিছু যাত্র ক্ষীণতা প্রাপ্ত ना हत्रेगां अनागातम शृथिवीत गर्डेष डेक গর্ভাদিতে কাল যাপন করে। জঠর, পাচক রস, রক্ত সঞালন এভৃতি যে সকল শারী-রিক যক্ত্র, পদার্থ ও প্রক্রিয়া কুধার উত্তে-জক, তাহা যে তাহাদিগের সে সময় থাকে না, এমত নহে, পরস্ক তথন তালাদিলের শরীরে ঐ সকল বিষয়ের কিছু মাত্র অভাব দৃষ্ট হয় না। আমরা সকলেই এফাণে আহারের অভাবিশাকতা বিষয়ক নিয়মে আবন্ধ রহিয়াছি বটে: কিন্তু আমাদিগের মধ্যে ঘাঁহারা কুধা, তৃফা, কাম, কোধ প্রভৃতির হস্ত হইতে নিষ্কৃতি পাইয়া সংসার বন্ধন গুলিকে সম্পূর্ণ ৰূপে ছেদন করতঃ জ্ব্যাহত ৰূপে ঈশ্বরে মনঃসমাধান করি-বার জন্য ব্যগ্র হইয়াছেন, তাঁহার। আহার নিদ্রা পরিত্যাগ পূর্বক কত কাল যে জীবিত রহিয়াছেন, তাহা নির্ণয় করা যার না : যাঁহারা এই কলিকাতার আনীত যোগা প্রভূ-তির নাায় ছুই এক জনকে প্রভাক্ত করিয়া-ছেন, তাঁহারা অবশাই এই কথা স্বীকার করিবেন।

জগতে যে ৰূপ নির্দ্ধিত নিয়মরাজীর আবির্ভাব, তেমনি আবার শত শত ব্যতার অর্থাৎ ব্যক্তিচার স্থলও দৃষ্ট হয়। এই সমুদায় गताः याश भूर्वक भर्याात्नाहना क्रित्न वरे ৰূপ প্ৰকৃতি হয় যে কি নিয়ম, আর কি অনি-ষ্ম, তাহা স্পষ্ঠ ৰূপে কিছুই বুঝিতে আমরা সক্ষ নহি। ফলতঃ ঘাঁচা হইতে এই জগৎ উৎপন্ন হইয়াছে এবং উৎপন্ন হইয়া যাঁহাতে স্থিতি করিতেছে, তাঁহার এক মাত্র ইচ্ছাই সকল নিয়নের মধো বলবতী। আমরা যাহাকে নির্মানুগত আর যাগকে নির্ম বহিভুতি কার্য্য বলি, তৎসমুদায়ই তাঁহার সাকাৎ দ্বারা সংঘটিত হইতেছে। দিগোর এই জগতের সম্বন্ধে যালা ফ্ট্যা পিষাতে এবং যাহ। ইইবে, সকলই জাহার উচ্চা-বিয়ম্থিত: সুতরাং আমরা এই **জানি** া আমরা সম্পূর্ণ কপে তাঁহারই অধীন, শ্রার্ট মন্সল ইচ্ছার উপরে आभार नत भष्य व निक्ता

TREISTIC TOLDRATION AND DIFFUSION OF THEISM.

A certain fecturer of our day on the subject of Theism sums up its doctrimes in the following formulas.

- (1) The Entirely Natural Origin of our religions knowledge.
 - (2) The Existence of God.
- (3) The Infinity of God.
- (4) The Fatherhood, the Mother-hood and the Friendhood of God.
 - (5) The Nearness of God to man.
 - (6) The Freewill of man.
- (7) The Love of God and Doing the Works He loves.
- (8) The Existence of a Future State.
- (9) The Distribution of Rewards and Punishments in that state.
- (10 Self-Satisfaction of mind arising from consciousness of virtue is Heaven and Remorse is Hell.
- (11) The Remedial Character of Divine Punishment.

(12) The Eternal Progress of the Human soul.

Though admitting these doctrines to be the principal ones of Theism, w not but reckon that man to be a Theist who holds negatively that there is no revelation, no prophets or particular individuals especially inspired by God, no Avatars or incarnations of God, no images of Him, and no Gods and Goddesses whose images are to be worshipped by man, and positively that God is believe, that man's will is free, that the worship of God is the sole cause of man's happiness in this and a future state of existence, that the best worship of God is to lave him and do the works He loves, and that God ethe rewarder of virtue and the panish Theism is gradually expecer of vice. ted to diffuse itself through the world for the reason that men are getting discontented with the old religious, which profess to be revelations from God, but must still have a religion as they can not remain satisfied with scepticism on the one band or a barren intellectual Deisin on the other. But as Theism diffuses itself, we cannot expect that there will not be difference of opinion among Theists on non-essential points especially when the authority of revelation is not believed in. When men cannot avoid spletting themselves up into sect even when they believe in a revelation, such divisions are more probable when the authority of revelation is cast aside For instance, some men may believe in other doctrines than the cardinal ones mentioned above as those of Theisin and hold them along with those cardinal doctrines, while others may not believo in them. Some Theists may have a little partiality towards one of the provailing religions, very naturally for the religion in which they had been born and brought up, while others may have no

Some Theists may not hesitate to call themselves followers of the old religions for the reason that the Theistic truths contained in it form its vital and essential portion (no religion could have lived in the world for any length of time unless it had contained Theistic truths in itself) while other Theists would choose to call Theism entirely a new religion different from the old religious. Some Theists would choose to propagote Theism in a national shape; others may choose to do so in a so called catholic or cosmopolitan shape. Some Theists may choose to keep the old prayers and ritual, making such alterations in them as are urgently required by the principles of Theism, while others would construct entirely new churchs ervices and new rituals. Some Theists may be conservatives and others radicals with respeet to social reformation. The Theists of one nation may not choose to intermarry with those of another or even with those of their own nation who are of inferior social standing to them, while others will not hesitate to do so. in spite of such differences of opinion, rlay should all be considered as Theists, as followers of one religion and, as such, prothers in the religious, if not, in certain cases, in the social sense of the term. there should be full teleration of each obers opinions in the matter of nonsoutheris. if there be unanimity in encontints.

We make the above observations by way of preface to the following remarks of cars, on one of the subjects alluded to above, that is, the best means of propagating. Theism in which Theists can not but feel the greatest interest. We teel necessitated to make them in order to prevent misconception of our individual views on that subject.

The best way of diffusing Theism is

firm faith in its doctrines and leading a truly pious and virtuous life, but still in this world of forms, the form which we commicate to Theism (it must assume a particular form in a particular country or among a particular body of men) is not an immaterial thing. On the contrary, men attach much importance to forms. If the form communicated to Theism be repulsive, it has little chance of success in a country; if it be engaging, though not at the expense of conscience, it has not a slight chance of success.

There are two ways of diffusing Theism among the several nations of the earth. The first of them is, as Theism is common to all religious, to make the old religions gradually shake off the absurd notions and superstitions practices that overlay them and attain Theistic purity, or, in other words, to grow from within and, advancing tow ards Theism, attain it. The other method is, to represent Theism as a new religion and thereby raise the highest feelings of antagonism against it. these two plans, the adoption of the first appears to be more consonant to the dictates of truth as it would be unfair to set Theism off as a new religion to people, when the fact is that it is as old as the human race and forms the vital and the essential part of every old religion. The adoption of the first plan is not only more consonant to the dictates of truth but is also more adapted to the accomplishment of the end which both the plans have in view. It is easier to prevail upon people to follow the religion in which they have been born and brought up, though in a reformed shape than to make them accept an entirely new religion. If the plan proposed above he preferred by Theists, they should not separate themselves from the old religion of the country but

They can call themselves its followers. conscientiouly call themselves so, while retaining their character of Theists or followers of the Universal Religion, as Theism is, as has been said before, the vital and the essential portion of that old religion as of every other, and as they naturally must have veneration towards its founder or founders who taught the great Theistic truths contained in it and whose writings or sayings first inalled the principles of religion in to th ir minds. There is no fear of their being confounded with its ordinary followers, as their opinions and practhes, showing their rejection of the absurd notions and the superstitious obavances of their countrymen, would dealy distinguish them from the lat-

According to the plan described above. Theists should adopt the old form of charch service making such changes in it as are imperatively required by the principles of Theism. They should adopt a ritual contaming as much of the form as could be kept consistently with the dietates of conscience. They should have also a book of Theistic texts extracted from the national scriptures which already command the veneration of the nation, such a book being essentially necessary for drawing the eyes of the nation to the really important portion of its scriptures as distinguished from the unimportant and thereby diffusing the principles of Theism among its membres, as well for serving the subsidiary purpose of a convenient collection of mottoes for sermons and discourses. This system of propagation does not exclude the introduction of a new element into the church service and into the ritual mentioned above, but this element must be cautiously introduced and in a national shape suited to the feelings and tastes of the nation.

system of diffusion also does not exclude the acceptance of the truths contained in the scriptures of other nations and the transfusion of the beauties of those scriptures in a national shape into our own hymns and discourses. Of course, the adoption of such a plan will not altogother prevent the creation of feelings of antagonism, but not to such an extent as the setting off of Theism as a new religion would do, and even the comparatively smaller degree of antagonism evoked by it would gradually diminish as the followers of the old religion perceive that Theism is friendly to it and that it has come to fulfil and not to dos-The adoption of a friend-y mode of propagation is imperatively required by the very genius of Theism which is a meck and benevolent religion. Even if an antagonistic method of propagation were succesful. Theism would be justified in rejecting the old barbaous mode of propagating religion and adopting a friendly mode as more in harmony with its enlightened and refined character. After the old religious had attained Theistic purity in the way mentioned above, then would be the proper time for the fusion of religions, scriptures, and races which is the ultimate end of Theism.

Engaging ourselves now in the task of accomplishing such fusion in this incipient stage of Theism would degenerate Theists into a limited sect, commanding no respect and possessing no influence. It would be easier to theisticize the whole world by means of a national reform organization established in the midst of each nation possessing an entirely national aspect adapted to its genius and thereby commanding its respect, than by means of an organization which makes theism wear a so-called universal but grotesque form consisting of a mixture of different

national forms not commanding the respect of any of the nations whose forms are thus blended into one. The latter method would prevent the majority of each nation from joining the ranks of Theism and thus make Theists degenerate into a limited sect. The former mode of propagation is therefore not only the most practical but the really unsectarium and catholic mode. The Adi Brahmo Somaj has adopted this mode and the Somaj of India the other.

নৃতন পুস্তক।

ै ১। विष्ठांन तहमा। ১ ভাগ ১ সংখা।

ইহা এক থানি নাদিক পত্রিকা। ইহার উদ্দেশ্য ইহার নামেডেই প্রকাশিত হইতেছে। এই থানিতে অনেক গলি বিজ্ঞান বিষয়ক আলো-চনার আরম্ভ হইয়াটো

২। পাম্সুচি। প্রথম ভাগ।

প্রথমনন্দিনী সম্পাদক প্রীযুক্ত সভারত-সামশ্রমি ভট্টাচার্য্য কর্তৃক সংগ্রহীত অনুবাদিত ও প্রচারিত।

৩। বাগ্নাপাড়। বিদ্যোৎসাহিনী সভার পঞ্চম বার্ষিক অধিবেশনের বিবরণ।

উক্ত "গ্রামের হিত-সাধনী করা, সভাগণকে হিডেপেদেশ ও নীভি শিকা দেওয়া এবং বাললা সাহিত্যের প্রতি যুবকগণকে মনোবোগী করা" এই সভার প্রধান উদ্দেশা ও সঙ্কপে বলিয়া লিখিত হইয়াছে। ইচ্ছত ইহ লৌকিক কার্যা ও পরকাল বিবয়ে একটা বজ্ঞাতা আছে এবং শেষে গর্মা ও সুরাপাননিবারণ বিবয়ক সঙ্কীত আছে। গ্রামে গ্রামে এই রূপ সভা হয়, ইহা নিভাতা বাঞ্জনীয়।

म्द्रगाधन।

নিম লিখিত ছই থানি পুত্তক আগামী ১১ নাংখ নিজারিত মূল্যে বিক্র হইবে বলিরা গত মানের পতিকাম বিজ্ঞাপন দেওয়া হইরাছে কিন্তু উহা অর্জ মূল্যে বিজয় হইবে। কাশীশ্বর মিজের বস্তৃতা ... ॥॰ An account of the late

Govindram Mitter .. As 8

, আয় রায়।

কার্ত্তিক ও অগ্রহায়ণ ১৭৯৬ শক। জাদি ব্রাক্ষমা 🔊 ।

1			
জায়	***	***	2 29 110 0
পূৰ্মকার স্থিত			49412
সমষ্টি	***	***	F9310
राग्न .	\$ a	•••	o bolled a
প্রিত	••	459	8 b 9 11/3a
		আয়	
বাদ্যমাজ	***	*1.0	रा क
ভত্তা ধিনী পা	ত্রিকা	•••	52 de
পু खकानग	•••	•••	s b hasa
यञ्जालव	•••	104	29 4,10
গ কিছ ড	•••		53 5 0/24
मर्थि	***		₹39110 •
c		বায়	_
ব্ৰাহ্মসমাজ	•••	••	38311030
তত্তবাধিনী পা	ত্ৰক†	•••	32 11 10 0
श्रेडकान म	•••	***	284/30
य जिलिय	•••		9 5 4 0
গঞ্ছিত	•••	***	a had c
সমষ্টি	•••	***	3611040
	FIA	वावि ।	
এগুক্ত তারিণী	কান্ত ভ	ট্রাচার্য্য	3
" আশুতোৰ ধর		***	، ،
ं जानाबादः	ৰ প্ৰাপ্ত	•••	11 0
সম্ফি	***	***************************************	210
		ब्रीटकार्गात <u>्</u>	রিজনাধ ঠাকুর।
	٠.,		
			मण्यामक ।

অনুবোদিনী পাত্ৰকা কলিকাতা আদি ব্ৰাক্ষনমাল ব্ৰীজে প্ৰতি মানে প্ৰকাশিত হয়। মূল্য ছয় আনা। অগ্ৰিফ বাৰ্থিক মূল্য ডিন টাকা। আক্ষান্তল বাৰ্থিক ছয় ভানা। সন্তৰ্গ ১৯২৮। বলিগতাৰ ১৯৭২। সময় শনিবার।



ুক্ষরাএকনিদম**প্রফাসীখান্ত কিঞ্নাসীজ**দিদং সর্বানস্ক্র। তদের নিজ্য জ্ঞানমন্তং লিগং অভভায়িত্রহসংমধন নেবাভিতীয়ং সর্ব্যাপি সর্বানিয়ন্ত্ সর্বাশয় সর্ববিৎ সর্বাশক্তিমদ্প্রবং পুর্বমপ্রতিমনিতি। একন্য তইদারোলাদন্য পার্ত্তিকমৈতিককা স্ভক্তরতি। তন্মিন্ প্রীভিন্তস্য প্রিয়কার্য্যাধনক ড দুগান্ত্যন ।

দাচরারিংশ সাংবৎসরিক ব্রাক্ষসমাজ।

১১ মাঘ ১३৯৩ শক।

প্রাচঃকাল। ত্রিযুক্ত ঈশানচন্দ্র বসুর

বক্ত।।

বসন্তকালে গিরিসন্নিহিত শ্রেণতস্বতী-धेत अरमर्भ कि अना मनूरवात जनिरमय নয়ন চারি দিকে আকর্ষিত হয়? পুত্র, লোকের বন্ধু, ঈশরের অবনত সেবক সহাদয় সাধু লোকেরা তাদৃশ স্থলে কিসের প্রকাশ সন্দর্শন করিয়া পুলকিত হয়েন? তত্ৰতা তৰু গুলা লতিকা সকল অপূৰ্ব কুসুম-ভার মস্তকে ধারণ করিয়া কাহার মধুময় ভাব প্রকাশ করে? কলকণ্ঠ विरम कुल गरशङ्कारम काश्रंत छ। शान करत ? ऋषिक-কান্তি ভ্রোতশ্বতী কাহার প্রেম প্রবাহ প্রব-হন করিয়া থাকে? প্রস্তর-স্তর সকল নিস্তরে থাকিয়া কোন্ মহানের মহীয়ান ভাব বাক্ত থাকে ১ मकरलाई त्यन छे स्मार्य নিম্ম! বসুদ্ধরা কোন্ সুখের সয়াদ প্রাপ্ত रहेशा अहे छेदमत्वत्र अनुकान कतिशांट्यन,

কে বলিবে? যিনি চান. দর্শন করুনথিনি চান, প্রাবণ করুন;—পৃথিবীতে সেই
দেবাদিদেবের অতুল মহিমা কীর্ন্তিত হইতেছে—তাঁহার অপার প্রেম প্রবাহ প্রবাহিত
হইতেছে। এই ছুঃখ শোক পূর্ণ সংসারেও
মনুষ্যের নিতা কল্যাণ—নিতা সুখ লাভের
আশা দৃদীকৃত হইতেছে।

বসুন্ধরার পকে যেমন বসন্ত সমাগম,
আমাদের পক্ষে সেই ৰূপ ব্রাহ্মধর্মের অভ্যাদয়। বসুন্ধরার বসন্ত কিয়ৎকালস্থায়ী, আমাদের এই ধর্ম চিরবসন্ত শ্বৰূপ। শীতবাতক্রিষ্ট পৃথিবী বসন্তের মলয় সমীরণ সংস্পর্শে
যে ৰূপ প্রফুল্লিত হয়, আময়া এই জুঃখশোকময় সংসারে রোগজরাকীর্ণ শরীর
লইয়া সেই ৰূপ ব্রাহ্মধর্মকে পাইয়া অনন্ত
সুখ শান্তির আশায় সজীবতা প্রাপ্ত হইতেছি।

একণে ব্রাক্ষধর্মের ক্যোতিতে চারি
দিক সমুজ্জনিত হইতেছে। ব্রাক্ষধর্মের
আন্দোলনে সকল দেশ আন্দোলিত হইতেছে। যিনি এক বার এই ধর্মের মহজ্জ্ব
অনুভব করিরাছেন, তিনি আর তাহা ভূলিতে
পারিতেছেন না। ব্রাক্ষধর্ম সকলেরই
ধর্ম; ব্রাক্ষধর্ম সকলেরই মধু-স্বরূপ। যিনি

সুখা, যিনি ছংখী, যিনি পাপী, যিনি পুণ-वान्, खान्नधर्म मरुलदक्रे चालिनन क्रि-তেছেন, ব্রাহ্মধর্ম সকলেরই আত্মার কুধা ও হৃদয়ের প্রার্থনানুযায়ী ফল বিধান করিতে-ছেন। ব্রাহ্মধর্ম সকল মনুষ্যের ধর্মা; ইহাতে জাতিভেদ, সম্প্রদার-ভেদ, বা ধনী দরিজের কিছুই প্রভেদ নাই। সকলের অধিপতি সকলের নিয়ন্তা সেই একমেবাদিতীয়ং করু-গাম্য প্রমেশ্ব এই ত্রাহ্মধর্ম দ্বারা সমুদায় মনুষাকে একতা আনয়ন করিতেছেন এবং সকলকে এককালে আশীর্বাদ করিতেছেন। যিনি সুখী তিনি অধিকতর উন্নততর সুখের আভাদ প্রাপ্ত হইয়া তাহার লাভের নিমিত বাস্ত হইতেছেন যিনি ছুংখী তিনি শান্তুনা পार्हेशा अमीन इट्टिइन । यिनि भूग-বান্ তিনি উৎক্ষতির পুণাপদবীতে অধি-ৰাঢ় হইতেছেন, যিনি পাপতাপে কাতর ভিনি শান্তি লাভ করিয়া নিরাময় হইতে-্ছন। ব্রাহ্মধর্ম **ব্রহে**র সিংহাসন দৃঢ় প্রতি-ঠিত করিয়। বলিতে**ছেন.—ছংখ শোক গ্লা**নি দকল চলিয়া যাও, বিশরাজের অথও মঙ্গল নিয়মে শান্তি ও মঙ্গল দর্বত বিরাজ করিবে।

ইপরের কি অপার করণ। মনুষ্যের উপর বর্ষিত হইতেছে, তাহা প্রত্যক্ষ কর।
এই প্রকাণ্ড বিশ্ব গভীর নিনাদে অসীম আকাশে সেই বিশ্বাধিপতির অনস্ত মহিমা কীর্ত্তন করিতেছে, অথচ সে তাহাকে জানিল না: অগণ্য ভূচর প্লেচর জলচরাদি জীব জর তাহারই দ্যায়—তাহারই হত্তে প্রতিপালিত হইতেছে, অথচ ভাহারা কেহই তাহাকে জানিতে পারিল না; ইহার মধ্যে মনুষ্য সেই অবিনাশী পুরুষকে জানিল,—জানিয়া উনত লোকবাসী দেবতাদিগের সহিত তাহার উপাসনা করিতে ও তাহাকে লাভ করিতে সম্থ হইল।

হে আত্মবিশাত ভাত্গণ! এমন উৎকৃষ্ট

কম লাভ করিয়া—এমন মহোচ্চ অধিকার প্রাপ্ত হইয়া কেন আপনাকে দীন ভাবিয়া মুখ্যান হও? কেন বা আপনাকে প্রবৃত্তির সেবক করিয়া এমন মহত্তম সুখ হইতে বঞ্চিত হও ? বিষয়াসক্তি, পাপ মলিনতা পরিহার কর: পবিত্র হইয়া পবিত্র স্বরূপকে প্রত্যক্ষ কর; বিশুদ্ধসত্ত্ব হইয়া প্রীতির ভরে তাঁহাতে আত্মসমর্পণ কর। বিশ্বসংসার অহর্নিশ সেই বিশ্বাধিপতির মহিমা ঘোষণা করিতেছে: বিশ্বসংসার সার্থক হইতেছে। তিনি মহান্ পুরুষ, তুমি কুদ্র মনুষ্য; ভাঁহার অজতা করুণা সহস্র ধারে বৃধিত হইতেছে, জুমি ভাঁহার সেই প্রসাদ উপভোগ করিয়া কল্যাণ লাভ করিতেছ; জুমি তাঁহাকে জানিলে, তাঁহার নাম উচ্চারণ করিতে পারিলে; তুমি আর কি করিয়া তোমার এই জীবনকে সার্থক করিতে পার / কি করিয়া যথার্থ মনুষ্য নামের যোগ্য হইতে পার 🕫 একার সহিত প্রীতির সহিত সকলে মিলিয়া এক-তানে এক প্রাণে ভাঁহার যশ ঘোষণা কর। গাও কে অধিল নাথ, গাও হে পুরাণ পুরুষ। গাও হে তাঁহার নাম, রচিত ঘাঁর বিশ্বধাম, দয়ার যাঁর নাহি বিরাম, ঝরে তাঁহার মহিমা কীর্তুন অবিরত ধারে। করিয়া প্রাণ মনকে কুভার্থ কর; ইলাই व्यामारमत উৎमव; ইहार्ट्स व्यागारमत व्या-এই উৎসবের অধি দেবতা আমা-**मिट्टांत क्षांक क्षमझ रुप्तेन अवर जामादम**त প্রার্থনা ভাবণ করুন।

ওঁ একমেবান্বিভীয়ং।

শ্রীযুক্ত রাজনারায়ণ বসুর বক্ত_ৃতা।

অদ্য ঘাচত্বারিংশ বংসর হইল, বদ তে ব্রাহ্মসমাজ প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। এই সময়ের মধ্যে ব্রাহ্মধর্ম ও ব্রাহ্মসমাজ

অপ্প উন্নতি লাভ করে নাই। মহাস্মা রামনোহন রায়ের মৃত্যুর পর প্রধান আচার্য্য মহাশয়ের কর্তৃত্বাধীন যথন আমরা কত্নি-পয় বন্ধু একত্রিত হইয়া ত্রাহ্মধর্ম্মের পুনরা-ন্দোলন আরম্ভ করিলাম, তখন ব্রাহ্মধর্ম এক কুদ্র গৃহের চতুঃপ্রাচীরের মধ্যে বন্ধ ছিল, এক্ষণে দেশে দেশে নগরে নগরে আমে গ্রামে ব্রাহ্মধর্মের আন্দোলন হইতেছে, ব্ৰাক্ষসমাজ প্ৰতিষ্ঠিত হইতেছে, ব্ৰহ্ম নাম নিনাদিত হইতেছে। লোকে যেমন কোন श्वारन विमानिय, माधात्र भूखकालय, ঔषधा-লয় স্থাপন করিবার চেষ্টা পায়, তেমনি ভাষার সঙ্গে সঙ্গে একটা ত্রাহ্মসমাজও সংস্থাপন করিবার উদ্যোগ করে। ধর্মের **রয়সের মধ্যে দ্বাচত্বারিংশ বংসর অতি** मर्टकार भग्रा ; **किन्छ ७३ नर्टकार नगर**प्रत সধ্যে ব্রাহ্মধর্ম্ম অণ্প উন্নতি লাভ করে নাই। অক্ষরা প্রতি বৎসর সায়ৎসরিক উৎসব উপলক্ষে ব্রাহ্মধর্মের জয় ঘোষণা করিয়া থাকি : কিন্তু আমার আশঙ্কা হইতেছে যে আনলোলাসে নিমগ্ন হইয়া পাছে আমার-দিগের গ্রান্ম অভাব সকল আমরা বিস্মৃত ब्हेशा याहे, **এই জना मत्या मत्या त्महे म**कल পভাব পর্যালোচনা করা কর্ত্বাঃ অদ্য ्यम्न **मिण विरम्ण हरेएछ व**ञ्च समार्थम हरे-য়াছে, অন্য দিন একপ বন্ধু সমাগম প্রতাশ। করা যাইতে পা**রে না**় অতএব অদ্যই এই আলোচনার উপযুক্ত দিবস।

প্রথমতঃ, আমি দেখিতেছি যে যেমন ঈশবের বিদিতবা বচনীয় শ্বৰপের উপাস-নার উন্নতি হইতেছে, তেমনি তাঁহার অস্তত শ্বৰপের উপাসনার হ্রাস হইতেছে। ঈশবের শ্বৰপ ছই অংশে বিভক্ত। একাংশ আমরা কিয়ৎ পরিমাণে জানিতে সক্ষম হই, আর একাংশ আমাদিগের বাক্য মনের অগোচর। ন্থন তাঁহার জ্ঞান আছে, শক্তি আছে,

করুণা আছে, তথন তাঁহার স্বৰূপের একাংশ আমাদিগের বুজির গোচর। যথন তিনি শরীর ও আত্মা হইতে পৃথক্, তথন স্পর্ফ প্র-তীত হইতেছে যে অপর অংশ আমাদিগের বাক্য মনের অগোচর। এই অংশটা আমা-দিগের সম্বন্ধে নিবিড় অন্ধকারে আর্ভ। দেখানে "ন তত্ৰ স্থৰ্য্যো ভাতি ন **চন্দ্ৰ** ভারকং নে মা বিছাতোভান্তি কুতোইয়মগ্লিঃ " সে অংশ মুর্যা প্রকাশ করিতে পারে না, চন্দ্রপ্ত প্রকাশ করিতে পারে না, বিদ্যুৎ প্রকাশ করিতে পারে না, অগ্নি কি প্রকারে প্রকাশ করিবে ১ জ্ঞান শক্তি করণা থিশিকী পুরুষ-ভাবে, পিতা যাতা বন্ধু ভাবে, ঈশবের উপা-সনার যেমন উল্লভি হইতেছে, কেম্নি ভিনি বাক্য মনের অগোচর পদার্থ, এই ভাবে তাঁহার উপাসনার <u>হা</u>স হইতেছে। ওদিকে যেমন রোমহর্ষক প্রেমাক্র বিনির্গতকারী সন্ধীত সকল পুনঃ পুনঃ গান করিকে আখন। ভাল বাসি, তেমনি এদিকে " শাংশভয়ভয় मत्माकमत्महर " जवर " किनि त्य किन्तुना তীত, অথন্ড, অপরিমিত, শন্দাতীত, স্পর্না-ठौठ, द्वरप दल नित्रद्धि । मरनरू न। যায় পাওয়া, বাক্যেতে না যায় কওয়া, সন্ত-রণে পার হওয়া হয় কি জলধি "—এই সকল গীতের মহোচ্চ ভাব ও অনলয় ত সৌন্দর্য্য আর আমাদিগের ভাল লাগে না। কিন্তু যেমন ভক্তি ও ঐতি-রদে আত্র হইয়া প্রেমাত্রু বিনির্গত করা উচিত তেমনি नेयदात व्यवस्य व्यक्तिकीय स्वतंत्र व्यादना-চনা করিয়া বাকা মনকে শুদ্দীভূত করা উচিত। এই ছুই ভাবের সামঞ্জস্য সম্পাদন করা আমাদের কর্ত্তব্য। ভক্তি প্রীতির অনু-রোধে ঈশরের অস্তুত শ্বরূপের উপাদনা व्यवस्तिक इरेटकर । श्वन्न य काश व्यव-হেলিত হইতেছে এমন নহে, ভব্তি ও প্রী-তির অনুরোধে আমরা ঈশরকে কোন কোন্

গীতে, কোন কোন বস্তায়, নিভান্ত নর কপে বর্ণনা করিতেছি। যাঁহারা এখনে রাক্ষসমাজে নীরস জানের অভাবে প্রীতি ও ভব্তি ভাবের সঞ্চার করেন, তাঁহারাই একণে বলৈতে বাধ্য হইতেছেন যে নরত্ব-বাদ ক্রমে বাক্ষসমাজে প্রবেশ করিতেছে।

विजीसकः, **आफा**मिटभंत मट्या क्रुडे शक्त ব্যবহার দৃষ্ট হইয়া থাকে। ভাঁহাদিণের মধ্যে অধিকাংশ ব্যক্তি মতে ব্ৰাহ্ম, কিন্তু আমি কোন বিশেষ कार्रा जना क्षा দ্যাজকে লক্ষ্য করিয়া এই কথা বলিতেছি না, সকল সমাজকে লক্ষ্য করিয়া বলিতেছি: मकल मगारकत अधिकाल्भ जारकताहे अहे ৰূপ। তাঁহারা মতে ত্রান্ম, কণ্মো পৌত্ত লিক। যথম ত্রাক্ষসমূত্যের এই অবস্থা, তথম कि अकारत बला या है हु भारत (य उ क्विम র্মের বিশোষ উন্নতি হইয়াছে : কেবল বন্ধু-वर्गाक लहेगा मर्चन। छेलामना कविरल कि চ্**ট্রেঃ যণন ভাঁহারা উপাসনার সম্য়** সেই নিরাকার অতীন্দ্রি প্রমেশ্বরের উপাসন। করিয়া থাকেন কিন্তু গৃহ ক্রিয়ার সময় পরিমিত দেবতার উপাসনা করেন, তখন প্রথমোক্ত উপাসনায় কি ফল দর্শিতে পারে > ভূবের বিষয় এই যে, এই অদ্ভুত বাবহার क्तिवल खानानिरगंत यथा पृष्ठे हहेरज्ड. यमा (काम धर्मावलहीपित्रंत मस्या এकर्य एसे इस्ता। भाक कि विकादत नाम াবলার করিয়া খাকেন, না বৈশ্ব শাজের ন্যায় ব্যবহার করিয়া থাকেন্ । শিখ কি रेष्ठ हमा गणावलही देव कटवंद मात्र बावहांत्र क्तिया थारकन, ना टेड्डनामडाननशे रेनकव শিখের নাায় বাবহার করিয়া থাকেন? ভবে ত্রাহ্ম কেন পৌত্তলিকের ন্যায় ব্যবহার করিবেন ? তাঁহার ঈশরানুরাগ কি তাঁহা-দিগের অপেকা মূান ? বাহ্ন পৌত্তলিকভার কথা তো এই বলিলাম; মানসিক পৌৰ্জাল-

কতা উহা অপেক্ষা আরো ভয়ানক। ্পীন্তলিকভা পরিত্যাগ করিলাম কিন্তু মনে মনে ঈশবের রূপ কণপনা করিয়া ভাঁহাকে হাত পা দিয়া পূজা করিতে লাগিলাম, তবে আর বাহ্য পৌত্তলিকতা পরিত্যাগে কি **হ্টল ় বাহ্য পৌত্তলিকতা প**রিত্যাগ করি-লাম কিন্তু মনুব্যকে নরৰূপে পূজা করিছে लांशिलाम, उर्ज्यान मर्मात नाष उर्ज তৈলকটাহ পরিত্যাগ করিয়া নিমুস চ্লাতে প্রতিত হইলাম, তবে আর কঠে মুদ্ভিকঃ নির্মিত পুত্তলিকার উপাসনা পরিসাগ করিয়া কি হইল 🗦 পুত্তলিকার পূজা পরি-ত্যাগ করিলাম, কিন্তু আছ-পূজার প্রবন্ত হইলাম, বিঞাহ সেবা পরিফাগ করিলাম কিন্তু ধন মান দশ ৰূপ এক এক পুত্তলিকার **শেবায় প্রবৃত্ত হইলাম, উপবীত পরিভাগি** করিলাম কিন্তু আত্মার চতুর্দ্ধিকে আগ্যাত্মিক অহস্কার রূপ উপবীত ধারণ করিলাম, তেনে আর তাহাতে কি হইল : বেমন বাহা পোত্র-লিকতা পরিতাগে করা কর্ত্তবা, তেমনি আধাাত্মিক পৌত্তলিকতা পরিত্যাগ করাও কৰ্বব্য ।

তৃতীয়তঃ, ব্রাহ্মদিগের মধ্যে উদার্গার অভাব দৃষ্ট হইতেছে। আমরা বক্তৃতার সমর সমস্ত পৃথিবীকে সৌদ্রাত্র স্থান্ত বন্ধ করিবার বিষয়ে দীর্ম দীর্ম কথা বলিয়া থালি কিন্তু বন্ধদেশস্থ কতিপয় ব্রাহ্মদিগের মধ্যে কিন্তু মনোযোগ প্রদান করি না ব্রাহ্মদিগের মধ্যে নানা বিষয়ে মত বিতেদ হইবে, ভাষা আমরা কোন মতে নিবারণ করিতে সক্ষম হইব না। লোকে ঈশ্বর প্রণীত শাব্রে বিশাস করিরাও আপনাদিগের মধ্যে মত বিতেদ নিবারণ করিরাও আপনাদিগের মধ্যে মত বিতেদ নিবারণ করিবেত সক্ষম হয় না; আমরা বধন একপ শাব্রে বিশাস করি না, তখন আমাদিগের মধ্যে আরো অধিক মন্ত্র

विट्म इहेवांत मञ्जावमा। यक विट्म इहेत्न লোকে স্বভাবতঃ উৎসাহ্ ও সতেকভার সহিত আত্মপক্ষ সমর্থন করিতে চেঁন্টা পার किंकु डब्जना आमामिरशंत मर्द्या मरनत মালিন্য কেন জন্মিবে? ব্যবহারাজীবীরা বিচারপতির সম্মুখে উৎসাহ ও সভেক্ষতার সহিত এমন কি পরস্পরের প্রতি কঠিন বাক্য পর্যান্ত প্রয়োগ পূর্বক আত্মপক্ষ দম-র্থন করে, পরে বিচারালয় হইতে বহির্গত হটরা **সৌচার্দের চিহ্ন স্বরূ**প পরস্পরের হস্ত স্পর্শ করে; আর আমরা ধর্ম**ত্রত** লোক হইয়া সাধারণ লোক ৰূপ বিচার-পতির সম্মুধে আত্মপক্ষ সমর্থন করিয়া কি পরস্পরের মধ্যে সৌহার্দ্দ ভাব রক্ষা করিতে পারিব না । ক্রমে মুতন মুতন লোক, মুতন মূতন জাতি আমাদিগের পবিত ধর্ম অব-নধ্ন করিবে, সকলের আচার ব্যবহার রীতি नौडि ग्रधान इहेरव, हैका रकान मर्ट्ह थ-ত্যাশা করা যাইতে পারে না। অভএব আমাদিগের এই প্রকার নিয়ম করা কর্তব্য ্য স্থূল নিষয়ে অর্থাৎ ব্রাহ্মধর্ম বী**কে** বিশ্বাস থাকিলেই অন্যান্য বিষয়ে সহস্ৰৌ মততেদ থাকিলেও কোন বাজিকে ভ্রা**স** বলিয়া আলিদন করিব। এই আদি ভ্রাম দমাজ সকল ব্ৰাহ্মসামাজের পিতা হৰপ। শুদ্ধ ভারতবর্ষস্থ সকল ব্রাহ্মসমাজের পিডা নহে, পৃথিবীতে যে কোন স্থানে ত্রাক্ষসমাজ প্রতিষ্ঠিত হইবে, তাহার গিতা স্বরূপ। আমরা व्यानि आश्रीमगाटकत आत्रा हरेशा यन कौन ব্রান্দের প্রতি বিদেষ-নয়নে দৃষ্টিপতি নাঁ করি।

চতুর্থত: ; এক্ষণে ব্রাক্ষদিগের মধ্যে সাধ্যের ভাবের হ্রাস দৃষ্ট হইতেছে। এই বিষয়ে আমি কিছু বাছলা করিয়া বলিতে চাই। আমরা কেবল উৎসব, বক্তৃতা, সদীত, ধর্ম-মতের কথা, ধার্মিক লোকের কথা এই সকল লাইয়া বাস্ত থাকি কিন্ত

আমাদিগের আত্মা কি ৰূপ শেচনীয় অব-স্থায় আছে, তাহা আমরা লক্ষ্য করি না। কিন্তু আমাদিগের নিশ্চয় জানা কর্ত্তব্য, যে সাধন ৰাতীত আমর৷ কখনই ঈশরের নিকট উপদীত হইতে পারিব না। পূর্ব সাধন ব্যতীত কোনু কাৰ্য্য সম্পাদিত হইতে পারে? জ্যোতির্বেক্তা রাশি রাশি অঙ্ক গণনা করিয়া, কবে গ্রহণ ছইবে, পূর্ব হইতে বলিতে পারেন, তিনি কিসের বলে বলিতে সক্ষম হরেন > কেবল অভ্যাদের বলে—সাধনের वल । कवी किरमत वत्स निन्छ इत्सावस्त्र আপনার মনের অপূর্ব রমণীয় ভাব সকল বাক্ত করিয়া লোককে আশ্চর্যান্থিত করিতে मक्य इराम ह কেবল অভ্যাসের বলে, সাধনের বলে। চিত্রফর কিসের প্রভাবে নৈসর্গিক পদার্থ সকলের অবিকল প্রতিরূপ পটের উপর প্রদর্শন করিয়া লোকের মনে বিশার রনের উদ্রেক ক্রিতে সমর্থ হয় 🗵 কেবল অভ্যাসের প্রভাবে, সাধনের প্রভাবে: ভাকর কিসের গুণে সুন্দর সুন্দর পাধাণ গঠিত মূর্ত্তি সকল নির্মাণ করিয়া সৌন্দর্য্য রস পানে আমাদিগের চিত্তকৈ প্রিকৃপ্ত করে? কেবল অভ্যাদের গুণে, সাধনের গুণে। গায়ক কিদের বলে মধুর গীত গান क्रिय़ा व्यामानिर्दर्शत मनत्क वर्गीय मृत्थ অবগাহন করান ১ কেবল অভ্যাপের বলে, माधरमत वरत ? जिचक् किरमत शहर हुन्छ-কিৎস্য রোগ সকল আরোগ্য করিরা ক্লতজ রোগীর আন্তরিক আশীর্নাদ আকর্ষণ ক-রিতে নক্ষম হয়েন ৷ কেবল অভ্যাসের গুণে সাধনের গুণে। ব্যবহারাজীবী রাশি রাশি পুত্তক **সকল অধ্যয়ন করি**য়া বিচারপতির नम्पूर्य किरनंत्र वटल चान्वर्या निश्नुवर्वात সহিত **আত্মপক সমর্থন** করিতে সক্ষম সামানা উদাহরণ দিতেছি, মুল वत्न ।

মল্লযুদ্ধে বিষম বিক্রম প্রকাশ পূর্বক সহস্র সহস্র লোকের প্রশংসা ধনি গগনে উপিত সে কিদের গুণে হাহা উপিত করাইতে পারগ হয়: কেবল অভ্যামের इस्डान पर्ग-ভণে, সাধনের গুণে। কের মনে প্রতি মুদূর্তে নিজের পতনের ভাশর। উদ্রেক করাইয়া স্থক্ষ রক্ষুর উপর অ:শ্ৰুষ্টা ৰূপে নৃত্য করে, म किरमत প্রভাবে এরূপ করিতে সক্ষম হয়? কেবল অভ্যাদের প্রভাবে. সাধনের প্রভাবে। কোন কাৰ্য্য সাধন বাতীত সম্পন্ন হইতে পারে না। চবে ত্রন্ধ-লাভ সাধন ব্যতীভ কি প্রকারে দশার হইতে পারে ১ যদি কেবল ব্রহ্ম বিশ-য়ক **আন্দোলন** ব্যতীত অ'র কিছু লাভ করিবার আখাদিগের আন্তরিক ইচ্ছা থাকে, তবে ব্রহ্ম সাধনে আফাদিশের মনোযোগী হওয়া করব।। বেল্প সাধন কি । না ঈশ্ব-বের উচ্ছল সাক্ষাৎকার অভাসে করা, ইন্দ্রিয় সংশ্য করা এবং নিদ্ধাম পরোপকার করা। যেমন আমারিমের সকল কার্য্যের মূলে স্বীয় আস্তরের জ্ঞান নিহিত আছে, তেমনি ঈশর দশ্বে আছেন, এই জ্ঞান আমাদিগের সকল কার্টোর মূলে নিহিত ছও<mark>রা কর্ত্তবা।</mark> কিন্তু প্রথম জ্ঞান আমাদিরেগর সকল কার্য্যের মুলে স্বভাৰতঃ নিহিত আছে, সে বিধয়ে লামাদিগের যত্ন ও অভ্যাদ আ**বশ্যক করে** কিঙ হিতীয় জ্ঞান অভ্যা**স** ছারা— माधन पाड़ा मकत कार्यात मूल निहिष्ठ কবিতে হইবে। ছুগ্ধ রম্ভাগুরারা **চির পোবিত** সংগ্রে ন্যায় কোন শ্রিয় রিপুকে কত দূর লমন করিতে সক্ষম হ্ইলাম, নি**স্কাম পরো**-প্ররে সাধনে কত দুর ক্লতকার্য্য হইলাম, ইহার হিসাব আপনার **নিকট হইতে প্রতাহ** ल ७ऱा केंद्ररा। अङ्गूत्र **निक्टे महरक हिमाव** ্দওয়া যায়, কিন্তু ব্রাহ্মধন্মের নিকট হিসাব দেওয়া কঠিন। এই রূপ সাধনের ভাগ যে

ব্রাক্ষদিগের মধ্যে ক্রমশঃ গ্রাস হইয়া আসি-তাহার বিলক্ষণ শ্রমাণ পাওয়া যাইতেছে। যে বস্তু যাহার প্রিয়, সেই বস্তু লইয়া সে সর্বৃদা কথা কয়। পূৰ্বকালীন अविदा रूपल नेश्वरतत दिगरत मर्जना कथा কহিতেন, "কথয়ন্তত্ত মাং নিতাং ভুষান্তিচ রমস্ভিচ ! "কিন্তু আমরা কেবল সমাজ-मः कात ७ धर्माशरमधी मिरात छ गाछन ७ কার্য্য বিষয়ে **সর্ব**দা কথা কহিয়া থাকি. প্রিয়-তম **ঈশ**রের বিষয়ে অপ্প কগাই কহিয়া থাকি। আমার পূর্ব জীবন সাক্ষ্য প্রদান করিবে যে আমি সমাজ সংস্থারের বিপক্ষ নহি, কিন্তু সমাজ সংকারের জন্য লোক সমাজের व्यथितन्द्रात्क वियाज इत्तरः कर्त्वरा नतः। ধয়োপদেশ্ব। স্বভাবতঃ কুডদ্রতা ও ভাসির পাত্র বটে কিন্তু ব্রহ্মবাদীর জনা ব্রহ্মকে বহিন্ধৃত করিয়া দেওয়া কর্ত্তব্য নছে। আমর। সাধন-বিমুখ হইতেছি, তাহার আর এক প্রমাণ এই যে আমরা পরস্পরের কুদ্র দোষ সকল पर्वना **अनुप्रकान क**ड़ि ও তहिया। जुड़क আন্দোলন উপস্থিত করি। ব্রাক্ষদিগের মধ্যে পরম্পর বিবেষ ভাবের প্রবলত। কেবল দাধনের অভাব নিবন্ধন। ছুই জন ত্রাপের মধ্যে কোন কোন বিষয়ে যদি মতের অনৈকা থাকে, আর যদি ভাঁছারা প্রক্লুত माधक रहान, उदय के क्राय महत्व परिनका থাকিলেও তাঁহারা পরস্পরকে প্রাণের ভাত বলিয়া আলিজন না করিয়া কথনই থাকিতে উভয়ের মহতী ঈশ্বর প্রীচি পারেন না। কুদ্র অনৈকাকে গ্রাস করিয়া কেলে। কিন্ত আজি বোধ হয়, এই ৰূপ **८** डाक्तर्गन! দোষ কীর্ত্তন করিয়া তোমাণিগের উৎসব কার্যো ব্যাহাত প্রদান করিতেছি, অতএব **এই कार्या इट्रेट** वित्रुष्ठ इट्टेलाभ ; छेद्रम्यानन्स তোমাদিগকে আহ্বান করিতেছে, এক্ষণে উৎসবানন্দে গাত্র ঢালিয়া দেও।

হে পরমান্তন্! সকল বিশ্ব বিপত্তি
সঙ্গ্রে তুমি তোমার প্রিয় ব্রাহ্মধর্মকে জয়ী
করিবেই করিবে তাহার সন্দেহ নাই, কিস্ত সেই জয় লাভের পথে আমরা নিজে যেন কোন প্রতিবন্ধক প্রদান না করি। তুমি
রূপা করিয়া পবিত্র ব্রাহ্মধর্ম মর্ত্তালোকে
প্রেরণ করিয়াছ, আমরা যেন তোমার এই
করুণার অনুপযুক্ত না হই।

७ এकस्मवाश्विज्ञेतः।

শীযুক্ত বেচারাম চট্টোপাধ্যায়ের বক্তৃতা।

অদাকার এই প্রাতঃ-স্থর্যোর সহস্র কিরণে বাছ-জগ্ৰ যেম**ন বিচিত্ৰ শোভায় মণ্ডিত** ^{হ ইতেছে}, তেম্নি এই অসংখ্য মানব-আত্মাও অক্রিকার স্থর্যোদয়ে অপূর্ব বেশ ধারণ করি-বাছে। এই স্থা-জ্যোতি কেবল আজি যে পুথিবীর অন্ধকার ভিরোহিত করিল, কেবল ে পশু-পক্ষীগণকে জাগ্রত করিয়া বহির্জ-গতে আনন্দ কোলাহল উপিত করিল, তাহা नय, प्यांकि मंड-मह्ख यात्राटक छेम्सम डे९-সানে- এদ্ধা ভক্তি অনুরাগে উত্তেজিত ক্রিয়া **ত্রন্ধ-পূজার অনুরক্ত করত ম**র্ত্তা-লোকে এক মহান্ উৎসব-দার উদ্ঘাটিত করিয়া দিল। যদিও এই তেজোময় গগন-ভূষণ সূৰ্য্য সৌর-জগতের শঙ্কু-স্বৰূপ হইয়া ভুরাদি অসংখা লোক মণ্ডলকে আকর্ষণ-মূত্রে আবন্ধ করিয়া রাখিয়াছে, যদিও অহ-ৰিশি জীবন-জ্যোতিতে সুখ-সৌন্দর্যো মর্ত্তা-লোককে বিভূষিত করিতেছে, যদিও এই বসুক্ষরা আমারদিগকে অন্ধ-পানে পোষণ করত সৃষ্টিকা**ল হইতে বক্ষে** ধারণ করিয়া वृद्या-मधन अनिक्न क्रिटिट्र, কিনের জন্য যে ভাহারদিগের এই উৎকট পরিশ্রম, কেনই বা যে এই ছুর্বহ-ভার বহন

করিতেছে, কেনই যে ঘূর্নিত আবস্তিত হইয় বর্ষে বর্ষে লোক-সমাজে অভিনব উৎসব-ক্ষেত্র সংরচন করিতেছে, তাহারা ভাহার কোন তথাই অবগত নহে। আক্র্যা ! বে পৃথিবীর তুলনায় মনুষাশরীর বালু-কণা হইতেও ক্ততর, সেই মানব-আত্মা ভূপুঠে শরীর-পিঞ্জরে আসীন থাকিয়া বিশ্বপতির মহান্ লক্ষা সুসম্পন্ন হইতে দেখিয়া আনন্দ রবে চারিদিক্ প্রতিধনিত করিতেছে। সে निकौंव ऋगं-हत्स्व डेम्गादन्त. कल-खल-বিদ্বাৎ-বায়ু-সমন্ধীয় প্রত্যেক ভৌতিক ঘট-নায় এবং **সজীব** লোক-সমাজের সম্পদ্-বিপদে, উন্নতি অবনতির অভ্যন্তরে " সত্য-মেব জয়তে" কেবল সভ্যেরই জয় হয়, ঈশ-**दात धरे व्यवार्थ-मक्ष्य मूमिक इरेटट मिथि**या জ্ঞান-প্রেমে আশা-আনন্দে উন্নত ও উৎফুল হইতেছে। ভূকতান দারা গিরি-চূড়াই ভগ্ন इউক, বা সমুদ্র-উচ্চ্_{বা}দে নগর-গ্রামই সাগর-গর্ভে প্রবেশ করুক, অথবা রাজ বিপ্লবে বা প্रका-विद्धारि कान-धर्म अ भूथ-मम्किमाली জন-সমাজ সকল আপাততঃ শ্রীহীন কিয়া উৎসন্ন इहेग्राई राजिक, माठनीय गृह विस्कृतन ত্রাতৃগণ পরস্পর হীনবল হইয়াই পড়ুক, ज्खुमभी मनूषा, এই मकल घरेनात मधागङ থাকিয়াও সেই ধৃতত্তত সত্যকাম প্রমেশরে-तरे मनल-मःकण्य मः मिषि वियस्य चित-नि-শ্চর থাকিয়া "সভামেব জরতে " এই সুধাময় গম্ভীর গীত গান করত প্রীতি বিশাস বর্দ্ধিত করিতেছে। প্রতিদিন স্থর্যোর উদয়াও দারা যদিও আমারদিগের এই প্রিয় মাঘের একা-দশ দিবস উপস্থিত হইল,—যদিও আজি-কার স্থর্যোদয়ে এই আনন্দময় উৎসত্ত্ব-ক্ষেত্র সংরচিত হইল, যদিও এই মুক্ত-কিরণ-রাজী आगात्रामत राम विरममञ्च वक् विकारितत উৎসাহ-পূর্ণ মুখফ্চবি চক্ষ্র সন্মুখে প্রকাশ করিল কিন্তু যে জ্বন্য আমারদিগের এই

मूथकत मिलन, यांशांक लहेता गर्छा-लांक आमात्रिमिरशंत अहे जानन छेध्नत, তালার কিছুই অবগত নঙে; স্থা-জ্যোতি কুদ্র বৃহৎ অযুত অগণ্য পদার্থকে প্রকা**শ** कलिएक मधर्व इहेटला आभारतम्त्र अहे छेथ-भव-धिर्शिको (भवजारक कान करमरू প্রকাশ করিছে পারে না। "ন ডত্র স্থর্য্যো-নাতি ন চন্দ্র তারকং, নেমা বিদ্যাতো তাত্তি কুতোহরমাগ্রং " স্থ্যা-চন্দ্র-ভারক-জ্যোতি পেই বিশালোক পরমেশরকে প্রকাশ করিতে গিয়া পরাস্ত হয়, বিছাৎ অগ্নির উচ্ছল-প্রভাও পরাভূত হইয়া যায়। সূর্যা সাকী স্বৰূপে সৃষ্টিকাল হইতে বিমান পথে দণ্ডায়-मान थाक्टिलंख तम अहे छेन्त्रः आनत्मह কিছুই অনুভব করিছে পারে না. আহ-জোতিতেই ইয়ার অপূর্ব-শোলা প্রকাশিত हरा, दक्वल **चार्यारे এरे स**शीस উৎসব-चा-– দের এক্যার ভ্রম্বী ও ভোক্তা। वर्त्वश्र अनामि भूताव शतरमध्यत्रे आमात-ার এই উৎসবের প্রাণ, সেই নিখিল-জীবন অভরাছাই আমারদের এই মহোৎসবের ধারন-জ্যোতি। অসুরাকাশে ভাঁছার উল্লেন ৪ক,শই অদাকার শোভা-সৌন্দর্যা। ভাঁহার ৽শ্ন-লাভে সমর্থ ≢ওরাই ধর্ম-সাধনের -জান-বিভান চর্চার অবার্থ পুরস্কার। নিক্তানময় আলাই কেবল ইহার এক মাত্র प्रभेगे अनकाः वाहित्त करे स्था अकारणत म.ज महम यमि अस्तत डीवात अञ्चामग्र व्यक्तिक भारे, काटा कुरे**ला**हे क्रमस्त्रत व्यक्तकम ভিথির-রাশি অন্তরিভ হইবে, তাঁর প্রকাশে জীবনের গতি নিরূপিত হইবে। বিচিত্ৰ সৃষ্টির অপূর্ব পদ্ধতি সুস্পাই-ৰূপে क्षमसम्बद्ध करेट्ट, এই यटहा स्मरत्व कि भृष् অর্থ প্রতাক্ষ অনুভূত হইতে থাকিবে। থাহারা বাহিরের জ্যোতিতে সংসারকে দে-থিতে যায়, তাহারাই আপাত-দৃষ্ট ভয়-

विकैषिकां से, विश्व-विश्व खिल निताम हत्र, वाहां सा क्वल क्र द्र किंद्र खाला क्क किं-लां कर्त गंगना किंद्र साहे कर्य-क्क श्रम-विश्व श्रम-विश्व कर्य, छाहां द्राहे कर्य-क्क करा, छाहां द्राहे कर्य-मदी किंद्र स्था किंद्र हिंद्र साहे करा करा किंद्र हिंद्र हिं

রজনীর অহাকারের মধ্যে थाकिया লোক-সাধারণ যেমন প্রভাতের স্থায়ানয়েও প্রতি নিঃসংশয় থাকেন. তত্ত্বদলী মহাপুর-বর্গণও তেমনি জন-সমাজের অভ্যাচার উপদ্রবের মধ্যে নিপতিত হইয়া ঈশ্বরের **७७ मःऋण्य मःमिक्ति** विषदां अक्ति विन्हरः स्टामं । याँशाता विकान-अञ्च छाशातारे तक বিচ্চাতের, প্রবল-বাত্যা-রুটির অত্যাচারে শক্তি তীত হয়, আর ঘাঁহারা বিশ্বপতির ভৌতিক পদার্থের গুণ-ধর্ম, জড় রাজ্যের কাল-ক্রমাগত উল্লভির পদ্ধতি অবগত আছেন, জাঁহারা সেই ক্ষণিক ছ্মিবার্যা উৎপাতের অভ্যন্তরে সংস্থিত হইয়াও প্রশস্ক क्षमत्त्र जिन्दित्त्र मिहिमा द्यायना कतिदङ याशातरमत्र अमृतमृष्टि क्वतन शांदकन। লোক-সমাজের উপস্থিত ওতা,শুভ অবলো-करनरे जावक अवर मरमाव मरशारे व्यवस्था, शहातरमत कूछ-इमग्र ৰূপ কল্যাণ লাভেই স্বীত হয় এবং অভ্যাপ সুবের ব্যাঘাতেই এককালে অভি ভূত হইয়া পড়ে। আর বাঁহারা মনুবা-জাতির আদিম-অবস্থার সহিত বর্তমানের

মানব-অন্মার সাংসারিক ও স্বাধ্যাত্মিক উন্নতির জুলনা করিয়া দেখেন এবং ভবিষ্যৎ উৎকর্ষ দানে-প্রণালীর প্রতি দৃষ্টিপাত করেন. লালারই "সভামেব জয়তে নানৃতং" এই মতাবাকোর গম্ভীর-ভাব উপলব্ধি করিয়া দেই বিশ্বপতির সৃষ্টি-কৌশল, পালন-প্র-ণালা, উন্নতি-সাধন-পদ্ধতি পতাক্ষ সন্দর্শন কবত মুক্ত-ছাদয়ে ভাঁছাকেই ধনাবাদ প্রদান कतिर्देश थारकत। अस्त्र-भाग उद्गमनी भन्भभूत्रत्यत् मित्रशास क्रभएवत अच्छाक ঘটনাই উন্নতির অনুকূল, প্রতোক কার্যাই শৃষ্বনাযুক্ত, প্রতি ব্যাপারই প্রণালী**-সিন্ধ**। ভিনি বেমন পৃথিবীর সেই আদিম স্তরের সহিত এই উপস্থিত মানব-বাস-যোগ্য শোলামা ভুপুটের **ক**ল্যাণকর **চন্ছেদ্য** সম্বন্ধ সন্দর্শন করিয়া ঈশ্বরের সত্য-সংক্ষণসই भः मिक् इरेटिंग्स, डोडाई প্রতাক करतन, তেমনি তিনি দেই নবজাত পশু- 2 তিমনী আদিম-মনুধা-জাতির ক্রিয়া-কাণ্ডের সহিত, বর্ত্তগানের জ্ঞান-ধর্ম-সমস্পিত লোক-সমাজের পবিত্র প্রশস্ত কার্যা-কলাপেরও শ্রেম্বর সম্বন্ধ অনুভব করিয়া সতাকেই জন্ন-যুক্ত ধশ্মকেই জন্ন-যুক্ত হইতে দেখিয়া সত্য স্বৰূপ धर्मत्रोक्ष शतरमश्रदक्रे धनादाम (मन। আমরা র্ফ-শির-শোভিত বিচিত্র কুসুম-রাজীর বিভিন্ন প্রকৃতি—অনুপম দৌন্দর্যা দৌরতে **যতই কেন বিশ্মিত ও চম**ৎকৃত হই ना-किछ मिरे कूटिंगे इक-वीक, मिरे चन जिम्मत यून-कांख, भाषा अभाषा, शव পল্লব সকলই যেমন দেব-ছুর্লভ কুসুম-উদ্গ-মের এক মাত কারণ, তেমনি সেই আদিম नःकोर्ग **मानव-बू**ग्रहत कि शृह-कांग्र. कि নামাজিক বাবহার, কি ধর্ম-পদ্ধতি আমার-দের সমুখে এখন যতই কেন অপ্রশন্ত ও অপরিশুদ্ধ বলিয়া প্রভীয়মান হউক না, निषदंत वश्य द्रांशिष, मानव-क्तमग्र-निहिष

সেই সকল অবার্থ কল্যাণ-প্রস্থ বীজ রাজি হইতে কাল-ক্রমে পৃথিবীর এই বিশাল জন-সমাজ ৰূপ মহারুকের উন্নত্তম শাখায় ব্ৰাহ্ম-ধৰ্ম-ৰূপ শোভাষয় বিজ্ঞানময় অস্ত-মর বিচিত্র কুসুম প্রক্টিত হইয়া জগদরণা আলোকিত ও আমোদিত করিয়া তুলি-যানব-আত্মা তাহার সৌন্দর্যা য়াছে। সৌরভ প্রাপ্ত হইয়া আনন্দ মনে উচ্চরবে " সভামেব জয়তে " এই সুধামর সংগীত शीन कतिरहरह। अक कारल स मनुस क्विन छेमतास्त्रत बनाहे भर्न्छ-अत्रत्म ज्ञमन করিয়াছে, পশু-রুধির-লালদার আকুল হইয়া সৃগ-বরাহের অনুসরণে ছল ভ জীবন-काल चिवाहिक कतिशाष्ट्र, यदमामाना পর্ণ-কুটীর নির্মাণে অপটুতা-নিবন্ধন যে मनुषा-जाठि এक ममरा हो छ-कल छे९-পীড়িত হইয়া অসহ্য কন্ট-ক্লেশ সন্তোগ করিয়াছে, সেই মানব-জাতির দোর্দ্ধ ও প্রতাপে এখন পৃথিবী কম্পানন, সাগর-সিকু पालाग्रमान इन्टेंट्ट । त्मरे जापिम-অক্টেয় শত্রু সিংহ শার্দ্দূল কুরঞ্জ মাত্রু नकल अर्थन (नई मनुत्यात श्राम-कानतन मृद्धल-वद्य थाकिय़ा हिख वित्नामन कति-एटह। त्रहे मनूरगत वाष्ट्र-वटल, तृक्ति প্রভাবে নিবিড়-অরণ্য সুশোভন নগর-রাজধানী কপে পরিণত হইতেছে. ছুম্ছেদ্য পর্বত-পাষণস্তু প. আরণ্য-ছব্রু, **फूट**र्जना খণ্ডিত বিখণ্ডিত হইয়া এখন সেই মনুষোর मूत्रमा रुमी, नम्बठ श्रामान अहालिकाय भः योजिक इरेक्टिए। अञ्चितिरधः सम ननी थवार सारे मञ्दात तुक्ति-कोनाल এখন তাহার পদতলে—প্রাচীর ছাদোপরি मक्षद्रन क्रिंत्रिट्ह। (मर्टे ताक्रम-मपुन মনুষ্য ঈশার ইচ্ছায় কালে জ্ঞান-ধর্ম সনুন্ত হইয়া এই মহান্ উৎসব-ক্ষেত্ৰে আজি অপূৰ্ব দেব-ভাবে শোভমান হইয়া, উচ্চরবে কেমন

সভ্যের জয়, ধর্মের জয়, "বিশ্ব-বিজয়ী ত্রশ্ব-নামের জয় " ঘোষণা করিতেছে। যে মনুষ্য कक कात्न यद्भागाना देववतिक मूरथत অভাবে কফ-্লেশে বাথিত হটয়া, জীবন ধারণ করা কেবল বিজ্যনা মাত্র এবং সংসা-বকে চুংখের আগার বলিয়া বিলাপ করিত, দেই মনুধাই আত্ম-প্রভাবে দেব-প্রসাদে ভবাবৎ সুথ হস্তগত-পদানত করিয়া সেই ° বিদ্যা-সম্পদ্-বুদ্ধি-বিধাতা "পরব্রহ্মকে লাভ করত প্রেমানদে উৎফুল্ল হইয়া "এয **उन्नात्मकः" अहे धानम-पूर्व उन्न**-लाक বলিয়া পৃথিবীর মাহাত্মা কীর্ত্তন করিতেছে। সমুদায় পুথিবী---সমগ্র মনুধা-জাতির কথা দুরে থাকুক, এখনই আমরা যে সুপ্রসারিত স্থাজ-গৃহের ভিত্তি-ভূমির উপরে আসীন হট্যা সত্যের জন-বেবিণা করিতেছি, ইহার উনতির আপার আলোচনা করিলেই সতোর প্রকাপ, থারের প্রভাব অতি সহজেই আমা-রণিগের হাদালেম হইবে, ঈশবের মালন-সহপে যে কেমন বিচিত্র কৌশলে সংসিদ্ধ চইতেছে, ভাহা অনায়াদেই প্রভাক্ষ উপলব্ধি ^{এইবে।} যথন ভারতে সমাজ-বন্ধ হইয়া ত্রকোপাসনার কোন সূত্র-পাত্ই হয় নাই, শুদ্ধ ভারতে কেন, পৃথিবী-মধ্যে কোন খানে অদাস্প্রদায়িক ও অপৌত্তলিক-ভাবে এক্যাত্র অধিতীয় নিরাকার পর**রক্ষের** আরাধনার জনা যথন কোন সাধারণ উপা-সতা-গৃত প্রতিষ্ঠিত ক্টুয়াছিল কি না সংশয় মল, তৎকালে সেই গন্তীর-বুদ্ধি ঈশ্বর-প্রাণ भशाक्षा त्राम-स्माध्य द्वारा **अस्त-धीकि-सूधा**-পানে পরিতৃপ্ত হইয়া **লোক-সাধারণের** উপকরোথে ত্রন্ধ-পূজা ও ত্রন্ধ-জ্ঞান বিভার উদ্দেশে এই অবধারিত-দার **আদি-ত্রাদ্ম-**সমাজ প্রতিষ্ঠা করিলেন। তথন ইহার চতুর্দ্দিকে পর্বত সমান বাধা-বিশ্ব, সমুদ্র সমান এতিবন্ধক। ঈশ্বর জগতের অধি-

পতি, তিনি প্রতি আত্মার ইফা-দেবতা হইলেও, এই পৰিত্ৰ-গৃহে প্ৰন্ধা-ভক্তি-প্ৰীতি উপচার লইয়া যে দেই আদি দেবের অর্চনা করে. এমন ছই চারি জন মনুধাও প্রাপ্ত হওয়া যাইত না। প্রজালিত অনল যেমন আপনার বলেই চতুর্দ্ধিকে বিস্তারিত হয়. হেমনি এই ব্ৰহ্ম-জ্ঞান ৰূপ স্থগীয়-আগ্নি সকল বাধা-বিশ্ব অভিক্রম করিয়া ক্রমাগভই প্রছলিত হইতেছে, ভারতের সংস্র সংস্র আত্মাকে সংকৃত ও পরিতৃপ্ত করিয়া পর্বত-অরণা, সিন্ধু-প্রান্তর উল্লঙ্গন করত ক্রমে क्षात्राश्व स्ट्रेट्ट । ध्वरम (य भूट ভাদশ ব্যক্তির সমাগন হওয়া সুক্ঠিন इट्ट, म्हें अहे मुमीर्च ममूब्रक व्यापि-मभा-জের ভিত্তি-ভূমি আজি দেশ-বিদেশস্থ শত শত সাধকের সমাবেশ-ভারে বিকম্পিত क्ट्रे**ट्रि** । **এই অসামান্য লোকারণা—এ**জ সকল জ্ঞান-প্রেম-শ্রদ্ধা-ভক্তি-সম্পন্ন অন-নাপরায়ণ ত্রেলাপাসকদিগের ত্রনা-নিষ্ঠা সন্দর্শন করিয়া কোন্ আত্মা না আজি " সভামের জনতে " এই মহাবাক্যের প্রকৃত ভাৎপর্য্য অনুভব করিতেছেন। দ্বাচত্বারিংশ বংশরের উন্নতির ক্রম অবলোকন করিয়। কোন্তজ্পশী মহাপুরুষই না আশা করি-ভেছেন, যে কালেতে সমুদায় পৃথিবী বিশাল-উৎসব-ক্ষেত্র হইয়া উঠিবে, কালেতে সকল আত্মাই ঈশার-লাভে ক্ত-কার্য্য হইয়া পৃথিধীকে পুণ্যবতী করিয়া "এব उक्तत्नाकः " এই उक्त-त्नाक, এই সুগাময় বাক্য একতানে উচ্চারণ করত ইহার যাথার্থ্য সম্পাদন করিবে। হে সতাকাম মদল সঙ্ক পে ধৃত-ত্রত মহান্ ঈশ্ব ! এই বিবাদ-विमद्याप-निका-अञ्गा-वन्त्र-क्लर्-भूर्व मर्छा-লোকে সেই শুভ দিন শীঘ্ৰ প্ৰেরণ জুমি প্রীতি-সদ্ভাবে, সুখ-শান্তিতে সকল আত্মাকে সন্মিলিত কর, তোমার নিকটে আর কি যাচ্ঞা করিব. প্রাণের
সচিত এই প্রার্থনা করি, তে ঈশার,
ভোমার মহিমা মহীয়ান্ হউক, সভোরই
কয় ইউক, ভোমার মহল-সকম্প সংসিদ্ধা
হউক। ভোমার স্নেচের ধন জীবাঝা
সকল, ভোমাকে লাভ করিয়া কুতার্গ হউক।
উ একমেবাদ্বিতীয়ং।

সাফ্রকাল। শ্রীযুক্ত প্রতান্দ্রনাথ ঠাকুরি বলিলেন।

অন্য আমাদের এই ব্রাক্ষণাজ দাচ-মারিংখা বৎসর অতিক্রম করিয়া নববর্ষে श्रविधे हरेटाइ, এ छेटमर्द्य मिन विस्थ कृत्श काम । अपन विश्व विभाग अभाग विश्व विष्य विश्व विष কেবল কৌ চুলনের বশবর্তী হইয়া আসি-भारक्त--गाँकाता **आत्माक कन-काना**स्ल (मिथ्या, गीठ योगावनि खनिशाई कितिया याहित्यम, लिहाता क पिराय यथार्थ मर्पा অবগতনতেন । অদ্য এই ব্রাহ্মসমান্তের গুতিষ্ঠা দিবদ--দেই ব্ৰাহ্মসমাজ যাহা অ-জ্ঞান-অন্ধকার কুসংস্কার-কুজ্বাটকার মধ্যে সহস্রশ্মি-ভানু সদৃশ এই বন্দদেশে উথিত ইইয়াছে: যাহার নামের দক্ষে সঙ্গে আমাদের দেশের নানাবিধ কুরীতির নির্বাদন, পৌত্ত-লিকতার পরিহার, জাতিতেদের উচ্ছেদ, স্ত্রী-কাতির স্বাধীনতা,সত্যের জয়.একমেবাদিতীয়ং পরত্রন্ধের উপাদনা অনুস্থাত রহিয়াছে। ব্রাক্ষগণ! অদ্যকার দিনের প্রকৃত তাৎপর্য্য অবধারণ কর। যে ত্রন্ধের আহ্বানে কোমরা এই উৎসবে সমাগত হইয়াছ, সর্বাত্যে এই মন্দিরের মধ্যে তাঁহাকে প্রতাক্ষ কর। দেখ তার সভাতে—তার শক্তিতে জগৎ পূর্ণ রহিয়াছে। ভাঁহার ইচ্ছা দীপামান, তাই **সংসার চলিতেছে, সেই ইচ্ছা**র निरमय माळ विज्ञाम इन्हेल-छाहात এक

क्टोकिशक इरेला, महूनाम ४०म वरेश। यास। সে শক্তির মাছার। অনুভব কর। আমি যদি ধবলাগিরি আরোহণ করিয়া ভাহার শিথর-দেশে দণ্ডায়মান হই, যেখানে আমার শরীর শীতে পাঘাণৰং হইয়া যায়, যেখানে ম্বর্য-দার-মুক্ত তীত্র হিমার্চ্র বায়ু আনাকে সজোরে আক্রমণ করে, সৃষ্টির মহা ভুত সকল ভীমবলে আমার নয়ন মনকে একান্ত অভি-ভূত কৰে, সেধানে আমাকে কি ফুজ দে-থায় ৷ বিশাল দাগবের প্রবল ভরকের মধ্যে আমার এই দেহতরি কি ক্ষুদ্র প্রতীগ্রমান হয়। আবার যে পৃথিবীতে আমি বাস করি-তেছি—যাগর জল কি স্থল কিছুবই অন্থ পাই না, তাহার তুলনায় একটি দাগর বি একটা পর্বত কেমন ক্ষা। এই প্রথিষী আবার স্থাের জুলনায় কি ক্দ্র। **উপরের খন**দ্ कांग्रि लारकत जूननाय हेश कि :-- कान् वालुक्ना, काम् धृलिरत्रू, काम् के हे। मू তাহা অপেক্ষাও অত্প ৷ তবে যিনি আমার এই ফুড় দেহের অধীশ্বল—সাগর পর্বত সমেত এই পৃথিবী —এই স্থৰ্যা – এই কোটি কোটি লোক মণ্ডল ঘাঁচার অধ্লীর এক देक्टि योकाम পথে खाशामान इन्टेंटिए. তিনি কি মহানু । মহতে। মহীয়ান্ । ভাঁহার মহিমা কি বুদ্ধিতে আরত্ত করিতে পারা নায় 🕖 জ্যোতির জ্যোতি, তিনি নিজে কি উজ্জ্বল ! প্রাণের প্রাণ, তিনি নিজে কি মহানু! সকল ৰূপ-কার্ণ, সকল সন্তার সন্তা, সকল সতাের সত্য। তিনি কেবল অন্ধ শক্তির বাহন মাত্র নহেন। তিনি কেবল জড় জগতের অধি-পতি নহেন। তাঁহাকে জাগ্রত জীবস্ত দেবতা ৰূপে প্ৰত্যক্ষ কর। তাঁহাকে পিতা ৰূপে সাক্ষাৎ বর্ত্তমান দেখ, যাঁহাকে আমাদের পূৰ্বতন ঋষিগণ স্বভাবোক্তিতে বলিয়। গিয়াছেন, " ত্বং হি নঃ পিতাংসি "। তিনি পিতা আমরা ভাঁহার পুত্র, ভাঁহার নিকট কি

প্রার্থনা করিব। প্রার্থনা কর যেন তাঁছার পিতৃভাব হৃদয়ে সর্বৃদা জাগ্রহ থাকে। াঁগকে ছাড়িলে আমাদের পরিতাণ নাই. শান্তি নাই। ঈশবের সমিকর্স হইতেই সকল दल। डीड *इडे*टड यड मृद्द गा**रे.** ७७३ व्यामारमत छ्र्वलचा छूर्मगा। स्मरे জीवरनत প্রপ্রবেশর যতই আমরা मझिक्टे इहे, ७४२ वलवान इहै। भहें मूल अखदा इहेटड আমাদের জীবন স্রোত যত দূরে যায়, ভতই আমরঃ দীন হীন গুর্বল। সংসারে কেহই আ-मता मन्पूर्व मुशी नहि। अथात्न नाना छःथ, নান। বিপত্তি, রোগ শোক দারিডা ছর্দ্দশা। মনুষ্যের আশ্রয়ে সকল ছংখের নিবারণ হয় না, ঔষবদারা সকল রোগের শান্তি হয় না ध्या केष्यर्थ। मकल इक्ष्मीत निर्वाकद्वन इय না! কোন্রাজা এমন বলিতে পারেন— ष्यामात मकल हेका भूर्व हहेता एह। শাসনে তাঁর সকল প্রজা কম্পিত চটতে পারে কিন্তু তিনি নিজে হয়ত কোন আন্তরিক রিপুর একান্ত পরাধীন। অব্যে তাঁহাকে দেবজুর: মনে করিয়া **অর্চানা করি**তেছে— আপনার চকে তিনি কেমন হীন। কোন্ সাবু এঘন বলিতে পারেন— আমার এত্যেক माधु मकः श्राप्त म्हेशाएक :-- कान् वली भाषनात यत्तत भार्का कतिए भारतः अमा মুস্ত সবল এফুল-কলা রোগ শ্যায় শ্যান। কোন্ধনী আপ্নার ধনের গৌর্ব করিও পারেন ১ "धमा बाका कला দরিদ্র - অদ্য মুছোলাস কল্য গ্রহাকার। " (४४ व्यामारणः मकलि फूर्ना**ठ—मकलि** धर्मना- भटन भटन हो सद। सह केस-রের শরণাপন হও, বিনি আমাদের সকল इरारशंत छेगथ-**म**कल पञ्जनात श्रममन। খালার ভালকে ছাড়িয়া আপ**নার কুত্র** ৰলের উপর নির্ভর করে, তাহাদের কি সুন । বাহার। তাহাকে অবেবণ করে না—

তাঁহার নিকট অন্তরের সহিত প্রার্থনা করে ना—डीहात्∕डे**शरमम बाका ख**निशां थव-टिला करते—चाशनात मन दुक्तिहे कीवत्नत নেতা—আপনার অস্প গ্রানের উপরেই সকল নির্ভর,—তাহারা সে বলে বঞ্চিত, योश क्वतल क्रेश्वरत्तत्र मान,—तम धरन विक्रिक, যাগ নিতা জক্ষয়ধন; যে বল সভোতে ধর্মেতে পুন্য পবিত্রভাতে উপাজিত হয়— যে ধন পার্থিব সুথ ছংখ হরণ করিতে भारत ना। **अ**भरतत निक्छे ३३८७ वल চাও তিনি বল দিবেন। যে সকল ধর্মাঝা धरमंत जना आग निशास्त्र, डीवातिनिशाक ष्यक्षत्र वर्त्त (क वर्तीयाम् कतिरत्नमः विनि আমাদের দম্ভ হইবার পূর্বে মাভৃত্তনে তৃদ্ধ नित्न-ियिन अद्य निशा आभारनत सेत्रंत পোষণ করিতেছেন— যিনি বীজের পুটি সাধন জন্য রৌদ্রের উত্তাপ,র্ফির জল প্রেরণ করিতেছেন, তিনি কি আত্মাকে নিরাশ্রিত রাপিবেন—কখনই না। তাঁহার ঘারে আঘাত করিলেই তিনি সাড়া দিবেন.—ভিক্ষা চং হিলে ভিক্ষা দিবেন—বর চাহিলে অভয় বর এদান করিবেন। তাঁহার নিকটে ধর্ম যুদ্ধের জন্য বল চাও। যুদ্ধ-ক্ষেত্র প্রশস্ত বিত্র সকল ছ্রতিক্রমণীয় — রিপুদলও বলবান্। আমা-দের সমাজে নানা প্রকার কুরীতি কুসংকার আছে, তাহার উচ্ছেদ করিতে হইবে। জাতি **छिर क्षेत्रा यांश मग.एक मगाटक** मटल मटल मनुत्या मनुत्या विद्याथ ७ विदक्षम ख्व विस्नाव করিতেছে, তাহার উন্মূলন করিতে হইবে। পৌত্তনিক্তার পরিবর্ত্তে এক ঈশ্বরের উপা-সনা স্থাপিত করিতে হইবে। অনেক জঞ্জাল कलक श्रकालन क्रिट इहेट्य। লোকের নিন্দা ও গ্লানি ও অভ্যাচার মন্তকে বছন করিয়া তাহারদিগকে প্রকৃত ধর্মপথে আকর্ষণ করিতে হইবে। আমাদের দেশের সনাতন ধর্ম, কাল-জনিত যে ঘোর

বুজ্ঝটিকাতে আর্ড হইয়া অদৃশ্য কায় হইয়া রহিয়াছে,ভাগ ছিল ভিল করিয়া দেই ধর্মের গ্রন্থ উদায় স্বৰূপ লোকের চক্ষে প্রকাশ করিতে হইবে। যাহা ন্যায়—যাহা সত্যী— याहा वर्षा, जाहात अनुष्ठान कतिए इटेरव । অতএব ঈশরের নিকটে ধর্মবল প্রার্থনা কর। যাহাতে আপনার দোষ বিশেষ ৰূপে অনুসন্ধান করিয়া পরিহার করিতে পারি--- अत्यात मांध कमा नृष्टि । योजना করিতে পারি—এই বর প্রার্থন। কর। এই ভিজা চাও যেন সম্পদে ফীত না হই— বিপদে বিধাদগ্রন্থ না হই—রোগ শোকে प्रामान व्हेशः ज्ञेत्रात्तत् मकल चक्तरा विमाज तः इहे। गर्यन य व्यवश्राप्त थाकि, क्ष्रमध् सूथ - क्षरमा क्ष्य--क्षरमा मन्भम, कश्रासा विश्वम-कश्रासा वक বি দ্যাতের মধ্য দিয়া ঈশ্বর দেখা দিতেছেন -- কথনো বা মধ্ময় শীতল জো**ংলাতে** আল্লাকে অভিবিক্ত করিতেছেন—কিন্ত সকল অবস্থার জনা যেন চুজ্মবলের সহিত এম্বত থাকি সময়ের পূর্ণ মঙ্গলভাবের উপর যেন সম্পূর্ণ বিশ্বাস থাকে—এই প্রকার ভগ-नहत्र्यः काराम्यान आर्थना कत् । क्रेस्त्राक বল — অসং হইতে সত্যেতে লইয়া যাও— अक्षकात रहेटक (कार्डिटक लहेशा यां छ। জ্যোতি ছুই প্রকার—জ্ঞানের জ্যোতি— পুণোর ভোতি। মনের আলোক জ্ঞান, আত্মার আলোক পুণা। যথন যে অবস্থায় বাকি—ভাহার কওঁবা সাধ**ন জন্য প্রথম** জ্ঞানের আবদাক। জ্ঞান না থাকিলে এথনি আমরা জড় **জগতের চক্রা**ন্তে অভিভূত হই। क्वांन आमात्ररमत मश्मात शद्धत आत्नाक। नकन व्यवहारण्डे स्वादनत अर्शक्षन । अश्य के बत्र कामा चारनाक, उंशित धर्म नियम জানা আবশাক—বাহু প্রকৃতি যানব প্রকৃতির জ্ঞান লাভ আবশাক। আমাদের শিক্ষার

জনা ঈশ্বর প্রকৃতি ৰূপ গ্রন্থ আবিদ্যুত করিয়াছেন—মনুষোর আত্মাতে অবিনশ্ব व्यक्ततः जैञ्चात উপদেশ মুদ্রিছ করিয়াছেন. আগরা যেন এই ছুই দিকেই লক্ষা দিয়া থাকি: এই ছই গ্ৰন্থ সমাক ৰূপে পাঠ ও ष्यधाशम कति। किन्नु क्वारमण्डहे মনুখাজ্ হয় না। যেমন অভ্যান তিমির— তাহা অপেকাও ভয়ানক অন্ধকার পাপ। कानिनाग कि भर्य-कि नाग्-कि कर्खवा কিন্ত ইচ্ছাকে সে দিকে নিয়োগ করিতে शांत्रिनाभ मा, जरव रम छ्वारमत कल कि :---আমরা অতি কুজ জানিয়া শুনিয়া কতবার অপথে পদার্পণ করি। জানিলাম কি মঙ্গল কি শুভ কি কল্যাণ, স্থির করিলাম কি কর্ত্তব্য, তবুও কার্য্য কালে হয়ত মন তাহার বিপরীত পথে ধাবিত হয়। অতএব ফেবল জ্ঞানের আলোক নহে-পুণ্যের আলোক পবিত্রতা উপাদ্ধ করিতে হইবে। ঈশর र्यमन निम्नलक श्विज स्वल--तम् जामर्म अहन कतिया कारात अनुशामी करेटक हरेटवा তাহার জনা আত্মার সমুদ্র বল সমুদ্র শক্তি সমুদয় উদাম যোজুনা না করিলে রুত-কার্যা হওরা অশাধা। যেমন অজ্ঞান ভিমির জীবন পথকে অন্ধীভূত করে—পাণ তিমি-রও আমাদিগকে স্বস্ধ করিয়া ধন প্রাণে বিনাশ করে। সেই জন্য ধর্মের আলোকে পুণা জ্যোতিঃ প্রার্থনা কর। ঈশরতে বল **অন্ধকার হইতে জামাকে জ্যোতিতে** লইয়। যাও—জানালোক প্রকাশ কর সুনার व्यात्नाक अकाम कता अहे छूहे व्यात्नाक একত্ৰিত হট্য়া ব্ৰহ্মানন্দ ৰূপ স্বৰ্গীয় আ-লোক সামাদের প্রতি জনের আত্মাকে আলোকিত করক।

ত্রাক্ষগণ। বিবেচনা করিয়া দেখ, ত্রাক্ষ-ধর্মকে কি আমরা হাদরের ধর্ম করিতে পারি-রাছি । যদি করিয়া থাকি, তবে কেন আমরা

দান হান ভাবে মুফ্যান রহিয়াছি? কেন আমাদের জীবনে সে ধর্ম প্রতিভাত হয় না : ক্নে আমরা ঈশেরের নাম করিয়া দেশে দেশে তাহা প্রচার করিতে উদাত নহি। यि ति भन्ने जाभारमत ऋगर्शत जिथियोगी হয়, তবে কি আমরা মৌন থাকিতে পারি : যদি আমাদের আহা ঈশ্বরের ভাবের ভারুক হয়, ভবে কি বাকোর অভাব থাকে— না সাধনের অভাব থাকে? রসনা আপনা व्हेट इहे तम नाम घारत घारत अठात कृतिक প্রবৃত্ত হয়। কেন আমরা ধর্মযুক্তে বিমুধ : কেন সত্য প্রচারে অফ্যাঃ তাহার কারণ **ब**े, आंगारमंत्र यञ्ज नाई, উৎসাह नाई। ए उदमा मधल क्रिया चानिम वोक्रभन अ. श्रमादमत धर्म दिन विद्यार क्षा कित লেন.মুসলমানের। ইউরোপ খণ্ডে ও পৃথিবীর **अन्याना छात्न न्यलगान धर्म छापन कति-**्रात्ने त्र छेश्यारम् लक्ष्यं क्रिया अकाश्याः আমাদের নাই। আমরা ত্রান্ধবর্মকে কেবল মুখের ধর্ম করিয়। রাখিয়াছি। অন্য কথা দূরে থাকুক, আমরা অনেকে সেই পবিত্র ধর্ম

নার পরিবারের মধ্যে আনিতে ও বিমুখ।

ত্র' যে সুখ ছুংখ ভাগিনী চির সন্ধিনী, তাহাকেও কি প্রতি ত্রাক্ষ এই উচ্চ ধর্মের
সহপ্রিণী করিতে যত্ত্বান্ ? ত্রাক্ষধর্মে এমন
কোন কঠোর আদেশ নাই, নিষ্ঠুর নিয়ম
নাই, যে ত্রালোকেরা সে ধর্মের অধিকারী
নহে। ঈশ্বরের ধর্ম—ঈশ্বরের শাস্ত্র ত্রী
পুরুষ উভযের জন্য নির নারী তাঁহার
পুক্র উভযের জন্য নির নারী তাঁহার
পুক্র উভযের জন্য কিয় যে ত্রাক্ষধর্ম
অনেকাংশে কেবল মৌথিক ধর্ম—লৌকিক ধর্ম হইয়া রহিয়াছে। ত্রাক্ষগণ!
এ কলক তোমরা অপনোদন কর। তোমাদের জীবন ও চরিত্রে যেন এ ধর্ম প্রকাশ
পার। ইছা দেশে দেশে প্রচার করিতে

বাহির হও। এক ঈশ্বরের নাম সর্ব্ত ঘোষণা কর। এই মহানু কার্গ্যে যেন ভোষ্যদির শরীর মন, অভেদা সঙ্কপে, অটল উৎসাহ নিয়োজিত হয়। সত্যের জন্য শ্রম ও কর্ম স্বীকার কর, ধর্ম ও ভক্তি মার্গে আতা সমর্গণ কর। মনে রেখ যে ধর্ম প্রচারের প্রধান উদ্দেশ্য ও লক্ষ্য চরিত্র শোধন, কথাজ্ঞ দৃষ্টীন্তে বিপ্রথামী-দিগকে পুণ্য পথে আকর্ষণ কর। সাধু দৃকীন্ত ভিন্ন অধর্ম ও কুসংস্কারকে পরাস্ত করা যার না। রুমনা অংপক্ষা ভোমাদের জীবন যেন ত্রাহ্মধর্ম্মের মহিমা প্রচার করে। যে ধর্ম ভোমাদের জীবন পথের নেতা, ভাষা যেন তোমাদের জী পুজ পরিবার মধ্যে প্রবিষ্ঠ হয়। অর্দ্ধ অঙ্গ অবশ- অর্দ্ধ অঙ্গ কর্মাক্ষম থাকিলে কি সংসারের কর্মা নির্মাহ করা যায় : ভর্ত্তা ব্রাহ্ম, স্ত্রী পৌত্তলিক, পুক্ত ত্রাক্ষা, কন্যা পৌত্তলিক, পরির'রের এক অঞ্চ জ্ঞান ধর্মে বিভূষিত, ভাগর ও শ্রেষ্ঠ অঙ্গ অজ্ঞান তিমিরে আর্ড. এ কি বিষ্ম কথা! এৰপ হইলে মত ও আচ-तरन, विश्वाम ७ अनुष्ठीत्न भिल थाकिवात कि मस्रोवना । मूर्य ७क. कार्र्या अक. এৰপ হইলে কোন্ মুখে ব্ৰাহ্ম বলিয়া আপ-नांदक পরিচয় দিবে ? कि विलया ঈश्देश निक्छे जालनारक निज्ञलायी व्राथितः অতএব আমার নিবেদন এই ব্রাহ্মধর্মকে क्वित मुर्गत धर्म नरह इम्रात धर्म कत। ধর্ম সাধনের জনা আপনাকে অসহায় মনে क्रिं बा, क्रेश्वत निष्य आगारमत नश्वा । তার প্রসাদে যে ছর্বল সে সবল, যে ভারু সে অভয় হয়। "ছুর্বল সবল ভীয় অভয় অনাথ গতিহীন হয় সনাথ, সেই প্রেমশশী যবে মধুবরষে সাধুর হৃদরাধারে"।

সেই ঈশরকে প্রত্যক্ষ কর। এই পুষ্পমালা-দীপমালার মধ্যে সেই নিষ্কুলঙ্ক ক্যোতি স্বৰ-

পকে হৃদয়ে স্থান দাও। হিল্ফুজাতির বিশেষ গৌরব এই যে সকল কর্মের আদি অন্ত মধ্যে দাঁচারা ঈশ্বকে স্থাপন করেন—কল কর্ম তবে যাঁহার লাঁহাতেই সমর্পণ করেন। আরাধনার জন্য আমরা এখানে সন্মিলিত হইয়াছি, তাঁহার দশন বিনা খুনা হত্তে कितिया या अया कि आभारमत छेहिन ? यमि विशादन कह वयन जागानान् शादनन, यिनि প্রিয়ত্ম ঈশরকে হৃদয়াসনে আসীন করিতে পারিয়াছেন, তিনি যেন এই ফণিক দর্শনেই ারিভুপ্ত না থাকেন। প্রতিদিন ঈশরকে व्यार्थना कदित्व ।— मिन मिन धर्माटक भूट्या-তে প্রিত্তাতে জাল্লাকে পোষণ করিতে হুট্রে: মন যেন নিরন্তর সত্যের পিপা**সু** ৺ংকেং—ইচ্চার গতি যেন নিরন্তর ধর্মের দিকে প্রবাহিত হয়। আত্মা যে**ন নিরন্ত**র क्रेश्टबर याजियुगीन इस । अब्रे फुक्श, अरे গতি, এই ভাষ, যাগতে চিরস্থায়ী হয়, প্রাণ-গণে সেই প্রকার যত্ন কর। **জীবনন্ত্রোত** পুণা ক্ষেত্ৰে সহজে স্থাভাবিক ভাবে বহমান কর, চরিত্র পবিত্র হর, বিসদ্ আত্মপ্রসাদ অংখাকে উত্থল রাথে—সম্পদ বিপদ সকল সময়ে হৃদয় মন ঈশরে নিহিত থাকে, ভাহার कना एक कत, ८० छै। कत, थार्थन। कत। ज्ञेश्वत হইতে অহরহ বল চাও, জ্ঞান চাও, জীবন চাও। তিনি রূপ। করিয়া যে সুধা প্রেরণ করিবেন, তাহা পান কর। অহনিশি ত তিনি আমাদের সঙ্গে সঙ্গে রহিয়াছেন, প্রতি দিন প্রতি মূহূর্ত্ত তিনি তাঁহার করণায়ত বর্ষণ ক্রিতেছেন,আমাদের কুদ্র হৃদয় তাহা সকল সময়ে ধারণ করিতে পারে না। সে অমৃত ষ্ঠন হৃদয়ে উপলক্ষি হয়, তাহা যেন এত প্রচুরক্রপে পান করি যে, আজীবন তাহা আমাদিগকে পুষ্ট ও উন্নত রাখিতে পারে। নীচ চিন্তা, মলিন ভাব, বিষয় কামনা পরিহার ক্রিয়া এস আজ আমরা সেই ভূমানন্দে—

সেই প্রেমাননে মগ্ন হই। সেই প্রেমায়ত এত প্রচুরৰূপে পান করি যে সম্বৎসর কাল তাহা আমাদিগকে জীবিত রাথে। উত্থান কর, জাগ্রত হও, হৃদয় দার খুলিয়া দেও. মানদ-পদ্ম বিকশিত কর। তাঁহার করুণাবাত সেবন করিয়া সুস্থ ও সবল হও। माधु मक्षण कतिरुष्ठ, कला छोड़ा छेल्छन করিওনা: অদ্য যে উন্নত ভাবের আবিভাব ब्बेश क्रमग्राक छेरछिक कतिरहरू, बना তাহার অভাবে বিপথগামী হইও না। অদা যে সাধু ইচ্ছা আয়েকে পুণ কেতে উপনীত করিতেছে, কল্য ভাগার বিরুদ্ধ আচরণ করিত ञ्चाब क्यून बाज य नीज वामारमत श्रुपर्य निकिश्व हरेट्य, छोटा जीवांत व्यनातन কালেতে সারবান্ রুক্ষ হইয়া ফল ফুল পুলে আমাদের জীবন উদ্যানকে সুশোভিত করে!

ঈশর আমাদের দেবতা। দেই একের উপাসক। সেই দেশ কালের অতীতকে আমর। সীমাবদ্ধ করিয়া পূজ: করি না। সেই একমেবাদ্বিতীয়ং ভিন্ন কোন পরিমিত দেবতার নিকট আমরা নতশির হই না। তিনি ভিন্ন আর কেল আমাদের আরাধনার পাত্র নহে, পূজার থোগা নহে। যেমন কাষ্ঠ পাষাণ পুত্তলিকা আমরা পূজা করি না,তেমনি আর এক প্রকার যে ভয়ানক পৌত্তলিকতা আছে, তাহা হইতেও যেন আ-মরা বিরত হই; কোন মনুঘ্যকে দেবৰূপে কণ্পিত করিয়া যেন পূজা নাকরি। ধর্মের লোকেরা ঈশরের সাক্ষাৎ ভদন পুজনে আপনাদিগকে অসমর্থ জ্ঞান করিয়া কোন মনুষ্যের আতায় গ্রহণ করে, ঈশরের श्रांत व्यथेव। क्रेश्वेदतंत वावधातन मनुषातक দণ্ডায়মান করে, মনুষাকে পাপীর গতি ত্রাণ-কর্ত্তা রূপে আরাধনা করে, আমরা সে ধর্মের বিরোধী। কাজ নাই সে গুরুর আতায়ে, यिनि ने भरतत नामक्रल आगारमत क्रमंत

মন কাড়িয়া লন, ঘাঁছার উপদেশ বাক্য সেই পরম গুরুর সাক্ষাৎ উপদেশের প্রতি আমা-रनत रूर्ग विवित कतिया तारथ, याँशा**रक** जान व्यत्रुष्टत्रवर्श श्रेश्वरत्रत्र शदम व्याक्षण कृतिश वे-শিক মান অর্পণ করে। যে কোন গুরু ঈশ্বরের সাকাৎ দর্শন জ্ইচে আমাদের নয়ন জাক-र्यंग करतन, या व्यान धर्माजानकातो छेशरमधी भाषात गर्या नेगरतत नाकार छेन्रान হইতে আবণকে আকর্ষণ করেন; তিনি প্রকৃত **७**क्र--- श्रक्र छेशरमची नरस्य। हिनि वरलन, आिय जागानिशंदक श्रदंश शृश अनर्भन क्तिटण्डि, अस्थित्वत्र भट्ध लहेशा यांग्टण्डि, কিছ ৰাশুবিক আমাদের হৃদয়কে এক প্রকার পৌজলিকতা হইতে মুক্ত করিয়া অনাধিধ-বোর পৌ**ত্তলিকতা শৃশ্বলে** আবন্ধ করিতে-शांषां भूखनीटक गृह इहेट महत्व দূর করা যায়, কিন্তু অন্য প্রকার পৌত্তলিক-**छात अधीनका इरेटक मृक्क इंड्रा महक नटः।** अङ्ख्य नावधान एम क्रेस्टइत छाटन मनू-गारक जाशन कतिया आभारतीत छेक्र जाम-र्न(ह होन ও क्लकिए ना कति। আৰার হল অপেকা ভৃতীয় প্রকার আরো ভয়-হর পৌত্তলিকত: আছে। দে কি না আপ-न कि भूका कहा, जाभनात खन्तित कान क्ष कारवत निक्छे मछक अवस्ट कता। কেহ স্বার্থপরভার নিক্ট সর্ব্য বলি দিতে কেছ ধন লালসা, কেছ লোক ইপুত। প্রিয়তা, কেচ যান, কেচ্ যুশ, কেচ্ নাম, কেচ্ काम, এই क्रम अक अक श्रूज़िनी माजारेहा কৃদ্বে স্থান দেয়, ভাগার নিতায় আন্ধীন একান্ত को छ माम। कागता जाना करेबा যেন বাহ্মিক আধ্যাত্মিক সকল প্রকার পৌত্তলিকতা হইতে দুরে থাকি। সৃষ্ট পদা-র্থকে প্রকার যোগ্য পূজা অর্চনার পাত্র না कतिः भनुषादक अव्यद्भव तिश्हानत्व अधिकृ না করি; ঈশ্বর ভিন্ন কোন পরিমিত পদার্থ

यम आमोरनत क्रमग्र निश्शंमन अधिकात করিতে না, পারে। **टमरे न**गींस जात्वत निक्रे प्रकेल मर्खा शार्थिव ভाव (यन ভन्मो-**जूड हरां। जामारमंत्र छक्ति श्रीटि श्**नग्र यन महे একের शक्ति मपर्लिए इस् । चर्गीय श्रमाम राम कीवत्नत अभ हत । तमहे শূর্ণীয় বারি যেন আমাদের পানীয় হয়, পৃথি-বীর মলিন পঞ্চিল জলে যেন আমরা ভৃষ্ণা मिनात्रंग ना कृति। आयता एपन भुकु कर्छ বলিতে পারি, তদেতৎ প্রেয়ঃপুতাৎ প্রেয়ো-(अ) सामान मर्स्यामग्रह छतः যদামাত্মা।" সেই যে অন্তর্ভর প্রশারা তিনি পুতা হইতে প্রির, বিত্ত চইতে প্রির, **আ**র আর তাবং বস্তু হউতে প্রিয়। আমর: त्यन जन्मवाणिनी रेमरकश्चेत्र क्यात पर्यास्त्र आर्थी हरे, ७ स्वन ऋगतात मञ्ज विल्एट পারি " যেনাহং নামূতা স্যাং কিম্হং তেন কুৰ্যাং " যাহাতে অমৃত না হই তাহা লইয়া कि कविव । "मा स्थातां है रेमटबंधी," रेमटबंधी काँशांत सामी पाछ्डवनकारक क्रिडकामः कर्तिः लम " यहू म देश उद्योध मर्जा भृषिवी वि-ব্ৰেন পূৰ্ণা স্যাৎ স্যান্তং তেনামূতাংকো" यनि अहे मग्रमाग्न विख्नभूनं भृथियो आगात হয়. তাহাতে কি আমি অমৃত হই ৷ "নেতি **व्यक्ति क्रिकार वास्क्रवस्काः,"** योड्डवस्का विन-त्मन, ना मा, "यटेश्रटवाशकत्रगवजार क्रोविज्र তথৈব তে জীবিতং সাংহ অমৃতজ্মাতু না-শান্তি বিত্তেনেতি" যেমন সাধারণ উপ-করণ বিশিষ্ট দিগের জীবিত তোমারও সেই ৰূপ হইবে কিন্তু বিজ ছারা অসূহত্ত্বর আশা नारे। "मा स्थापा देवरवारी," रेमरवारी विन-লেন 'ৰে নাৰ্থ নাস্তা স্যাং কিম্ছং তেন কুৰ্য্যাং" যাহাতে আমি অমৃত না হই, তাহা लहेबा कि कतिव? आंगारणत किन्न विवन যেন এই মধুমর গীত গান করে "যেনাহং ना मुका मारि कियहर एवकूर्या १।" এই পृथि-

বীর ধন মান সুখ ঐশ্বর্যা কি ? আমরা তাগতে মুগ্ধ হই সতা বটে, কিন্তু একটুকু বিবেচনা করিয়া দেখ, নির্জ্জনে আর্থাকে জিজাসা কর, ঐচিক সুখে সার আঁছে কি না > তবে এখনি আত্মা হইতে সায় পাইবে "যেনাছং নামূতা স্যাং কিমছং তেন কুৰ্যাাং" সংসার ত অ্সার, দেহ ত অংণভঙ্গুর. আজ আছে কাল নাই, পৃথিবীর ধূলি পৃথিবীতেই মিপ্রিড इইবে। ধন মান লইয়া—ঐহিক দুগ লইয়া কি করিব 🔻 আমাদের আশা-লতা কি এই স°সারকে আগ্রন্ন করিয়। ভৃপ্তি লাভ করিতে পারে? আমরা দেই অয়ত নিকেত্নের যাত্রী। আমরা সংসার হইতে অবসূত চট্য়া কোথায় ঘাইব, তাহা জানি শ্বনের কোন রাজা, অয়ত ধামের কোন্ গৃহ আলাদের জনা সভিন্ত হ**ইবে** ভাহা ক নি ন , কিন্দু টছা জানি যে আমরা ঈশ-ত্র নিকটেই পদন করিব-**—আমাদের** খাল উন্নতি হইতে উন্নতির সোপা**নে আ**-্রান্থ করিবে। ইন্ জানি যে আসর। শ্লারই রাজ্যের প্রজা, সেই প্রম পিতার পুত্র, প্রার ঐশর্মোর অধিকারী, তাঁহার দ্যা ও ব্যংসলা, স্নেম্ ও প্রেমের পা**ত্র চির** কলেই থাকিব।

কে পর্মান্তন্। তুমি আমাদের জীবন
সহায়, সকল সুখ কারণ, সকল ছংখ নিবারণ। পর্লত সমান বিশ্ব রাশির মধ্যে তুমি
আমাদের জাণকর্তা। ছংখ ছুর্গতি পাপ
প্রলোভনের মধ্য দিরা তুমি আমাদিগকে
তোমার পুণ্য পথে লইয়া যাও। যে কোন
অবস্থায় থাকি, যে কোন ঘটনার মধ্যে পড়ি,
সকল সময়ে উন্নত মস্তক হইয়া যেন তোমার
প্রতি অচল মতি—অটল বিশ্বাস স্থাপন করিতে পারি। তোমাকে ছাড়িয়া আমাদের
তাণ নাই,শান্তি নাই। তুমি এক প্রণ্ব নায়ক,
তুমি আমাদের পিতা। যেন পাপে মলিন

হইয়া তোমার রূপার অযোগ্য না হ০ আমরা কথনই তোমার যোগা পুত্র নহি. তাহা জানি; পদে পদে তোমার নিকট অপরাধী হই, তোমার উপদেশ শুনিয়াও শুনি না, তোমার ধর্ম নিয়ম অতিক্রম করিয়া অপথে পদার্পণ করি। কি সাহসে **छापात मण्यीन इहेव?—कि माहरम स्म**हे অটল বিমল জ্যোতির প্রতি এই ছুর্বল মন-আঁথি উদ্মালন করিব : আমার আপনার ত किहूर वह नारे. मात्र नारे। मकलि हीन मलिन मान कुर्मनाशन। ভোষার রূপা— তোমার করুনার উপরেই সকল নির্ভর। তুমি যদি নিজ গুণে পাপীকে পরিতাণ কর. তবে তরিয়া যাইবে। তুমি আমাদের সলার मण्याखि, চিরকালের महल। आंगांत्रिकारक तका कत्। "अमध इट्रेट मरठार्ट ल्हेश যাও, অন্ধকার হইতে জ্যোতিতে লইয়া যাও. रृजा इहेट अन्टिट लहेशा या । " 🕫 সুহৃৎ! তোমা ভিন্ন আর গতি নাই। তো-মাতেই আঘাদের হৃদয় মন সকলি সমর্পণ ভোমার চরণ ছারাতে আমর। করিতেছি। সুখ স্বচ্ছন্দে শান্তি আরামে বাস করিব। যদি-ও ছুংখ ক্লেশ পাপ তাপ ঘোর অন্ধকারে আমরা আর্ত, তরু তোমাতে সম্পূণ বিশ্বাদ ও নির্ভর করিতেছি। তোগার ভূবন বিজয়ী নাম লইয়া আমরা সভ্যবর্ম প্রচার করিব ৷ তোমার অক্ষয় কবচে আরুত হইরা সংসা-রের বিভীষিকা অভিক্রম করিব। ভোমার রুপা গুণে প্রমার্থ লাভ করিয়া অ**স্**ত रुश्व ।

পরি অপরাজিত দিব্য কবচ তব, অক্ষত রিপর আহারে: তব করুণা তরি করি অবলম্বন বাব ভবাবৰ গাবে জীবন সঁপিয়ে গোনার পদে প্রাভু নিভাগ হইব স্থা বত , মন্ত্রক কার্য্য তোনার সমাপিষে, দহক্ষে তারিব এই দেবে :

।ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

শ্রীযুক্ত ধিজেক্সনাথ ঠাকুরের বক্তমূতা।

রক্ষইব জ্বন্ধো দিবি ভিষ্ঠত্যেকজ্বেনেদং পূর্ব্ব পুরুষেণ সর্বাং ।

এক সেই প্রমান্তা রুফের নাায় স্তব্ধ রপে মহিমান্তিত আকাশে স্থিতি করিতেছেন, चात ममल्हरे (महे भून भूक्य बाता भून तहि-য়াছে। **রুকের মন্তকে ক্ষন্তে হতে বাছতে** রাশি রাশি ভার সকল সম্বন্ধ হইয়া রহি-धारङ, जबर अभीतरनंत्र अरकारु हिस्सारन নিয়ত দোজুলামান হইতেছে, তথাপি রুফ সয়ং স্তন্ধ ৰূপে দণ্ডায়মান রহিয়া সমস্ত ভার क्षकाकी दर्भ क्रिएडएए। आभन्ना यपि किक्षिष् अनिधान कतिया एमचि, जटव कि শাখা কি প্রশাখা, কি পল্লব কি পুষ্পা, রক্ষের যে কোন অবয়ব আগাদের দৃষ্টিতে পতিত হা, হাহাতেই আমরা রুক্ষকে মুর্ভিয়ান লৈখিতে পাই। প্ৰশাখা **যুক্ত শাখা দেখিলে.** ध्यय युक्क श्रमांथा प्रिथितन, माथायमान भिता गर्यु**ङ भल्ल पिरिल, मल প्रतिक्**म भन्युक भूष्म पिशित्स, गर्शामाथा भन्युक সেই এক রুকেরই ভাব আমাদের মনে **জা**গ-নক হয়:--শাখাতে প্রশাখাতে পরবে পুষ্পে সকলেতেই আমরা রুকের অভিজ্ঞান চিহ্ন সুস্পষ্ট অকরে মুদ্রিত দেখিতে পাই। নানা শাখা যেমন একই রুকের সাক্ষা প্রদান करतः (सरे क्य नमन्त्र मृक्ति (मरे वकरे पद-মেশ্বরের সাক্ষা প্রদান কুরিভেছে। এক মুণ্ট মধ্যস্থলে বর্ত্তমান ধাকিয়া নানা গ্রহ উপগ্রহকে যথা নিয়মে চক্রিত করিভেছে, ইহাতে আমরা এ**কই ঈশ্**রের **আধিপত্য** মুর্তিমান দেখিতেছি; তেমনি আবার এক हक चित्र करन पशासमान शाकिया नाना শাখা প্রশাখা পল্লব পুষ্পকে প্রাণ ও সৌ-শর্মে পরিপূর্ণ করিতেছে, ইহা হইতে ভাব গ্রহণ করিয়া আমরা একই অচ্যুত পুরুষের অক্ষয় ভাগোর বর্ষ জগতে অবারিত দেখি-তেছি। তিনি স্তক্ক ভাবে দগুরমান থাকা-তেই प्रता स्था छेमशास इहेट छेट है, कीव कह मक्षत्र कतिराज्य, वाश्च ध्यवाहिष्ठ इहेरण्रह, এবং মনুষা অস্তের পুত্র হইয়া সর্বোপরি উত্থান করত নানা অবস্থার মধ্য দিয়া অমৃত ধামের দিকে মিলিয়া চলিতেছে। আপাততঃ মনে হইতে পারে যে, এই বিশাল জগতের সর্বতাই যথন পরিবর্তন আপন সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত করিয়া রহিয়াছে, তথন জগতের কর্তা যিনি তিনিও পরিবর্তনের বশবর্তী, কিন্ত এ হথা আশকা, না পরীকাতে ন। যুক্তিতে না জ্ঞানেতে কিছুতেই পোৰকতা পায় না—এ আশকা নিতাতই অমূলক। পরীক্ষাতে দেখা যায় যে সেনাপতি অটল না থাকিলে সেনা বিশৃত্বল হইয়া যায়, স্বৰ্যা একটুকু স্থান ভ্ৰম্য হইলে গ্ৰহ উপগ্ৰহে মহোৎপাত উপস্থিত হয়, বৃক্ষ স্থান চুতে হইলে শাখা পত্র শুক্ত হইয়া বিনষ্ট হয়। युक्तिएंड दनशा यात्र त्य, यथन এकि नामाना कार्या मुक्तत्र कर्प निर्दार कतिए बरेला करु ধৈৰ্য্য, কত সহিষ্কুতা, কত অটল ভাব আৰ-শ্যক হয়, তথন যিনি অসীম জগতের কার্য্য একাকী নির্বাহ করিতেছেন, তাঁচার তুলা **অটল আর কে হইতে পারে? ভিনি একে-**বারেই অপরিবর্ডনীয়। জ্ঞানেতে দেখা যায় যে, যিনি মূলাধার তাঁহাতে লেশ মাত্রও পরিবর্ত্তন সম্ভবে না। মন প্রতি-নিয়ন্ত পরিবর্ত্তিত হইতেছে, শরীর প্রতি-নিয়ত পরিবর্ত্তিত হইতেছে, কিন্তু তথাপি যে আমি कला हिलाय, त्यरे षामि षमा षाहि. এरे ৰূপ জানেতে এক দিকে উপলব্ধি হইতেছে যে পরিমিত আত্মা যে জীবাত্মা তাহা পরি-মিত সময়ের মধ্যে অপরিবর্ত্তনীয়: অন্য দিকে উপলব্ধি হইতেছে যে, অপরিমিত আত্মা যে পরমান্মা তিনি অপরিমিত অনাদানস্ত সমরের মধ্যে অপরিবর্তনীর। কিন্তু পরমান্মা
অপরিবর্তনীর বলিয়া তিনি উদাদীন নহেন,
সমুদায় জগৎকে তিনি প্রাণ ধন জীবন
সূথে এবং আত্মাকে অনন্ত জীবনের স্থানস্ত
সূথের ভরষাতে পরিপূর্ণ করিয়া রাখিয়াচ্ছেম।

তিনি আপনার অয়ত জোতি যারা আমাদের আত্মার সকল অন্ধকার অপহয়ণ করত, তাহাকে ডুংধের মধ্যে সুখে, বিপদের म्रास्या मण्डातम, कृत्लादकत मृत्या क्रात्लादक অতি য়ত্নে রক্ষা করিতেছেন। "রুক্ষই**ব স্তব্যো**" এই বাকা বলিয়াই ফান্ত হওয়া যায় না, প্রকণেই রুষনাতে আদিয়া উদিত হয় যে 'লেনেদং পূৰ্ণং পুরুষেণ সর্বং ।" তিনি অটল দুস্স পাজিয়া যে কোথাও কোন যত্নের বা ্বা ক্রিয়াক শহাব পুরণের অবশিষ্ঠ রাখিলাছেন এমন নছে, তি**নি সমুদা**য়ের মনো অপেনি দাকাং বৰ্তদান বাকিয়া **সমু**-দ্য় কার্যোর মধ্যে হৃদয় প্রদান করত সমুদা-প্রেট্ সজীব ক্রিরা বাখিরাছেন। তিনি इक दीन क्षानुत्रक्थ जुगाकाम्टन बाक्।-দিত করিয়া রাধিরাছেন, একটি কুত মধু-গাক্ষকাকেও অস্ত্র শস্ত্র আবাস পরিচ্চদে মন্তু করিয়াছেন। ভাঁহার বিরচিত পুষ্পের রচনা-পারিপাটা দেখিলে যত্ন যে কাহাকে বলে, ভাহা আমরা নয়ন দ্বারা প্রভাক্ষ অব-लाकन कतिए शांति। ब्रीमोन्मर्ग पाता. অন্ন পান দারা, জ্ঞান ধর্ম দারা, এবং আপ-নার প্রেম-পূর্ণ অধিষ্ঠান দ্বারা তিনি জগৎ সংসার পূর্ণ করিয়াছেন। এক কথা এই যে, ভিনি শ্বয়ং সর্বৃত্ত অন্তরে বাহে সকল স্থানে বর্ত্তমান রহিয়াছেন, কেবল বর্ত্তমান নহেন, তিনি দীপামান রহিয়াছেন, ছালোক ও ভূমেনাক তাঁহার দারা আলে:কিত রহি-য়াছে। তিনি কেবল দীপাদান নহেন তিনি

প্রেমায়তে পরিক্ষীত হইয়া সর্ব জগতে উচ্ছুসিত হইতেছেন; সেই অটল প্রেমানাগর শতধা সহস্রধা হইয়া সকল দেশের সকল কালের সকল ব্যক্তির সকল অভাব একাকী পূরণ করিতেছেন কিন্তু তথাপি তিনি আপনার লোকাতীত অচ্যুত পদবী হইতে একটুকুও বিচলিত হইতেছেন না, তিনি রক্ষের নাায় শুক কপে আপন মহিন্দাতে স্থিতি করিতেছেন।

(ह भड़गाञ्चन् ! আমারদের অন্তরে ধৈষ্য যথন বিষয়-বাভাঘাতে প্রকম্পিত হয়, তথন জুবি তোম'র অপ্রতিহত আদর্শ দেখাইয়া আমাদের ধৈর্যাকে অটল করিও। जामता मन्तरमत मभरत मूर्य घरेपर्या हरू, विश्रामत मगत छत स्थातक अरेवर्धा इहे, ক্ত সময়ে আমর। পথ হারা পথিকের ন্যার বিভ্রান্ত হইয়া চতুর্দ্দিক নিরীক্ষণ কয়ি, দে সময়ে তুমিই এক মাত অটল কাভারী। সং সারের তুমুল সাগরে দেহ মনের উপর দিয়া কত শত ভীষণ তরঙ্গ চলিয়া যায়, কিন্তু তোমার করুণ। কখনই চলিয়া যায় না। তোমার সেহমর অধুলি দিক্ শলাকার নায়ে অটল রহিয়া আমারদিগকে নিয়ত পথ প্রদর্শন করিতেছে, তোমার হস্ত আমাদি-গকে নিয়ত অভয় দান করিতেছে, ভোমার মলল মূর্ত্তি প্রব তারার ন্যায় আমাদের নয়ন মনে নিয়তই আশা রশ্মির সঞার করিতেছে। আমারদের শ্রদা ও ভক্তি যেন ভোমার প্রতি অবাত-কশিত দাপ শিখার नााय जातेन थाटक, এই माज आमारनज প্রার্থনা।

ওঁ একমেবাদিভীয়ং।

PROFESSOR MAX MULLER'S OPINION.

"I have no besitation in saying that the Brahmo Marriage such as I know it would be a valid marriage according to the spirit of ancient law of India, nor have I any doubt that modern Legislation can regard marriage only in the light of a civil contract leaving the retogious ceremonies if any to be settled by the contracting parties.

Yours Faithfully Max Muller.

Oxford Occomber 10, 1871 "

ব্রন্ধ-সঙ্গীত।

ব্রাগিনী বেছাগ—ভাল ফ্রাপভাল।

মঙ্গল নিদান, বিদ্নের কুপাণ, মুক্তির সোপান, অন্তেক্ত । সংসার ছুদ্দিন, শান্তি-ফুর্যা হীন, কাটি দেয় দিন, অন্য কেবা ।

গৃথে ক্লেশ ভাব, পর্বন্ধ আকার, করে পরিশার অন্য কেবা। কারে ডাকি আর, যাই কার দ্বার, সমায় আমার অন্য কেবা।

अधिनी क्य क्यती -- जान अभिकात ।

ইছা হয় সর্ব ভুলে ছাড়ি মোহ কোলা-হলে, পুজি নিতা শান্ত মনে ক্লাংশ ক্লা-সনে।

ফেলি তব প্রেমনীরে মিশ্ব করি দীপ্ত শিবে, তালি অশ্রু পূত পদে তুপ্ত করি তপ্ত হুদে।

ত্র প্রীভিকর জেনে সাধি কার্য্য প্রাণ-প্রে. তব হস্ত সমপ্রেণ সফল করি জীবনে।

জগৎ পাল জগন্যক তক্ত বাঞ্চা কণ্প-১ন, রাখি তব পুলা পথে পুর ভক্ত মনো-রাগ। রাণিণী হৈত্রব—ভাল চৌভাল।
(মোর) **ত্থ-নিশা** প্রভাত কর হে তুরিত-নাশন, তার এ অকুল পাথার।

বিরাজি হৃদয় মাঝে, মলিনতা পাপ তাপু-হর, হে দয়াল, হে রূপার আধার।

এসেছি প্রভু হে তোমার অভয় দার. ফিরায়োনা দীনে না দিয়ে দরশশন ,— পূর ভক্ত-মনস্কাম।

নাহি সহায় লোকে তোমা বিনা : তুমি এক মাত্র সহায় সমল মোর—সঙ্গী সুখে তুখে. অগধার-মিহির দারিত্রা-ভঞ্জন, অন্ন ধন স্থ সম্পদ কারণ।

বিজ্ঞাপন।

আগামী গদান্তন রবিবার প্রাতংকালে আদি ব্রাফ্সমাজের মাসিক ব্রাক্ষনমাজ হইবে

ব্রশজান প্রতিপাদক শাস্ত্র ও যুক্তি অবলয়ন করিয়া সাধারণ লোককে ত্রাজাবত উপদেশ প্রদান করিবার জন্য ব্রাজাবত ব্যোধিনী সভা নামে এক সভা আদি ত্রাজ সমাজের ব্রাক্ষাদিগের দারা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে আগামী ১৮ কান্তেন রবিবার ছুই প্রহর চারি ঘণ্টার সময় আদি ব্রাক্ষাসমাজের কিন্তীরতন গৃহে ঐ সভার অধিবেশন হইবে, সভা মহান শারেয়া তথকালে তথার উপস্থিত থাকিবেন

> শি জ্যোতিরিজ্রনাথ ঠাকুর শ্রী নবগোপাল মিত্র সংখাদক

আগামী ১৩ ফাজ্মন শনিবার লেরতল: একাদশ সায়**ৎস**রিক **ত্রাক্ষসমাজ** হইবে, ত্রাক্ষ মহাশয়েরা সমাজ মন্দিরে উপস্থিত হইয়া ত্রকোপাসনা করিবেন ইতি।

> **এ উমাচ**রণ চট্টোপাধ্যায়। সম্পাদক।

मध्य १०२७। दिनिश्वांक ४०१२। १ कोल स्रम (म्।मबाद।



্রক্ষর এক নিদ্ম প্রজ্ঞাণী কাণা কি কাণাধী বিদিশ্ব সংক্ষম হৈ জংগ তেনে গ্রেডণে কান্ম নত্ত শিন্ত প্রজ্ঞান্তির নতামক নে বাহি তীবং সংক্ষর গোপি সংক্ষিতি প্রক্ষা শ্বাস কারিও সংক্ষিত্র কি জ্ঞান্ত পূর্ম প্রতিমনিতি । এক সং ত সৈয়ে বাপাস নথ পার্ক্তিক নৈহিক কাশ্য ভঙ্কতি । তাকান্তাী ভিতাস্য ক্রিমক নিয়েশন কাত সুপাস নহমৰ।

धर्मा इस्ट्रांत मृत्रा

मत्यामः श्रमाकार मुर्थाभी मश्राटन ज्वा

প্রমেশ্ব সুষী করিবার করুণাম্য িবিত্তই আমানিগাকে দুটি করিয়াছেন; আমাদিগের মঞ্জ দাবনট তাঁহার সৃষ্টির धार्याञ छएक्या। ७३ भृथिवीर्ड दक्ना मूर्थी हर्हेर बामना करव । मुखन खुक्ल श्रुद्रमञ्जू करे वामनाप्ति आभारमञ्जू अन्द-বের গভার প্রদেশে দৃঢ় ৰূপে মুদ্রিত করিয়া नियात्ह्र । ७३ वामनानि जामात्नत मन इंडेट चार्यात नरह। ক্রার উদ্দেশ্য এই যে আমরা এই বাসনাটী দ্বারা উত্তেজিত হইয়া তাঁহার আদিষ্ট প্রকৃত সুখের পথ অম্বেষণ করি।—মঙ্গলের পথ অনুসরণ করি। মঙ্গলের পথই, প্রকৃত সুখের পথ। আমা-দের মঞ্চলের জনা পর্যেশ্বর যে সকল শুভ সঙ্ক পে নিয়ম সংস্থাপন করিয়াছেন, তাহা পালন করিলেই আমরা প্রকৃত ৰূপে সুখী हरेटड शांति। डीहात महल উटफ्का भःमा-धन कतिवात निमिल, आमापिशटक मुर्थहे रुष्ठेक वा कुः ८थे हे एक, अम्माटम हे एक वा বিপ্দেই হউক, যে কোন অবস্থায় তিনি

আমাদিগকে সংস্থাপিত করিবেন, সকল অবস্থাতেই, ওাঁহার মদলময় হস্ত দেখিয়া, আমাদিগকৈ সন্তোষ অবলয়ন করিতে হইবে। সুখ ও চুঃখ উভয়ই ওাঁহার মদল অভিপ্রায় সংসাধনের জনা পর্যায়ক্রমে পর্যটন করিতেছে।

भूरथेत कना मकल भन्याई लालायिंड: किन्द्र होता প্রকৃত সুণের কে পরিচয় পাইয়াছে 🕴 সকল ব্যক্তিই সুথের অন্বেষণ করে, কিন্তু কয় ব্যক্তি প্রক্লত কপে সুখী इहेट अभर्थ इस ? कह त्लाटक मुश्राट्यवरन সমস্ত জীবন ক্ষয় করে, কিন্তু মৃত্যুকাল পর্যাম্ভ হয়তো প্রকৃত সুথের আহাদ প্রাপ্ত रुत ना। याँशिता विषय मुथ्रे मर्च्य জ্ঞান করেন, তাঁলারা একত সুখ লাভে যে বঞ্চিত হইবেন, ভাহার আর কোন সন্দেহ याहाता करे जयाती, कन-जमुत, অনিতা, বিষয় রাশিকে, চিরস্থায়ী জ্ঞান করিয়া, তাহাতেই জ্বয় মন সমপণ করেন, তাঁহারা যে প্রতারিত হইবেন, তাহাতে আর मत्मर न रे।

মন যথন অবাবে, কেবলি সুথ জনক ভাব সকল অনুভব করে, যখন ভাহাতে

ত্রংখ ক্লেশের লেশ যাত্র স্থান পায় না, মনের (महे खदय। ७४म भूर्व मुर्थत खदय।। কিন্তু এই পূর্ণ সুখমরীচিকার প্রতি মনু্যাগণ द्रथा धाविक इसं। ७३ कन-छन्त मश्मादत কেছ्ট অবিক্ষেদে বিষয় জনিত সুখ ভোগ क्तिएड नमर्थ हरसम मा। प्यामता এই मर्गात (मर्टे वाक्तिक मर्ना(शका अधिक मुशी मता করি. য'হার দু'খের পরিমাণ অ'প। আমাদি-গের যেৰূপ ক্ষীণ ও ছুর্বল প্রকৃতি, ভাগতে অবিজ্ঞিন সুখ সম্ভোগ আমাদিগের সভা হয় ऋषंत्र आगापिरशत मध्यत्तत्र क्रमा আমাদিগৈর যে ৰূপ একতি নির্মাণ করিয়া দিরাছেন, অবিচ্ছিন্ন স্থ ভোগ করিলে আমা-দিগের ইন্দ্রিগণ অবসন্ন হইনা পড়ে এবং পুগত ক্রমে ছুংখ কপে পরিবত হয়, আমা-দিগোর সকল অভাব পূর্ব ৪ সকল কামনা চরিতার না করিতে পারিলে আমর। পূর্ণ ৰূপে সৃথা এইতে পারিনা। কিন্তু ঈশর এই পৃথিবীতে একণে আমাদিগকে যেনপ অবস্থার অবস্থাপিত করিয়াছেন, তাহাতে অফাদিগের সকল অভাব, ও সকল কামেন পূর্ণ করিবার উপায় ও ক্ষমতা নাই। সৃতরাং অনিক্ষেদে আমরা কেবলি দৃখ ভোগ করিব, ও ছুংখের তীব্র কশাখাত আমাদের কখনই ণ্ড ক্রিতে গ্টবে না, তক্প আমরা কথন্ট আৰা করিতে গারিনা। ছুর্বল মনুষ্যকে সুখ ও ছু-খ ভিত্তই ভোগে করিতে হয়। डेशिएक हमेल क्रच्छिक्ति जाहात श्रमान আমাদিগতে ভোগ করিটে হইবেক ও ডঃগ উপস্থিত হটলে ভাহাও মনলের জন্য আসি-াড়ে জানিয়া শান্ত চিত্তে তাহা বহন করিছে ছইবে। কিন্তে আমরা গুরুত রূপে সুখী চইতে পারি, কিসে আমাদিগের যথার্থ মঞ্চল হয়, ভাষা মঞ্চলনয় প্রমেশ্বরই জানেন। ন্মামাদিবের যুদ্র বুদ্ধিতে আপাত সুথ-কেই সুখ ও আপাত ছংথকেই ছংথ মনে

কিন্তু মঞ্চনময় ঈশার যে উপায়ে করি। আমাদিগের মলল হইবে, তিনি তাচাই বিধান করেন। যখন আমরা তাঁহার অভীষ্ট কল্যাণময় পথে গমন করি, তথন তিনি সুথ. আত্মপ্রসাদ ও ব্রহ্মানন্দ প্রদান করিয়া আমাদিগকে পুরস্ত করেন এবং যথন তাঁহার মঙ্গলময় আদেশ না শুনিয়া অপথে পদার্পণ করি, তখন তিনি পুনর্বার সৎপথে আনয়ন করিবার নিমিত্ত সুখ ও সম্পত্তি হটতে আমাদিগকে বিচ্তে করেন, তথন আমরা ছুঃথ ও গ্ল'নি ভোগ করিয়া চেতন। লাভ করি: অভএব সুখ ও ছুঃখ সম্পদ ও विराह्म लेक्षित महलभग इस मिथिया, अक्क ও অবিচলিত, ও সম্ভৃষ্ট থাকাই যগার্থ সুখ— এসুখ-রত্ন আমাদিগের ইইড্রেন্কের্ট্র অল. ছরণ করিছে পারে না। কি ধনী কি নিধন, কি পণ্ডিত কি মুর্থ, সন্থোহ ৰূপ বিমল দুখ রত্ন অর্জন করা সকলেরই সাধ্যা-मक्ल ख्रदशांट महुछ शाक्या. क्रमरयतः गास्ति । अ आजात्र आताम तकः। করিতে পারিলেই আমর। সুগী হইতে পারি। কিন্তু এই ৰূপ আৱাম ও শান্তি ধৰ্ম সাধন ভিন্ন আর কিছুতেই অর্জন করা যায় না। পরস্পর বিরোধী, মনের প্রবল রুন্তি সকলের সামঞ্জন্য একমাত্র ধর্মের দারাই রক্ষিত হয়। থম যথন হৃদয়ে রাজা হইয়া, আমাদিগের অন্যান্য বৃত্তি সকলকে নিয়মিত করেন,তথনই হৃদয়ে শান্তি ও আরাম বিরা**জ করে**, তথনই ক্ষদয় প্রকৃত সুখের আস্বাদ পায়। এই ৰূপে দেখা যাইতেছে প্রকৃত সুখ অর্জন করা অনে-কাংশে প্রভ্যেক ব্যক্তির স্বেচ্ছার উপর নির্ভর করে ।

যদি আমারদিগের সুখী হইবার বাসনা থাকে, ভাষা ইইলে যেন আমাদিগের কার্যাকে মঙ্গলের পথে নিয়োগ করি। যদি আমাদিগের সুখী হইবার বাসনা ধাকে,

তাহা হইলে যেন আমাদের স্পৃহা ও ইচ্ছাকে आभारमत चीय चीय व्यवसात व्यम्याती कति। यिन आमानिरशंत मुथी हरेवात वामना थीरक्, তাহা হইলে যেন আমাদিগের মনের লালস। সকল চরিতার্থ না করিয়। পূর্বে আমাদি-গের কর্ত্তবা কর্ম সকল সংসাধন করি। यि आगामिटभत भूशी इछेवात वामना शोटक. ভাহা হইলে যাহা কিছু আমাদিগের নিকট **হইতে এক কালে বল পূৰ্বক অপজ্**ত হুটবে, ছে। যেন এখনি খেছ। পূর্বক পরিতাগে করিতে গ্রন্থত পাকি। যদি আমাদিপের मुना इन्दांत वामना थात्क, लाका क्टेंत्न सन ধ্যের আদেশে সর্বস্থ ত্যাপ করিতেও कुछित मः इहे। यनि जुमानिद्यात मुशी হৰ্ত পূৰ্ণ কৈ প্ৰেম্প ক্ৰিচা হইলে যেন সং-শিলের অভারী বিচিত্র ঘটনা সকলের উপ-রিহ'গে আপনাকে স্থাপন করি : ঘটনা नमूह हरेदा अनस्य विकिस स्थि। यस मः-मार्वेश कर्णात शहेंना मकल न्याचीत क्लारक ক্ষত বিক্ষত করিছে না পারে। मारम ५ तिर्घ। अवसम्बन्धन कति (४ आहु रूपेन বিপদে মুহানান খটতে ন। হয়: কাইবা নাধ-নেও সময় ক্রনয়কে দুঢ় করিয়া থাখি যে আর কথন গাপ জনিত গ্লানি দহা করিতে না হয়। এই কপে অবস্থা আমাদিগের প্রতিকূল क्टेरल ३ व्यामता मुधी क्टेरठ ममर्थ क्टे— এटे একারে আমর। এই কণভঙ্কুর বিষয় রাশির মধ্যে থাকিয়াও এৰূপ নিশাল সুখের আস্বাদ পাই. যে সুথ কিছুচেই ধংস চটবার নচে---কিছুতেই বিচলিত হইবার নচে। এই কপে পামরা বিষয় সকলের মধ্যে থাকিয়া, বিষয় শুর্গ সম্ভোগ করিতে পারি অথচ বিষয় রাশি খামাদিগকে অধিকার করিতে পারে না এবং এই ৰূপে আমরা বুঝিতে পারি। সেই भन्षाहे वाखिविक मूथ ट्यांश करत य खना-ষাদে বিষয় সুখ পরিত্যাগ করিতে সমর্গ হয়।

হে পরমান্তন্। ভোষার এতাই কল্যানকর পথই যে আমাদিগের প্রক্রত সুথের পথ,
তাহা আমাদিগকে শিক্ষা দেও। ভোমার
মঙ্গল স্বৰূপের উপর নিজর করিয়া ঘাহাতে,
সুথে তুংথে সম্পদে বিপদে সকল অবস্থাতেই আমরা অবিচলিত, অকুরা ও প্রকুল
থাকিয়া, শাস্ত চিত্তে তোমার কল্যানময়
আদেশের অনুদর্শ করিতে পারি, এরপ
ধর্ম-বল আমাদের ক্লামে বিধান কর।

देवनाष्ट्रिक गठ।

नेबत क भुक्ति विगय।

গুরু যে অব্যারোপ ও অপবাদ বিবরণ পূর্বক শিষাকে বন্ধ বিদারে উপদেশ দিবেন, मिहे व्यादिवाल ७ जलवाम विवद्ग कि : তাহা এফণে নিৰূপিত ইইতেছে। রোপ ও অপবাদ বিবরণ প্রকাশ করিতে হইলে প্রথমত তাহারদিগের মূলীভূত কার ণের স্বৰূপ নিৰূপণ করা আবেশ্যক, অভএব আদৌ কারণের স্বরূপ প্রতিপন্ন করিতেছি। শামান্যত কারণ ছুই প্রকার: নিমিভ কারণ, ও উপাদান কারণ। কুন্তুকার ও দও চক্র সলিল হুত্র প্রভৃতি ঘটের খে সকল কারণ; অথবা স্বৰ্ণকার ও ভক্তা সন্দংশ অগ্নি প্রভৃতি অলস্কারের যে সকল কারণ, ভাহারদিগের নাম নিষিত্ত কারণ। আর যে কারণ বাতীত कार्या উৎপन्न इस ना, डाइस्त नाग छेशामान কারণ। এই উপাদান কারণটাও আবার छूरे अकात: পतिनामी उपामान कातन, उ বিবর্ত্ত উপাদান কারণ। মৃত্তিকা ঘটের যে কারণ, বা স্বর্গ অলঙ্কারের যে কারণ, অথবা **ত্ত**ন্ধ দধির যে কারণ; তাহাকে পরিণামি উপাদান কারণ **ক**ছে। আর ভ্রান্তি স্থলে অপে অব্ধকারে সাদৃশ্য সম্ভাবনায় বা চক্ষ্-त्रामित मार्य कना अब्कुष्ठ य मर्भ ख्वान रस्न, সেই রক্তু মর্পের যে কারণ; কিয়া শুক্তিতে গে রজত জ্ঞান হয়, সেই শুক্তি রজতের যে কারণ; তাহাকে বিবর্জ উপাদান কারণ কহা যায়; যথা "সভস্তুতোহনাথা প্রথা বিকার ইত্যুদাহতঃ। অত্ত্ব্যুতাহনাথা প্রথা বিবর্জ ইত্যুদাহতঃ। অত্ত্ব্যুতাহনাথা প্রথা বিবর্জ ইত্যুদাহতঃ। অত্ত্ব্যুতাহনাথা প্রথা বিবর্জ ইত্যুদারিতঃ।" যে বস্তু শ্বরুপের অনাথা ভাব প্রাপ্ত হইয়া যে কার্যোর কারণ হয়, সে বস্তু সেই কার্যোর পরিণামি উপাদান কারণ। মেন মৃত্তিকা,শ্বর্ণ ও ছক্ষ, ইহারা ঘট, অলঙ্কার ও দরির কারণ হয়। আর যে বস্তু শ্বরুপের অনাথা ভাব প্রাপ্ত না হইয়া যে কার্যোর কারণ হয়, সে বস্তু সেই কার্যোর বিবর্জ উল্লাদান কারণ। যেমন রক্ত্বু ও শুক্তি, ইহারা দর্প ও রজত দ্যানের কারণ হয়।

কারণের স্থাপ নির্বাণিত হইল, একণে অধ্যারোপ বিবরণ প্রকাশ করিতেছি। উক্ত রূপ বিবর্জ উপাদান কারণের উদাহরণ স্থলে ত্রম প্রযুক্ত এক বস্তুতে যে অন্য বস্তু জ্ঞান হয়, তাহার নাম অধ্যাস, তাহাকেই আরোপ ও অধ্যারোপ কহে। "মুতিরূপং পরত্র পূর্বদৃষ্টাবভাসোহখ্যাস ইতি, বস্তুনাবস্থারোপোইনধ্যাস ইতি, বস্তুনাবস্থারোপোইনধ্যাস ইতি, বস্তুনাবস্থারোপোইনধ্যাস ইতি, বস্তুনাবস্থারোপোইনধ্যাস ইতি, বস্তুনাবস্থারোপোইনধ্যারে ইতি চ"। এক বস্তুতে অন্য বস্তুর যে অবজ্ঞান, তাহার নাম অধ্যাস, সূত্রাং বস্তুতে গে অবজ্ঞর আরোপ, তাহাই অধ্যান্রেপ শক্ষের বাচ্য হয়। বর্ত্তমান রজ্জুতে অবিদ্যামান সর্প ভ্রমের নাম নিত্য বিদ্যামান প্রত্য বস্তুরে অধ্যাস, তাহারই নাম অধ্যারোপ ইহা সিক্ষ স্থান, তাহারই নাম অধ্যারোপ ইহা সিক্ষ স্থান, তাহারই নাম অধ্যারোপ ইহা সিক্ষ

বৈদান্তিক মতে এই প্রকার রজ্জুতে
অধারে।পিত সর্পের নায় অজ্ঞান বশত
অনাদি-পিদ্ধ সংক্ষারাধীন সত্য বস্তুতে এই
অসত্য ক্রগৎ প্রপক্ষ অধ্যারোপিত হইয়া
সত্য কপে প্রকাশ পাইতেছে। এস্থলে সত্য
বস্তুইবা কি, ও অসত্য বস্তুইবা কি এবং
তাহার অধ্যারোপইবা কি প্রকারে হইল,

এফণে সেই সকল বিষয়ের বিবরণ কর। যাই-তেছে। পূর্বে নিত্যানিতা বস্তু বিবেক স্থলে ক্ৰিত হইয়াছে যে নিত্য জ্ঞান অনস্ত স্বৰূপ অদ্বিতীয় পরব্রহাই সত্য বস্তু, আর অজ্ঞান প্রভৃতি ভূণ পর্যান্ত সমুদায় জড় প্রপঞ্চ অসতা বস্তু৷ বৈদান্তিক আচার্যাদিগের মতে অজ্ঞান অভাব গদার্থ নহে; সৎ বা অসৎ হইতে ভিন্ন, জ্ঞানের বিরোধী, সত্ত্ব রক্ষঃ তম এই ত্রিগুণময়, ভাব ৰূপ পদার্থ বিশেষের নাম অজ্ঞান। এই অজ্ঞান একটা অভিপ্রায় করিয়া বলিলে এক,ও বছ অভিপ্রায় করিয়া বলিলে অনেকও হইয়া থাকে। যেমন এক-স্থানস্থিত নানা জাতীয় সমুদায় রক্ষকে এক কথায় বলিবার **জু**না বন শব্দ ব্যবহার করা यात्र, अर्थना अकार्यात्र महानाच कलाक अक कथांग्र विनवात कना कलामग्र नत्क नित्कम করা যায়, দেই ঝগ বৈদান্তিক আচার্য্যেরা, নানা জীবে বিভিন্ন প্রকারে বিরাজ্যান, সমস্ত उक्ताखनानी, वर्षे जब्हानरक यथन वक्षी অভিপ্রায়ে এক বলিয়া ব্যবহার করেন ় তথ্য এই একমাত্র অভিপ্রেত বিশুক সম্ভূ প্রধান যে অজ্ঞান, ব্রহ্ম চৈতনা সেই অজ্ঞা-नोवतर्रा चाद्रुष्ठ इहेशा मर्चेष्ठ, मर्स्वश्वत, मर्च নিয়ন্তা, অন্তর্যামী, জগৎ কারণ, ও ঈশ্বর, ইত্যাদি শব্দে ব্যবহৃত হয়েন: এবং এই **একাভিপ্রেড অজ্ঞানা**বরণ, জ্*থিল কার*ণ, কারণ শরীর, আনন্দময় কোশ, সুযুপ্তি স্থান, ও সমুদায় প্রপঞ্চের লয় স্থান শব্দে কথিত হইয়া থাকে। **ঈশ্**র এই অজ্ঞানে অধ্যা-রোপিত মাত্র, কিন্তু তিনি ইহার বশীভূত नरहन ।

আর যেমন বনের প্রভাক রৃক্ষকে
পৃথক্ পৃথক্ করিয়া রুকাইবার জন্য ভাহার
প্রভাকটীকে রুক্ষ শব্দে ব্যবহার করা যায়,
কিয়া জলাশয়ের প্রভাক বিক্ষ্ জলকে
পৃথক্ পৃথক্ করিয়া কুঝাইবার জন্য ভাহার

প্রত্যেকটিকে জল শব্দে নির্দ্ধেশ করা যায়, সেই রূপ আচার্যোরা যথন নানা জীবে বিভিন্ন ৰূপে এই অজানকে বহু অভিপ্ৰায় অনেক বলিয়া ব্যবহার করেন, তথন এই বল্ল অভিপ্ৰেত বিশুদ্ধ সত্ত্ব প্ৰধান যে অজ্ঞান, ব্রহ্মটেতনা তদাবরণে আরুত ইইয়া, অংপজ্ঞা, অনীশ্বর ও প্রাজ্ঞ ইত্যাদি শব্দে ব্যবহৃত হয়েন , এবং এই বহু অভিখেত অজ্ঞান:-ব্রণকেও, অহঙ্কারাদির কারণ, কারণ শরীর, वानक्रत कांग मुत्रुखि सान, उ सृत, स्का বা লিন্দ শরীরের লয়স্থান কহিয়া থাকেন। এই প্রাক্ত ও মায়ার বশীভূত নহেন। উব্দ উভয় প্রকার অজ্ঞানই, মূলাজ্ঞান, প্রকৃতি, भाषः, ७ जितिमा नाद्य निर्मिष्ठ इत्र । - विन हिंक अस्थानारस्त गरधा छूटे ही वान প্রচলিত আছে, অর্ণজ্ব বাদ ও প্রতিবিষ্ ব।দ। যাঁহারা অব্দ্রিল বাদী, ভাঁহার। वरलन : रयमन वन ७ वृष्क चालिन ७वः বনাবচ্ছিন্ন আকাশ ও রক্ষাবচ্ছিন্ন আকাশের অজ্ঞান অভিন্ন এবং সমষ্টি অজ্ঞানাবচ্ছিন্ন চেতন। ঈশ্বর ও বাফি অজ্ঞানাবচ্চিন্ন চৈতনা প্রাঞ্জাও অভিন্ন ইয়েন। আর যাহার! প্রতিবিধ বাদী তাঁহারা বলেন, যেমন জলা-শয় ও জল অভিন্ন এবং জলাশয় প্রতিবি-য়িত আকাশ ও জল প্রতিবিধিত আকাশের তেদ নাই, সেই ৰূপ সমষ্টি অজ্ঞান ও বাটি অজ্ঞান অভিন্ন এবং সমষ্টি অজ্ঞান প্রতিবি-য়িত চৈতন্য ঈশ্বর ও বাফি অজ্ঞান প্রতি-বিষ্বিত চৈতন্য প্রাক্তও অভিন্ন হয়েন। ফলতঃ এই ছুইটী वाषरे जुलार्थ। এই ছুইটী वाषरक অভিপ্রায় করিয়াই বন ও রুক্ষ এবং জলা-শয় ও জল, এই ছুই প্রকার দৃষ্টান্ত প্রদর্শিত এই অজ্ঞানাবরণ, ঈশর ও रुरेग़ारह। প্রান্ডের উপাধি। উক্ত প্রকার অধ্যারো-পের পর এই ঈশার ও প্রাক্ত উভয়ে চৈতন্য প্রকাশিত অতি স্থান রূপ অজ্ঞান রুন্তি দারা আনন্দ অনুভব করেন। এই যে উভয় প্রকার অজ্ঞানাবরণ এবং তদাবরণে আর্ভ ঈশ্বর ও প্রাক্ত, এ সমুদায়ের আধার স্বরূপ যে অনার্ভ শুদ্ধ চৈতন্য, ভাহাই ব্রহ্ম চৈতন্য, ভাহাকেই তুরীর চৈতন্য কহে। "শান্তংশিবমন্তিত চতুর্গং মনান্তে সআত্মা সবি-জ্ঞেয়ং"। পূর্নেই বলা হইয়াছে, অজ্ঞান বারা বস্তুতে যে অবস্তুর আরোপ হয়, ভাহার নাম অধ্যারেপে, এবং ব্রহ্মই বন্ধু, ও অজ্ঞান প্রভৃতি সমুদ্যেই অবস্তা। এস্থলে সেই ব্রহ্মন্যাত্র বস্তুতে অস্থান দারা ঈশ্বর ও প্রাক্তনাম আরোপিত হইয়াছে। বস্তুত ভাহা সভ্যানহে, ভ্রম মাত্র। ইহাকেই সৃষ্টির আরম্ভ বলা যায়।

অজ্ঞান দারা না হয় এমত কিছুই বলা যায় না, " ছুৰ্ঘটেকবিধায়িনাাং মায়ায়াং কা চমৎক্ষতিং " ভূৰ্ঘট ঘটনা মায়ার কার্যা কিছুই চমৎকার নতে। যদিও অজ্ঞানের সকল শক্তিই সন্তব, তথাপি এন্তলে সামান্যত তাহার চুইটা মাত্র শক্তি নিৰূপিত হ্ইতেছে। আবরণ শক্তি ও বিকেপ শক্তি। রজ্জুতে সর্পভ্রম কালে অজ্ঞানের যে শক্তি দ্বারা রজ্জু আর্ত হয়— দেখা যার না, তাহার নাম আবরণ শক্তি: আর যে শক্তি দারা তালতে দর্প দেখা দেয়, তাহাই বিকেপ শক্তি। যেমন অণ্প পরিমাণ মেঘ বহু বিস্তৃত সূর্য্য মণ্ডলকে আচ্ছাদন করিতে না পারিলেও অবলোক-য়িতার নয়ন পথ আচ্চাদন করাতেই তাহা-কে সূর্য্য মণ্ডলের আছোদক বলে, সেই ৰূপ অজ্ঞান পরিচিন্ন হইয়াও আবরণ শক্তি দারা অবলোকয়িতার বুদ্ধি বৃত্তিকে আচ্চাদন করাতেই তাহাকে অপরিচ্চিন্ন ত্রক্ষের আব-রক বলিয়া থাকে। এই কপ আবরণ শক্তি দ্বারা আর্ত ত্রন্ধ চৈতন্যেতে বিক্ষেপ শক্তি ধারা কর্ত্ত্ব ভোক্ত্র সুগিত্ব ছুংথিত্বাদি নংসার সম্ভাবনা পূর্দ্দক সূক্ষ্ম শরীরাদি ব্রক্ষাণ্ড পর্যান্ত জগৎ সৃষ্ট হইরাছে।

যেমন ল্ভা ফীট তপ্ত নির্মাণ করিবার সময়ে স্বীয় চৈতনাই নিমিত্ত কারণ হইয়া কার্পাসাদি কোন বস্তু গ্রহণ না করিয়াও আপনার শ্রীবকেই পরিণামি উপাদন কারণ করিয়া হন্ধ নির্মাণ করে, সেই রূপ চৈতনা ধরপে ঈশর স্বয়ং নিমিত্ত কারণ চইয়া অন্য কোন বস্তু গ্রহণ না করিয়াও স্বকীয় উপাধি-ভূত অজ্ঞানকে বিবৰ্ত্ত উপাদান করিষা এই ত্রন্ধান্ড উৎপন্ন করিরাছেন। অভএর থেমন ঘটকে সৃত্তিকার পরিণাদ বলা যান, দেই ৰূপ তত্তকৈও লাভার পরিবাম বলিতে হয়, এবং গেমন সপকে ৱজাুর বিবার্ড বল যায়, দেই কল এই জগৎকে সুহরাণ অক্সানের বিবর্ত্ত বলিতে হয়। অধিষ্ঠান-ভূত ত্রন্তা চুরোক্ত আবরণ শক্তি রার' আচ্ছাদিত চইলে পর ভাবি জীবদি-োর ভোগের নিমিত্তে ত্যোপ্তণ প্রধান বি-ক্ষেপ শক্তি বিশিষ্ট অজ্ঞান দ্বারা উপচিত চৈত্না ৰূপ ঈশার হইতে তাঁহারট আজা-দ্ৰমে হংখ্যত আকাশ, পরে আকাশ হইতে বায়ু, বায়ু চইতে অগ্নি, অগ্নি হঠতে জল. उदर कल इवेटच शृथिदी, करम अहे मकल अकु शमार्थ फेंट्यब इहेल। अहे शांठी ফাল পদাৰ্থকৈ স্থানভূত, মহাভূত, পঞ্চ তন্মাত্ৰ, ও অপক্ষীরূত ভূত ক**েছু। এই সকল** *ত্***ক্ষা** ভূষ ইউচে পরে ক্রীমে হুকা শরীর ও স্কৃত ভূত দক্ল উৎপন্ন হয়।

পূলন শরীরকে সতেরটা অবয়বে বিভক্ত করা চইরাছে, যথা, জ্ঞানেন্দ্রিয় পাঁচ, বুদ্ধি ও মন, কর্মেন্দ্রিয় পাঁচ, এবং বায়ু পাঁচ। ইলা লিচ্চ শরীর শব্দেরও বাচ্য হয়। ইলাকে গুনর্বার তিন অংশে বিভক্ত করা যাইতে গোগ্নে। বিক্তান্যয় কোষ, মনোময় কোষ,

ও প্রাণময় কোষ। প্রোত্র, ত্বক্, চকু, জিহ্বা, ও না[সকা, এই পাঁচটীর নাম জ্ঞানেব্রিয়, ইয়ারা ক্রমে আকাশ, বায়ু, অগ্নি, জল, ও পৃথিবী, ইহারদিগের সত্ত্ব গুণের অংশ হুইতে উৎপন্ন হয়। নিশ্চয়াত্মিকা অন্তঃক-রণ হত্তির নাম বুদ্ধি, আর সংশয়াত্মিক। অন্তঃকরণ রৃত্তির নাম মন। অনুসন্ধানা-আিক। অন্তঃকরণ বৃত্তি রূপ যে চিত্ত, ও অভিমানাত্মিকা অন্তঃকরণ রৃত্তি কপ যে ष्ण इन्हात. ७ छुट्डी छेख्न तुन्नि ও महनत অবস্তুত বলিয়া ইহারদিগকে আর পুণক্ कर्षा निर्फिष्ठे कहा इस नाहे। इंडाइड ७३ গ্রহিগাদিত হইল যে বুদ্ধি, মন, চিত্ত, অহ-হার, ইহারা অভ কবুণের এক একটা রুদ্রি মাত্র : ইহারদিগের দমার্টার নিমিই অস্তঃ 🕡 त्रग, ७वर निन्ध्य, मश्नाय, न्यात्रग, छ शर्त्र, এই চারি প্রকার ভাব ঐ চারিটার বিষয় :

বৃত্তি কাছাকে বলে, তাহা একণে প্রকাশ করিতেছি। "থথা তড়াগোদকং ছিদ্রা নির্গতা কুলালন। কেদারান্ প্রবিশ্য চতু-ফোণাদাকারং ভবতি, তথা তৈজসমন্তঃকরণমপি চক্ষুরাদিনা ঘটাদিবিয়নদেশং গত্তা ঘটাদাকারেণ পরিণমতে, সএব পরিণামোর্তিরুচাতে।" যেমন পুষ্করিণীর জল প্রণালী হইতে নির্গত হইয়া ফেত্রে প্রবেশ পূর্বক ফোকারে ব্যাপ্ত হয়, সেই রূপ তেজাময় অন্তঃকরণও চক্ষুরাদি ছায়া নির্গত হইয়া ঘটাদি বিষয়ে প্রবেশ পূর্বক ঘটাদির আকারে পরিণ হয়; সেই পরিণামকে বৃত্তি কহে।

উক্ত বুজি, মন, চিন্ত, ও অহমার, ইহারা আকাশাদি সকল ভূতের এক-ত্রিত সত্ত্ব গুণের অংশ হইতে উৎপ্র হয়। এই বুজি উক্ত জ্ঞানেন্দ্রিয়ের সহিত মিলিত হইয়া বিজ্ঞানময় কোষ শব্দের বাচ্য হয়। ব্রহ্ম চৈতন্য অজ্ঞানে আর্ত্ত হইয়া এই

বিজ্ঞানময় কোষে অভিযান বশত পুণ্য পাপের ফল-ভোক্তা, ইহ পরলোকগামী, জ্ঞান শক্তিমান্, কৰ্তৃৰূপ ব্যাবহারিক জীব শ্বে অভিহিত হয়েন। এবং এই মন কর্মেন্দ্রিয়ের সহিত একত্রিত হইয়া ইচ্ছা শক্তিমান করণ ৰূপ মনোময় কোষ শব্দে বাবহাত হয়। বাক্য, হল্ড, পদ, পায়ু ও উপস্থ, এই পাঁচটা কর্মেক্রিয়; ইহারা ক্রমে আকাশ, বায়ু, অগ্নি, জল, ও পৃথিবী, ইহার मिर्गत तुरका शारात यहमा बबेरक छेदशन ञ्या थान, जनान, मनान, উদান, वानि, এই পাঁচটা শারীরিক বায়ু, ইহারা আকা-শাদি দকরাভূতের একত্রিত রজো গুণের জংশু হটুতে উদ্ভ হুদ্ধ এবং ইছারা কর্মে-শক্তিয়ের সভিত মিপ্রিচ হইলে-ক্রিয়া শক্তি-গানু কাৰ্যা ৰূপ প্ৰাণ্যয় কোষ বলিয়া উক্ত হয়। এই কোমত্রণকে একম মিলিভ করিয়া প্রক্রম শরীর ও লিপ শরীর কলা যায়।

क्टाटात्वत छेशतम मर्धश्।

ঈশর, সিনি সকল জীবের এক মাত্র প্রভূ, দাঁহার মহিমা মহীয়ান্ হটক।

করণামর! ভোসাকেই আমরা ভজনা করি এবং ভোমার নিকটেই আমরা সাহায্য এথিনা করি। আমাদিগকে প্রকৃত পথে লইরা যাও। যাহারা বিপথগামী হইরাছে, তাহাদিগের পথ নহে, কিন্তু ঘাঁহাদিগের প্রতি তুমি প্রসন্ন হইরাছ, ভাঁহাদিগের পথ আমাদিগকে প্রদর্শন করে।

সেই তোমার প্রভু, যিনি তোমাকে সৃষ্টি
করিয়াছেন, যিনি এই পৃথিবীকে তোমার
শ্যা ও আকাশকে তোমার বিভান রূপে
প্রসারিত করিয়া রাখিয়াছেন। যিনি আকাশ
হুইতে জল বর্ষণ করিয়া ভোমার জীবন
শারণের নিমিন্ত নানাবিধ কল উৎপাদন
করিতেত্ব তুমি তাহার সেবা কর।

ধন্য ভোমাকে। তুমি যাহা আমাদিগকৈ শিকা দাও, চাহাই আমরা জানিতে
পারি—তণ্ডিন আমরা আর কিছুই জানিতে
পারি না, কারণ তুমি জ্ঞান স্বরূপ ও
সর্বৃত্ত ।

ইহা কি তুমি জান না, যে প্রমেশর সর্ব্যক্তিমান । ইহা কি তুমি জান না, কে জালোক ও ভূলোক উভয়ই শিহার রাজা । নেই ঈশর ভিন্ন আর ভোমার অনা কোন সহায় ও আশ্রয় নাই।

তোমালিগের আত্মার সম্বান, কোমরা মৃত্যুর পূর্বে যাহা কিছু প্রেরণ করিবে, তাহা সকলই ঈশ্বরের নিক্ট দেখিতে পাইবে ইং নিশ্বয়, যে কোন কর্ম ভোমরা কর, ঈশ্বর তাহা দেখিতে পান।

থিনি ঈশবেতে আহা সমর্পণ, ও যাহ। শুন্ত তাহার অমুষ্ঠান করেন, তিনি ঈশবের নিকট পুরস্কৃত হইবেন; তাঁহায় কোন ভর থাকিবে না, তিনি কোন ছুংখ পাইবেন না।

কি পূর্ব কি পশ্চিম, উত্তবই ঈশরের অধিকার: অতএন জাঁহার উপাসনার জন্য যে দিকে চিরিবে, সেই দিকেই তাঁহার মুখ দেখিতে পাইবে, কেন না তিনি সর্ববাণী ও সর্বজ্ঞ।

যাহা কিছু ত্যুলোকে, ও যাহা কিছু ভূলোকে অবস্থিতি করিতেছে, সকলই সেই ঈশরের। সেই ত্যুলোক ও ভূলোকের সৃষ্টি কর্ত্তা যে তিনি, তাঁহার দ্বারা সকলই অধিকৃত হইয়া রহিয়াছে; এবং তিনি যখন যে কোন কর্ম করিতে ইচ্ছা করেন, তিনি শুদ্ধ বলেন ইহা হউক, আর তাহাই হয়।

একমাত্র সত্য সেই তোমার প্রস্থার নিকট হইতে প্রাপ্ত হইবে।

আমরা ঈশ্বরেতে অবস্থিতি করিতেছি এবং নিশ্চয় আবার তাঁহাতেই গমন করিব : তোমার যিনি ঈশ্বর, তিনি এক ঈশ্বর ; সেই করুণাময় পুরুষ ভিন্ন আর ঈশার নাই'।

ছালোক ও ভুলোকের সৃষ্টি মধ্যে,
দিবা রাত্রির পরিবর্ত্তনে, মনুষা জাতির
উপকারী নানা দ্রব্যে পরিপূর্ণ—সমুদ্র বিহারী
অর্ণবপোত মধ্যে ঈশ্বর যে র্টি-সলিল
আকাশ হইতে প্রেরণ করিতেছেন এবং যদ্দারা মৃতপ্রায় বসুস্ধারাকে জীবন দান ও গো
মহিষাদি নানা জন্তর দারা পৃথিবীকে পূর্ণ
করিতেছেন, সেই র্টি-সলিলের মধ্যে, বায়ুর
পরিবর্ত্তনে, এবং ছালোক ও ভুলোকের মধ্যে
যে মেষের কর্ম করিতে হইতেছে, সেই মেঘের
মধ্যে বুদ্ধিমান্লোকেরা ইহার অনেক
নিদর্শন প্রাপ্ত হয়েন।

যাঁহারা যথার্থ ভক্ত, ঈশরের প্রতি তাঁহাদিগের প্রগাঢ় প্রীতি আছে।

সৎকর্ম কর, যে হেতু ঘাঁছার। সৎকর্ম করেন, ঈশর ভাঁছাদিগকে প্রীতি করেন।

এরপ কতকগুলি লোক আছেন, ঘাঁহারা বলেন "হে প্রভু! এই লোকে আমাদিগকে সুখ সৌভাগা দেও;" কিন্তু পরলোকে তাঁহারা কিছুই পাইবেন না; আবার কতক-গুলি লোক আছেন, ঘাঁহারা বলেন "ইহ লো-কেও আমাদিগকে সুখ সৌভাগা ও পর লোকেও আমাদিগকে সুখ সৌভাগা প্রেরণ কর" তাঁহারা, ইহ লোকে যে সুখ সৌভাগা পাইয়াছেন, ভাহার কিয়দংশ পর লোকেও প্রাপ্ত হইবেন।

ঈশরকে ভয় কর এবং ই**হা নিশ্য জান** যে তাঁহার নিকট উপনীত হুইতে হুইবে।

ঈশর! সেই জীবন্ত স্বপ্রকাশ পুরুষ তির আর অন্য ঈশর নাই। তিনি না নিদ্রা না তন্ত্রা দারা শুদ্ধ হয়েন; ছ্যুলোকে ও ডুলোকে যাহা কিছু আছে, সকলই ভাহার। ঐউভয় লোকের সমস্কে যাহা অভীভ হইয়াছে, তাহাও তিনি ক্লানেন ও যাহা ভবিষাতে হইবে, তাহাও তিনি জানেন।
তিনি যতটুকু ইচ্ছা করেন, তাহাই ত্যুলোক
ওঁ ভূলোক বাসীরা বুঝিতে পারিবে, তদ্মি
আর কিছুই বুঝিতে পারিবে না। তাঁহার
সিংহাসন ভূলোকে ও ছ্যুলোকে প্রসারিত
রহিয়াছে, এবং এই উভয় লোককে রক্ষণ ও
পালন করিবার নিমিত্ত তিনি কিছু মাত্র
ভারপ্রক্ষ হয়েন না। তিনি উচ্চ, তিনি
শক্তিমান্।

কে ঈশর ! আমরা তোমার রূপার ভিগারী; কেন না. তোমার নিকটেই আবার আমাদের গমন করিতে হইবে।

ছালোকে ও ভূলোকে যাহা কিছু আছে, ঈশবের নিকটে কৈছুই প্রফল নাই। তিনি স্বীয় ইচ্ছানুৰূপ তোমাকে মাতৃ গরে নির্মাণ করিয়াছেন; সেই শক্তিমান, সর্বজ্ঞ পুরুষ ভিন্ন আর কোন ঈশর নাই।

ভোষার হস্তেই মঙ্গল,কেন না তুমি সর্ব-শক্তিমান্— তুমিই দিনের পর রাত্রিকে আনিতেছ।

নিশ্য, শ্রেষ্ঠতা ঈশ্বরের হস্তে রহিয়াছে, ঘাঁহাকে তাঁহার ইচ্ছা তাহাকেই তিনি তাহা বিধান করিতেছেন।

যিনি পরমেশরের প্রতি দৃঢ়কপে নির্ভর করেন, তিনি তো প্রকৃত পথ আপনা হই-তেই প্রাপ্ত হইয়াছেন। ছালোকে ও ভূলোকে যাহা কিছু অবস্থিতি করিতেছে, সকলই সেই ঈশরের; এবং সেই ঈশরেতেই সকল পদার্থ প্রতাবির্ভন করিবে।

যাঁহারা পরমেশবের প্রতি বিশাস স্থাপন করেন এবং দৃঢ়বাপে তাঁহার সহিত যুক্ত থাকেন, তাঁহারদিগকে পরমেশর আপনার কুপা ও প্রাচুর্য্যের দিকে লইয়া যাইবেন এবং তাঁহার নিকট গমন করিবার যথার্থ পথ তাঁহাদিগকৈ প্রদূর্শন করিবেন।

ह अक्रिके विधानीत्रन ! नर्बत् नहिक

তাঁহার সহিত নৈকটা যোগ স্থাপন করিতে চেন্টা কর, যে তোমরা সুখী হইতে পারিবে। যে কেহ পাপ করিয়া অনুভাপ করে, নিশ্চ্য় ঈশ্বর তাহার প্রতি ক্লপা দৃটি করেন, কারণ প্রমেশ্বর যিনি, তিনি ক্রুণাময় এবং ক্ষমা করিবার নিমিত্ত উন্মুখ রহিয়াছেন।

যাঁহারা ন্যায্য ব্যবহার করেন, প্রমেশ্বর ভাঁহাদিগকে প্রীতি করেন।

আমাতে যাতা কিছু আছে, তাতা সকলই তুমি জান, কিন্তু তোমাতে কি আছে, আমি তাহা জানি না; কারণ তুমি রহসা-বেন্তা।

সেই ত্যুলোক ও ভূলোকের সৃষ্টি কর্তা সমর ভিন্ন আমি কি অন্য কাহারও আগ্রার গ্রহণ করিব ? অন্তিদিত বস্তু সকলের চাবি একমাত্র তাঁহার নিকটে আছে, তিনি ভিন্ন আর কেহই তাহা জানে না। যাহা কিছু শুদ্ধ ভূমিতে, যাহা কিছু সমুদ্রে আছে, তাহা সকলি তিনি জানেন। এমন একটী পত্রও বৃক্ষ হইতে বিচ্যুত হর না, যাহা তিনি জ্ঞাত নহেন, সেই সকল পদার্থের সৃষ্টি কর্ত্তা ঈশ্বর ভিন্ন আর অন্য ঈশ্বর নাই, অতএব তাঁহাকেই সেবা কর, কারণ তিনি সকল পদার্থই রক্ষণাবেক্ষণ করিতেছেন—দৃষ্টি তাঁহাকে বৃক্ষিতে পারে না—তিনি দৃষ্টিকে বৃক্ষিতে পারেন।

তোমার সেই প্রভূর বাকা, সত্যেতে, ন্যায়েতে পরিপূর্ণ; এমন কেহই নাই যে তাঁহার বাক্যকে পরিবর্ত্তন করিতে পারে।

নিশ্চয় আমার সকল প্রার্থনা, উপাসনা আমার জীবন এবং আমার মৃত্যু ঈশ্বরেতে সমর্পিত রহিয়াছে; তাঁহার কোন সলী নাই।

নত্র-চিত্তে এবং গোপনে ভোষার প্র-স্থুকে ডাকিবে।

আমাদিগের প্রভু জ্ঞান হারা সকলি বুঝিতে পারেন—ঈশরেতেই আমরা বিখাদ স্থাপন,করি। তুমি যে আমাদের আত্রার, তুমি আম।দিগকে কমা কর এবং আমাদিগের প্রতি
রূপাবান হও।

ঈশরেতে বিশ্বাস স্থাপন কর, কারণ তিনিই সকল শুনিতেছেন ও জানিতেছেন।

সামবেদি কৰ্ম্মান্ত্ৰন্তান-পদ্ধতি। ভবদেৱত টু গুণীত।

চুড়াকরণ।

১৫। অনন্তর মাচার্গা কুমারের শিরোদেশ গুই হল্ডে ধারণ পূর্বক ক্ষপ করিবেন, যথা—

প্রদাপতির্শাধির ফিক্ছনো যদাগ্রিকশ্য-পাগস্তাদিয়ো দেবত। চূড়াকরণে বিনি-যোগঃ।

उँ जार्युवः यमन्द्राः कनाशमा जाय्य-मभसामा जार्युवः यदम्तानाः जार्युवः उटउ-२स जार्युवः ।

'यमप्रद्वाः' महर्षः 'कनाः भनाः' 'खशलाः नः' 'एमवानः' हैलांगीमार 'यद' 'छात्र्यूषः' जीति चाय् श्वि वालयूवऋविद्र-खानि 'खद' 'छात्र्यूषः' टहस्रक '८७' 'ब्यल्व' स्टब्यू ।

বনদগ্নি, কশাপ, অগস্ত্য এবং দেবভাদিনের যে তিন আয়ু অর্থাৎ বাল্য,যৌরন ও ছবিরত্ব, সেই তিন আয়ু তোমার হউক।

১৬। পরে অগ্নির উত্তর দেশে কুমারকে লইয়া গিয়া পুল্পাদি ছারা অলক্ষ্ত নাপিত ভাষার মস্তক মুখন করিবেক এবং সেই সমুদায় কেশ গোময়ের উপরে লইয়া অরগ্যে বঁটা রক্ষে স্থাপন করিবেক

১৭। অনস্তর পূর্কবিদ্যান্ত সমস্ত মহাবাছিতি হোম করিয়া প্রাদেশ প্রমাণ ঘূড়ান্ত সামিধ অমত্রক অগ্নিতে হোম করত প্রকৃত্ত কর্মা সমাপন
করিয়া সর্কা কর্মা সাধারণ শাট্যায়ন হোম অবধি
বামদেবা গানান্ত উদীচা কর্মা সমাপ্তি পূর্কক কর্মা
কার্মিতা ব্রাক্ষণকে দক্ষিণা দিবেক এবং কৃষর,
বব, গানা ও তিন শ্বাব নাপিতকে দান করিবেক

हूफ़्स्क्रम ममाख ।

छेशमध्न ।

১। গর্ভাটমে বা অইম বর্ষে ব্রাহ্মণের উপনয়ন কর্ত্তবা, তদসম্ভবে ঘোড়শ বর্ষ পর্যান্ত উপনয়নের অধিকার থাকে, ভাষার পর সাবিত্রী পতিভ ব্রাহ্মণ উপনেত্তবা নহে।

২। উপনয়ন দিবস প্রাভঃকালে পিতা সান ও রক্ষিতাত করিয়া দমুদ্রর নামক অগ্নি সং ছাপন পূর্মক বিরূপাক জপান্ত কুশণ্ডিকা সমাপনানন্তর মানবককে প্রাভঃভোজন করাইয়া অগ্নির উত্তর দিকে লইয়া গিয়া সন্ধি মুন্তন, স্নান, কুণ্ডলাদি ভারা অলঙ্কৃত ও কৌমাদি বন্ধান্তত করিয়া অগ্নির দক্ষিণে আনয়ন পূর্মক প্রকৃত কর্মের প্রারন্তে প্রাদেশ প্রমাণ ঘৃতাক্ত সামিপ অমন্ত্রক অগ্নিতে হোম করিয়া বাস্ত সমস্ত মহাব্যাহ্নতি হোম করি বেক।

ও। অনস্তর আচার্য্য পাঁচটী মস্ত্র দ্বারা পাঁচ বার আক্লাছভি হোম করিবেন, যথা

প্রজাপতি খবিরগ্নিদেবত। উপন্যন্তোম । বিনিযোগঃ।

ওঁ অয়ে ত্রতপতে ব্রতঞ্রিয়ামি তত্ত্ব প্রবীমি তচ্চকেন্থ তেনর্দ্ধা সমিদমহমন্তাৎ সভামুপৈমি স্থাহা

তে 'কায়' 'ব্রুণতে' শাকীয়নিব্যস্য পালক যদিদং
'বঙা' উপন্যনাথাই 'চবিষানি' অনুষ্ঠাস্যানি 'ডব' বুড়া
'ডে' ডুড়া' 'প্রভানি' কথ্যানি নিবেদ্যানীতি যা ব, যেন
'ডব' বুড়া অহুই ড্বুল্পাদাৰ চরিছু' সুথেন 'শক্ষেই'
শক্ষামি। ব্রুতকর্ণস্য কল্যান্ত, 'ডেন' উপন্যনবুডেন
ক্রণভূতেন আহুই 'অন্যা' সমৃদ্ধি অধ্যয়নলক্ষণই প্রান্থিত শেবই। ডগাইই 'অন্তাব' অলীক্রচনাই
প্রক্ ভূড়া 'ইদং' বুড়ং 'সড়াই সভাবচনক্ষপই 'সংউন্পেনি' অন্যাইং যোভ্তং প্রান্থিপন্যনাই যথেনীটার আসং
কোচ্চমধুনা প্রিভাক্তান্ত্রাক্ষ্ম সভ্যভূত্তিদিং বুড়ং
চির্যানি।

তে ব্ৰন্তপতি অগি! আমি বে ব্ৰন্ত অনুষ্ঠান করিব, ভাষা ভোমাকে বলি, আমি ভাষাতে সমর্থ হইব। সেই ব্ৰন্ত দারা আমি সমৃদ্ধ হইব এবং অনুত হইতে সভা প্রাপ্ত হইব।

প্রকাপতিশ্ববিশ্বায়ুর্দেবতা উপনয়নহোমে বিনিযোগঃ।

ওঁ বায়ো ব্রছপতে ব্রতঞ্রিয়ামি তত্তে

প্রবীমি ওচ্ছকেরং তেনর্দ্ধা সমিদমহমন্-ভাৎ সতামুপৈমি স্বাহা।

হে ব্ৰছপজি ৰায়ু! আমি বে ব্ৰছ অনুষ্ঠান করিব, ভাষা ভোমাকে বলি, আমি ভাষাতে সমর্থ হইব। সেইব্ৰছ আরা আমি সমৃদ্ধ হইব এবং অনুভ হইতে সভা প্রাপ্ত হইব

প্রজাপতিশ্ববিঃ স্থর্ব্যো দেবতা উপনয়ন হোমে বিনিযোগঃ।

ওঁ স্থা ব্রতপতে ব্রতঞ্রিধামি তত্তে প্রবীমি তচ্চকেয়ং তেনর্দ্ধা সমিদমহ্মদৃ-তাৎ সতামুপৈমি স্থাহা।

হে ব্রহপতি সূর্যা! আমি যে ব্রত অনুষ্ঠান করিব, তাহা ভোম'কে বলি, আমি ভাহাতে সমধ হটব। সেই ব্রজ দ্বারা আমি সমৃদ্ধ হটব এবং অনুভ হইতে সভা প্রাপ্ত হটব।

প্রকাপতিশ্ববিশ্বকো দেবতা উপনয়ন-হোমে বিনিযোগং।

ওঁ চন্দ্র ব্রহপতে ব্রহঞ্চরিয়ামি তারে প্রবীমি তাছকেয়ং তেনদ্ধাা সমিদমহমন্তাৎ সতামুপৈমি স্বাহা

হৈ ব্ৰন্থপতি চন্দ্ৰণ আমি যে ব্ৰন্ত অনুষ্ঠান করিব, ভাষা ভোমাকে বলি, আমি ভাষাতে সমর্থ হটব। সেই ব্ৰন্ত দ্বারা আমি সমৃদ্ধ হইব এবং অনুভ হইভে সভা প্রাপ্ত হইব।

প্রকাপতিশ্বধিরিক্রো দেবতা উপনয়ন-হোমে বিনিযোগঃ।

ওঁ ব্রতানাং ব্রতপতে ব্রতঞ্চরিষ্যামি তত্তে প্রবীমি ভচ্চকেয়ং তেনদ্ধ্যা সমিদমহ্মন্-তাৎ সত্যমুপৈমি স্বাহা।

'जुणानार' 'य कानार' जुणमा नियममा नियम मा

হে ব্রতপতি ইন্দ্র ! আমি যে ব্রত অনুষ্ঠান করিব, তাহা তোমাকে বলি, আমি ভাহাতে সমর্থ হইব। সেই ব্রত দারা আমি সমৃদ্ধ হইব এবং অনুত হইতে সত্য প্রাপ্ত হইব।

৪। এই প্রকারে আজ্যাহতি হোম করিয়া আ-চার্যা উত্তরাগ্র কুম্পের উপর পূর্ব মুখ হইয়া দাঁড়ো-ইবেন,এবং অগ্নিও আচার্যের মধ্যুদ্ধনে কৃতাঞ্চলি মানবক উত্তরাগ্র কুশের উপর আচার্য্যাভি মুখ হুইরা দাঁড়াইবেন এবং মানবকের দক্ষিণে দণ্ডা-যুমান মন্ত্রবাচয়িতা ব্রাহ্মণ কর দারা আচার্য্য ও মানবকের অঞ্জলি পূর্ণ করিবেন।

ে অনন্তর গৃহীভোদকাঞ্চলি আচার্য্য গৃহীভোদকাঞ্চলি মানবককে দেখিয়। অপ করিবেন।

প্রজাপতি ঋ বিরনুষ্টু পছলো ২ গ্রিবায়ুচক্রস্থ্যাদয়ো দেবত। উপনয়নে মানবকং
প্রেক্ষমাণসাচার্যাসা জপে বিনিযোগঃ।

উ আগস্ত্রা সমগ্রাহ্ প্র সুমর্ত্তাং মুজোতন অরিষ্টাঃ সঞ্চরেমহি সন্তি সঞ্চরতাদয়ং।
আয়াদের এব নেবতাঃ ধ্যং এনং উপনীয়নানং স্থমর্ত্তাং শোভনমন্যাং 'প্রের্জোতন' প্রবর্ধন মিশ্রমত
আশাভিঃ সংহত্যেত্ব প্রার্থাতে, তথা প্রযুক্তাতন মথা
অনেন ব্রশ্চারিণা 'আগজা' আগমনলীলেন বযং 'সমগন্মহি' সঙ্গালেনহি কিন্ত 'শারিষ্টাঃ' অবিষ্থাঃ 'সঞ্চরেমহি'
আনেন ব্রশ্চারিণা দহ, তথানাভিঃ সহ 'বৃত্তি' কল্যাবেন
ভ্রমহার ক্রচারিণা দহ, তথানাভিঃ সহ 'বৃত্তি' কল্যাবেন

হে অগ্নাদি দেবতা সকল! তোমরা এই শোভনান মনুষা ক্রন্মচারিকে আনারদিনের সহিত সংযুক্ত কর, আনারাও এই আগমন শীল ব্রহ্মা চারির সহিত সঞ্জত হই, এবং বিদ্ন রহিত হইয়া ইহার সহিত সঞ্জন করি, ইনিও কল্যাণের সহিত বিচরণ করন।

%। অনস্তর আচার্য্য মানবককে পাঠ করা-ইবেন।

প্রজাপতিশ্রবিরাচার্য্যো দেবতা উপন-য়নে মানবকপাঠনে বিনিযোগঃ।

उँ उक्त हर्श गा शासूश या नगन्।

ছে অরে! 'ব্রক্টর্য:' দৈপুননিতৃতিং জহং 'আগাং' সতবানকি যতেহিতঃ 'মা' মাং 'উপন্যত্ত'।

হে গুরো! যে হেডু আমি ব্রহ্মচর্য্য ধারণ করিয়াছি, অতএব আমাকে উপনীত কর।

৭। ভাহার পর আচার্য্য তংহার নাম জিজাস। করিবেন।

প্রজাপতির্থাবির্দানবকো দেবতা উপ-নযনে মানবক্রামপ্রশ্নে বিনিযোগঃ।

> ওঁ কোনামাসি। ভিচনামা সমনি ভোষার নাম কি ?

৮। জনত্তর মানবক আচার্য্য কর্ত্ত্বক পূর্বপরি কম্পিত দেবতাশ্রিত বা গোত্রাশ্রিত অথবা নক্ষ-শ্রিত নাম বলবেন।

প্রজাপতিশ্রবিদ্যানবকো দেবতা উপ-নয়নে মানবকনামকথনে বিনিযোগঃ।

७ अपूरुत्वनर्भा नामाश्चि।

জন্কনামাচনিত।বং । আমার নাম অমূক দেবখার্মা।

৯। জনন্তর আচার্য্য ও দানক উভয়ে গৃহীত ভলাঞ্চলি ভাগে করিবেন।

> । পরে আচার্য্য দক্ষিণ হস্ত দ্বারা মানবকের সাঙ্গুট দক্ষিণ হস্ত ধারণ করিবার নিমিত্তে জ্বপ করিবেন।

প্রজাপতিশ্বিং সবিত্রশ্বিপৃয়ণো দেবতা উপনয়নে আচার্য্যস্য মানব্কহ্সপ্রাহণে বিনিযোগং।

ওঁ দেবস্য তে সবিজুং প্রসবেংশিনো-র্বাহ্নতাং পুষ্ণো হস্তাত্যাং হস্তং গৃহামি অমুকদেবশর্মন্।

হে 'অমুকদেৰশৰ্মন্ত' 'ডে' ডৰ 'হস্তং' 'সণিডুঃ দেবস্য' 'প্ৰসৰে' অভ্যনুজ্ঞানে সভি 'অধিনোঃ' দেনইনদ্যুদ্যাঃ 'নাইভ্যাং' 'পৃষ্ণঃ' চ দেবস্য অহম্যচাৰ্চ্যঃ পানিনা 'গৃহ্দমি'।

হে অমুক দেবশর্মা! সবিস্থ দেবের অনুজ্ঞাতে অধিনীকুমারদ্বরের হস্ত দারা এবং পূধার হস্ত দারা আমি ভোমার হস্ত গ্রহণ করি।

^{১১। ভৎপরে} আচার্যা মানবকের হস্ত ধারণ করিয়া জপ করিবেন।

প্রজাপতির্খাবরগ্যাদয়ো দেবতা উপ-নয়নে গৃহীতমানবকহস্তাচার্যাজ্ঞপে বিনি-যোগঃ।

ওঁ অগ্নিন্তে হন্তমগ্রহীৎ সবিতা হন্তম-গ্রহীৎ অর্যামা হন্তমগ্রহীৎ দিত্রস্বাস কর্মণা অগ্নিরাচার্যান্তব।

কে ব্ৰহ্ণাৱিন্! ৰোষ্যং 'তে' তব হস্তঃ ম্যাগুহীতঃ তং 'হত্তং' পূৰ্বং 'জয়িঃ' 'সবিতা' 'অৰ্থমা' চ 'অগ্ৰহীং'। অতঃ 'কৰ্মণা' গুৰুত্যশ্ৰাদিনা 'মিত্ৰঃ' জিম্ছিতকারী মন 'শ্ৰুদ্সি' 'অয়িঃ' চ জগবান্ 'তব' গ্ৰন্থঃ।

হে ব্রহ্মচারি! পূর্বে অগ্নি, সহিতা ও অর্থানা

ভোমার হক্ত গ্রহণ করিয়াছিলেন, এই জন্য শুরু শুশ্রবাদি কর্ম দারা তুমি আমার মিত্র, অগ্নি ভোমার শুরুঃ।

১২। পরে আচার্য্য মান্বককে প্রদক্ষিণ জমণ করতঃ পূর্বা মুখ করাইবেন।

প্রজাপতিশ্লবিঃ সূর্য্যো দেবতা উপন-য়নে মানবক্স্যাবর্ত্তনে বিনিযোগঃ।

ওঁ সূর্যাস্যার্তম্বাবর্ত্তবামুক্দেবশর্মন্। তে অমুক্দেনশর্মন্। 'স্বাসেয়' 'আর্তং' আবর্তনং 'অমানর্ডব' যাবৎ ভানোরাবর্তনং তাব্তিষ্ঠ।

চে অমুক দেবশর্মা! ডুমি মুর্গোর আবর্তনের অনুবর্ত্তমান হও।

১৩। অনস্তর আচার্য্য দক্ষিণ হস্ত দারা মান-বক্ষের দক্ষিণ-ক্ষম্ম অবধি নাভিদেশ পর্যান্ত অব্যবধানে স্পর্শ কর্ড জ্বপ করিবেন।

প্রজাপতিশ্বিনাভান্তকৌ দেবতে উ-পনয়নে ব্রশ্বচারিনাভিদেশস্পর্শনে বিনি-যোগঃ।

ওঁ প্রাণানাং গ্রন্থিরসি মা বিস্ত্রসোহস্তক ইদস্তে পরিদদামি অমুকদেবশর্মাণং।

কে নাভে! অস্য ব্ৰহ্ণারিণঃ দ্বং 'না বিশ্রমঃ' ন বিশ্রংসিষ্যাস ক্ষানাথ বিচলিষ্যাস যতস্ত্রং 'প্রাণানাং' দেহধারগানাং 'গ্রন্থাঃ' প্রবন্ধঃ 'অসি' ভবসি। তথা হে 'অস্তক'
যম 'ইদং' অস্য ব্রক্ষারিণঃ শরীরং অসু চ ব্রক্ষ্যারিণং
'তে' তব 'পরিন্দানি' অর্প্যানি, দ্ব্যিঅর্পিড এছ রোগক্রান্ত্রণ'দিকং ন প্রাথায়াদিতি।

হে নাভি। তৃমি বিচলিত হইও না, বেছেতু
তৃমি প্রাণ সকলের গ্রন্থি। হে ধম। এই ব্রহ্মচারি
ও ইহার শরীর ভোষাকে সমর্পণ করিভেছি।

১৪। পরে আচার্যা মানবকের নাভিদেশের উদ্ধৃত্যা স্পর্ণ করত জপ করিকেন।

প্রজাপতিশ্ববিশ্বিদ্ববৃত্তা উপন্যনে ব্রহ্মচারিনাভাপরিদেশস্পর্শনে বিনিযোগঃ।

ওঁ অত্তব ইদত্তে পরিদদামি অমুকদেবশর্মাণং ।

আছবো নাম नायुः छन्। मचाः ८३ 'कास्व' (मंबर भूकवियः।

হে বায়ু বিশেষ ! এই ক্রম্যারি ও ইহার শরীর ভোমাকে সমর্পণ করিভেচি। ১৫। তংপরে আচার্য্য মানবকের জ্নয় দেশ স্পর্শ করত ক্রপ করিবেন।

প্রকাপতিশ্ববিঃ ক্লণানুর্দেবতা উপন-রনে ব্রহ্মচারিহ্মদযম্পর্শনে বিনিযোগঃ।

ওঁ ক্রশান ইদন্তে পরিদদামি অমুকদেব-শর্মাণং।

(क 'कृमारमा' करम स्मावः भूक्तिक ।

হে অগ্নি! এই ব্রহ্মচারি ও ইহার শরীর ভোমাকে সমর্পন করিভেচি।

১৬। পরে আচার্যা দক্ষিণ হস্ত দ্বারা মানবকের দক্ষিণ ক্ষত্ম স্পার্শ করত জপা করিবেন।

প্রজাপতি শ্বর্ষিঃ প্রজাপতির্দেবত। উপ-নয়নে ব্রহ্মচারিদক্ষিণক্ষরাম্পর্শনে বিনি-যোগঃ।

ওঁ প্রজাপত্যে ত্রাঁ পরিদদামি অমুক-দেবশর্মন্।

হে 'অমুকদেবশর্মন্' ব্রক্ষচারিন্ ! 'প্রকাপত্রে' ছক্টে 'স্থা' স্থাং 'পরিদদামি।

হে অমুক দেবশর্মা ব্রহ্মচারি! ভোমায় প্রজা-পতিকে দান করিতেছি।

১৭। পরে বাম হস্ত ছারা বাম কন্ধ স্পার্শ করত জপ করিবেন

প্রকাপতিশ্ব ষিঃ সবিতা দেবতা উপন-যনে ব্রহ্মচারিবামক্ষমপ্রশানে বিনিযোগঃ।

ওঁ দেবায ত্বা সবিত্তে পরিদদামি অমুক-দেবশর্মন্।

'मिरिका' 'मिराय' भ्यायः भूक्वतः ।

হে অমুক দেবশর্মা ব্রহ্মচারি! ভোমার সবিভা হেবকে দান করিভেছি

३৮। अनस्त आठार्या मानवरुक मधाधन कतिदन।

প্রজাপতিশ্ববিত্র স্মচারী দেবতা উপন-য়নে ব্রহ্মচারিসম্বোধনে বিনিযোগঃ

ও बक्काति व्ययक्तिवर्गम्।

(क 'काबुकरक्वनर्यान्' 'ब्रुक्क हाब्रि'।

ह अपूर प्रवस्त्री उक्तार्शित ।

১৯। পরে আচার্য্য সম্বোধিত দানবৰ্তক প্রেরণ করিবেন।

 ⁽छामाटक ममर्थन कड़िटल देनि चांत द्वांश अनुवासि
 अधि इदेशन मा।

প্রজাপতি খবিত্র স্মচারী দেবতা উপন-য়নে ব্রহ্মচারিপ্রৈযো বিনিযোগঃ।

ওঁ সমিধমাধেহি আপোশানং কর্ম করু মা দিবা স্বান্দীঃ।

হে ব্ৰহ্ণচারিম্! আয়ৌ 'সমিধং' 'আহেহি' আয়িকার্য্য ক্রু প্রাগ্যেভাকেনাং 'আপোলানং' মন্ত্রমর্জ্য ডক্ষর 'ক্র্ম' প্রকৃত্যশ্রহণাদিকং 'করু' 'দিবা' 'মা আপ্রীঃ' ন অসিছি।

হে ব্রহ্মচারি! অগ্নিতে সমিধ আধান করিবে, মস্ত বর্জিভ ভোজন করিবে না, ও তারগুশুহাবাদি কর্মা করিবে এবং দিবাতে নিজিত হইবে না।

२०। अकाठाति कहिरवन।

ওঁ বাচং।

২১। অনস্তর আচার্যা অগ্নির উত্তর দিকে গিয়া উত্তরাগ্রকুশের উপর পূর্ব্ব মুখ হইয়া উপবেশন করিবেন এবং মানবকও উত্তরাগ্র কুশের উপর দক্ষিণ জ্ঞানু ছারা ভূমি স্পর্শ করিয়া আচার্য্যাভি-মুখে উপবেশন করিবেক।

২২। পরে আচার্য্য মানবককে ভিনবার প্রদ-কিণ করত ত্রিব্রত মুগুমেখলা পরাইয়া ছইটা মস্ত্র অধ্যয়ন করাইবেন।

প্রজাপতি আযি ব্রিষ্ঠুপ্ছলে। মেখলা দে-বতা উপনয়নে মেখলাপরিধাপনে বিনি-যোগঃ।

ওঁ ইয়ং চরুক্তাৎ পরিবাধমানা বর্ণং পবিত্রং পুনতী ন আগাৎ। প্রাণাপানাভ্যাং বলমাহরম্ভী স্বদা দেবী সুভগাঁ মেখলেয়ং।

'ইরং' প্রত্যক্ষা 'মেখলা' মৌঞ্জী 'নে.'জম্মান্ 'আগাং' কিং কুর্রাণা 'দুকুক্কাং' অসম্বন্ধগুলাপাদিতো 'পরিবাধনানা' নিবার্যস্তী 'বর্বং' ব্রাহ্মণাদিকং প্রিমাপ 'পুনতী' পার্যস্তী, পুনঃ কিং কুর্মতী 'প্রাণাপানান্ডাং' প্রাণ্সান্পান্য চ নাযোঃ 'বলং' নীর্যংশ্জাহর্ত্তী আন্যস্তী তথা 'ব্রুগা' সর্বলোক কাম্যা।

এই সুভগা মেখলা দেবী অসমদ্ধ প্রকাপাদি নিবারণ পূর্বক ব্রাহ্মণাদিবর্ণ এথকে পবিত্র কর্ত এবং প্রাণাপানাদির বল বিধান কর্তঃ ভগি-নীর ন্যায় আমারদিগের নিকট আগমন কর্তন।

ওঁ ঋতস্য গোপ্তা তপসং প্রস্থী স্বতীব রক্ষং সহমানা অরাতীং। সমা সমস্তমভি-পর্যোহি ভদ্রে ধর্তারস্তে মেখলে মারিষাম।

হে 'জন্মে' শোভনে 'মেখলে' যা ছং ব্রক্ষারিসভকিনঃ 'শুড্ডন্য' স্বত্যুন্য 'গোপ্তা' গাল্যিত্রী 'ডলসঃ' ব্রক্ষফর্মান্য 'পর্যা' সর্ম্বন্দুড়া 'মুড়ী বৃক্ষঃ' বৃক্ষাংনি বিনাশর্মী 'জরাডীঃ' শর্ম ব 'সহ্মানা' অভিভ্যন্তী এসভুড়া
ত্বং 'মা' মাং 'সমস্তংং' সমস্তাৎ 'অভিগর্মেট্র' আভিমুধ্যাম সর্মতে আগক্ষ্ম বেউল্ল ইডার্গঃ, যথা ডে ডব ।
ধর্ম্ভারঃ' বয়ং কেন্দিৎ 'শান্তিবান' মাহিংদীন্তি।

• হে শোভন মেধলা! ভুমি সভ্যের পালয়িত্রী,

ব্রশাচর্ণোর সর্ব্ধস্থভূতা, রাক্ষ্যের বিনাশ কারিণী, ও শক্রনিগের পরান্তব কারিণী, অভএব ভূমি সর্ব-ভোভাবে আমাকে বেউন কর, যেত্ত্ ভোমা কর্ত্ব ধৃত হইলে আমরা আর হিংসিত হইব না। ২৩। অনস্তর আচার্যা কুফাজিন সহিত যজো-

২৩। অনস্তর আচায়া কৃষ্ণাজন সাহত যজো-প্রীত মানবককে প্রিধান ক্রাইবেন।

প্রজাপতিশ্ব বির্গায়ত্রী চ্ছলো বিশ্বেদেব। দেবতা উপনয়নে যজ্ঞোপবীতদানে বিনি-যোগঃ।

ওঁ যজ্জোপৰীত্মদি যজ্ঞস্য ত্বোপৰীতেনো-পনেস্থাদি*।

ভূমি যজোপৰীত, যজের উপৰীত রূপ ভোমা ছার। উপনীত কবি।

প্রকাপতিশ্ববিং শর্করী জ্বন্দোহজিনং দেবতা অজিনপরিধাপনে বিনিয়োগঃ।

ওঁ মিত্রস্য চকুর্বরুণং বলীয়ন্তেকোয-শব্বি স্থবিরং সমৃদ্ধং। অনাত্তস্য বসনং যবিষ্ণুং পরীতবাফ্জিনং দধেয়ং।*

২৪। পরে আচার্য্য মানবকের নিকটে ব্যইগ্রা বলিকেন।

'ওঁ অধীহি ভোঃ সাবিত্রীং, মে ভবান্ অনুত্রবীতু।

ভোঃ বুক্ষচারি । আমার নিকট সাবিত্রী অধ্য-য়ন কর, এবং আমার পশ্চাং ভূমি ভাষা উচ্চারণ কর।

২৫। পরে মান্বক অবহিত হইলে আচার্য্য প্রথমত পাদপাদ, পবে অর্দ্ধ অর্দ্ধ, তৎপরে সমুদ্ধে সাবিত্রী অধ্যয়ন করাইবেন। যথা

বিশ্বামিত্রশ্বধির্গায়ত্রীচ্ছন্দঃ সবিতা দেবতা জপোপনয়নে বিনিয়োগঃ।

ওঁ তৎসবিজুর্বরেগাং। ভর্গোদেবস্য ধীমহি। বিযোযোনঃ প্রচোদয়াৎ।

'তথ' জগৰতঃ 'সবিজুঃ' 'দেবস্য' দানাদিগুণমুক্ষসা 'বরেণ্যা' বর্ণীয়ং'জর্গঃ'ভক্ষনীখং সবিত্রাপি সেব্যংখীমহি' চিক্তয়েম। কিন্তুতঃ সবিতা 'খঃ' 'নঃ' কম্মাকং'ধিয়ঃ'বুদ্ধীঃ 'প্রচদয়াথ' প্রবর্তমেথ।

সেই সবিভা দেবের বরণীয় দীপ্তি আমর। ধ্যান করি, ফিনি আমাদিগের বুদ্ধি বৃত্তিকে প্রবৃত্ত করিভেছেন।

২৬। অনন্তর আচার্গা মানবককে ব্যাক্তি এয় পৃথক্ পৃথক্ করিয়া উকার পূর্বক অধ্যয়ন করা-ইবেন।

* গুণবিষ্ণু এই দুইগী মজের ব্যাখা। করেন নাই. জন্ত-এব বোধ হয় এই মজাদার পারে সন্নিংশিত হইয়া থাকিবে. এবং শেষ মক্ষণীর পাঠ সকল পৃত্তকেই অপ্রন্ধ ও অসম্বত দেখিতে পাওয়া যায়।

প্রজাপতিখ বিগায়ত্রীচ্ছলোইয়ির্দেবতা মহাবাছিভিপাঠে বিনিয়োগঃ।

ওঁ ভূঃ।

প্রজাপতিশ্ব गिরুফিকছন্দো বায়ুর্দেবতা महावाक्षिभारं दिनित्रांगः।

ও ভুবং

প্রকাপতিখা বিরনুষ্ট পূছকঃ সূর্যোদে-वडा महावाशिकिषाटि विनिद्यार्थः।

ওঁ স্বঃ

২৭। অনন্তর আঁচোগ্য মান্বক পরিমাণ বিল দ্ৰু বা প্ৰাশ দ্ভ মান্বককে দিয়া ভাহাকে পাঠ क्वाइर्ट्स ।

প্রজাপতিঋষিঃ পংক্তিছন্দো দণ্ড'গ্লী-দেবতে উপনয়নে মানবকদ গুৰ্পণে বিনি-যোগঃ।

उँ मूं अन्य मूं अन्तर्भः या कूक् यथा ज्यस मुख्यत मुख्यता मार्वरष्ठमहरु मुख्यत मुख्य-বা ব্রাক্ষণেয়ু ভূয়াসং।

😘 'ऋकन' (मांकन नीराई मण ! 'गर्थ फ्रा' (बनश्रावना-নুজ্ঞানাদিনা লোকে প্রথোতঃ এবং আ' মানণি স্থলবসং ' 'अ.स.') ९७ , व्यंव्यत्य कार्या, तथा त्यं, (तिरामसी, सारगा, क्यंव्यप्ता), Co प्रकार अवर 'काइर' ['आकारगयु' अनुरंशायु 'मूक्कर'

হে শোভন কীর্ত্তি দণ্ড! ভূমি যেমন লোকে প্রখ্যাত, সেই রূপ আমাকে প্রখাতিকর। হে বিখাত অগ্নি! তুমি হেমন দেবতাদিগের মধ্যে থ্যাত, সেই রূপ ভামি ব্রাহ্মণের মধ্যে বিখ্যাত হই।

২৮। অনন্তর গৃহীত দণ্ড ব্রহ্মচারী ভিক্ষা প্রা-র্থনা করিবেন। প্রথম মাতার নিকটে

ও' ভবতি ভিকাং দেহি। किया প্রাপ্ত হউলে বলিবেন। ত্ত স্বস্থি।

২৯। পবে মাতৃষ্দ্ধ স্ত্রীগণের নিকট, ডাহার পর পিতার নিকট ভাহার পর অনোর নিকট ভিকা করিবেন। পুরুষের নিকট ভিক্ষায় এই মাত্র প্রভেদ যে

ও তথন ভিকাহ দেহি ২০। এই রূপ ভিফা করিলী সমুদায় লব্ধ দ্রব্য । আচাৰ্যাকে প্রদান করিবেক।

ः। भरत जानांग शृंद्धवद वाल ममल मनांगा-সতি হোম করিয়া প্রাদেশ প্রমাণ মতাক্ত সমিধ অনন্ত্রক অঘিতে হোম করত প্রাকৃত কর্ম সমাপন পুর্ত্তক সর্ব্য কর্ম সাধারণ লাটায়েল ছোমালি বাম-(प्रवा गामान डिमीहा कर्य ममाशम क्रिट्रिक केवर কর্ম কার্য়িতা ত্রামাণকে দকিণা দিবেক। ত্রমচারী ও সশ্বা পর্যন্ত বাণ্যত হইয়া অবস্থান করিবেক।

७२। जनसूत्र मधा कार्टन मरेस्राभागमा करिया क्रमाधिकात्र विश्रामास्भारत मध्छेत नामक अधि मध्योशन शूर्वक प्रसिन काम प्रमिटंड भेगर्न कहाड उभरतमन कंत्रिया उपकाक्षाल राक उ वाधि भर्दा-কণ পূৰ্বক স্বতাক্ত সমিধত্তর এছণ করত ছৌন क्तिरवक्,

প্রজাপতিখা বির্যাদেবতা অংগৌ সমি-काथादन विनिद्यार्गः।

ওঁ অগ্নরে সমিধমহার্যং বৃহতে জাতবে-म्त्य यथा च्याच म्या निवादमाद्या स्थापनाद्या स्थापना মেধ্য়া প্রজয়া পশুভিত্র দ্বাবর্চ্চদেন ধনেনা-ল্লাদ্যেন সমেধিসীয় স্বাহা।

অহং 'অয়ে'ে 'দনিধমহারিং' আত্তবান্ কি ভূতায 'तृकट ड' 'क्लांखट बमरम' क्लांडक्टा बाय. (इ. 'कारम' 'य था खर' ष्यनग्रः 'समिधा' 'समिधापि' मीलाटस' अदर' अदनन ध्वकादन् प्यवः प्रमानुतानिमा 'मिषिशमीय' त्रांक्रमाधा प्र १।

আমি রহৎ ও জানবান্ অগ্নিতে হোম করি-লাম। হে আঁগ্ন! তুমি যেমন সমিধ দ্বারা প্রদীপ্ত ১৬. সেই রূপ আমি আয়ু, বৃদ্ধি, তেজ, পুত্রপৌ-তাদি, গৰাদি পশু, ব্ৰাশহেজ, ধন, ও অয়াদি দারা সম্পন্ন হই।

৩৩। অনন্তর কর্ম শেষ উপলক্ষে পুনর্কার অগ্নিপণ্যক্ষণ ও উদকাঞ্জলি সেক করিয়া অগ্নিকে অভিবাদন করিবেক।

অমুকগোত্রঃ প্রীঅমুকদেবশর্মাহং ভোঃ অভিবাদয়ে।

অৰ্ফ গোত অৰুক দেবশৰ্মা আদি ভোষাকে জাগম

७२। পরে ''ক্রম্ম' বলিয়া অগ্নিকে বিলর্জন করিয়া সন্ধা অতীত হইলে ভিকা লব্ধ, ক্ষার লবণ বর্জিত, সমূত অর জল দারা অভাকণ করিয়া

ওঁ অমূতাপন্তরণম্সি স্বাহা।

অমৃত রূপ কল, তুমি আন্তরণ হও।

हेरा विलया मधामा, जनामिका ७ जन्द्रछेत्र ত্রিপর্ব্ব দ্বারা তর এহণ করিয়া

ওঁ প্ৰাণায় স্বাহা ওঁ অপানায় স্বাহা ওঁ সমানায় স্বাহা ওঁ উদানায় স্বাহা ওঁ ব্যানায় श्राहा।

এই মূপে পঞ্চাত্তি অভাবহার করিয়া ভোজন পাত্ত ৰাম হত্তে ধাৰণ কৰত ৰাগ্যত হইয়া ভোজন कतिरवक। अवश् ट्लांकमांदर्गातम

ওঁ অমৃতাপঃ পিধানমসি স্বাহা।

आमुख क्रांग क्रम, क्रूमि आक्रोमन ३७

भूरकांक क्रम बांधकार्या निमावर्डन भवास धांड एम मांबरकारम **७ थां**जःकारम क्रिंदिक क्रि ভোজন এই রূপ বাবজ্ঞীবন করিবেক।

उल्लब्ब नमार